सचित्र ज्योतिष-शिक्षा

पंचम भाग

(प्रश्नखण्ड)

बी० एल० ठाकुर

मोतीलाल बनारसीदास

दिल्ली :: वाराणसी :: पटना
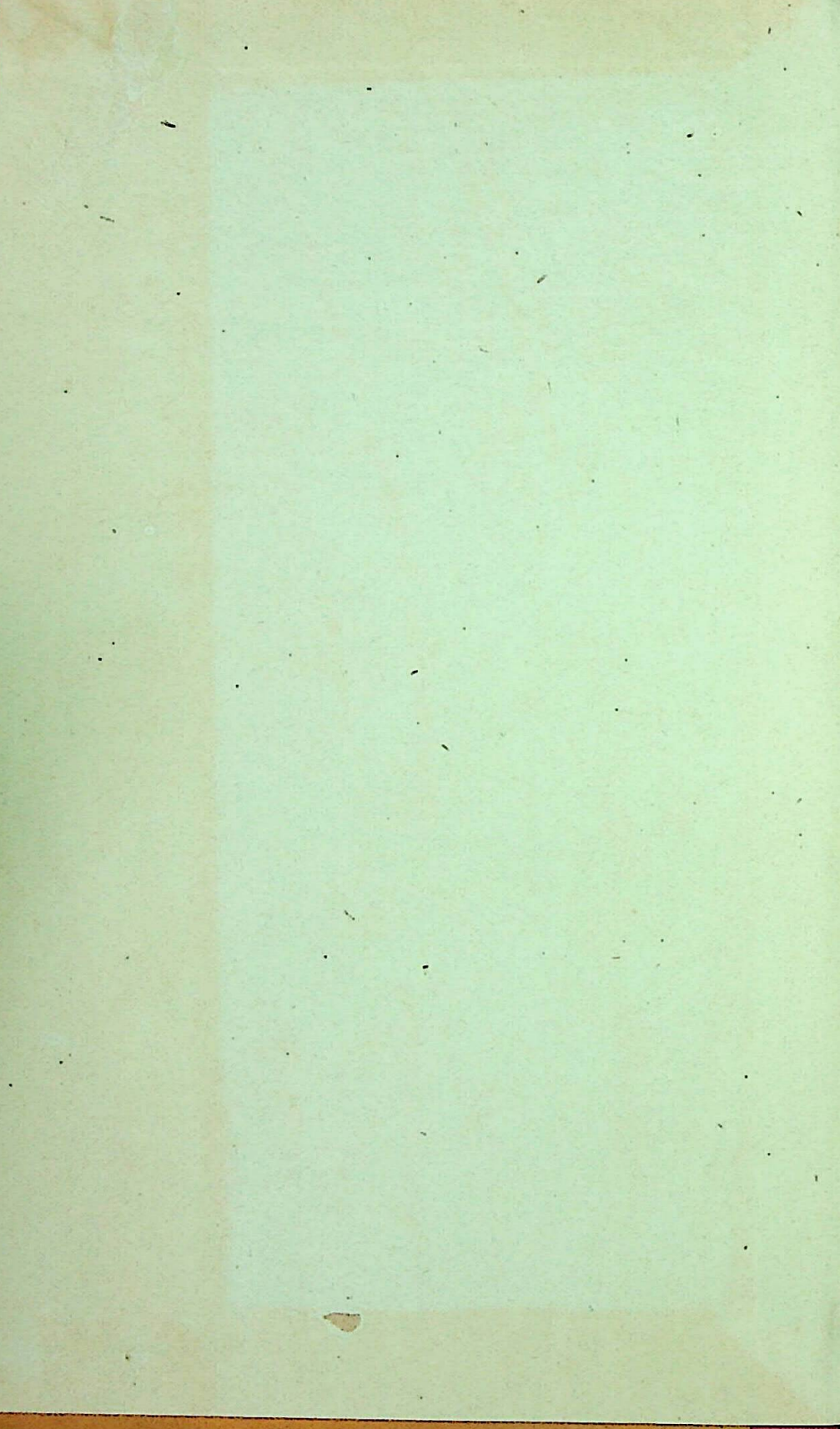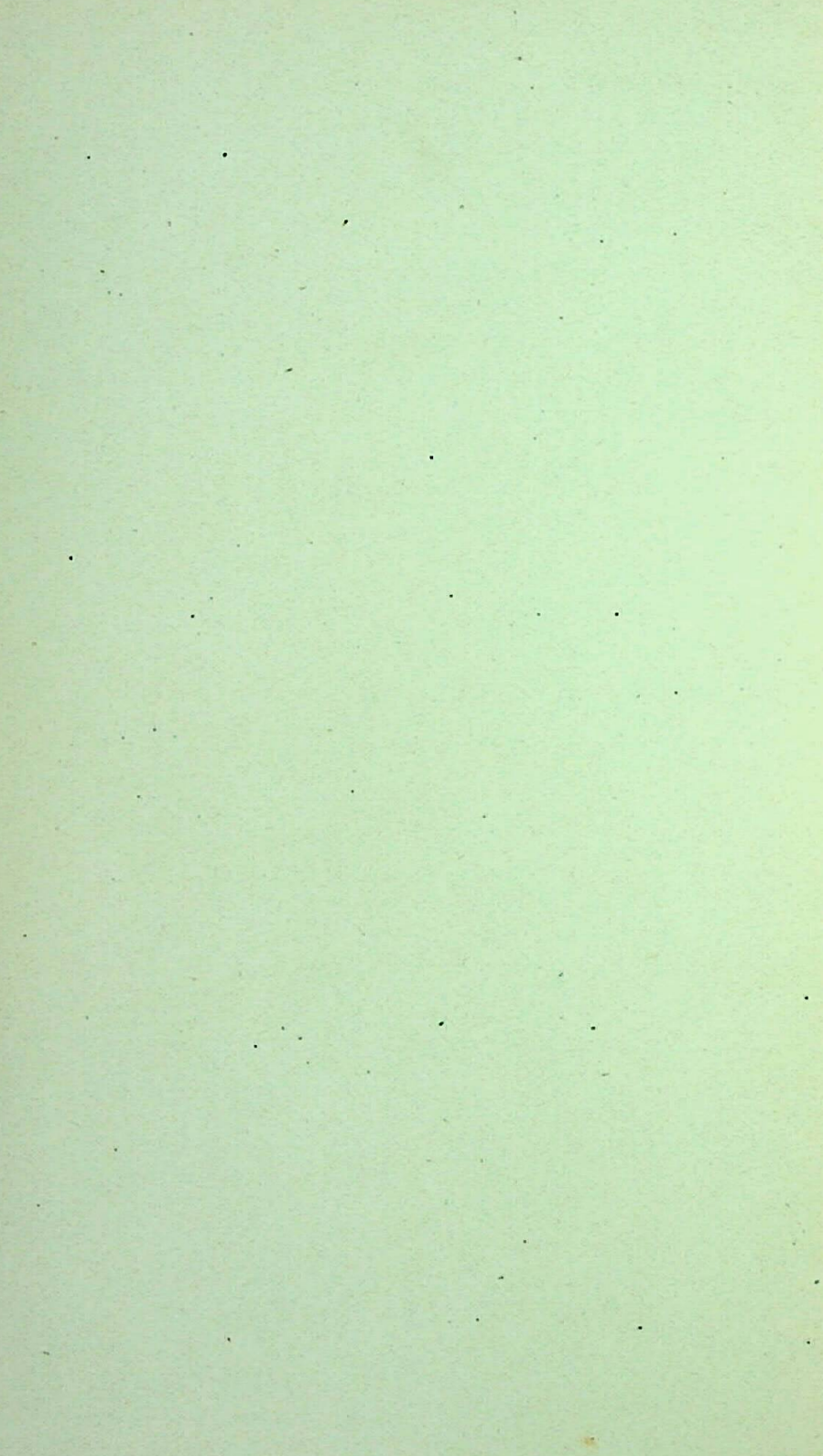
सचित्र ज्योतिष-शिक्षा

पंचम भाग

(प्रश्नखण्ड)

बी० एल० ठाकुर ज्योतिषाचार्य,

मो ती ला ल ब ना र सी दा स
दिल्ली :: वाराणसी :: पटना

भूमिका

फलित-ज्योतिष में प्रश्न का भी बहुत महत्त्व है। इसमें दो प्रकार के प्रश्न होते हैं। पहिला जब लोग अपनी परेशानी या उलझन में पड़कर ज्योतिषी की शरण में अपनी परेशानी व चिंता का समाधान करने आते हैं। जैसे मेरे मुकदमे में क्या होगा? अमुक बीमार बहुत है अच्छा हो जायगा? यात्रा में गया हुआ अभी तक नहीं लौटा उसका क्या हुआ? इत्यादि इस प्रकार के वास्तविक एवं आवश्यक प्रश्न होते हैं।

इसके अतिरिक्त दूसरे प्रकार के अनावश्यक प्रश्न होते हैं जो समय बरबाद करने और ज्योतिषी की परीक्षा लेने के निमित्त होते हैं। जैसे बताओ मेरी मुट्ठी में क्या है। मैंने क्या खरचा था। मेरे मन में क्या है आदि जिसमें बहुत ही विचार कर उत्तर देने की आवश्यकता होती है।

ग्रन्थ में जो योग दे कर बता दिया है कि इसका ऐसा फल होगा। परन्तु इसके अतिरिक्त ग्रह और राशियों के विचार से उनके गुण धर्म ग्रहों के शुभत्व-पापत्व-स्थानस्वामित्व-दृष्टि-मैत्री-उच्च-नीच-स्वक्षेत्र-मित्र या शत्रु क्षेत्र आदि कई प्रकार के विचारों का मेल कर फल को तौल कर निर्णय करना होता है। जैसे किसी न्यायाधीश के सम्मुख कोई अभियोग पेश होता है तो वह वादी-प्रतिवादी एवं गवाहों आदि की साक्षियों के आधार पर अपना फैसला देता है। इसी प्रकार ज्योतिषी को उपरोक्त सब बातों पर विचार कर एवं देश-काल प्रश्नकर्ता की अवस्था वंश-परिस्थिति आदि सब बातों का ध्यान रख कर फल निर्णय करना होता है।

इसके अतिरिक्त ग्रन्थ में किसी विशेष प्रश्न के निर्णय के निमित्त कई प्रकार के भिन्न-भिन्न कई योग दिये हैं। इनके अतिरिक्त प्रश्नकर्ता के मुख से निकले आदि शब्द पर से एवं उसके अंगस्पर्श आदि एवं शकुन से भी विचार कर दिया है। इसके निमित्त सब प्रकार से विचार करने पर बहुमत से जो निर्णय हो और एकाग्र चित्त से ध्यान करने में जो निर्णय अपनी आत्मा स्वीकार करे वही उत्तर प्रगट कर देना चाहिये।

प्रश्नखंड में इत्थशाल योग का अधिक उपयोग हुआ है। वर्षफल खंड में जिसके उदाहरण सहित १६ योग दिये हैं। आशा है कि पाठक उनका अभ्यास कर चुके होंगे। तब भी इस ग्रन्थ के अंत में इत्थशाल और इशराफ योग उदाहरण सहित दे दिये गये हैं जिनको अच्छी प्रकार समझ लेना चाहिये जिससे फल निर्णय करने में कठिनाई न हो।

ज्योतिष शास्त्र में जो शास्त्रोक्त फल दिया है उसके आधार पर एवं परिस्थिति पर विचार कर अपनी कल्पना एवं बुद्धि-बल से वास्तविक फल का अनुमान कर अपना अनुभव बढ़ाना पड़ता है। आशा है कि पाठक अभ्यास द्वारा अपना अनुभव बढ़ा कर योग्यता प्राप्त कर कीर्ति लाभ करेंगे।

भवदीय

बी० एल० ठाकुर, ज्योतिषाचार्य
'सिंह-सदन' पोस्ट—नरसिंहपुर, (म० प्र०)

—: ० :—

विषय-सूची

(प्रश्नखण्ड)

श्रीगणेशाय नमः

ज्योतिष शिक्षा

पंचमभाग

(प्रश्नखण्ड)

वक्रतुंड वागीश अरु बिनवौ वर्दारूढ़।
विमल बुद्धि वर दीजिये, समझ सकूं फल गूढ़ ॥ १ ॥
ज्योतिष के संकेत का कठिन समझना अर्थ।
तुव कृपा से होत है, समझन की सामर्थ ॥ २ ॥
अंतर मन स्फुरण करो हरे सकल अज्ञान।
तुमरी कृपा कटाक्ष से होय त्रिकालज्ञ ज्ञान ॥ ३ ॥
प्रभू कृपा अब कीजिये धरूं तुम्हारा ध्यान।
प्रश्न तंत्र के कथन में होहु सहायक आन ॥ ४ ॥

दैवज्ञ —ज्योतिष सम्बन्धी गणित का ज्ञाता हो प्रश्न लग्न, आरूढ़ छत्र आदि का जिसे विचार हो, ग्रहों का बलाबल केन्द्र त्रिकोण आदि स्थान ग्रहों का क्षेत्र दृष्टि अवस्था ग्रहों की मंद-शीघ्रगति-वक्री मार्गी ग्रहों का इत्थशाल आदि अनेक योग ग्रहों का नवांश द्रेष्काण आदि का ज्ञान कर राशियों एवं ग्रहों के गुण धर्म उनके शरीर पर प्रभाव रोग आदि अनेक आवश्यक बातों का निर्णय कर अन्तर आत्मा से उस पर विचार करता है वह दैवज्ञ प्रश्न का उचित उत्तर देने में समर्थ होता है।

जातक और प्रश्न में भेद

जातक और प्रश्न में कोई भेद नहीं है। जिस प्रकार लग्नकुण्डली से ग्रहों के आधार पर जातक का विचार होता है उसी प्रकार प्रश्न कुण्डली से ग्रहों के आधार पर विचार किया जाता है।

प्रश्नकर्ता

जब कोई प्रश्न पूछने आता है तो निम्नलिखित बातों पर ध्यान दो क्योंकि उत्तर देने में ये बातें सहायक हो सकती हैं।

(१) प्रश्नकर्ता के मुख से जो प्रथम वाक्य निकले उसके आदि के अक्षर पर ध्यान देना। क्योंकि इन आदि के अक्षर पर से ध्वज धूम

आदि ८ प्रकार से विचार कर उनके ध्रुवांकों पर से फल का विचार होता है।

(२) प्रश्नकर्ता अपने शरीर का कोई अंग स्पर्श करे तो उससे संयुक्त असंयुक्त आदि ८ प्रकार से फल का विचार होता है।

(३) प्रश्नकाल का ठीक समय नोट कर उससे प्रश्नकुण्डली बना कर उससे फल का निर्णय होता है। घड़ी के टाइम को स्थानीय समय में परिवर्तन कर उस स्थानिक समय का लग्न निकाल कर उस लग्न के आधार पर प्रश्न की कुण्डली बना लेना। यही प्रश्नकुण्डली है।

(४) प्रश्नकर्ता अपने से किस दिशा में बैठा है इस पर ध्यान दो। इससे आरूढ़ लग्न छत्रलग्न आदि निकाल कर फल के विचार में सहायता मिलती है।

(५) प्रश्नसमय अपनी नासिका से कौन स्वर चल रहा है उससे स्वरोदय के अनुसार विचार होता है।

(६) प्रश्नकर्ता समीप या दूर खड़ा है या बैठा है। भूमि पर या कोई आसन में बैठा है। मुख किस दिशा की ओर है। इन बातों के विचार की भी आवश्यकता पड़ सकती है।

(७) प्रश्नकर्ता की शारीरिक एवं मानसिक स्थिति एवं चेष्टा।

(८) प्रश्नसमय का वातावरण या परिस्थिति एवं शगुन यदि कोई दृष्टिगोचर हो।

उपरोक्त बातें फल निर्णय में सहायक हो सकती हैं। परन्तु मुख्य बात यह है कि प्रश्नसमय की इष्ट कुण्डली बना लेना चाहिये और उस समय के ग्रहस्पष्ट कर लेना। नवांश एवं द्रेष्काण कुण्डली भी बना लेना जिनकी आवश्यकता पड़ जाती है।

फल विचार के लिये नीलकंठी में वर्णित इत्थशाल आदि १६ योगों को जान लेना आवश्यक है। क्योंकि फल विचार में उनका बहुत उपयोग हुआ है। ये १६ योग मैंने ज्योतिष शिक्षा भाग ४ वर्ष फल खण्ड में उदाहरण देकर अच्छी प्रकार समझा दिया है। इस कारण उनको यहां नहीं दिया। कृपा कर वर्षफल खण्ड अवश्य देख लेवें।

प्रश्न पूछने की रीति

ज्योतिषी को भेंट देने को फल पुष्प आदि मांगलिक पदार्थ एवं कुछ द्रव्य हाथ में लेकर पूर्वमुख स्थित होकर प्रणाम कर अल्प शब्दों में प्रातःकाल एक ही प्रश्न पूछे।

प्रच्छक सरल या वक्र चित्त का है

कुटिल प्रश्न

१— लग्न में चंद्र, केन्द्र में शनि हो बुध अस्तंगत हो। तथा चन्द्र को मंगल बुध की पूर्ण दृष्टि हो।

२—लग्न में पाप ग्रह हो।

३—बुध या गुरु सप्तमेश को शत्रु दृष्टि से देखे।

सरल चित्त

१ लग्न में शुभग्रह हो।

२—लग्न और सप्तम में शुभग्रहों की दृष्टि हो व चंद्र पर बुध गुरु की दृष्टि हो।

३—बुध या गुरु सप्तमेश को मित्रदृष्टि से देखे।

४—लग्न व सप्तम में शुभग्रह हो।

५—सप्तम में शुभग्रह की दृष्टि हो या चंद्र पर गुरु की दृष्टि हो या चंद्र गुरु एक राशि पर हों।

प्रश्न का उत्तर नहीं देना

प्रश्न करने वाला धूर्त हो, पाखंडी हो, उपहास करने वाला हो, श्रद्धाहीन हो या अविश्वासी हो ऐसा जब प्रतीत हो तो उत्तर नहीं देना चाहिये।

अनेक प्रश्न

एक प्रश्न पूछा जाता है तो उत्तर सत्य निकलता है। एक लग्न में बहुत प्रश्न करने पर बहुधा सत्य नहीं निकलता। यदि कई प्रश्नों का उत्तर देना है तो इस प्रकार विचार करें।

पहिला	दूसरा	तीसरा	चौथा	पांचवां
लग्न से	चंद्र स्थान से	सूर्य से	गुरु से	बुध शुक्र में जो बली हो।

इनकी राशियों के अनुसार जो राशियों का रंग, रूप, आकार, गुण, धातु राशियों की संज्ञाएं जो बताया है व ग्रहस्थिति व ग्रहों की संज्ञा पर भी विचार कर फल का निर्णय करना।

किस भाव से क्या विचार करना

(१) लग्न=शरीर सुख वैद्य आयु अवस्था निरोगता देह आदि का विचार, शरीर का दुःख-सुख, क्रूर, सौम्य स्वभाव रंग आकृति गुण, क्लेश, स्थान से हटना, बिछुड़ना होगा या नहीं, किसी वस्तु का गिरना या पृथक होना। जैसे मेघ से वर्षा या वंदी का ग्रह से छूटना। मसक तिल आदि चिन्ह बल (पराक्रम) लघु-दीर्घ आदि मान ब्राह्मण आदि जाति आचरण, किसान का, प्रच्छक का विचार।

(२) द्वितीय=सुवर्ण आदि धातु, हीरा मोती आदि रत्न, कोष, धन की स्थिति, क्रय-विक्रय से लाभालाभ वस्त्र अश्वकर्म अतिथि, मार्ग सम्बन्धी ज्ञान, प्रच्छक के कुटुम्ब का।

(३) तृतीय=भाई बहिन नौकर कार्य करने वाला उपलक्षण से व्यापार उद्यम पराक्रम आलस्य भाव, तेज विकार मृत्यु प्रच्छक के भाइयों का।

(४) चतुर्थ-खेती अन्नादि खलिहान औषधि क्षेत्र बावड़ी चतुष्पद वाहन आदि वाटिका भूमिगत निधि, रंध्र कंदरा सुरंग आदि में प्रवेश गृह दुःख-सुख माता, मित्र से लाभालाभ, चोरी गई वस्तु का, धान कूटने, गाड़ने का स्थान, घर आया हुआ जन, गमन का परिणाम, जलज कर्म, भूमि शोधन, स्वप्न, मित्र सम्बन्धी कार्य बढ़ती, किसी वस्तु की वृद्धि का विचार। जैसे संतान, अन्न, पशु आदि की प्रच्छक के माता का।

(५) पंचम=संतान, गर्भधारण मंत्र का संधान, बुद्धि का प्रबंध आदि, विद्या एवं बुद्धि की विशेषता नीति, पुत्र, भाई, मैत्री करना, मसौदा आदि नम्रता, कला, प्रच्छक के पिता का।

(६) षष्टम-शत्रु संग्राम, रोग, मातुल पक्ष, चोर भैंस, मातुल भीति, अग्नि, भय का विचार, चाकर शंका, क्रूर कर्म, गधा ऊँट पशु का विचार जलाना आदि मृत्यु सम्बन्धी कार्य, घाव का दाग, मूल।

(७) सप्तम=कलत्र, विवाह, स्त्री व्यापार, व्योहार, रति, शयन, गमन, आगमन, गमन दिशा, मार्ग चलना अन्य के साथ विवाद या सन्धि, व्यापार का झगड़ा, खरीद बिक्री, परदेश से आगमन, चोरी की वस्तु, कलह, गृहकार्य, किसी मनुष्य या वस्तु का लौट आने का विचार, रोगी का रोग दूर होना, नष्ट वस्तु मिले या न मिले, कष्ट दूर होगा या नहीं।

(८) अष्टम=मरण, बंधन, मोक्ष, नदी का तैरना मृतक, किला शस्त्र, विषम स्थान, संकट विचार, वाचाल, कठिनाई, नष्टता, दुष्टता, रोग, रण, घायल, कलह, आयु, दुष्ट भाव, मार्ग के संकट में, शत्रु-वधू, भय में, नष्ट धन में, बिल या गुप्त मार्ग का विचार, गृह छिद्र या विवर, मार्ग विचार सर्प आदि का काटा हुआ, भाई का शत्रु, शाकिनी आदि दोष।

(९) नवम=देवमंदिर मठ देवालय, वापी, कूप, तड़ाग आदि जलाशय, प्याऊ, यात्रा, गुरुदीक्षा (उपदेश) धर्मविषयक सब कार्य, पितामह, पाप-पुण्य, भाग्य, ऐश्वर्य, तीर्थयात्रा, धर्म कार्य में प्रीति अप्रीति राज्याभिषेक।

(१०) दशम=राज्यमुद्रा आदि चिन्ह, राज्य की वार्ता, ईश्वर की भक्ति, रोजगार, यात्रा कार्य परदेश जाना, पिता का दुःख-सुख-शोक लाभा-लाभ, रोग वर्षा आदि आकाश का वृतांत, पुण्य, निवास स्थान, परिवेष मंडल

धूमकेतु ग्रहण आदि विषय का विचार, परदेश से लौट के आने का विचार पितृद्रव्य, प्रयोजन, शूरवीर, राजगद्दी।

(११) लाभ=धनलाभ सुवर्ण, मणि अन्न वस्त्र विद्या पंडित, लाभ, धातु का विचार, हाथी-घोड़ा आदि वाहन, कन्या, छत्र, राज, द्रव्य गुप्त प्रगट धन, मित्र परिवार भूषण आदि का लाभ।

(१२) व्यय–व्यय के सब स्थान धन का खर्च कृषिकर्म त्याग, भोग, दान कलह, इष्टवस्तु, मृतकाल का ज्ञान, हानि-लाभ, अभीष्टकार्य में संस्थाओं में धन का खर्च, किसी काम को छोड़ने में, किसी पदार्थ के भोग में, किसी के साथ विवाद में, शत्रु का विरोध, पीड़ा नेत्र कर्ण रोग आदि बंधन, दान, चाचा दण्ड।

और भी विचार

सूर्य से दशम घर	से	पिता का विचार करना
चंद्र से चौथे	,,	माता ,,
मंगल से तीसरा	,,	भाई ,,
बुध से छठा	,,	मामा ,,
गुरु से पंचम	,,	पुत्र ,,
शुक्र से सप्तम	,,	स्त्री ,,
शनि से अष्टम	,,	मृत्यु ,,

भाव के अंग विचार

(१) लग्न=मस्तक, कपाल, आत्मा, कारक सूर्य, स्वामी ब्रह्मा।

(२) धन=दक्षिणनेत्र, मुख, दंत, कफत्व, स्त्री, भोजन, कारक गुरु, स्वामी कुबेर।

(३) सहज=कान, दक्षिण कंधा, दक्षिण भुजा, पराक्रम, सेवा, कारक भौम, स्वामी इन्द्र।

(४) चतुर्थ=दक्षिण पार्श्व, जठराग्नि, माता, स्वसुर, कारक चंद्र, स्वामी विष्णु पृथ्वी।

(५) सुत=दक्षिण कुक्षि उदर, कमर, पुत्र, गुरु- कारक, स्वामी स्त्री।

(६) रिपु=दक्षिण चरण मामा जंघा, साला, भौम कारक, स्वामी राक्षस।

(७) जाया=गुप्त इंद्रिय, गुहेन्द्रिय स्त्री, कारक शुक्र, स्वामी धम।

(८) मृत्यु=वाम-चरण, मूत्रेन्द्रिय, गुदा, शनि कारक, स्वामी रुद्र।

(९) धर्म=वाम कुक्षि, भाग्य, धन, गुरु कारक, स्वामी श्री।

(१०) कर्म=वाम पार्श्व, आकाश, पिता, राज्य, बुध कारक, स्वामी विष्णु।

(११) आय=वाम हस्त, कान, ज्येष्ठ भ्राता, गुरु कारक, स्वामी वरुण।

(१२) व्यय=वाम नेत्र, मस्तक का पृष्ठ भाग, शनि कारक, स्वामी राक्षस।

राशि गुण धर्म

गुण धर्म	१ मेष	२ वृष	३ मिथुन	४ कर्क	५ सिंह	६ कन्या	७ तुला	८ वृश्चिक	९ धन	१० मकर	११ कुंभ	१२ मीन
समविषम	विषम	सम	विषम	सम	विषम	सम	वि०	सम	वि०	सम	वि०	सम
दिशा	पूर्व	दक्षिण	पश्चिम	उत्तर	पू०	द०	प०	उ०	पू०	द०	प०	उ०
अन्यमत	,,	,,	,,	,,	आग्नेय	नैऋत्य	वायव्य	ईशान	आ०	नै०	वा०	ई०
लिंग	पुरुष	स्त्री	पु०	स्त्री	पु०	स्त्री	पु०	स्त्री	पु०	स्त्री	पु०	स्त्री
अन्यमत	,,	,,	नपुंसक	पुरुष	स्त्री	नपुंसक	,,	,,	नपुंसक	पु०	स्त्री	नपुंसक
जाति	क्षत्रिय	वैश्य	शूद्र	ब्राह्मण	क्ष०	वैश्य	शू०	ब्रा०	क्ष०	वैश्य	शू०	ब्रा०
अन्यमत	,,	म्लेच्छ	,,	वैश्य	,,	म्लेच्छ	,,	वैश्य	ब्रा०	म्लेच्छ	,,	,,
अन्यमत	,,	शूद्र	वैश्य	ब्राह्मण	,,	शू०	वैश्य	ब्रा०	क्ष०	शू०	वैश्य	,,
तत्व	अग्नि	पृथ्वी	वायु	जल	अ०	पृ०	वा०	ज०	अ०	पृ०	वा०	जल
अन्यमत	आकाश	,,	,,	,,	आकाश	,,	,,	,,	आकाश	,,	,,	,,
पुष्टकृश	दृढ़	दृढ़	मृदु	मृदु	दृढ़	कृश	दृढ़	कृश	दृढ़	दृढ़	दृढ़	दृढ़
शीतउष्णदेह	तप्त	शीत	तप्त	शीत	उष्ण	वायु	उष्ण	वायु	उष्ण	शीत	उष्ण	शीत
धातु	पित्त	वायु	सम	कफ	पित्त	जल	पित्त	कफ	पित्त	वायु	तीनों	कफ
अन्यमत	,,	,,	,,	,,	पित्त	वायु	सम	,,	,,	,,	सम	,,
प्रकृति	पित्त	वात	वात	शीत	पित्त	वात	वात	शीत	पित्त	वात	वात	शीत

चरआदि	चर	स्थिर	द्विस्वभाव	चर	स्थिर	द्वि०	च०	स्थिर	द्वि०	च०	स्थिर	द्वि०
शब्द	अति	अति	दीर्घ	हीन	दीर्घ	अर्द्ध	शब्दहीन	श०हीन	अति०	अर्द्ध	अर्द्ध०	श०हीन
बली	दिवा	रात्रि	दिन	संध्या	दिन	रात्रि	दिन	रा०	दि०	रा०	दि०	रा०
स्वभाव	उग्र(कूर)	सौम्य	उ०	सौ०	उ०	सौ०	उ०	सौ०	उ०	सौ०	उ०	सौ०
कांति	रूक्ष	रू०	स्निग्ध	स्नि०	रू०	रू०	स्नि०	स्नि०	रू०	रू०	स्नि०	स्नि०
स्त्रीसंग	अल्प	मध्य	मध्य	बहु	अल्प	अल्प	अल्प	अति	अल्प	अल्प	अल्प	अति
पद	चतुष्पद	चतु०	द्विपद	अपद	चतु०	द्वि०	द्वि०	बहु०	द्वि०	च.उ.ज.	अपद	अपद
मतांतर	चतु०	चतु०	द्वि०	बहु०	,,	,,	,,	,,	द्वि० चतु०	पक्षी	द्वि०	पक्षी
उदय	पृष्ठोदय	पृ०	शीर्षो०	पृ०	शी०	शी०	शी०	शी०	पृ०	पृ. उभयो.	शी. उभ.	शी.उभ.
अन्यमत	,,	,,	,,	,,	,,	,,	,,	,,	,,	पृ०	शी०	उभयो०
ह्रस्वआदि	ह्रस्व	ह्र०	मध्य	म०	दीर्घ	दीर्घ	दी०	दी०	दी०	म०	ह्र०	ह्र०
मतांतर	,,	,,	,,	,,	,,	,,	,,	,,	मध्य	,,	,,	,,
मूल जीव०	धातु	मूल	जीव	धा०	मू०	जी०	धा०	मू०	जी०	धा०	मू०	जी०
दिन रात	रात	रा०	रा०	रा०	दि०	दि०	दि०	दि०	रा०	रा०	दि०	दि०
दृष्टि	तिर्छी नजर	ति०	सम मनुष्य दृष्टि	नीचे सरीसृप दृष्टि	ति०	सम	सम	ति० व नीचे	सम	ऊर्द्ध पक्षी दृष्टि	सम मनुष्य दृष्टि	ऊर्द्ध पक्षी दृष्टि
अंग	सिर	मुख	हाथ	हृदय	उदर	कटि	वस्ति	गुह्य	उरु	जानु	जंघा	पाद
गृहद्वार	पूर्व	पश्चिम	दक्षिण	पूर्व	उत्तर	द०	पू०	पू०	द०	उ०	पू०	द०

गुण धर्म	१ मे०	२ वृ०	३ मि०	४ क०	५ सिं०	६ क०	७ तु०	८ वृ०	९ ध०	१० म०	११ कुं०	१२ मी०
गति चलने वाला	पादचारी	पा०	पा०	मंद	पा०	पा०	पा०	मं०	पा०	उड़ने वाला	पा०	उड़ने वाला
रंग	पाटल रक्त	श्वेत	हरित	पाटल	धूम्र	पांडुर	विचित्र	श्वेत	पीत	पीत विचित्र	कर्बु र	धूम्र
अन्यमत	रक्त	,,	शुकवत	,,	धूम्र पांडु	चित्र	कृष्ण	कनक	पिंगल	कुर्बु र	भूरा	स्वच्छ
,,	लाल	,,	हरित	गुलाबी	पीत	चित्र	कृष्ण	पीत	लाखी	कर्बु र	न्योला सा	मलिन
घरस्थान	पर्वत	सम भूमि	वनचर	जलचर	पर्वत	शुभ भूमि	वन	जल	पर्वत	उत्तरार्द्ध जल अपद	भूमिचर	जलचर
अन्यमत	जंगल	चावल का खेत	गांव	जलमार्ग नाली-	पहाड़	गांव	नदी	कूप	जंगल	नदी	जलपात्र	नदी
,,	,,	,,	,,	नहर	,,	जल	गांव	,,	बाग	शुष्कनदीया नमकपात्र	झील	समुद्र
अकेले	अकेले	अकेली	बहुनर या	अकेली	अकेला	बहुनर	बहुनर या	एक स्त्री	बहुनर या	द्वै स्त्री	बहुनर या	द्वै स्त्री
आदि	नर	स्त्री	युग्म नर	स्त्री	नर	अकेलीस्त्री	युग्म	नर	युग्म नर		युग्मनर	
सजल निर्जल	निर्जल	सजल	नि०	स०	नि०	स०	नि०	स०	नि०	नि०	स०	सजल
संतान	अल्प	सम	अति०	अति०	अल्प	अल्प	अल्प	अति	सम	सम	सम	अति
अंधवधिर	अंध	वधिर	मूक	पंगु	अंध	व०	मूक	पंगु	अंध	वधिर	मूक	पंगु
मास	चैत्र	वैशाख	ज्येष्ठ	आषाढ़	श्रा०	भादों	क्वार	कार्तिक	अगहन	पूष	माघ	फागुन

दिवास्वामी	शनि	मंगल	गुरु	चंद्र	शनि	मं०	गु०	चं०	श०	मं०	गु०	चं०
रात्रिस्वामी	गु०	चं	बु०	मं०	गु०	चं०	बु०	मं०	गु०	चं०	बु०	मं०
दिन स्वामी	सूर्य	शुक्र	शनि	शुक्र	सू०	शु०	श०	शु०	सू०	शु०	श०	शु०
घरवस्तुस्थान	बन	नहर में	गांव	नदी	जल	गांव	जल	कूपजल	वनजल	जल	जलकाघड़ा	जल
मतांतर	बन	खेत	बाग	नहर	पहाड़	वनभूमि	नदीतीर	बावड़ी	तालाव	नदी	भरा घड़ा	कुआँ
,,	बन या गांवबाहर	जल	गांव	जल	वन या गांव	गांव बाहर	गांव	बन या गांवबाहर	बन या गांवबाहर	जल	गाँव	जल
वृक्षप्रकार	क्षुद्रशस्य	लता	वृक्ष	लता	कंटकवृक्ष	वृक्ष	लता	क्षुद्रशस्य	शुभवृक्ष	कंटकवृक्ष	कंटकवृक्ष	इक्षु
वीथीमेंउदय	वृष	मेष	मेष	मेष	मेष	वृष	वृष	मिथुन	मिथुन	मिथुन	मिथुन	वृष
अत्र अन्यमत	,,	,,	,,	;,	,,	मकर	,,	,,	,,	,,	मेष	,,
किरण	८	११	६	११	३	६	१४	१३	१०	१००	४	३४
मतांतर	,,	६	,,	८	७	७	८	४	७	६	६	२७
,,	७	८	५	३	७	११	२	४	६	८	७	२०
,,	,,	,,	,,	,,	,,	,,	,,	,,	,,	,,	९	२७
योजन	७	१६	८	१	८	८	१६	७	९	२०	२०	९

———

ग्रह गण धर्म

गुण धर्म	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
वर्ण	क्षत्रिय राजा	वैश्य	क्षत्रिय	शूद्र	ब्राह्मण	ब्राह्मण	शूद्र	निषाद	निषाद
अन्यमत	,,	,,	,,	,,	,,	,,	म्लेच्छ	म्ले०	म्ले०
अन्यप्रकार	राजा	तपस्वी	सुनार	वनिया	वैश्य	वैश्य	शूद्र	निषाद	निषाद
लिंग	पुरुष	स्त्री	पुरुष	स्त्री	पुरुष	स्त्री	स्त्री	पुरुष	पुरुष
मतांतर	,,	,,	,,	नपुंसक	,,	,,	नपुंसक	स्त्री	नपुंसक
,,	,,	,,	,,	स्त्री	,,	,,	पुरुष	,,	,,
चर आदि	स्थिर	चर	चर	द्विस्वभाव	स्थिर	चर	स्थिर पक्षी	चर	पक्षी
अन्यमत	,,	,,	,,	,,	द्विस्वभाव	स्थिर	द्विस्वभाव	चर	×
गुण	सत्व	सत्व	तम	रज	सत्व	रज	तम	तम	तम
ह्रस्व दीर्घ	सम	ह्रस्व	ह्रस्व	दीर्घ	दीर्घ	सम	ह्रस्व	दीर्घ	दीर्घ
रंग	रक्त	गौरस्वेत	रक्त	नील हरित	पीत	स्वेत	नील सुन्दर	नील	धूम्र
मतांतर	,,	स्वेत	,,	श्याम	पीतभूरेरंगका	,,	कृष्ण	कृष्ण	कृष्ण
,,	ताम्र	,,	अतिरक्त	हरित	,,	चित्र	,,	,,	,,
आकार	चतुरस्र	वर्तुल स्थूल	चतुष्कोण	वृत	वृत	दीर्घ	दीर्घ	दीर्घ सर्पाकार	पुच्छ
अन्यमत	चतुष्कोण	लघुवृत्त	डमरु सदृश	त्रिकोण	दीर्घवृत अंडा सदृश	अष्टकोण	सूर्पाकार	दीर्घ रेखा तुल्य	×

अन्यमत	चौकोर	वृत गोल	कृश	मध्य	त्रिकोण	दीर्घवृत	अष्टकोण	चौकोर	दीर्घ लम्बा
समय	मध्यान्ह	अपरान्ह	मध्या०	प्रभात	प्रभात	अप०	अप०	अप०	अप०
धातु	सुवर्ण	रौप्य	सुवर्ण	कांसा आदि	हीर सुवर्ण	रौप्य	लोह	लोह	लोह
				मिश्र धातु					
अन्यमत	ताम्र	कांसा	ताम्र	रांगा	सुवर्ण	,,	,,	,,	,,
,,	पीतल	,,	,,	मिश्रित धातु	,,	,,	,,	,,	,,
अन्य धातु	पाषाण	खारी	कृत्रिम	बिखरी	सुनहली	बिल्लोर	लोह	संखिया	
		मिट्टी	मूंगा	मिट्टी	रेत	कांच या	सदृश		
						कृत्रिममोती	रेत		
रत्न	शिला	घृतपात्र	प्रवाल	मृत्पात्र	मनसिल	मुक्ता	लोहपात्र	वैडूर्य	
	सूर्यकांत	चंद्र कांत				स्फटिक	नीलमणि	×	×
						मरकत			
अन्य	मोती	चांदी	तामा	कांच	सुवर्ण	चांदी	नीलम		
स्वाद	तिक्त	क्षार खारा	कटु	सर्वरस	मधुर	अम्ल	कषाय	कषाय	कषाय
रस							क्वाथ		
अन्य	कटु	लवण	कटु	कटु	मिष्ट	अम्ल	तीक्ष्ण	तीक्ष्ण	
,,	कड़वा	खारा	कटु	मिश्रित रस	मधुर	खट्टा	तिक्त	तिक्त	
सौम्यादि	उग्र	सौम्य	उग्र	शुभ	शुभ	शुभ	पाप	पाप	पाप
वातपित्त	पित्त	श्लेष्मा	पित्त	सम	सम	कफ	वायु	वायु	वाय

गुण धर्म	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
पाद	चतुष्पद	वहुपद	चतु०	द्विपद	द्विपद	द्विपद	अपद	अपद	अपद
अन्य	,,	,,	,,	,,	,,	,,	भुजंग	वहुपद	
युग्मादि	अकेला	अ०	अ०	युग्म	यु०	यु०	यु०	यु०	यु०
भूमि	पशुप्रायः	जलभूमि	दग्ध	श्मशान	देव तालाब	जल	ऊसर	ऊसर	ऊसर
स्थान	बन	जल	बन	ग्राम	ग्राम	ग्राम	संधि	विवर	विवर
अन्य	,,	,,	,,	,,	,,	जल	वन	झीलों वाली भूमि	
,,	आकाश में	जल में	भूमि	छेद वाला स्थान विना कांटा	आकाश	जल	युद्ध भूमि	छेद वाला स्थान विना कांटा	
बलीग्रह के स्थान	जमीन	बीच में	भूमि	बीच में	आकाश	आकाश	भूमि		
अवस्था	वृद्ध	युवा	युवा	युवा	वृद्ध	युवा	अतिवृद्ध	वृद्ध	वृद्ध
अन्य	,,	मध्य	,,	शिशु	वृद्ध	मध्य	वृद्ध	वृद्ध	वृद्ध
धातु मूल चिंता	मूल	जीव	धातु	जीव	जीव	मूल	मूल	धातु	धातु
अन्य	धातु	मूल	,,	मूल	,,	जीव	,,	,,	
मूलचिंता	वृक्ष	लता	क्षुद्रधान्य	धान्य तृण	धान्य इक्षु	चिचा	कंटकवृक्ष	कंटकवृक्ष	कंटकवृक्ष
दिशा	पूर्व	वायव्य	दक्षिण	उत्तर	ईशान	आग्नेय	पश्चिम	नैऋत्य	नैऋत्य

वस्तु	भूषण	धातु	पात्र	पात्र	भूषण	धातु	शस्त्र	शस्त्र	
पात्र	रोटी के वर्तन और पटा	सिर के वर्तन	लघुपात्र	दीवाल	धान्य नापने का	जलपात्र	रणभूमि	सर्प या चीटी का व मीठा	
शरीर की धातु	अस्थि	रुधिर	मज्जा	त्वक	वसा	वीर्य	स्नायु		
अन्न	धान्य	गेहूँ	कुल्थी	जो	धान्य	धान्य	मूंग	उर्द	
कद	मध्यम	छोटा (ओछा)	ओछा (छोटा)	लंबा	लंबा	मध्य	ओछा	लंबा	
सींग	टूटा	सींगरहित	तीखे	टूटे	लम्बे	लम्बे	टेढ़े	टेढ़े	
अन्यमत	झुके हुए	चपटा	ओछे	झुके	,,	,,	टूटे	खंडित	
कहाँ का भूषण	शिर का	सिर	बाहु	हाथ	कर्ण	बाहु	चरण	चरण का	
ऋतु	ग्रीष्म	वर्षा	ग्रीष्म	शरद	हेमंत	वसंत	शिशिर		
अवधि	६ मास	२ घड़ी या क्षण	१ दिन	२ मास	१ मास	१५ दिन	१ वर्ष या १८ मास	१ वर्ष या ३ मास	
आयु	५०	७०	१६	२०	३०	७	१००	१००	१००
योजन	८	२१	७	८	१०	१६	८	०	०
अन्यमत	८	१	,,	,,	६	,,	२०	२०	०
किरण (प्रकाश)	५	२१	७	६	१०	१६	४	४	० +

गुण धर्म	सूर्य	चंद्र	मंगल	वुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
अन्यमत	५	२१	१४	६	१०	२१	४	४	+
मैंकिरण	५	६	८	५	१॥	॥	२	१२	
गति	पादचारी	मंदगति घिसट कर	पादचारी	उड़ने वाला	पादचारी	पादचारी	पंगु (लंगड़ा)	मंदगति घिसट कर	
अन्यमत	घूटने से चले	बहुत जल्द	पांव से	पांव से	पांव से	पांव से	घुटने से चले		
ग्रह रोग	उदर रोग	छाती दर्द जुखाम	सिरोरोग संग्रहणी शीतज्वर	कांख बिलाई	बवासीर	नेत्ररोग	वात पंगुता	क्षयरोग +	+
अन्य अन्य	पिशाच पीड़ा	+	खाल निकलने वाला रोग				स्वांस खांसी क्षय	+	
दृष्टि	ऊपर	सरल	तिरछी	नीचे	सरल	नीचे	वक्र	वक्र	
कारक	पिता	माता	भ्रातृ	मामा	पुत्र	स्त्री	मृत्यु	+	
अंग	उदर	छाती	मस्तक	गर्दन कंधा चेहरा	नितम्ब (पुट्ठे)	चेहरा (मुख) कंधे	जांघ	टांगे	
अन्यमत	,,								
,,	कूख	,,	,,	भुजा	ठोड़ी के नीचे	मुख	,,	कंठ	पांव
५ अवयव			मुख	पाद	देह	जिह्वा	श्रोत्र		
पंचेद्रिय			नेत्र	जिह्वा	कर्ण	त्वचा	घ्राण		
विषय			रूप	रस	शब्द	स्पर्श	गंध		

ज्ञानगुण			३	२	५	४	१		
शस्त्रधार	एक ओर	दोनो ओर	एक ओर	दोनों ओर	दोनों ओर	१ ओर	१ ओर	राशितुल्य	
तिल लांछन	कूल्हे पर	मस्तक	पीठ	कोख	भुजा (कंधा)	चेहरे पर	जंघा	पांव में	
अन्यमत	कमर	माथा	पृष्ठ	कांख	कंधा	वदन	जंघा	पद	पद
तिललांक्षनदिशा	दक्षिण भाग	वाम	दक्षिण	दक्षिण	दक्षिण	वाम	वाम	वाम	
लांछन	ज्योतिपुष्प	अर्कपुष्प	तुअर	अगस्त	अरंड	इमली	धतूरा		
तिलस्वरूप	वत	वत	दालवत	पत्रवत	पत्रवत	पत्रवत	पत्रवत		
तत्व	पिता	माता	अग्नि	पृथ्वी	आकाश	जल	वायु		
अन्यमत			,,	जल	,,	वायु	पृथ्वी		
अभक्षादि	अभक्ष	भक्ष	अ०	भ०	भ०	भ०	अ०	अ०	
फल	फलरहित	फलयुक्त	रहित	युक्त	युक्त	युक्त	रहित	रहित	
वृक्षादि	वृक्ष	लता	वृक्ष	लता	वृक्ष	लता	लता	लता	
जल	निर्जल	जलाधार	नि०	स्वल्पजल	स्व०	जला०	नि०	नि०	
लोक	पाताल	मर्त्यलोक	पा०	आकाश	आ०	पा०	पा०	पा०	
मास	आषाढ़	सावन	भादों	क्वार	कातिक अग० पूष	जेठ	माघ फागुन	चैत्र वैशाख	
रहने वाला	अग्नि पर	जल के नीचे	अग्नि पर	भमि मध्य	आकाश में	जल के नीचे	तिरछे रहने वाला	तिरछे	

अप्रकाश ग्रह का विचार

राο अंο कο विο

ये ग्रह कल्पित हैं। सूर्य स्पष्ट + ४ – १२ – २० – ०
=धूम्र। (१२ राशि–धूम्र)=व्यतीपात। व्यतीपात + ६ राशि=परिवेश या परिधि। (१२ राशि—परिवेष)=इन्द्र धनुष, इन्द्र धनुष + १६–४०=ध्वज

अप्रकाश ग्रह	स्वग्रह	उच्च	उच्चांश	निच्च	अहिकी
१ धूम्र	४	५	०	११	मित्रराशि
२ व्यतीपात	५	११	०	५	२–७
३ परिवेष	४	३	०	६	३–६
४ इन्द्रचाप	५	६	०	३	६–१०
५ ध्वज	०	८	०	३	शत्रुराशि ४
६ अहि	११	८	०	२	

लग्न के अनुसार शरीर के लक्षण

मेष=मस्तक के सिरे पर चोट आदि के चिन्ह, दुबला शरीर, छोटा माथा, ऊँचा कद।

वृष=कपाल चौड़ा, गाल फूले, मध्यम कद, गठीला बदन।

मिथुन=कमर के नीचे पतला, चिकने गाल, सुन्दर बदन, छोटा कद, दाढ़ी कम।

कर्क=सामान्य बदन, ऊंचा कद।

सिंह=ऊंचा कद, क्रूर स्वभाव, मस्तक पर चोट, माथा बड़ा, कुछ छोटे नेत्र।

कन्या=दुर्बल स्वरूप, छोटा कद।

तुला=कद मध्यम, मस्तक बड़ा, पुष्ट शरीर।

वृश्चिक=कद मध्यम, मस्तक में चोट या विस्फोट का चिन्ह, अच्छा स्वभाव मुख पर कुछ लंबाई।

धन=कद लम्बा, शरीर दुबला, मुंह पर तिल के चिन्ह, गोरा बदन।

मकर=मुख छोटा, सुन्दर मुख, मुख पर तिल आदि के चिन्ह, ऊँचा कद, सांवला रंग।

कुंभ=दुर्बल, गाल बैठे हुए, मुख में रूखा पन, कद मध्यम।

मीन=गठीला बदन, ठिंगना कद, अच्छे वक्षस्थल, अच्छी बुद्धि।

नक्षत्र के अनुसार शरीर के अंग	मतांतर
(१) अश्विनी=पांव का ऊपरी भाग	=हथेली या पग तली
(२) भरणी=पांव का तलुवा	=पांव की अंगुलियां
(३) कृतिका=सिर	=सिर

२

नक्षत्रानुसार शरीर के अंग	मतान्तर
(४) रोहिणी =कपाल	=ललाट
(५) मृगशिरा=भौंह	=भौंह
(६) आर्द्रा=नेत्र	=नेत्र
(७) पुनर्वसु=चेहरा	=नाक
(८) पुष्य=कर्ण	=कान
(९) श्लेषा=कर्ण	=ओंठ
(१०) मघा=ओठ और मुंह का ऊपरीभाग	=दाढ़ी
(११) पूर्वाफाल्गुनी=दाहिनी बांह	=अंगुली
(१२) उत्तराफाल्गुनी=बाईं बांह	=कंठ
(१३) हस्त=अंगुलियां	=छाती
(१४) चित्रा=गर्दन	=स्तन
(१५) स्वाती=छाती	=पेट
(१६) विशाखा=स्तन मुख	=पेट के नीचे का भाग
(१७) अनुराधा=उदर	=नितम्ब (चूतड़)
(१८) ज्येष्ठा=दक्षिण पार्श्व	=शिश्न
(१९) मूल=वाम पार्श्व	=अंडकोष
(२०) पूर्वाषाढ़ा=पुट्ठे	=अंडकोष के नीचे का भाग
(२१) उत्तराषाढ़ा=	=घुटने
(२२) श्रवण=मूत्रेन्द्रिय	=जंघा
(२३) धनिष्ठा=गुदा	=पांव
(२४) शतभिषा=दाहिनी जांघ	=पीठ
(२५) पूर्वाभाद्रपद=बाईं जांघ	=कूल्हे चूतड़ का ऊपर का भाग
(२६) उत्तराभाद्रपद=घुटने	=टखना
(२७) रेवती=टखने	=पांव का अग्रभाग

———

द्रेष्काण के अनुसार शरीर के अंग

प्रथम द्रेष्काण के अंग

द्वितीय द्रेष्काण के अंग

तृतीय द्रेष्काण के अंग

राशि स्वरूप

(१) मेष—चतुष्पद मेढ़ा अग्नि तत्व, चर, पित्तप्रकृति, दृढ़अंग, रक्तवर्ण, बड़े शब्द वाला, उग्रस्वभाव, दिनबली, पूर्व का स्वामी, क्षत्रियवर्ण, रूखा न्यून भोग, न्यून प्रजा, विषम उदय, यह मेढ़ा है। कालपुरुष का सिर है। भेड़ बकरी घूमने का स्थान जहाँ छोटी झाड़ी, छोटी पहाड़ी और खनिज हो।

(२) वृष=बैल, मुख, दक्षिण का स्वामी, स्थिर, स्त्री, शीत स्वभाव, वायु तत्व, रात्रिबली, चतुष्पद, बड़ा शब्द, श्वेतवर्ण, विषम उदय, अच्छी भूमि में रहे, पृथ्वी पर विचरे, रूक्ष, मध्यम संग, मध्यम प्रजा, वैश्यवर्ण, शुभ, खेत मिली जगह पहाड़ चरागाह कृषि लायक और घास की भूमि।

(३) मिथुन=गर्दन और कंधा, बीना लिये स्त्री, गदा लिये पुरुष, स्त्री भोग का स्थान, नाचने और जुआ खेलने का स्थान, गाने बजाने और नाटक आदि का स्थान, वायु तत्व, तोते सदृश हरा रंग, स्त्री पुरुष दो, द्विपद, पश्चिम दिशा का स्वामी, विषम उदय, मध्यमरति, मध्यम संतान, वनचारी, द्विस्वभाव, उष्ण स्वभाव, शूद्र, दीर्घ शब्द, उग्र, दिन का स्वामी, स्निग्ध शरीर।

(४) कर्क=केकड़ा, छाती, जलाशय भूमि, गीली खेती, रेतीली जगह, देव व उनके साथी, स्त्रियों का स्थान, चर, स्त्री, पाटल (गुलाब) वर्ण, बहु संभोग, बहुप्रजा, बहुपद, शब्दरहित, जलचारी, ब्राह्मण, कफप्रकृति शुभ, स्निग्ध शरीर, रात्रिबली, समान उदय, उत्तर दिशा।

(५) सिंह=सिंह, हृदय पहाड़ जंगल न जाने लायक ऊंची-नीची जगह गुफा, भयानक स्थान, शिकार और मृत्यु का स्थान, दृढ़ांग, पीत वर्ण, स्थिर, पुरुष, दिनबली, अग्नितत्त्व, गर्म स्वभाव, पित्त प्रकृति रूक्षदेह, बड़ा शब्द अल्प संभोग, अल्प संतान, चौपाया, सम उदय, शैलचारी, धूम्रवर्ण, उग्र, क्षत्रिय वर्ण, पूर्व दिशा।

(६) कन्या=एक नाव में एक कन्या मसाल लिये बैठी है जो दूसरे छोर को जा रही है। पेट, भोग का स्थान, मन बहलाने का स्थान, सुन्दर बगीचा स्त्री स्वभाव, रात्रि बली द्विपद, पांडुवर्ण, वायु तत्व, शीत स्वभाव, उष्ण, रूक्षदेह, अल्प संतान, अर्द्धशब्द, सम उदय, वैश्य, शुभभूमि, शुभ।

(७) तुला=तराजू, नाभि और कमर एक आदमी शहर की गली में तराजू लेकर बैठा है। व्यापार का सौदा करता हुआ। चर, उष्ण स्वभाव, वायु तत्व, स्निग्ध देह, चित्रवर्ण, समोदय, वनचारी, अल्प संग, अल्प संतान, शब्दरहित, द्विपद, उग्र, दिनबली पश्चिम का स्वामी, शूद्र वर्ण।

(८) वृश्चिक=विच्छू भोग इंद्रिय और गुदा, छेद,, गुफा जहाँ रेंगने वाले जीव चलते हैं, छछुन्दर की टेकड़ी, व भीठा, स्वेत वर्ण, स्त्री, स्थिर, जल तत्व

शब्दरहित, बहुपाद. रात्रिवली अत्यंग संग, अतिप्रजा, कफ प्रकृति, स्निग्ध शरीर, समोदय, जल में विचरण, ब्राह्मण, उत्तर दिशा ।

(९) धन=आधा मनुष्य आधा घोड़ा, जांघ, सेना का कार्य या लड़ाई होने का स्थान, पुरुष पर्वतचारी, सोने कैसा रंग, बड़ा शब्द, अल्पभोग अल्पसंतान, द्विपद, अग्नि तत्व, उग्र स्वभाव, दृढ़ शरीर, पित्त प्रकृति, रुक्षसम उदय, दिनवली, क्षत्रिय, पूर्व दिशा ।

(१०) मकर=मगर घुटने, नदी जलाशय और बीहड़ स्थान, पिंगल वर्ण पृथ्वी तत्व, चर, अर्द्ध शब्द, अल्पसंग, अल्पप्रजा, वायु तत्व, रात्रिवली, स्त्री, रूखा शरीर, शीत स्वभाव, विषम उदय, वैश्य. दक्षिण दिशा, शुभ भूमि ।

(११) कुंभ=आदमी पानी का घड़ा लिये, पानी ढोने वाला टांगें पानी का स्थान बाँध स्थान जहाँ हल्के प्रकार का अन्न होता है झाड़ियों, स्थान जहाँ पक्षी या स्त्रियाँ या जुआड़ी एकत्र होते हैं कर्बुर वर्ण, वनचारी मध्यम-संग, मध्यम प्रजा, स्थिर, पुरुष, वायु प्रकृति, तीक्ष्ण-उष्ण-स्वभाव, स्निग्ध शरीर अपद. दिनवली, वायु तत्व, विषम उदय, स्थिर शूद्रवर्ण, पश्चिम दिशा, सम धातुखण्ड स्वर ।

(१२) मीन=मछली पांव दो मछली एक के मुंह में दूसरे की पूँछ, जलाशय-नदी तालाब मंदिर धार्मिक और पवित्र आदमियों के रहने का स्थान, जलचारी शब्दरहित रात्रिवली अतिसंग, अतिप्रजा कफप्रकृति स्निग्ध, ब्राह्मण वर्ण, उत्तर दिशा, पद रहित ।

चर आदि राशियों का फल

चर राशि=शीघ्र फलदायक है ।

चर राशि का लग्न या चर लग्न में चन्द्र=इच्छितवस्तु का लाभ, युद्ध, पदार्थ नाश, रोग, नाश आना जाना बंदी का मोक्ष हो, प्रवासी चल पड़ा। चर लग्न में शीघ्र ४-५ दिन में कार्य हो। रात्रिवली चरराशि में प्रकृति बल यथा स्थिर रहता है ।

स्थिर राशि का फल धीमा (मन्द) होता है ।

स्थिर लग्न या स्थिर लग्न में चंद्र=खोई हुई वस्तु अपने स्थान में रहती है, रोग शांत नहीं होता, शत्रु से पराजय भी नहीं होती, न मारा गया, न बंधा न आया, न स्थान से चला, न शत्रु का भय, न कष्ट है केवल अच्छी तरहठ हरा हुआ है। उसमें स्थिर कार्य की सिद्धि । इसमें दुगुना प्रकृति बल है । दिनवली ।

द्विस्वभाव=इसमें पूर्वार्द्ध में स्थिर और उत्तरार्द्ध में चर का गुण है । इसके फल में साधारण से कुछ अधिक समय लगता है। द्विस्वभाव लग्न हो

या द्विस्वभाव लग्न में चंद्र हो तो चोरी गई वस्तु की प्राप्ति, इच्छित लाभ, वंध मोक्ष, गमन आगमन विलम्व से होता है। शत्रु की सेना बलवान होती है, राजा कलह को छोड़ देता है, रोगी अच्छा हो जाता है। इसमें मिला हुआ फल होता है। शुभग्रह की दृष्टि से शुभ फल होता है। अशुभ ग्रह की दृष्टि से अशुभ फल होता है। संध्यावली।

शीर्षोदय राशि	-३-५-६-७-८-११	दिन को जागते हैं		=दिनवली
पृष्ठोदय	,, १-२-४-९-१०	रात्रि	,,	=रात्रिवली
उभयोदय (शीर्ष पृष्ठोदय)	-१२	दिन-रात	,,	=दिन-रातवली =संध्यावली
द्विपदराशि	३, ६-७, ११	सरल दृष्टि		=लग्न में बली
चतुष्पद	१, २, ५, ६	तिरछी	,,	=दशममें ,,
पक्षी	१०-१२	ऊपर	,,	=चतुर्थ में ,,
बहुपद	४-८	नीचे	,,	=सप्तम में ,,

तत्व मैत्री=	मित्रआपस में	शत्रु
	पृथ्वी + जल	जल + अग्नि
	वायु + अग्नि	पृथ्वी + वायु

लग्न में	पुरुषराशि	और	बुध गुरु बली
चतुर्थ में	चल ,,	,,	शुक्र चंद्र "
सप्तम में	बहुपद ,	,	शनि राहु ,,
दशम में	चतुष्पद ,	,	सूर्य मंगल ,,

ग्रह उच्च का	=द्रव्य लाभ कराते हैं	प्रकृतिबल से	१०	गुना	बली
स्वगृही	=मैत्री, ऐश्वर्य प्राप्त	, ,	२	,	,
मित्रक्षेत्री	=मैत्री	, , ,	१	,	,
शत्रुक्षेत्री	=विपत्ति और शत्रुता बढ़ावे	,	$\frac{1}{2}$	,	,
नीचक्षेत्री	=द्रव्य हानि दुष्ट फल	, ,	$\frac{1}{4}$	,	,

आरूढ़ छत्र या केन्द्र में शुभग्रह हो तो कार्यसिद्ध कर धन प्राप्त कराता है। शुभग्रह बलवान होने से उपरोक्त अधिक फल की वृद्धि करता है। उच्च का मित्र क्षेत्री आदि हो तो बहुत धन लाभ कराता है और कार्य को अच्छा सिद्ध करता है। छत्र आरूढ़ और केंद्र में पापग्रह विपत्ति करते हैं। पापग्रह बलवान हों तो विपत्ति को बढ़ाते हैं। शत्रु या नीचक्षेत्री बली पापग्रह हो तो विपत्ति को और भी अधिक बढ़ा देते हैं।

(१) दीप्त=उच्च का ग्रह =कार्य सिद्ध करे

(२) दीन=निच्च ,, =दुःख प्राप्ति

(३) मुदित=मित्रक्षेत्री ,, =महा आनंददायक

(४) स्वस्थ=स्वक्षेत्री ग्रह =कीर्ति और धनप्रद
(५) सुप्त=शत्रु , , =शत्रु भय दुःख
(६) पीड़ित=अन्य पापग्रह से आक्रांति =धनहानि
(७) मुषित=अस्तंगत =कार्य और धननाश
(८) परिहीन=नीचाभिलाषी =कार्य नाश
(९) सुवीर्य=उच्चाभिलाषी =रत्न और बाहन लाभ
(१०) अधिवीर्य=अधिक रश्मि या शुभांशक में =मित्र धन एवं राज्यलाभ

चंद्रबल विचार=पूर्णचंद्र=पूर्णबल। शुक्ल पक्ष की १० से कृष्ण पक्ष की ५ तक=पूर्णबल। शुक्ल पक्ष १ से १० तक=मध्यमबल। कृष्ण पक्ष की ५ से अमावास्यातक=क्षीण चंद्र।

बली चंद्र=शुभग्रह चंद्र को देखता हो तो चंद्रबल बढ़ता है।

ग्रहों का उत्तरोत्तर बल=बुध, मंगल, शनि, गुरु-शुक्र, चंद्र, सूर्य, राहु ये प्रत्येक ग्रह उत्तरोत्तर बलवान होते हैं। जैसे बुध से मंगल बली इन दोनों से शनि बली इत्यादि।

असमर्थग्रह=जो निच्च का हो, अस्तंगत हो, पापग्रहों से युक्त हो, युद्ध में शत्रु से पराजित हो, जिसके अल्प अंश शेष रह गये हों या जो बलहीन हो ऐसा ग्रह कार्य करने में कुछ भी समर्थ नहीं होता।

ग्रह फल विचार में=चंद्र सदैव=बीज। लग्न=पुष्प,अंश (नवांश)=फल। भाव=स्वाद के तुल्य है।

ग्रहस्वरूप

सूर्य=पुरुष, क्षत्रिय (राजा) दिनबली, उग्र (प्रचंड) सत्व प्रकृति स्थिर, पाटलवर्ण तिक्तरस, पित्त अधिक, शूर, वृद्ध, पिंगलनेत्र, चतुर, सुन्दर रूप, थोडे बाल, मध्यम गाल, चतुष्पद का स्वामी, पूर्वदिशा, पशुभूमि, वन में विचरने वाला, मूल वृक्षादि का स्वामी, हड्डीक्षार।

चंद्र=स्त्री, वैश्य, गोरवर्ण, मृदुवाणी, निर्मल वुद्धि, सुन्दर नेत्र, घुँघराले बाल, शुभ श्वेत प्रभा, तपस्वी, जलचर, अपरान्ह का स्वामी, धातु का स्वामी कफ प्रकृति, सत्व प्रकृति, वायुकोण, बड़ा पुष्ट युवा, जलयुक्त पृथ्वी क्षार (ऊसर) भूमि का स्वामी सर्प, तथा रूप्य का स्वामी, स्त्रियों का अधिपति, रुधिर क्षार।

मंगल=पुरुष, कटु स्वभाव, तम प्रकृति, युवा, उग्र, रक्त वर्ण, पित्त प्रकृति मध्यान्ह बली, चोपाया, चौकोर, व्यंग, कटुरस प्रिय-धातु का स्वामी, स्वर्णकार दग्ध पृथ्वी, वनचारी, उदारचित्त, चपल,पशुपालक उग्र वुद्धि, पिंगलनेत्र, निर्दय, बहुत गर्व वाला, दक्षिण दिशा।

बुध=स्त्री बाल्य अवस्था, ग्रामनिवासी नीलवर्ण, सुवर्ण गोलाकार सम धातु, श्मशान पृथ्वी, प्रभात बली, शूद्र पक्षियों का स्वामी, रसज्ञ, चतुर, दयालु काली कमर वाला, नाड़ियों से व्याप्त, शरीर, सूक्ष्म शरीर, कलहकारी, मृदुवाणी, कुतूहलकारी, सुखी, उत्तर दिशा।

गुरु=पुरुष, ब्राह्मण पीतवर्ण, द्विपद, ग्रामचारी मधुर रस, सम धातु, सत्व प्रकृति, वृद्ध महाशरीर, सुन्दर वर्ण, बहुत चर्बीवाला; रत्न सहित, देवमंदिर गोत्र, जीव, शुभ, ईशान दिशा, सुनहरा बाल, प्रभातबली, वणिक।

शुक्र=स्त्री, शुभ ब्राह्मण मध्य अवस्था, हाथी कैसी चाल, जलचारी, कफ प्रकृति, अम्ल, अपरान्ह का स्वामी, रजोगुणी, मूल का स्वामी, अग्निकोण, मध्य अवस्था, कामदेव का स्वामी, जल की पृथ्वी का स्वामी, सुन्दर केश, कमलनेत्र, स्निग्ध कांति, श्वेतवर्ण।

शनि=स्त्री शूद्र संध्या का स्वामी, पक्षी स्थिर क्रूर बड़ा वृद्ध, नीलवर्ण लोह का स्वामी, वायु प्रकृति, वनचारी, सम धातु पश्चिम दिशा, जिस स्थान में भस्म तृण आदि हो उस पृथ्वी का स्वामी, बड़ा लम्बा, मलीन काला शरीर, जटाधारी, कठोर रोम और बाल, दुष्ट स्वभाव।

राहु=शनि के समान है। जाति निषाद, नैॠत्यकोण सर्प अस्थि।

केतु=अनेक रूपधारी, शिखा वाला है शनि के समान ही गुण हैं।

संयुक्त-असंयुक्त आदि ८ प्रकार के प्रश्न

जब कोई प्रच्छक आता है प्रश्न करते समय जब वह अपना कोई अंग स्पर्श करता है उसके अनुसार ८ प्रकार से फल का विचार होता है। ८ प्रकार से विचार की संज्ञा और फल नीचे दिया जाता है।

(१) संयुक्त=अपने शरीर को स्पर्श करता हुआ प्रश्न करे उसकी संयुक्त संज्ञा हुई।

फल=लाभ कारक है।

(२) असंयुक्त=प्रच्छक मार्ग में, शयनागार में हो या किसी प्रकार के वाहन में बैठा हुआ हो, श्रद्धाहीन हो, हाथ में कोई फल न लिया हो।

फल=बहुत दिनों के बाद लाभ आदि सुख होता है।

(३) अभिहित=प्रश्न समय बाँयें हाथ से बाँया अंग स्पर्श कर पूछे।

फल=हानिकारक।

(४) अनभिहित=अपने हाथ से दूसरे के शरीर का स्पर्श कर पूछे।

फल=कार्य की हानि।

(५) अभिधातिक=मस्तक,कटि,हृदय,हाथ व पाँव को मलता हुआ पूछे। फल=शोक संताप कारक।

(६) आलिंगित=दाहिने हाथ से अपने दाहिने अंग को स्पर्श करता पूछे। फल=लाभ आदि सुख कारक।

(७) अभिधूमित=दाहिने या बाँयें हाथ से सब अंगों को स्पर्श करता पूछे।

फल=किंचित लाभ तथा मित्रों का आगमन होता है।

(८) दग्ध=रोता हुआ दुःखी, भय से व्याकुल, नीचस्थल के समीप विना भक्ति भाव के पूछे।

फल=शोक-संताप दुःख पीड़ा एवं अति हानिकारक है।

उपरोक्त ८ प्रकार से संयुक्त आदि संज्ञा दी है उनका और भी उपयोग अनेक स्थानों का फल जानने के लिए दिया इससे इनको यहाँ जान लेना आवश्यक है। इसका उदाहरण मूक प्रश्न विषय में देखिये।

अंगों के स्पर्श से फल विचार और ज्योतिषी के समीप आदि बैटने से भी फल का विचार होता है। कार्यसिद्ध प्रश्न में जिसका उदाहरण मिलेगा।

ध्वज धूम आदि ८ प्रकार से आय का फल विचार

वर्ग	अ वर्ग	क वर्ग	च वर्ग	ट वर्ग	त वर्ग	प वर्ग	य वर्ग	श वर्ग
आय के नाम	ध्वज	धूम्र	सिंह	श्वान	वृष	खर	गज	ध्वांक्ष
स्वामी ग्रह	सूर्य	शुक्र	मंगल	शनि	गुरु	चंद्र	राहु	बुध

इन आय के वर्ग के प्रत्येक अक्षर की पृथक्-पृथक् संख्या दी है। प्रश्न कर्ता का बालक आदि के मुख से प्रश्न करते समय जो अक्षर आदि में हो उसको लेकर उनकी मात्रा प्रथक कर सबके अंकों का योग करना वह अक्षर पिंड कहलाता है। या प्रच्छक से फूल-फल नदीं या देवता का नाम लेने को कहे उससे अक्षर पिंड वना लेवें। जैसे किसी ने फूल का नाम 'गुलाव' लिया। इसके अंक जोड़े ग + उ + ल + आ + ब + अ=इनके पृथक क्षेपक होते हैं।

२१ + १५ + १३ + २१ + २६ + १९=१०८ और विशेष क्रिया द्वारा उत्तर प्राप्त होता है। जैसे किसी ने प्रश्न किया वह जीवित है या मर गया इसका क्षेपक ४० है। पिंड १०८ + क्षेपक ४०=१४८ ÷ ३=शेष १=जीवित है। २=मर गया।३=अति कष्ट में है।

आय के वर्ग और उनके अंक

आय	वर्ग	वर्ग के अक्षर										
१ ध्वज	अ	अ	आ	इ	ई	उ	ऊ	ए	ऐ	ओ	औ	अं
	अंक	१२	२१	११	१८	१५	२२	१=	३२	२५	१९	२३
२ धूम्र	क	क	ख	ग	घ	ङ						
	अंक	१३	११	२१	३०	१०						
३ सिंह	च	च	छ	ज	झ	ञ						
	अंक	१५	२१	२३	२६	२						
४ श्वान	ट	ट	ठ	ड	ढ	ण						
	अंक	१०	१३	२२	३५	४५						
५ वृष	त	त	थ	द	ध	न						
	अंक	१४	१८	१७	१३	३५						
६ खर	प	प	फ	ब	भ	म						
	अंक	२८	१८	२६	२७	८६						
७ गज	य	य	र	ल	व							
	अंक	१६	१३	१३	३५							
८ ध्वांक्ष	श	श	ष	स	ह							
	अंक	२६	३५	३५	१२							

प्रच्छक केमुख में आदि शब्द पर ध्यान रहे तो उससे प्रातः काल हो तो ब्राह्मण से पुष्प का नाम लेने को कहे। मध्यान्ह में शूद्र से फल का नाम, तीसरा प्रहर हो तो वैश्य से देवता का नाम, संध्या हो तो क्षत्रिय से कोई नदी का नाम लेने को कहे और उस नाम के अक्षरों पर से पिंडांक वना कर भिन्न-भिन्न प्रश्नों के अनुसार उनके क्षेपक द्वारा प्रश्न का उत्तर बताना पड़ता है।

प्रच्छक के मुँह से निकले आदि अक्षर से लग्न

प्रच्छक के आदि में बोले हुए शब्द का आदि अक्षर लेना फिर देखना वह अक्षर कौन से वर्ग में है और उसका वर्गस्वामी कौन है? उस वर्गस्वामी की स्वराशि जो हो उसे लग्न मान कर उससे प्रश्न का उत्तर देना। सूर्य चंद्र को छोड़कर शेष सभी ग्रहों की २-२ स्वराशियां उनमें जो विषम राशि हो उसे लेना जैसे किसी के मुख से आरम्भ का अक्षर च निकला च वर्ग का स्वामी शुक्र है जिसकी स्वराशि २-७ है। यहां ७ विषम लग्न है तो तुला लग्न लेना।

जब सूर्य चन्द्र स्वामी हो तो १ ही प्रश्न होगा, मंगल बुध गुरु हो तो २ प्रश्न होंगे, शुक्र और शनि हो तो अनेक प्रश्न होंगे ऐसा समझना।

जब कई प्रश्न हो तो प्रथम प्रश्न में आदि अक्षर के वर्ग की लग्न से, दूसरे में मध्य के अक्षर द्वारा प्राप्त लग्न से, तीसरे में अन्त के अक्षर द्वारा प्राप्त लग्न से बताना चाहिये।

वर्ग	अ वर्ग	क वर्ग	च वर्ग	ट वर्ग	त वर्ग	प वर्ग	य और श वर्ग
वर्ग स्वामी	सूर्य	मंगल	शुक्र	बुध	गुरु	शनि	चन्द्र
स्वराशि	५	१-८	२-७	३-६	९-१२	१०-११	४
लग्न	५	१	७	३	९	११	४

पुष्प के नाम से लग्न जानना

प्रच्छक से कोई फूल का नाम लेने को कहे। फूल के रंग से लग्न जाने।

लग्न	मेष १	वृष २	मिथुन ३	कर्क ४	सिंह ५	कन्या ६
रंग	लाल	श्वेत	हरा	गुलाबी	धूम्र	चित्र-विचित्र
लग्न	तुला ७	वृश्चिक ८	धन ९	मकर १०	कुंभ ११	मीन १२
रंग	काला	सुनहरा	पीला	चितकबरा	नीलवत	स्वच्छ

आरूढ़ लग्न विचार

प्रश्न में आरूढ़ लग्न का भी विचार होता है। जिस दिशा में प्रच्छक बैठा हो उस दिशा में जो लग्न बताया गया है वह आरूढ़ लग्न है।

ईशान १ १२	पूर्व २	३ आग्नेय ४
उत्तर ११	देवज्ञ	५ दक्षिण
१० ९ वायव्य	८ पश्चिम	७ ६ नैऋत्य

यहाँ बताये हुए चक्र के अनुसार आरूढ़ लग्न होगी। दिशाओं में जो अंक दिये हैं वे राशियों के हैं मान लो प्रच्छक दैवज्ञ के उत्तर दिशा में बैठकर प्रश्न करता है तो आरूढ़ लग्न कुंभ हुआ। यदि पूर्व में बैठकर पूछता है तो वृष लग्न हुआ। ये राशियां यहाँ स्थिर हैं।

सूर्यवीथी विचार
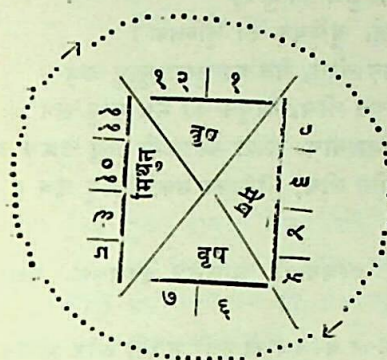
क्रांति मंडल के निकटवर्ती स्थान से मेष, वृष, मिथुन राशियों में बांटा है

मेष वीथी=जब सूर्य २, ३, ४, ५ राशि पर हों

वृष ,, =जब सूर्य १२, १, ६, ७ राशि पर हों।

मिथुन ,, =जब सूर्य ८, ९, १०, ११ राशि पर हों।

अर्थात्

सूर्य की	कर्क-सिंह संक्रांति में	=मेष राशि पर मानो			
,,	कन्या-तुला ,,	=वृष	,,	,,	
,,	वृश्चिक-धन ,,	=मिथुन	,,	,,	
,,	मकर-कुंभ ,,	=मिथुन	,,	,,	
,,	मीन-मेष ,,	=वृष	,,	,,	
,,	वृष-मिथुन ,,	=मेष	,,	,,	

छत्र लग्न

यह लग्न आरूढ़ को ढाकता है इस से इसका नाम छत्र लग्न पड़ा। जिस दिशा में प्रच्छक बैठा है उस आरूढ़ लग्न से सूर्यवीथी तक गिनकर जो संख्या आवे उसे जो तात्कालिक उदय लग्न हो उससे गिनने पर जो संख्या आवे वह छत्र लग्न हुआ।

मान लो किसी ने पूर्व में बैठकर प्रश्न किया तो पूर्व का वृष आरूढ़ लग्न हुआ। उस समय सिंह के सूर्य में तो चक्र के अनुसार सूर्य की मेषवीथी हुई। अब आरूढ़ लग्न वृष से सूर्यवीथी मेष तक गिना १२ आया मान लो तात्कालिक उदय लग्न तुला है। उससे १२ गिना तो कन्या आया। आरूढ़ लग्न वृष का यह कन्या छत्र लग्न हुआ।

मतांतर=आरूढ़ लग्न से सूर्य वीथी तक गिनने में जो संख्या आवे उसे आधा करने से जो संख्या प्राप्त हो उसे तात्कालिक उदय लग्न से गिनकर जो आवे वही छत्र लग्न हुआ। जैसे आरूढ़ लग्न वृष से सूर्यवीथी तक गिना १२

आया। १२÷२=६ उदय लग्न तुला से ६ गिना तो मीन आया। यह भी छत्र लग्न कहा जा सकता है।

छत्र की उच्चराशि=वृष का वृष, कुंभ का कुंभ,
सिंह का सिंह, वृश्चिक का वृश्चिक।

नीच और मृत्यु छत्र=तुला का धन नीच, धन का तुला मृत्यु छत्र।
मेष का मिथुन नीच, मिथुन का मेष मृत्यु छत्र।
कर्क का कन्या नीच, कन्या का कर्क मृत्यु छत्र।
मकर का मीन नीच, मीन का मकर मृत्यु छत्र।

द्रेष्काण का स्वरूप

१ मेष (१) पुरुष अकेला, भयानक शस्त्रधारी लालनेत्र कृष्णवर्ण, रक्षा करने में समर्थ।

(२) स्थूल उदर दीर्घ मुख, लाल वस्त्रधारी स्त्री भूषण और भोजन की शौकीन, प्यासी एक पैर।

(३) क्रूर पुरुष, कपिलवर्ण, दण्डधारी, क्रोधी कला में दक्ष, सिद्धान्त हीन, रक्त अम्बरधारी।

२ वृष (१) स्त्री, टूटी चूड़ी, बड़ा पेट, जले कपड़े बाल घुँघराले कटे, क्रोधी भूषण की शौकीन।

(२) पुरुष खेती हल जोतने वाला, गाय का काम करने वाला, गाड़ी चलाने में चतुर, मलिन वस्त्र, बकरे का सा मुँह।

(३) पुरुष, बड़ापेट, पीला रंग, सफेद दांत, बड़ा शरीर, बकरा तथा मृग का लोभी।

३ मि० (१) स्त्री मासिक धर्म में, संतानहीन, सुन्दर सीने-पिरोने में चतुर, भूषण सहित।

(२) पुरुष बगीचे में रहने वाला धनुर्धारी शूर शस्त्र लिये, गरुड़ के समान मुख।

(३) पुरुष धनुर्धारी, रत्नों वाला, नाचने-गाने-बजाने में चतुर, कविता में दक्ष।

४ कर्क (१) पुरुष हाथी के समान शरीर, सुअर समान मुख, पत्र फल फूल धारण किये।

(२) युवा स्त्री, कर्कशा, जंगल में रोने वाली, सर्पयुक्त सिर पर कमल का फूल।

(३) पुरुष चपटा मुख वाला, स्त्री के पोषण के लिये नाव में बैठा, सर्पों से घिरा, भूषण युक्त।

५ सिंह (१) पुरुष, माता-पिता का वियोग, मलिन वस्त्र, जानवर और पक्षियों को पकड़ने वाला ।

(२) पुरुष भयंकर नाक कुछ झुकी हुई, काला कम्बल लिये, धनुर्धारी घोड़े जैसा रूप ।

(३) पुरुष भालू सरीखे मुख वाला, चपल दाढ़ी वाला, दंड फल, मांस लिये, घुँघराले बाल ।

६ कन्या (१) स्त्री मलिन और दग्ध वस्त्र पहिने, फूल से भरा घड़ा लिये, गुरु के घर जारही ।

(२) पुरुष हाथ में कलम लिये, काला कपड़ा सिर में लपेटे, जमा खर्च का हिसाब करने वाला, शरीर में बाल धनुर्धारी ।

(३) स्त्री गोरे रंग की, साफ धुला दुपट्टा पहिने, ऊंचा कद, मंदिर में जाने को तैयार ।

७ तुला (१) तराजू लिए तौलने में चतुर पुरुष बाजार में दुकान खोले हुए ।

(२) एक पुरुष गिद्ध सरीखा मुख भूखा प्यासा स्त्री-पुत्रों के बाबत सोच रहा ।

(३) पुरुष वन में विचरने वाला छत्र धारण किये हुए सुनहरी तरकस वानर समान रूप फल और मांस लिये ।

८ वृश्चिक (१) वस्त्र भूषण से रहित स्त्री समुद्र के बीच से किनारे की ओर जा रही, मनोहर सर्प से पैर बंधे ।

(२) स्त्री, शौकीन शरीर कछुवा और घड़ा सरीखा, सर्प से घिरी पति के लिए स्थान और सुख की इच्छुक ।

(३) पुरुष मोटा चपटा तथा कछुए के समान मुख, वन का रक्षक वन पशुओं को डराने वाला ।

९ धनु (१) पुरुष घोड़े के समान शरीर वाला, हथियार लिये, साधु जनों के स्थान में रहने वाला, तपस्वियों की रक्षाकर्ता ।

(२) सुन्दर स्त्री, सुवर्ण जैसा रंग, समुद्रों के रत्नों को बीन रही ।

(३) मनुष्य दाढ़ी वाला, चम्पक पुष्प सा वर्ण रेशमी वस्त्र और मृग चर्म लिये हथियार युक्त ।

१० म. (१) पुरुष दोषों से युक्त, जुआड़ी सुअर के समान शरीर-जाल और बंधन लिये, भयानक मुख ऊंट सरीखा चेहरा, मगर सरीखे दाढ़ ।

(२) स्त्री कला में दक्ष, चौड़े कमल नेत्र हरापन लिए श्याम रंग, अनेक वस्तुओं को खोजती, लौह कर्णभूषण ।

(३) पुरुष कम्बल लिए धनुर्धारी, घड़ा कंधे पर रखे ।

११ कुंभ(१) पुरुष कम्बल लिए गिद्ध सा मुख, मृगचर्म लिए भोजन शराब आदि लाया जा रहा है इसकी चिंता ।

(२) स्त्री मलिनवस्त्र, सिर पर घड़ा लिए जली हुई गाड़ी लोहा एकत्र करती हुई ।

(३) पुरुष काला रंग, कानों में बड़े बाल मुकुट पहिने, लोहयुक्त पात्र लिये, त्वचा पत्र गोंद फल लिये ।

१२ मीन(१) पुरुष आभूषण सहित नाव में समुद्र पार कर रहा, रत्न शंख आदि लिए स्त्री को भूषित करने के लिये ।

(२) स्त्री चंपक वदनी दासियों या परिवार से घिरी नाव में बैठ कर पार कर रही जिसमें ऊँची पताका है ।

(३) एक पुरुष नंगा, सर्प से बदन ढका, जंगल में एक खड्ड के समीप रोता हुआ अग्नि से व्याकुल ।

इन द्रेष्काणों से चोर आदि के सम्बन्ध में अनुमान कर पता लगाया जा सकता है ।

प्रश्न पर से समय और दिन जानने का एक और प्रकार

इष्ट को ३$\frac{3}{4}$ खंडों में विभक्त करो । वह खंड सम हो तो दिन, विषम हो तो रात्रि जानना ।

इष्टदिन को उस खंड तक गिनो जो आवे वही वार समझना । जैसे बुधवार को किसी ने इष्ट २५ घड़ी पर प्रश्न किया तो

$$२५ \div \frac{१५}{४} = \frac{२५}{१} \times \frac{४}{१५} = \frac{५ \times ४}{३} = \frac{२०}{३} = ६\frac{२}{३} = ७ \text{ खंड ।}$$

७ विषम=रात्रि । अब बुधवार के दिन प्रश्न था उससे ७ गिना तो मंगलवार आया सुविधा के लिए इष्ट के खंड निम्न होंगे—

खंड=इष्ट	खंड=इष्ट	खंढ=इष्ट	खंड=इष्ट
१=३।४५	५=१८।४५	९=३३।४५	१३=४८।४५
२=७।३०	६=२२।३०	१०=३७।३०	१४=५२।३०
३=११।१५	७=२६।१५	११=४१।१५	१५=५६।१५
४=१५।०	८=३०।०	१२=४५।०	१६=६०।०

अन्य प्रकार

जिस राशि पर सूर्य हो उस राशि से आरंभ कर रात-दिन-संध्या गिनना । सूर्य राशि से आरंभ कर आरूढ़ लग्न तक गिनना । अर्थात जिस

राशि पर सूर्य हो उसे रात्रि, आगे की राशि दिन, उसके आगे की राश, संध्या होगी। इस प्रकार आगे आरूढ़ लग्न तक गिनते जाना चाहिये।

अन्यमत—चंरराशि=रात्रि। स्थिरराशि=दिन। द्विस्वभावराशि=संध्या। ऐसा सबसे बलीग्रह से गिनना बताया है।

८ प्रहर में "ग्रहों" का स्वामित्व (प्रभाव)

प्रहर	१	२	३	४	५	६	७	८
ग्रह	सूर्य	मंगल	गुरु	बुध	शुक्र	शनि	चंद्र	राहु

ये ग्रह पूर्व से लेकर आठो दिशाओं में एक-एक प्रहर रहते हैं। राशि के अनुसार ८ ग्रह=१२ राशि=६० घड़ी। १ ग्रह=१॥ राशि। १ राशि–५ घड़ी।

कुण्डली में ये ग्रह इस प्रकार स्थापित होंगे कि एक भाव में ग्रह है उसके समीप के भाव में दूसरा ग्रह रहेगा परन्तु तीसरा ग्रह १॥ राशि के अंतर पर रहेगा जैसा आगे उदाहरण देखने से पता चलेगा। प्रत्येक दिन सूर्य को मेष के ० अंश पर रखना। सम्पूर्ण दिन-रात्रि के २४ चक्र प्रथक बनेगें। ग्रह क्रम इस प्रकार रहेगा—

भाव	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
ग्रह	सू०	मं०	०	गु०	बु०	०	शु०	श०	०	चं०	रा०	०

भाव ग्रह	समय	राशि घंटा बजे	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
१	प्रातः	६–७	सू	मं	०	गु	बु	०	शु	श	०	चं	रा	०
२	दिन	९–८	सू	मं	०	गु	बु	०	शु	श	०	चं	रा	०
३	,,	८–९	०	सू	मं	०	गु	बु	०	शु	श	०	चं	रा
४	,,	९–१०	०	सू	मं	०	गु	बु	०	शु	श	०	चं	रा
५	,,	१०-११	रा	०	सू	मं	०	गु	बु	०	शु	श	०	चं
६	मध्याह्न	११-१२	रा	०	सू	मं	०	गु	बु	०	शु	श	०	चं
७	दिन	१२–१	चं	रा	०	सू	मं	०	गु	बु	०	शु	श	०
८	,,	१–२	चं	रा	०	सू	मं	०	गु	बु	०	शु	श	०
९	,,	२–३	०	चं	रा	०	सू	मं	०	गु	बु	०	शु	श
१०	,,	३–४	०	चं	रा	०	सू	मं	०	गु	बु	०	शु	श
११	,,	४–५	श	०	चं	रा	०	सू	मं	०	गु	बु	०	शु
१२	संध्या	५–६	श	०	चं	रा	०	सू	मं	०	गु	बु	०	शु
१३	,,	६–७	शु	श	०	चं	रा	०	सू	मं	०	गु	बु	०

१४ रात्रि ७-८	शु	श	०	चं	रा	०	सू	मं	०	गु	बु	०
१५ ,, ८-९	०	शु	श	०	चं	रा	०	सू	मं	०	गु	बु
१६ ,, ९-१०	०	शु	श	०	चं	रा	०	सू	मं	०	गु	बु
१७ ,, १०-११	बु	०	शु	श	०	चं	रा	०	सू	मं	०	गु
१८ ,, ११-१२	बु	०	शु	श	०	चं	रा	०	सू	मं	०	गु
१९ ,, १२-१	गु	बु	०	शु	श	०	चं	रा	०	सू	मं	०
२० ,, १-२	गु	बु	०	शु	श	०	चं	रा	०	सू	मं	०
२१ ,, २-३	०	गु	बु	०	शु	श	०	चं	रा	०	सू	मं
२२ ,, ३-४	०	गु	बु	०	शु	श	०	चं	रा	०	सू	मं
२३ ,, ४-५	मं	०	गु	बु	०	शु	श	०	चं	रा	०	सू
२४ प्रातः ५-६	मं	०	गु	बु	०	शु	श	०	चं	रा	०	सू

अर्क लग्न व घटी

सूर्य-मंगल-गुरु-बुध-शुक्र-शनि-चंद्र-राहु ये ८ ग्रह पूर्व से लेकर आठों दिशाओं में घूमते हैं। इन आठो दिशाओं के प्रहर के अनुसार लग्न नीचे लिखे अनुसार होंगे—

प्रहर दिशा	पूर्व	आग्नेय	दक्षिण	नैऋत्य	पश्चिम	वायव्य	उत्तर	ईशान
लग्न	१	४	७	१०	१	४	७	१०
	२	५	८	११	२	५	८	११
	३	६	९	१२	३	६	९	१२
घटी	२॥	१०	१७॥	२५	३२	४०	४७॥	५५
	५	१२॥	२०	२७॥	३५	४२॥	५०	५७॥
	७॥	१५	२२॥	३०	३७॥	४५	५२॥	६०

चंद्र अवस्था

चंद्र की १२ अवस्थाएँ है उनके नाम नीचे दिये जा रहे है—

(१) प्रवास=प्रवास करना
(२) नाश=धन नाश
(३) मरण=मृत्यु भय
(४) जय=विजय
(५) हास्य=स्त्रियों से विलास
(६) रति=प्रीति प्रसन्नता
(७) क्रीड़ित=सुख
(८) सुप्त=निद्रा कलह पीड़ा
(९) भुक्त=भय
(१०) ज्वरा=संताप
(११) कंपा=हानि
(१२) स्थिरा=सुख

इन अवस्थाओं का नाम के अनुसार ही फल है जैसा ऊपर बताया गया है।

अवस्था जानना=तत्काल चंद्र स्पष्ट कर लेना उसकी राशि को छोड़कर

३

केवल अंशादि को लेकर दुगुना कर ५ का भाग देना। जो लब्धि प्राप्त हो वह गत अवस्था हुई उसके आगे की अवस्था वर्तमान अवस्था हुई।

उदाहरण—चंद्र स्पष्ट ८।१८°।३२'।६" यहाँ केवल अंशादि लिया १८°।३२'।६"×२=३७°।४'।१२"÷५=लब्धि७+१=८ आठवीं अवस्था हुई।

इसके लिए विचार है कि मेष राशि हो तो प्रवास से गिनना। वृष नाश से। मिथुन में मरण से इत्यादि। मीन में स्थिरा से प्राप्त संख्या तक गिनना।

इनका विचार आगे दिया है। चंद्र अष्टम हो तो अवस्था का फल विपरीत होता है।

संक्षिप्त फल विचार

भावफल=जो भाव अपने स्वामी से युक्त या शुभग्रह से युक्त या दृष्ट हो उस भाव की वृद्धि होती है।

भावहानि=जो भाव पापग्रह युक्त या दृष्ट हो उसकी हानि होती है।

शुभफल=लग्न और चंद्र शुभग्रह युक्त या दृष्ट हो तो सब शुभफल।

अशुभफल= ,, पापग्रह ,, अशुभफल।

मध्यम=यदि दोनों में से एक शुभ ग्रह युक्त या दृष्ट हो।

शुभफल=जो ग्रह उच्च-स्वगृही या मित्रगृही हो तो इच्छित फल देते हैं।

कार्यहानि=नीच व शत्रु ग्रहों से कार्य की हानि होती है।

अशुभफल=लग्न आरूढ़ और छत्र के २–६–८ स्थानों में पापग्रह हो तो अशुभ।

शुभफल=यदि केन्द्रों में और २–६–८ घर में शुभग्रह हो।

भावेशफल=भावेश शुभग्रह हो तो अच्छा फल देते हैं भावेश पापग्रह हों तो फल में अंतर पड़ेगा।

लाभ=३, ५, ७, ११ वें घर में शुभग्रह लाभ पहुँचाते हैं।

लग्नेश=लग्नेश छठा हो तो अपनी आत्मा भी शत्रु होती है। अन्य की क्या बात है। लग्नेश अष्टम से मृत्यु और व्यय स्थान में होने से बहुत खर्च कराता है।

भाव से वर्गफल बलवान है=लग्न में शुभग्रहों का वर्ग अधिक है तो भावफल की अपेक्षा शुभफल ही होगा क्योंकि भावफल से वर्गफल बलवान होता है।

प्रच्छक के दिशा का फल

प्रश्न करने वाला यदि पूर्व-पश्चिम-उत्तर-ईशान दिशा में बैठकर प्रश्न करे तो शुभ है।

दक्षिण=दुष्ट फल, अग्निकोण, वायव्यकोण, शून्यफल।

शगुन फल

प्रश्नसमय में मांगलिक दृश्य या विचार हो या दृश्य गोचर हो या सुनाई पड़े तो शुभ होता है। या हंसादि का शब्द सुनाई दे या गज-अश्व आदि दीखें तो शुभ होता है।

ग्रह अनुसार फल की अवधि

सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
६ मास	२ घड़ी	१ दिन	२ मास	१ मास	१५ दिन	१ वर्ष

उपरोक्त फल देने की स्वाभाविक अवधि है, उच्च में उतनी ही घड़ी। स्वगृही=दिन। मित्रगृही=मास। शत्रु या नीचग्रही उतने वर्ष। परन्तु राशि के अनुसार परिवर्तन होगा। चर लग्न है तो पूर्ववत रहेगा। स्थिर में दुगुना और द्विस्वभाव में तिगुना समय हो जायगा। जैसे—प्रश्नलग्न में यदि कार्येश स्वगृही शनि है तो शनि की अवधि साधारणतया १ वर्ष की है। स्वगृही होने से १ दिन का हो गया परन्तु स्थिरराशि में होने से दुगुना समय अर्थात् २ दिन हो जायगा।

अन्यमत=नीच या शत्रुराशि गत ग्रह की जितनी किरणें हों उतने वर्ष। उच्चग्रह की जितनी किरणें उतनी घड़ी। मित्रगृही की जितनी किरणें हों उतने मास। स्वक्षेत्री=उतने दिन। अर्थात् नीचादि ग्रह वर्षों में जो कार्य करेगा वही कार्य उच्च का ग्रह घटियों में करेगा।

फल की अवधि

(१) चंद्र के नक्षत्र से उदय लग्न के नक्षत्र तक गिनने से जितनी संख्या आवे उतने दिनों में प्रश्न का फल होगा।

(२) प्रश्न के समय जो चंद्र हो उस राशि से लग्न तक गिने जितनी संख्या हो उतने दिनों में कार्य होगा।

(३) या चंद्र नवांश से जितनी दूर लग्न हो उतने ही दिनों में कार्य होगा।

कार्य सिद्ध होगा या नहीं

प्रश्न के समय प्रश्नकुण्डली बना कर फिर देखना चाहिये कि प्रश्न किस भाव से सम्बन्ध रखता है। उस भाव का स्वामी कार्येश कहलाता है। उस भाव को जिस सम्बंध का प्रश्न है वह कार्यभाव कहलाता है और जो लग्न प्रश्न-कुण्डली का हो उसका स्वामी लग्नेश कहलाता है।

लग्न से विचार—प्रश्न का विशेष कर लग्न से विचार करना चाहिये।

कार्यसिद्ध योग= (१) लग्नेश लग्न को देखे (२) या लग्नेश कार्य स्थान को देखे (३) या लग्नेश कार्येश को देखे (४) या कार्येश लग्न को देखे (५) या कार्येश कार्यस्थान को देखे (६) या कार्येश लग्नेश को

देखे। इन योगों में कार्य सिद्ध होता है। यदि इनमें चंद्र की दृष्टि हो तो इनमें से एक ही योग कार्य पूर्ण सिद्ध करता है।

(१) लग्नेश कार्येश लग्न में हो (२) या लग्नेश कार्येश दोनों कार्यभाव में हो (३) या किसी स्थान में लग्नेश कार्येश साथ हों (४) या लग्नेश कार्यभाव में हो और कार्येश लग्न में हो (५) लग्नेश लग्न में कार्येश कार्यभाव में हो (६) या लग्नेश कार्येश कहीं हो दोनों की परस्पर दृष्टि हो (७) या लग्नेश और कार्येश उच्च या स्वगृही हों। इनमें से कोई भी योग हो तो कार्य सिद्ध होता है अन्यथा नहीं।

लग्नेश लग्न को देखे और कार्येश कार्यभाव को देखे या चंद्रमा लग्न या लग्नेश को देखे।

कार्येश लग्न में होकर लग्नेश को देखे तो तुरंत कार्य हो।

कार्येश लग्न को, चंद्र को और लग्नेश को भी देखे तो कार्य सिद्ध हो।

लग्न में या कार्यभाव में लग्नेश कार्येश दोनों हों।

पापग्रह योग या दृष्टि रहित पूर्णचंद्र की दृष्टि लग्नेश कार्येश पर हो। तो पूर्ण कार्य सिद्ध हो।

लग्न या कार्यभाव पर ४ शुभग्रहों की दृष्टि हो कार्य सिद्ध होता है।

पापयोग दृष्टि रहित चंद्र और शुभग्रह लग्न या लग्नेश को देखे तो कार्य पूर्ण सिद्ध हो।

उदय लग्न चाहे चर या द्विस्वभाव हो परन्तु लग्न में उच्च का; स्वगृही या मित्रक्षेत्री शुभ ग्रह हो।

लग्न में सौम्यग्रह हो या सौम्यग्रह की दृष्टि हो या लग्न में शीर्षोदय राशि हो।

केन्द्र या कोण में शुभग्रह हों अष्टम स्थान और केन्द्र को छोड़कर चाहे शेष स्थान में पापग्रह हों।

केन्द्र या कोंण में शुभग्रह हों ३-६-११ घर में पापग्रह हों और शीर्षोदय लग्न हो।

चंद्र, शुक्र, बुध, गुरु इनमें से कोई एक भी ग्रह लग्न में बैठ कर अपने उच्च स्थान को देखता हो।

शीर्षोदय लग्न हो शुभग्रह या मिश्र ग्रह से युक्त या दृष्ट हो। शुभग्रह बलवान हों पंचम केन्द्र का धर्मस्थान में सौम्यग्रह हो।

लग्नेश और अष्टमेश दोनों अष्टमस्थान में एक ही द्रेष्काण में हों।

दशम या दशमेश शुभग्रह या शनि युक्त हो।

छत्रलग्न सप्तम या दशम घर में हो यदि उच्च के या स्वगृही या मित्र गृही शुभग्रह वहां हो।

बुध उदय लग्न आरूढ़ छत्र लग्न को देखे।

उच्च का ग्रह उदय आरूढ़ छत्र लग्न को देखे।

छत्र लग्न या आरूढ़ लग्न तीसरे घर में हो।

छत्र या आरूढ़ लग्न ५ या ९ घर में हो।

उदय, आरूढ़ या छत्र लग्न में चंद्र हो।

उदय आरूढ़ या छत्र लग्न में गुरु हो। उदय लग्न में गुरु होने का जितना महात्म है उतना आरूढ़ या छत्र लग्न में नहीं है।

लग्न में गुरु की राशि ९-१२ हो।

छत्र लग्न गुरु युक्त या दृष्ट हो या आरूढ़ से छत्र लग्न ३-११ वां घर हों।

लग्न आरूढ़ और छत्र ये चर हों।

चंद्र से दशम में शुक्र और गुरु से दशम में सूर्य हो।

लग्नेश तथा चंद्र शुभग्रह से इत्थशाल करते हुए केन्द्र या पणफर में हो।

सौम्यग्रह १० और ११ स्थान में हों।

४-९-११-२ भाव के स्वामी अधिक बली हों और लग्न से सम्बन्ध हो।

ग्रह पूर्णबली हो तो पूर्णफल होगा। मध्यमबली से आधा फल। कार्य सिद्ध नहीं होगा—जो इन योगों के विरुद्ध ग्रह योग हो।

मौन कार्य होगा=लग्न या लग्नेश को २ या ३ शुभग्रह देखें या एक भी शुभग्रह लग्न या लग्नेश को देखें तो मौन कार्य हो जायगा।

लग्नेश लग्न को कार्येश कार्य को देखें।

आधा फल=केवल लग्नेश को शुभग्रह देखें।

आधा फल=कार्य भाव पर कार्येश की तथा एक शुभग्रह की भी दृष्टि हो तो आधा कार्य हो।

पाव फल=लग्नेश लग्न को न देखे केवल शुभग्रह देखे तो चौथाई फल होता है।

लग्न या कार्यभाव में शुभग्रह हो और उस शुभग्रह को लग्नेश देखे।

अल्प सिद्धि=यदि लग्नेश और कार्येश दोनो पापग्रह हों तथा एक साथ हों।

कठिनता से कार्य हो=उभयोदय लग्न मीन राशि हो।

कार्य नहीं हो=क्रूर लग्न हो क्रूर वर्ग में हो या पृष्ठोदय लग्न हो।

लग्नेश व लग्न को कार्येश नहीं देखे।

लग्नेश कार्य स्थान को व कार्येश को न देखे।

योग कर्ता ग्रह पापाक्रांत पापयुक्त या पापदृष्ट हो या रश्मि रहित हो।

लग्न में पापग्रह शत्रुक्षेत्रीय या नीच का हो।

लग्न के ६–८–१२ भाव में छत्र लग्न हो या आरूढ़ लग्न हो ।

शत्रु या नीच का ग्रह आरूढ़ छत्र लग्न को देखे ।

पापग्रह आरूढ़ छत्र और केन्द्र में हों तो विपत्ति होगी पापग्रह बलवान् होंगे तो और अधिक विपत्ति पड़ेगी ।

छत्र लग्न ११ में हो तो कार्यनाश यदि इस पर पापग्रह हो तो विशेष हानि यदि शुभग्रह हो तो किंचित कार्य हो ।

लग्न में पापग्रह का घर हो लग्न पापयुक्त या दृष्ट हो और लग्न में पृष्ठोदय राशि हो ।

आरूढ़ से सप्तम चंद्र हो तो कार्य नाश हो ।

कार्यसिद्धि विचार

लग्न १, ३, ६, १२=कार्य सिद्ध । २–४–५–७ विलम्ब से ।

८–९–१०–११=सिद्धि नहीं ।

मतांतर

लग्न ९–१० हो=कार्य सिद्ध, लग्न=१०=सिद्धि नहीं हो ।

लग्नेश–चतुर्थ, पंचम और दशम में=सिद्धि ।

दशम में उच्च का मंगल या सूर्य हो तो=अवश्य सिद्धि हो ।

पंचमेश और चतुर्थेश दशम में=कार्यसिद्धि ।

लग्न मंगल गुरु से दृष्ट हो=कार्यसिद्धि ।

चतुर्थेश या दशमेश वक्री हो तो कार्य में बाधा करे ।

फूल से विचार=कोई फूल का नाम पूछना चाहिये । उसके स्वर संख्या × व्यंजन संख्या + नाम के अक्षर ÷ ९=शेष १=शीघ्र कार्यसिद्ध ०, २, ५ बिलंब से । ४–६–८ कार्यनाश । ३, ७ में मंदगति से कार्य हो ।

अन्यमत से समय=तिथि + वार + नक्षत्र × ३ + ६ ÷ ९=शेष१=पक्ष, २=मास, ३=ऋतु, ४ अयन, ५=दिन, ६=रात, ७=प्रहर, ८ घड़ी, ० शेष =१ मिनट में कार्य होगा ।

अन्य प्रकार=(तिथि + वार + नक्षत्र + प्रहर) ÷ ३=शेष १=सत्व फल कार्य सिद्ध । २=रज=कार्य में विलंब । ३=तम=निष्फल ।

छाया से विचार=(अपनी छाया × ३ + १३) ÷ ८=शेष १=लाभ । २=हानि । ३=सिद्धि । ४=शोक । ५, ७=वृद्धि, ६,८=मरण ।

अन्य=(प्रच्छक के मुंह की दिशा + प्रहर + वार + नक्षत्र) ÷ ८ शेष

१, ५=शीघ्र कार्यसिद्ध । ४, ६=३ दिन में सिद्ध । ३-७=विलम्ब से । २–८=कार्य सिद्ध नहीं हो ।

कार्यनाश=आरूढ़ लग्न से २ व १२ स्थान में क्षत्र हो छत्र पापयुक्त या दृष्ट हो ।

आरूढ़ से छत्र २–६–८–१२ स्थान में हो ।
लग्न आरूढ़ और छत्र में नीच शत्रु ग्रह की दृष्टि हो ।
लग्न आरूढ़ छत्र और केन्द्र में राहु हो ।
लग्न में शनि हो या उस पर सूर्य-मंगल-शनि की दृष्टि हो ।
लग्न में मंगल या शनि हों शत्रु ग्रह से दृष्ट हों ।
लग्नेश स्थित राशि का स्वामी ६–८–१२ घर में हो ।

१, ३, ५, ९, ८ घर में पापग्रह हों तो हानि होगी । यदि इन घरों में शुभग्रह हो तो अच्छा है ।

फल समय=केन्द्र में चर लग्न हो तो शीघ्र, स्थिर लग्न हो तो देर में कार्य होगा ।

चंद्र की दृष्टि और योग से जो समय आवे उस समय में या जब कार्येश लग्नेश का मिलाप हो पंचांग से देखकर निर्णय करना चाहिये ।

लग्न का नवांशेश जितने नवांश पर हो उतनी संख्या जानना । सूर्य से अयन । चंद्र=क्षण । मंगल=दिन । बुध=ऋतु । गुरु=मास । शुक्र=पक्ष । शनि=से वर्ष का अनुमान करना चाहिये ।

कार्येश-लग्नेश का इत्थशाल जिस दिन हो और कार्येश उदय होकर लग्न में हो तथा कार्येश और लग्नेश परस्पर आपस में देखते हों उसी दिन इष्ट कार्य सिद्ध होगा ।

कार्य सिद्ध होने का समय

लग्न स्पष्ट की राशि अंश-कला में सब की कला पिंड बना लेना चाहिये । १२ अंगुल की शंकु लेकर सममूमि में गाड़ कर उसकी इष्टकाल में छाया नापे जो छाया हो उसका कलापिंड में गुणाकर ७ का भाग दे जो शेष बचे इस प्रकार ग्रह जानना —

शेष	१	२	३	४	५	६	७
ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
गुणक	५	२१	१४	६	८	३	११

शेष के अनुसार ग्रह का गुणक लेकर कलापिंड में गुणा कर सूर्य से लेकर उस ग्रह के सब गुणक को योग कर गुणकयोग का भाग देदे जो शेष बचे सूर्य के गुणक आरंभ कर घटाते जाना चाहिये जिस ग्रह का गुणक न घटे वह ग्रह शुभग्रह है तो कार्य सिद्ध होगा । पापग्रह है तो कार्य नहीं होगा । घटाने से शेष बचा है उसके तुल्य समय में कार्य होगा । सूर्य–मंगल=शेष तुल्य दिन । शुक्र चंद्र=शेष तुल्य पक्ष । गुरु=मास । बुध=ऋतु और शनि=वर्ष जानना ।

उदाहरण—लग्न स्पष्ट ४–५°–२′–१०″=६५०२ कलापिंड। मान लो शंकु छाया १० है। कलापिंड ६५०२×१० छाया=६५०२० ÷ ७ शेष ४। शेष ४ से वुध आया जिसका गुणक ९ है। कलापिंड ६५०२×९ वुधगुणक = ५८५१८। शेष ४ से वुध आया था। सूर्य से लेकर वुध तक गुणकयोग ४९ हुआ ५८५१८ ÷ ४९ शेष १२ आया। इसमें सूर्य से आरंभ कर सब ग्रहों का गुणक घटाना पड़ा १२ में से केवल सूर्य का ५ गुणक घटा शेष ७ वचा आगे चंद्र का २१ गुणक नहीं घटा तो चंद्र शुभग्रह का उदय समझना चाहिये शुभग्रह होने से कार्य सिद्ध होगा। शेष ७ था चंद्र का पक्ष है। ७ पक्ष में फल होगा।

अन्य प्रकार से विचार

प्रच्छक का अंगस्पर्शशब्द शकुन, या मुखदिशा से विचार आसन

कार्यसिद्धि=प्रच्छक शुभ आरूढ़ग्रह की दिशा में वैठा हो।
ज्योतिषी के समीप वैठे।
,, के दाहिनी ओर वैठे।
,, ऊँचे स्थान में वैठकर प्रश्न करे।

कार्यहानि=ज्योतिषी के वांयें बाजू वैठकर प्रश्न करे।
,, के वहुत दूर वैठ ,, ,,
,, विलकुल समीप ,, ,,
उच्च भूमि से नीचे भूमि में खिसक कर आ जावे या उठकर वैठे।
पापी आरूढ़ ग्रह की दिशा में वैठकर प्रश्न करे।

प्रच्छक के मुख की दिशा से विचार

तुरंत कार्यसिद्ध=ज्योतिषी के मुख की ओर देखे।
कुछ समय बाद सिद्ध= ,, नीचे को देखे।
कार्यसिद्ध न हो= ,, के ऊपर की ओर देखे।
शुभ =किसी पदार्थ को झुककर देखे तो शुभ कार्य सिद्ध न हो, अशुभ कार्य का नाश हो।

अन्य कार्य

कार्यसिद्ध=प्रश्न करते वक्त अपनी गर्दन के आस-पास कपड़ा लपेटे।
कमर के आस-पास या पैर के आस-पास कपड़ा लपेटे।

धनप्राप्त=किसी पदार्थ को वढ़ाता हुआ और लम्बा करता हुए दीखे।

हानि हो चुकी=अपनी अंगुली चटकावे या पैर के अंगूठा से भूमि खोदे या रेखा करे या अपने वाल खोले या स्पष्ट वचन न बोल सकें या कंकड़ कहीं फेंके या किसी वस्तु को तिरछी नजर से देखे।

कार्य न हो शगुन से

कठोर शब्द बोल कर या सिर ढाककर प्रश्न करे।

कार्यसिद्ध=विवाह आदि शुभ कार्य करते या भोजन करता हुआ। कोई दीखे या मैथुन करते हुए पक्षी आदि दीखे।

कार्यहानि=कोई पदार्थ को तोड़ता फोड़ता या छेद करता या काम करता हुआ कोई भी दीखे।

प्रश्न के समय ज्योतिषी और प्रश्नकर्त्ता के बीच में से कोई पशु या मनुष्य आदि निकल जावे या लकड़ी का बोझा ले जाते कोई दिखाई पड़े।

प्रश्न करते समय कोई तलवार चाकू आदि किसी प्रकार के शस्त्र दिखाईदे या जंगली या विषैली चीज दिखाई पड़ें।

या जब ज्योतिषी क्रोध में हो उस समय प्रश्न करे।

अंग स्पर्श से

कार्यसिद्ध=प्रच्छक अपने सिर का दाहिनाभाग तथा दाहिनी आँख, दाहिनी भौंह, दाहिना कंधा या कर्ण, मुख, स्तन का अग्रभाग, पेट या दाहिना पैर का स्पर्श करे।

सिद्ध नहीं हो—यदि उपरोक्त के अतिरिक्त अन्य अंगों का स्पर्श करे तो कार्य सिद्ध न हो।

प्रश्न करते समय अपने अंग स्पर्श का (और भी विचार)

मस्तक=धन लाभ। मुख कर्ण नेत्र नासिका=लाभ। गर्दन, कंधा, कंठ, भुजा=अल्प लाभ। उदर, नाभिमूल=धन लाभ, कृषि सफल। कटि, जांघ, गुह्यांग=कन्या लाभ, सम्पत्ति। घुटना, पैर, टखने=क्लेश या मृत्यु।

अन्य पदार्थों का स्पर्श से

फूल फल या नया वस्त्र ग्रहण कर पूछे=इच्छित फल प्राप्त हो। अग्नि या घास का स्पर्श करपूछे=कार्य सिद्ध नहीं होवे। लकड़ी, शस्त्र या गंध ग्रहण कर पूछे=क्षोभ हो, ग्रहों का दोष हो। सुवर्ण या रत्न आदि रखने का पात्र या अन्न पान आदि को स्पर्श कर पूछे=तो कार्य शीघ्र सफल हो। बगीचे की पृथ्वी को छूकर पूछे=कार्य सफल हो।

स्थान के अनुसार विचार

देवस्थान में, या नदी तट पर या सुन्दर रमणीक स्थान में होकर पूछे=कार्य सिद्ध हो। सूखी लकड़ी पर या बुरे काष्ठ पर या बुरे स्थान पर या भग्न स्थान पर स्थित होकर पूछे=कष्ट होगा। सुखपूर्वक पूर्वादि दिशाओं में स्थित होकर प्रसन्न चित्त से पूछे=कार्य में सफलता हो। आग्नेय आदि कोणों में अशुभ स्थान में स्थित होकर पूछे=तो कार्य सिद्ध नहीं होताहै।

मुख से निकले अक्षर पर से विचार

प्रश्नकर्ता के मुख से निकले हुए आदि अक्षर पर से ध्वज, धूम्र आदि ८ प्रकार के आय का विचार कर फल कहना चाहिये। जैसे—किसी ने प्रश्न किया 'मेरा काम होगा या नहीं। यहाँ आदि अक्षर म है यह प वर्ग में है छठवाँ आय खर हुआ जिसका स्वामी शनि है=फल कार्य नहीं होगा। नीचे का चक्र देखो।

क्रम	आय	वर्ग	स्वामी	फल	दान	कितने समय में होगा
१	ध्वज	अवर्ग	सूर्य	कार्य सिद्ध हो	गेंहूँ	७ दिन
२	धूम्र	कवर्ग	मंगल	कार्य नहीं हो	तिल	१ वर्ष
३	सिंह	चवर्ग	शुक्र	सिद्ध हो	पीतवस्त्र	पक्ष
४	श्वान	टवर्ग	बुध	कार्य सिद्ध हो	बलिदान	६ मास
५	वृष	तवर्ग	गुरु	सिद्ध हो	चावल	मास
६	खर	पवर्ग	शनि	नहीं हो	चना	६ मास
७	गज	यवर्ग	चंद्र	सिद्ध हो	गुड़	३ मास
८	ध्वांक्ष	शवर्ग	चंद्र	नहीं हो	यव	१ वर्ष

यहाँ ईश्वर प्रार्थना करने और दान देने से कार्य की सफलता होती है।

अन्यमत

क्रम	आय	वर्ग	स्वामी	फल
१	ध्वज	अवर्ग	सूर्य	विलम्ब से सिद्ध
२	धूम्र	कवर्ग	शुक्र	कार्य नहीं हो
३	सिंह	चवर्ग	मंगल	तत्काल सिद्ध
४	श्वान	टवर्ग	शनि	विलम्ब से सिद्ध
५	वृष	तवर्ग	गुरु	तत्काल सिद्ध
६	खर	पवर्ग	चंद्र	बहुत समय में हो
७	गज	यवर्ग	राहु	विलम्ब से हो
८	ध्वांक्ष	शवर्ग	बुध	कार्यसिद्ध नहीं हो

स्वरोदय से कार्यसिद्धि विचार

नासिका का जो स्वर चलता हो उस ओर बैठ कर कोई प्रच्छक शुभ या अशुभ प्रश्न पूछे वह कार्य सिद्ध ही होगा और जो शून्य की ओर अर्थात् नासिका से जो स्वर न चलता हो तो कार्य नहीं होता।

गणित द्वारा फल विचार

(१) प्रश्नकर्ता का मुख जिस दिशा की ओर हो पूर्व से दिशा गिनना उनकी संख्या लेना। दिशा + नक्षत्र + वार + प्रहर=योग, योग ÷ ८=शेष

१-५ कार्यसिद्ध। ४-६ कार्य ३ दिन में हो। ३-७ विलम्ब से कार्य हो। शेष २-८ कार्य सिद्ध न हो।

(२) फल आदि का नाम जो प्रच्छक ने लिया हो। फल आदि के (नाम के अक्षर ५२ + वार + ५५) ÷ ७=६। शेष १-३ में विलम्ब से कार्य होगा। २-४ थोड़े विलम्ब से कार्य होगा। ५-६ तत्काल कार्य सिद्ध होगा। शेष ७ कार्य नहीं होगा। कार्य की हानि होगी।

अंकों पर अंगुली रख कर विचार करे।

३	२	१
४	५	६
९	८	७

प्रश्नकर्ता जिस अंक पर अंगुली रखे उसका फल १-५-६ शीघ्र कार्य सिद्ध। २-८ कार्य सिद्ध न हो। ३-७ विलम्ब से कार्य हो। अंक ४-६ कार्य सिद्ध हो।

परीक्षा में यश=लग्न-पंचम-नवम-दशम व इनके स्वामियों से एवं चंद्र से विचार करना चाहिये।

अन्य=प्रच्छक से १०८ में से कोई अंक लेने को कहे।

अंक ÷ १२=शेष १-७-६=देर से कार्य हो। ४-५-८-१०=नाश। ११=सिद्धि। २-६-०=शीघ्र कार्य हो।

चोरी सम्बन्धी प्रश्न विचार

चोरी का प्रश्न कुछ कठिन होता है इस कारण उस पर पूर्णरूप से विचार करने के लिये इष्टकाल पर से ग्रहस्पष्ट, भावस्पष्ट कर के द्रेष्काण, नवांश, त्रिशांश आदि का ज्ञान कर बहुत विचार कर चोरी सम्बन्धी प्रश्न का उत्तर देना चाहिये।

किस भाव से क्या-क्या विचार करना

सप्तम स्थान से चोर। चतुर्थ से उसकी प्राप्ति। लग्न से द्रव्य। चंद्रमा धन का स्वामी है और अष्टम स्थान चोर का धन है। जिसकी चोरी हुई हो उसे लग्नेश समझो। अर्थात् सप्तम चोर का स्थान है उससे धनलाभ संभव है और चतुर्थ चोरित धन का स्थान है। लग्न और चंद्र दोनों धन के स्वामी हैं चोरी जाने के पहिले धन किस दिशा में रखा था।

मेष मीन	वृष	३-४	५	६-७	८	९-१०	११=लग्न
ईशान	पूर्व	आग्नेय	दक्षिण	नैऋत्य	पश्चिम	वायव्य	उत्तर=दिशा

किस प्रकार चोरी हुई

सप्तम मंगल हो चंद्र से दृष्ट हो तो ताला खोलकर या तोड़कर या जंजीर तोड़कर चोरी हुई।

सप्तम में शुक्र चंद्र हो तो दूसरी चाभी से ताला खोला गया।

चोरी गई चीज की संख्या

आरूढ़ लग्न को जो राशि देखे उस दृष्टा राशि की जितनी किरणें हों उतनी संख्या चोरी गये पदार्थों की होगी।

नष्ट वस्तु का स्वरूप

नष्टवस्तु के स्वरूप का चंद्रमा या सूर्य से विचार करना चाहिये।

चोरी गये पदार्थ का रंग

राशि का जो रंग हो वही रंग होगा, परन्तु नवांश में शनि-मंगल-गुरु है तो इनका रंग होगा। या जो ग्रह अति पूर्णबली ग्रह से दृष्ट हो उसके तुल्य ही रंग होगा।

रंग=मेष=रक्त। वृष=श्वेत। मिथुन=हरा (तोता सदृश)। कर्क=पाटल या कालापन लिए लाल। सिंह=धूम्र। कन्या=चित्र, (कई रंग मिले)। तुला=काला। वृश्चिक=सुनहरी। धन=पिंगल या पीला। मकर=कबरा या सफेदी लिए पीला। कुंभ=कालापन लिये सफेद। मीन=मछली का रंग या स्वच्छ।

पदार्थ की लम्बाई

लग्न, ५, ६, ७, ८, हो तो लम्बा पदार्थ।
,, ३, ४, ९ या १० ,, चोड़ा ,,।
,, १, २, ११, १२ ,, छोटा ,,।

पदार्थ कीमती या साधारण

नवांश स्वामी बली और षड्बल युक्त हो तो गुमा पदार्थ कीमती हो यदि साधारण बल हो तो साधारण पदार्थ होगा। उसके बीच कुछ छेद होंगे। यदि बलहीन हो या निच्च का या दृष्ट हो तो साधारण कीमत का या फटा-पुराना या टूटा-फूटा पदार्थ हो।

चोरी का समय

लग्न दिनबली हो तो दिन में रात्रिबली हो तो रात्रि में। उदयबली में संध्या या दिन या रात में। लग्न सूर्य दृष्ट हो तो दिन में, चंद्र से दृष्ट हो तो रात में चोरी हुई।

किसके भेद से चोरी हुई

चतुर्थ का चतुर्थेश जो ग्रह हो उस ग्रह के समान मनुष्य के भेद से चोरी हुई है।

धन प्रत्यक्ष चुराया है

पापग्रह सहित लग्नेश सप्तमेश को देखता हो धनेश और सूर्य चंद्र भी बलिष्ट हों।

सामने से चुराया

क्षीण चंद्र लग्नेश से युक्त हो, सप्तमेश बलवान हो, चंद्र लग्नेश से दुर्बल होकर लग्नेश के साथ हो। सप्तमेश सूर्य से आठवें घर में हो। लग्नेश सातवें घर को नहीं देखे बलवान चंद्र पापग्रह युक्त हो।

क्या चोरी गया=चंद्र के नवांश के अनुसार विचार

मेष—चंद्र मेष का प्रथम नवांश या वर्गोत्तम=सोने-चांदी की बनी वस्तु उस पर गुरु शुक्र की दृष्टि हो तो रक्त। वृष का चंद्र या वर्गोत्तम=अलंकार।

मंगल देखे=लोहा । अतिचारी ग्रह की दृष्टि=जीर्ण वस्तु । मिथुन चंद्र वर्गोत्तम =जल से उत्पन्न वस्तु । कर्क चंद्र वर्गोत्तम=सुवर्ण । सिंह चंद्र वर्गोत्ताम =चांदी । सूर्य देखे तो सुवर्ण । कन्या चंद्र वर्गोत्ताम=वस्त्र कांस्य, लोहा आदि, बुध देखे तो पत्थर, शुक्र देखे तो वस्त्र । तुला चंद्र वर्गोत्तम=तौलने योग्य वस्तु । शुक्र देखे तो गंध और वस्त्र । वृश्चिक चंद्र वर्गोत्तम=मंगल देखे तो सुवर्ण-चांदी । धन चंद्र वर्गोत्ताम=गुरु देखे तो रत्न । मकर चंद्र वर्गोत्तम=कुछ चमकदार रत्न गुरु देखे तो सुवर्ण आदि । कुम्भ=सूर्य देखे तो मुद्रा मीन चंद्र वर्गोत्तम=कांच आदि वाली वस्तु । गुरु से दृष्ट हो तो मोती चोरी गया ।

माल किस दिशा में गया

लग्न में कोई ग्रह हो या कोई ग्रह केन्द्र में हो या जो आरूढ़ लग्न को देखे । उस ग्रह की दिशा में चीज चोरी गई । सूर्य=पूर्व । शुक्र=आग्नेय । मंगल=दक्षिण । राहु=नैर्ऋत्य । शनि=पश्चिम, चंद्र=वायव्य । बुध=उत्तर । गुरु=ईशान ।

केन्द्र में दो ग्रह हों तो जो अधिक वली हो उसकी दिशा जाने । उपरोक्त में कोई ग्रह न हो तो लग्न की राशि से दिशा जानना चाहिये । १-५-९=पूर्व २-६-१० दक्षिण, ३-७-११ पश्चिम । ४-८-१२ राशि=उत्तर । या मेष राशि १=पूर्व । २=दक्षिण । ३=पश्चिम । ४=उत्तर । ५-९=आग्नेय । ६-१०=नैर्ऋत्य । ७-११=वायव्य । ८-१२=ईशान दिशा ऐसा भी मत है ।

या लग्न से स्थान या देश का प्रकार, हटाने का समय और माल ले जाने की दिशा जानना चाहिये ।

चंद्र से भी माल जाने की दिशा का विचार

चंद्र=लग्न में हो=पूर्व । दशम=दक्षिण । सप्तम=पश्चिम । चतुर्थ=उत्तर दिशा को माल चोरी गया समझना ।

चर राशि हो तो बहुत दूर माल गया । स्थिर राशि=गृह के समीप । द्विस्वभाव=दूर समीप दिशा में धन गया ।

नक्षत्र से दिशा ज्ञान

जिस नक्षत्र पर चंद्र हो उससे कृत्तिका तक गिनें और ३-३ नक्षत्र पूर्व आदि दिशा में रखकर जिस दिशा में कृत्तिका पड़े वह दिशा लेना इसमें ८ दिशाओं की गिनती करनी चाहिये ।

लग्न की राशि के अनुसार चोर का विचार

१ मेष=पूर्व दिशा माल गया ब्राह्मण चोर स अक्षर से नाम आरंभ नाम के २ या ३ अक्षर हैं ।

२ वृष=पूर्व क्षत्रियजाति म अक्षर से नाम आरंभ ४ अक्षर का नाम ।

३ मिथुन=आग्नेयकोण वैश्य ककार से नाम आरंभ ३ अक्षर का नाम ।

४कर्क=दक्षिण शूद्र या अंत्यज चोर तकार से नाम आरंभ ३ अक्षर का नाम।
५ सिंह=नैऋत्य चोर नौकर या अंत्यज या निम्नश्रेणी जाति का नकार से नाम आरंभ ३-४ अक्षर का नाम।
६ कन्या=पश्चिम स्त्री चोर मकार से नाम आरंभ कई अक्षर का नाम हैं।
लग्न में बुध और चंद्र नवांश=ब्राह्मण चोर। मंगल=क्षत्राणी शुक्र=वैश्य-स्त्री। शनि या सूर्य का नवांश=शूद्र या अंत्यज स्त्री चोर।
७ तुला=पश्चिम पुत्र-मित्र-भाई या अन्य सम्बन्धी चोर मकार से नाम आरंभ ३ अक्षर का नाम है।

लग्न में नवांश गुरु-चंद्र-बुध का=चोर परिवारका है। मंगल सूर्य=दूर का सम्बंधी। शनि नवांश=अन्य व्यक्ति चोर जिससे जान पहिचान भर हो। कठिनाई से माल मिले।

८ वृश्चिक=पश्चिम, घर का नौकर चोर नाम सकार से आरंभ ४ अक्षरों का, माल १००-१५० गज की दूरी पर ही रहता है।

नवांश गुरु या शुक्र का=चोर उत्तम वर्ण का माल मिले। बुध=पड़ोसी भी चोर हो सकता है। गौर वर्ण का साधारण कद जो वाचाल हो दिखने में भला दिखे।

९ धनु-वायुकोण स्त्री चोर सकार से नाम आरंभ ४ अक्षर का है।

नवांश मंगल=युवती चोर। बुध=कन्या चोर। शुक्र=७-८ वर्ष की बालिका ब्राह्मण या अंत्यज की। धनु लग्न में त्रिकोण या केन्द्र में। गुरु=चोरी गई वस्तु नहीं मिले। चोर अंत्यज। नवांश शनि=चोर पुरुष और नारी दोनों मिलकर। पुरुष का नाम ह या र अक्षर से। नारी स अक्षर से।

धन लग्न में अंतिम ६ अंश शेष रह गये हों तो प्रयत्न करने पर माल मिल जाता है। नहीं तो धनु लग्न में चोरी गई वस्तु साधारण तौर पर नहीं मिलती है।

१० मकर=उत्तर। वैश्य चोर नाम स से ४ अक्षर का।

शनि नवांश हो=माल नहीं मिले। गुरु=कोई धर्म स्थान मंदिर कूप या अन्य तीर्थस्थान में माल होगा।

११ कुंभ=उत्तर या वायव्यकोण। चोर कोई व्यक्ति नहीं। चूहा द्वारा माल ले जाया गया जो एक महीने के भीतर मिल जायगा।

बुध नवांश=चक्की या चारपाई के पीछे माल है। शुक्र चंद्र नवांश=शयनकक्ष में या उससे लगे हुए कोठे में माल है।

१२ मीन=ईशानकोण। शूद्र या अंत्यज चोर नाम ब से आरंभ ३ अक्षर का। माल जमीन के भीतर छिपाया है।

मीन लग्न के तृतीयनवांश में स्त्री भी चोर हो सकती है घर का काम करने वाली नौकरानी या अन्य कोई परिचित स्त्री चोर हो सकती है।

माल कहां है

चतुर्थभाव में गुरु-चंद्र या शुक्र कोई हो=जलाशय में। बुध=ईंटों में। सूर्य बाहर भूमि में। शनि राहु=अग्नि के समीप माल छिपाया गया है।

चोरी का माल कहां है

चतुर्थभाव की राशि तत्व देखना भूमि जल अग्नि आदि तत्व के समीप चोरी गया धन जानना चाहिये।

चतुर्थेश चतुर्थभाव में हो या वहाँ जो ग्रह हो या वहाँ कई ग्रह हों तो उनमें से सबसे बली ग्रह के अनुसार चोरी के धन का ठिकाना होगा।

सूर्य=गृह स्वामी के बैठक या शयन स्थान में।

चंद्र=जल के समीप या हाथ पैर धोने का स्थान।

मंगल=अग्नि गौ या कारीगिरी के स्थान में।

बुध=पुस्तक अन्न, चित्रशाला या कोई प्रकार की सवारी के समीप।

गुरु=देवालय या बगीचा।

शुक्र=शयन स्थान या पलंग पर।

शनि=अंधकार या मलिन स्थान में।

सप्तमभाव की राशि के अनुसार भी चोरी का धन होगा जैसा नीचे बताया है:—

१ **मेष**=भेड़-बकरी के घूमने का स्थान, जहाँ छोटी पहाड़ी, छोटी झाड़ियाँ और खनिज हो।

२ **वृष**=खेत चरागाह कृषि योग्य व घास की भूमि गीला स्थान।

३ **मिथुन**=गाने-बजाने-नाचने-नाटक-जुआ खेलने या भोग स्थान।

४ **कर्क**=रेतीला स्थान, गीली खेती जलाशय, देवस्थान स्त्रियों का स्थान।

५ **सिंह**=ऊँची नीची जगह जंगल पहाड़ अगम्य स्थान, खतरे का स्थान शिकार और मृत्यु का स्थान।

६ **कन्या**=मन बहलाने का स्थान, सुन्दर बाग, भोग स्थान।

७ **तुला**=बाजार, शहर की गली।

८ **वृश्चिक**=छेद, व मीठा जहाँ रेंगने वा ले जीव चलते हैं। संकुचित स्थान, गुफा, छछुन्दर का घर।

९ **धन**=घुड़सवार, जहाँ लडाई होती है या लड़ाई सम्बन्धी काम होता है।

१० **मकर**=नदी, जंगल और बीहड़ स्थान जाल दीमक का घर।

११ **कुंभ**=कुम्हार का घर, घड़ा या जल के समीप या झाड़ियाँ, जहाँ स्त्रियां या जुआड़ी जमा होते हैं।

१२ मीन=जलाशय, तालाव, नदी, मंदिर, धार्मिक पुरुषों के रहने का स्थान।

लग्न के अनुसार

(१) मेष=बकरियों के चरने के स्थान में माल छिपाया होगा। (२) वृष=गौशाला (३) मिथुन=नाटक घर या श्मशान (४) कर्क=जलाशय के समीप (५) सिंह=गहरा जंगल या शून्य स्थान (६) कन्या=नौका या जहाज के समीप (७) तुला=घर में या बाजार (८) वृश्चिक=तालाव या शहर के बीच (९) धन=घुड़सवार (१०) मकर=जलाशय के समीप (११) कुम्भ=जहाँ चित्रकारी हो। (१२) मीन=जलाशय में।

नक्षत्र के अनुसार विचार माल कहाँ है ?

प्रश्न काल के नक्षत्र अनुसार विचार (१) अश्विनी=गाँव के भीतर है (२) भरणी=गली में (३) कृत्तिका=जंगल में (४) रोहिणी=सिरका या लवणपात्र में (५) मृगशिरा=खाट के नीचे (६) आर्द्रा=मंदिर में (७) पुनर्वसु= अनाज के वंडे में (८) पुष्य=घर में (९) आश्लेषा-धूल के ढेर में (१०) मघा-चावल रखने के पात्र में (११) पू० फा०=शून्य घर में (१२) उ० फा०=जलाशय में (१३) हस्त-तालाब में (१४) चित्रा=रुई के खेत में (१५) स्वाती=शयनकक्ष में (१६) विशाखा-अग्नि समीप (१७) अनुराधा=लता बेल के स्थान (१८) ज्येष्ठा=मरुस्थल में (१९) मूल=पायगा में, (२०) पू०षा०=छप्पर में (२१) उ० षा०=धोबी के धोने के पात्र में (२२) श्रवण=व्यायाम करने या परेड करने के स्थान में (२३)धनिष्ठा=चक्की के समीप (२४) शतभिषा=गली में(२५)पू० भा०= आग्नेयकोण के घर में(२६)उ० भा०=दल-दल में (२७) रेवती=पुष्पवाटिका।

वस्तु कहां है। ध्वज-धूम्र आदि के अनुसार

मुख से आरंभ में निकले शब्द के अ वर्ग आदि के अनुसार पिंड बना ले जैसा पहिले बता चुके हैं उस प्रकार पिंड बना कर ÷ १२ बारह से भाग देने पर जो शेष रहे उसे राशि समझ कर फल विचारना चाहिये।

शेष (१) मेष=वस्तु ग्राम में है। (२) वृष=खेत (३) मिथुन=चौरास्ते में (४) कर्क=भूमि में गड़ा (५) सिंह=आकाश में (६) कन्या=शून्यस्थान में (७) तुल=मार्ग में (८) वृश्चिक=घर में (९) धनु=गांव में (१०) मकर=अंतरिक्ष (११) कुंभ=तालाव आदि में (१२) मीन=नदी किनारे।

खोई वस्तु कहां है अन्य प्रकार से विचार

प्रच्छक आकाश की ओर मुख कर पूछे=आकाश (ऊपर छत आदि) में माल। पृथ्वी की ओर दृष्टि=पृथ्वी में। कोण में बैठकर पूछे=जिस दिशा

में बैठकर पूछे उसी दिशा में, जिस दिन प्रश्न करे उसी दिन धातु नष्ट हुई या प्राप्त होगी।

माल कहां छिपाया है

उदय लग्न कर्क या वृश्चिक=माल घर के भीतर छिपाया है। मकर मीन=बाहर दहलान या दीवाल के समीप। अन्य राशि हो=घर की ओलती (ओरी) छत या छप्पर की कैंची पर माल रखा है।

लग्न के ग्रह के अनुसार

लग्न में सूर्य बुध=दीवाल के सिरे पर माल रखा है चन्द्र या शुक्र=जलपात्र में। मंगल=दीवाल के समीप या घर के बरामदे में (गुरु=रसोई घर में) शनि=चूल्हा या मिट्टी में। राहु=छिद्र में रखा है।

अन्यमत लग्नराशि अनुसार

केकड़ा मगर मछली जलाशय चाहते हैं। भेड़ बैल जंगल चरागाह चाहते हैं। सिंह को गहरा जंगल गुफा प्रिय है। शेष के लिये शहर की गलियाँ प्रिय हैं। स्त्री-पुरुष या जोड़े को शहर और धनु को सेना का स्थान इस प्रकार राशि का स्वभाव व प्रभाव आदि पर भी विचार करना चाहिये।

माल छिपाने का स्थान

लग्न के द्रेष्काण के अनुसार भी विचारकरना पहिला द्रेष्काण=सामने या घर के द्वार के समीप या द्वारदेश में। दूसरा द्रेष्काण=घर के बीच या अन्दर। तीसरा द्रेष्काण=घर के अन्तछोर में या पीछे के हिस्से में। स्थिर लग्न या स्थिर नवांश या वर्गोत्तम हो तो चोरी का माल अपने ही घर में है आपसी आदमी ने चोरी की है।

राशि अनुसर भूमि=स्त्रीसंज्ञक राशि=खेत आदि की भूमि। पुरुष राशि=अनेक प्रकार के घर और भूमि। चतुष्पदराशि=गोशाला अश्वशाला आदि। जल चर राशि=जल स्थल आदि स्थान।

चोरी गया माल कहां है

चन्द्रमा केन्द्र में न हो तो चन्द्र स्थित अंशक से ४५ वें अंश में जो राशि हो उसकी जो दिशा या उपदिशा हो उसी दिशा में अग्नि वायु जल आदि जो उस राशि का तत्व हो उसमें माल होगा।

नष्ट माल कहां है

जो पदार्थ नष्ट हो उसके अक्षर गिनकर योग करे फिर ३ अंक और मिला कर ५ का भाग देवे शेष से फल विचारना।

शेष १=घर में है २=घर के बाहर चला गया। ३=शयन स्थान में। ४=अपने से समीप अन्यस्थान में। ५=अपने आप ही हास्य कर धन चुराया होगा अन्य कोई नहीं।

४

अन्यरीति=प्रश्नकाल की तिथि-वार-नक्षत्र और प्रहर एकत्र कर १० का गुणा कर ७ का भाग देवे शेष से फल विचारे। शेष–

१=भूमि में गड़ा।

२=वर्तन में।

३=जल बीच तालाव कुआँ नदी आदि में।

४=आकाश अर्थात् किसी ऊँचे स्थान वृक्ष अटारी आदि में।

५=घास जुआर आदि के खेत में।

६=गोबर के घूरे या सड़े हुए स्थान में।

७=राख या ईंट पकाने के आवाँ या अन्य निकृष्ट स्थान में।

माल कितनी दूर पहुँच गया

लग्न के जितने नवांश वीत गये हैं उतने योजन दूर माल चला गया है।

अन्यमत—लग्न के नवांश पांचवे के वाद जितने नवांश की संख्या हो उतने योजन दूर माल चला गया।

माल का स्थान

चोरी गया माल कहाँ गया।

लग्न का ग्रह मित्र क्षेत्री=घर में मिलेगा।

स्वगृही=गांव में, उच्च का=गांव के समीप, शत्रु या नीचक्षेत्री =गाँव से दूर।

किसी मत से आरूढ़ लग्न के स्वामी से उपरोक्त स्थान विचारना चाहिये। अन्यमत से सूर्य क्रांति राशि के स्वामी से विचारना चाहिये।

नष्ट द्रव्य आकाश में

पृष्ठोदय राशि में चन्द्र हो उस पर शनि की दृष्टि हो तो माल आकाश अर्थात ऊपर कहीं होगा। परन्तु मंगल की दृष्टि से यह योग नहीं होता क्योंकि मंगल भूमि पुत्र है।

माल का स्थान

चन्द्र के नवांश में जो राशि हो उसके अनुसार माल रखने का स्थान होगा। मकर नवांश में जमीन में गड़ा हुआ। कुंभ नवांश में घड़े में। कर्क में जल के भीतर।

चोरी का माल घर में

स्थिर लग्न हो या लग्न में स्थिर नवांश या वर्गोत्तम नवांश हो तो अपने आदमी से चुराया गया धन अपने ही घर में है।

माल किस पात्र में रखा है

मंगल=छोटा पात्र। बुध=शक्कर की चासनी का पात्र या कढ़ाव। गुरु=बड़ा जलपात्र। शुक्र=जलपात्र। शनि=बड़ा वर्तन। राहु=छिद्रवाला

वर्तन । सूर्य=सिरके का पात्र । चन्द्र=पतले बर्तन में ।

अन्यप्रकार=लग्न में मंगल=घड़े में । बुध=घड़े में । गुरु=लाल घड़े में ।

शुक्र=जल के घड़े में । शनि=कांजी के बर्तन में । चंद्र=नमक के बर्तन में ।

माल घर में

लग्न ४–८ राशि हो तो खोई हुई वस्तु घर में ही है ।

माल कबूतरों बीच में

लग्न में १०–१२ राशि हो तो कबूतरों आदि के बीच गुमी वस्तु होगी ।

गया माल मिले

लग्नेश सप्तम हो जो सप्तमेश से मुथसिली हो तो गया माल मिले ।

जिस राशि में चंद्र हो उस राशि का स्वामी चंद्र को पूर्ण दृष्टि से देखे तो माल मिले ।

लग्नेश सप्तम हो सप्तमेश लग्न में हो ।

गुरु सप्तम घर में हो तो माल मिले, और कोई ग्रह सप्तम में हो तो नही मिले ।

आरूढ़ से दशम चंद्र या चतुर्थ चंद्र हो ।

अष्टमेश धनेश का इत्थशाल हो ।

कन्या लग्न हो मीन आरूढ़ हो ।

तुला लग्न हो और मेष आरूढ़ हो ।

सिंह लग्न कुंभ आरूढ़ हो ।

मिथुन लग्न धन आरूढ़ हो ।

वृश्चिक लग्न वृष आरूढ़ हो ।

मकर लग्न कर्क आरूढ़ हो ।

उपरोक्त में स्वामी से युक्त दृष्ट का भी विचार करना चाहिये ।

लग्न आरूढ़ और छत्र चर हो ।

९-५-७ भाव में शुभग्रह हो या लग्न आरूढ़ और छत्र में शुभग्रह हो ।

माल मिले

उदय लग्न शीर्षोदय हो आरूढ़ पृष्ठोदय हो ।

सप्तम में २, ७, ६, ११ राशि हो ।

पृष्ठोदय राशि पर चंद्र युक्त वा दृष्ट हो तो माल मिले । परन्तु शनि से दृष्ट हो तो माल नहीं मिले ।

मंगल उपरोक्त चंद्र से दशम घर में हो ।

उदय लग्न से या आरूढ़ से ३ - ५ - ९ घर में शुभग्रह हों ।

सप्तम में बलवान चंद्र हो तो मिले, क्षीण चंद्र हो तो न मिले ।

शीर्षोदय लग्न हो उसमें शुभग्रह हो या लग्न में पूर्णचंद्र हो और शुभ

ग्रह से युक्त या दृष्ट हो ।
लाभस्थान में बलवान शुभग्रह हो ।
पूर्णचंद्र त्रिकोण में हो और गुरु व शुक्र की दृष्टि हो ।
१, २, ३, ४, ५, ६, या ११ स्थानों में बलवान शुभग्रह हों केंद्र, त्रिकोण अष्टम या लाभस्थान को छोड़कर शेष स्थान में पापग्रह हों ।
१, ३, ५, भाव में मित्रग्रह है २ और ११ भाव में बलवान शुभग्रह हों केंद्र, त्रिकोण, अष्टम या लाभस्थान पापग्रह रहित हो ।
४, ७, ८, १० स्थानों में चंद्रमा और गुरु हो ।
चंद्र शुभग्रह से इत्थशाल करता हो लग्न या दशम मे हो ।
लग्न में शुभग्रह या पूर्णचंद्र हो और शुभग्रह की दृष्टि हो ।
लग्नगत चंद्र को सूर्य या शुभग्रह मित्रदृष्टि से देखें ।
लग्न से २, ३, ५, स्थानों में शुभग्रह हों ।
धनेश अष्टमेश का इत्थशाल हो ।
लग्नस्थ चंद्र पर गुरु की दृष्टि हो ।
तृतीय और अष्टमभाव में शुभग्रह हो ।
लग्नेश सप्तमेश लग्न में हो ।
लग्न चतुर्थेश युक्त या दृष्ट हो ।
धन भाव या चतुर्थ में धनेश हो ।
लग्नेश धनेश और चंद्र ये आपस में युक्त या दृष्ट होकर त्रिकोण लग्न या धनस्थान में हों ।
उदय लग्न में आरूढ़ हो ।
चौथे घर में आरूढ़ हो ।
उदय लग्न में स्थिर राशि हो ।
पृष्ठोदय लग्न में पापग्रह हो ।
लग्नेश सप्तमेश पापदृष्ट हो ।
सप्तमेश लग्न में हो ।
लग्न में चन्द्र हो ।
लग्नेश लाभेश लग्न में हो ।
लग्नेश लाभेश लाभ में हो ।
लाभेश लग्न में या लग्नेश लाभ में हो ।
लाभस्थान में लग्नेश और लाभेश की पूर्णदृष्टि हो ।
लाभस्थान को सब ग्रह मित्रदृष्टि से देखें ।
लग्नेश से चंद्र राशीश का तथा धनेश इत्थशाल करे ।
लग्न में शुभग्रह हो और लग्नेश शुभग्रह हो ।

लग्नेश लग्न को देखे और शुभग्रह ११, ९ या २ स्थान में हो या चंद्र का योग हो।

द्वितीयेश द्वितीयभाव या लग्न में हो।

धनस्थान में शुभग्रह युक्त धनेश हो।

धनस्थान में चंद्र व लाभेश हो।

लग्नेश त्रिकोण में हो स्वगृही चंद्र हो जिसकी दृष्टि हो।

माल मिले

लग्नेश और नवमेश शुभग्रह युक्त या दृष्ट हो।

चंद्र लग्नेश को लग्नेश चंद्र को देखे।

लग्नेश या लाभेश लाभ में हो चंद्र से दृष्ट हो।

लग्न में ३, ६, ७, ११ राशि हो शुभग्रह युक्त या दृष्ट हो।

वलवान गुरु लग्न में हो।

लग्न में बुध हो मिथुन राशि में गुरु और शुक्र हो।

वलवान लग्नेश लग्न में हो शुभग्रह युक्त या दृष्ट हो।

लग्न या दशम में वलवान चंद्र हो।

लग्न में बलीचंद्र हो सूर्य या शुभग्रह की मित्रदृष्टि हो।

दशमेश लाभेश वलीचंद्र परस्पर मित्र हों। या इत्थशाल आदि शुभयोग करते हों।

चंद्र का राशि स्वामी पर चंद्र की दृष्टि हो।

द्रव्य मिले

प्रश्नसमय में हाथ में तसवीर हो या हाथ में चित्र लिये जाता हो या प्रश्नकर्ता अति प्रसन्न हो या किसी वस्तु को हृदय से लगा रहा हो, या मधुर वाणी बोल रहा हो तो धन प्राप्त हो।

जो व्यक्ति भूमि पर वृत्त खींचे या मुख, वदन, कंधा, पेट का स्पर्श करे तो गया धन मिले।

माल शीघ्र मिले

लग्न में शीर्षोदय राशि हो जिसमें पूर्णचंद्र हो और शुभग्रह युक्त या दृष्ट हो या वलवान शुभग्रह लाभभाव में हो।

लग्नेश चंद्र और धनेश परस्पर आपस में देखते हो।

लग्न में शुभग्रह हो चतुर्थ या सप्तम में चंद्र हो दशम में सूर्य हो।

चंद्र लग्नेश धनेश धनस्थान केन्द्र या त्रिकोण में एक साथ बैठे हों।

लग्न धन या त्रिकोण में चंद्र हो, लग्नेश धनस्थान में हो या परस्पर दृष्टि हो।

लग्न में पूर्णचंद्र हो शुक्र या गुरु की दृष्टि हो ।

लाभभाव में बली शुभग्रह हो ।

लग्न में शीर्षोदय राशि हो पूर्णचंद्र या शुभग्रह से युक्त हो और शुभ दृष्टि हो ।

चतुर्थेश लग्न में हो ।

लाभेश और धनेश शुभग्रह युक्त या दृष्ट होकर शुभ घर में हो ।

पूर्णचंद्र त्रिकोण में हो गुरु या शुक्र से दृष्ट हो ।

लग्नेश और धनेश धन दाता हैं, लग्नेश या लाभेश लाभ में हो पूर्ण चंद्र से दृष्ट हो ।

लाभस्थान में बलवान शुभग्रह हो ।

लग्नेश सप्तम, सप्तमेश लग्न में हो या इनका मुंथसिल हो तो धन शीघ्र मिले धन वहीं है ।

राज्य द्वारा चोरी मिले

लग्नेश दशमेश एक साथ हो ।

धनेश रंध्रेश पर दशमेश सुखेश की दृष्टि हो ।

धनेश और लग्नेश पर दशमेश और पंचमेश की शुभदृष्टि हो ।

देर से मिले

पापग्रह धनभाव में हो तो कुछ अशुभ हो और मिलने का योग होने पर भी देर से मिले ।

धनलाभ में अनर्थ

लग्न में बुध हो उस पर चंद्र या पापग्रह की दृष्टि हो तो धन लाभ के साथ कई अनर्थ हों ।

लाभ में विघ्न

त्रिकोण और केन्द्र में पापग्रह हों ।

आधा धन मिले

लग्न और नवम में शुभग्रह हो सप्तम में पापग्रह हो ।

थोड़ा धन मिले

धनेश निर्बल हो ।

कठिनाई से मिले

लग्नेश धनेश पापग्रह होकर लग्न को देखें ।

अनिष्ट

लग्नेश व धनेश पापग्रह से इत्थशाल करता हो ।

धन नहीं मिले

लग्नेश पापग्रह हो व लग्न में पापग्रह हो तो धन-हानि और कलह हो।

लग्न आरुढ़ और छत्र इनमें शनि मंगल हो तो धन नाश और दुःख हो।

सप्तम घर में आरूढ़ हो तो हानि, माल नहीं मिले।

उदय लग्न चर हो तो माल नहीं मिले।

उदय लग्न द्विस्वभाव हो तो माल नहीं मिले।

सप्तम घर में १, ६, १० राशि हो।

छत्र लग्न ६-८-१२ घर में हो।

लग्नेश सप्तम घर में हो।

सूर्य लग्न में चंद्र अस्तंगत हो।

धनेश अष्टम या सप्तम हो।

मंगल सप्तम या अष्टम हो।

लग्न में राहु अष्टम सूर्य हो।

सूर्य लग्न में चंद्रमा सप्तम हो।

चतुर्थेश पापाक्रांत हो और चतुर्थ में पापग्रह हो चतुर्थेश को देखे।

लग्न में सूर्य अष्टम राहु हो।

वृष लग्न और वृश्चिक आरूढ़ हो।

लग्न आरूढ़ और छत्र द्विस्वभाव हो।

लग्न आरूढ़ और छत्र में या ९,५,७ स्थान में हो।

आरूढ़ या लग्न से २, ६, ८, १२ स्थान में छत्र हो।

केन्द्र त्रिकोण धनभाव में पापग्रह हो, पापग्रह की दृष्टि हो और शुभग्रह मिश्रित न हों।

गुरु के अतिरिक्त सब ग्रह शत्रुगृही हों।

सप्तमेश और चंद्र सूर्य के साथ हो।

माल नहीं मिले

अष्टमेश सप्तम या अष्टमभाव में हो।

लग्नेश सप्तम में वक्री सप्तमेश लग्न में हो।

लाभेश अष्टमेश युक्त हो।

सुनाई दे पर मिले नहीं

मकर लग्न हो और शनि अपनी राशि को न देखे तो चोरी की वस्तु सुनने को मिले पर मिले नहीं।

धनेश और लग्नेश पर किसी ग्रह की दृष्टि न हो।

माल नहीं मिले

सप्तम में शुभग्रह हो ।

धनेश सूर्य के साथ अस्त हो चोर मिले, धन नहीं मिले ।

धन लाभ होने पर भी प्राप्त न हो

धनभाव व लग्न, लग्नेश से अदृष्ट हो ।

धन नहीं मिले

प्रश्न समय प्रच्छक आकाश को देखे और अपने हाथ मसले ज्योतिषी के पांव पकड़े तथा झुक जावे और हाथ जोड़ कर खड़ा रहे ।

प्रच्छक या अन्यपुरुष नाक छिनके या मुंह सिकोड़े, निशाना लेवे, तुतला कर बोले जमुहाई ले तो खोया धन न मिले बल्कि गांठ से और जाय।

बांई जांघ का स्पर्श करे तो माल नहीं मिले ।

गर्दन के पीछे की नसों को या कोखों का स्पर्श करे या पीठ या कूल्हों का कटि का, पैर का स्पर्श करे तो चोरी गया धन नहीं मिले ।

माल मिलने का समय

जिस राशि में चंद्र हो और चंद्र से जितनी दूर लग्न हो उतने दिनों की कल्पना करना । चरराशि=एक गुना । स्थिर में=दुगना । द्विस्वभाव में= तिगुना समय होगा ।

जो सबसे बलीग्रह हो उसकी जो अवधि है उसी अवधि में चोरी मिलेगी ।

बलीग्रह की किरणों की संख्या से दिन वर्ष आदि ग्रह के अनुसार जो भी हो लेना चाहिये ।

नक्षत्र अनुसार लोचन में कब मिलेगी

लोचन

अंध लोचन	२८ रे	४ रो	८ पुष्य	१२ उफा	१६ विशा	२० पूषा	२४ धनि
मंद ,,	१ अ	५ मृ	९ श्ले	१३ ह	१७ अनु	२१ उषा	२५ शत
मध्य ,,	२ भर	६ आ	१० मघा	१४ चि	१८ ज्ये	२२ अभि	२६ पूभा
सुलोचन	३ कृ	७ पुन	११ पूफा.	१५ स्वा	१९ मूल	२३ श्रवण	२७ उभा

नेत्र	दिशा	फल
अंध लोचन	पूर्व	शीघ्रलाभ ।
मंद ,, (काणा)	दक्षिण	३ दिन बाद कष्ट से लाभ।
मध्य ,,	पश्चिम	मास के बाद सुनाई पड़े ६४ दिन में मिले ।
सुलोचन	उत्तर	नष्ट वस्तु नहीं मिलती है ।

अन्यमत

मघा से उ.फा तक घुमी	समीप में दिखे बिना झंझट मिले।
हस्त से धनिष्ठा ,,	दूसरे के हाथ में दिखाई देती है।
शत० से० भरणी ,,	अपने घर में दिखाई देती है।
कृ० से श्लेषा ,,	दूर चली गई देखने में नहीं आती है।

कौन धातु नष्ट नहीं हुई

चोरी का माल या घुमा पदार्थ नष्ट हो गया या नहीं इस पर विचार। गुरु उदय लग्न में=सोना। शुक्र चतुर्थ हो=चांदी। शनि सप्तम=लोहा। मंगल दशम=तामा। बुध उदय लग्न में =सीसा या रांगा। चंद्र चतुर्थ=कांसा। सूर्य दशम=पीतल नाश नहीं हुआ।

मतांतर

लग्न या चतुर्थ में बुध=सीसा। सप्तम चंद्र =कांसा। पंचम सूर्य हो तो=पीतल नष्ट नहीं हुआ।

पृष्ठोदय राशि में चंद्र हो तो धन नष्ट नहीं हुआ।

प्रश्न समय शुभ और पापग्रह धूम ग्रह से युक्त हो तो गया धन नष्ट नहीं हुआ। जिस दिशा में गया है उसी दिशा में रहेगा।

आरूढ़ में चंद्र हो तो वस्तु नष्ट नहीं हुई वैसे ही रहेगी।

लग्न में स्थिरराशि हो तो खोई वस्तु विनाश नहीं हुई। चरराशि हो तो वस्तु का नाश। द्विस्वभाव हो तो पूवार्द्ध में, स्थिर का फल उत्तरार्द्ध में चर का फल होगा।

बलवान चंद्र गुरु केंद्र में हो तो वस्तु नष्ट नहीं हुई। यदि पाप युक्त दृष्ट हो तो नष्ट वस्तु नहीं मिले।

खर्च

१२ वां चंद्र हो तो चोरी गई चीज खर्च में आगई। चंद्र निर्बल हो तो थोड़ा-सा माल बचा है।

चोर मिले पकड़ा जावे

सप्तमेश सूर्य सानिध्य से अस्तंगत हो।

सप्तमेश पापयुक्त केन्द्र में हो।

धनेश सूर्य के साथ व अस्तंगत हो।

दशमेश दग्ध व अस्तंगत हो।

दशमेश लग्नेश का इत्थशाल हो तो राज्य से धन सहित चोर पकड़ा जावे।

लग्नेश दशमेश साथ हो तो राज्य द्वारा चोरी मिले।

लग्नेश की दृष्टि सप्तम पर न हो तो धन सहित चोर पकड़ा जावे।

लग्नेश सप्तमेश साथ हो राजद्वारा धन सहित चोर मिले।

चंद्रमा और सप्तमेश अस्तंगत हो धन सहित चोर मिले।

चोर और देश में पकड़ा जावे

तृतीय नवम के स्वामी सप्तमेश से इत्थशाल करे तो चोर दूसरे देश में पकड़ा जावे।

दशमेश या तृतीयेश से सप्तमेश का इत्थशाल हो।

राजा चोर का पक्षपात करे

अष्टमेश दशमेश का इत्थशाल हो तो राजा चोर का पक्षपात करे।

चोर को बेड़ी पड़े धन मिले

केवल अष्टम राहु या केतु हो और लग्न खाली हो।

चोर स्वतः धन लौटा देवे

लग्नेश लग्न में हो।

लग्नेश सप्तमेश का इत्थशाल हो।

लग्नेश विकल हो (कलाहीन हो) और सप्तमेश तथा लग्नेश की लग्न पर दृष्टि न हो।

लग्नेश विकल हो लग्नेश सप्तमेश की परस्पर दृष्टि न हो।

लग्नेश सप्तम में सप्तमेश से इत्थशाल करे अष्टमेश लग्न में हो।

आरूढ या उदय लग्न से तीसरे घर पापग्रह हो और उस पापग्रह से चौथा या पांचवाँ शुभग्रह हो।

चोरी का माल विदेश गया

धनेश का लग्नस्थ या तृतीयस्थ ग्रह के साथ इत्थशाल हो।

या ९ या ३ घर में धनेश हो।

या लग्न में चर राशि का चंद्र हो।

चोर धन लेकर गाँव से भाग गया

दशमेश लग्नेश से इत्थशाल करता हो।

सप्तमेश का दशमेश या तृतीयेश से इत्थशाल हो।

चोर मिले धन न देवे

धनेश सूर्य सानिध्य से अस्तंगत हो।

चोर के पास धन नहीं रहे

पाप दृष्टि युक्त चंद्र हो।

बाहरी चोर माल दूर

चर लग्न या चर नवांश हो तो चोरी का माल किसी बाहरी आदमी के पास है तथा अपने घर से दूर है।

आपस का चोर माल घर के समीप

स्थिर लग्न या स्थिर नवांश हो या वर्गोत्तम हो तो आपस ही का कोई मनुष्य चोर है। माल अपने घर के समीप ही होगा। या स्वजातीय या उच्चजातीय व्यक्ति या दास चोर होगा या माल अपने ही घर में होगा।

अन्य ने चुराया

यदि उपरोक्त से भिन्न हो तो अन्य ने चोरी की।

चोर न मिले

धनेश अष्टमेश का इत्थशाल हो तो राजा के कारण चोर नहीं मिलेगा।

चोर वहीं है

सप्तमेश केन्द्र में हो तो चोर वहीं है नगर के बाहर नहीं गया है।

चोर कैसा है

नवीन चोर—सप्तम में शुक्र हो और चंद्र से दृष्ट हो।
पुण्य सहम पापदृष्ट हो।

प्रपंची चोर—सप्तम बुध हो चंद्र से दृष्ट हो।

पाखंडी चोर—सप्तमेश शनि हो चंद्र से दृष्ट हो।
शनि सप्तम में हो चंद्र से दृष्ट हो।
लग्न और चंद्र को शनि देखता हो।

प्रसिद्ध चोर—शनि सप्तम हो गुरु से दृष्ट हो।
सप्तमेश स्वगृही या उच्च का हो।
शनि पर गुरु की दृष्टि हो।

पहिले भी चोरी की थी

सप्तमेश पापदृष्ट हो तो पहिले भी चोरी की थी ऐसा जानो।
सप्तमेश मंगल से मुशरिफ योग हो तो पहिले भी पकड़ा गया था।

चोर का सहायक

१-१०-७ भाव में कोई ग्रह स्वगृही या उच्च का हो और बली हो उस ग्रह की जाति, वर्ण, शरीर, स्वभाव, गुण-दोष वाला मनुष्य चोर का सहायक होता है यह योग नहीं हो तो केवल सप्तमेश का ही बल विचारना चाहिये।

चोर कौन है

चोर अपने ही घर में—लग्न में सूर्य चंद्र की दृष्टि हो।

लग्नेश लग्न में हो या लग्नेश सप्तमेश का योग हो और सूर्य चंद्र स्वन-

वांश में हो। या लग्न में लग्नेश सप्तमेश का इत्थशाल हो।

पड़ोसी चोर—लग्न पर सूर्य या चंद्र किसी की भी दृष्टि हो।

सेवक चोर—सप्तमेश २, ३ या १२ भाव में हो।

कुटुम्ब का चोर—लग्नेश और सप्तमेश लग्न में हो।

आत्मीय चोर—लग्न पर सूर्य चंद्र की दृष्टि हो।

स्वामी या माता चोर—सप्तमेश उच्च का हो।

पिता चोर—सप्तम में सूर्य या शुक्र हो या सप्तमेश सूर्य १, २, १२ घर में हो।

घर का कौन चोर है

सप्तमेश के आधार पर चोर या उसके सहायक की कल्पना करना—

गृहस्वामी या पिता चोर=सप्तमेश सूर्य हो।

माता	,,	चंद्र	ये ग्रह नीच के हों तब
पुत्र या भाई	,,	मंगल	ऐसा फल होता है इसमें
स्वजन या मित्र	,,	बुध	ऐसा भी विचार है। और
गृह का प्रधान	,,	गुरु	इसमें पुण्यसहम भी देखकर
स्त्री	,,	शुक्र	विचारकरना चाहिये।
पुत्र या दास चोर		शनि हो	

गाने वाला चोर—लग्न और चंद्र को शुक्र देखे।

चोर स्त्री—पुरुष या नपुंसक है

आर्द्रा से स्वाती तक १० नक्षत्र हों=स्त्री चोर।

विशाखा अनुराधा ज्येठा=नपुंसक चोर।

शेष मूल से रेवती तक और अश्वनी से मृग० तक=पुरुष चोर है।

स्त्री या पुरुष चोर

पुरुषराशि को पुरुषग्रह देखे—पुरुष चोर।

स्त्री ,, ,, स्त्री ,, ,, स्त्री चोर।

सप्तमेश स्त्रीराशि में हो या स्त्रीग्रह हो या स्त्रीग्रह से दृष्ट हो तो स्त्री चोर अन्यथा पुरुष चोर होगा।

यदि आरूढ़ या उदयलग्न विषमराशि हो तो पुरुष, सम हो तो स्त्री चोर।

समलग्न राशि में स्त्रीग्रह हो तो स्त्री चोर, विषम से पुरुष चोर जानना चाहिये।

इनमें आरूढ़ उदय लग्न और ग्रह का बलाबल देखकर ही निर्णय करना चाहिये।

यह चोर है या नहीं

चंद्रमा पापग्रह से मुंथसिली हो तो चोर होगा, शुभग्रह से मुंथसिली हो तो वह चोर नहीं है।

कभी चोरी की थी या नहीं

लग्नेश व चंद्रमा से सप्तमेश मुंथसिली हो तो पहिले भी चोर था।

सप्तमेश पापदृष्ट हो तो पहिले भी चोर था।

पुण्यसहम क्रूरग्रह से दृष्ट न हो तो वह पहिले चोर नहीं था।

चोर कहां है

सप्तमेश चरराशि=ग्रामान्तर में चोर है।

स्थिरराशि=देश में चोर है।

द्विस्वभाव=मार्ग में चोर है।

लग्न पर सूर्य चंद्र की दृष्टि हो तो प्रच्छक के घर में ही चोर है। या किसी बलिष्ठ पुरुष के यहां ठहरा है। इनमें से केवल एक की दृष्टि हो तो चोर पड़ोस में रहता है।

लग्नेश लग्न में सप्तमेशयुक्त हो तो चोर प्रच्छक के घर में ही है।

सप्तमेश केन्द्र में=चोर पुरी के मध्य में है।

चोर कहां है मिलेगा या नहीं

इससे यह भी विचार कर सकते हैं कि मित्र कहां है।

(तिथि + वार + नक्षत्र=योग) ५२ + ३ ÷ १२=शेष ७।

१ शेष=जीव हास्ययुक्त अपने घर में कुटुम्ब युक्त पान आदि उपचारों सहित पृथ्वी पर बैठा है।

२ शेष=परिश्रम करता है अल्प मनुष्यों युक्त कुछ उद्वेग या भय की वार्ता सुन रहा है।

३ शेष=क्रोधयुक्त अपने आसन पर है। मन में परेशान फिर पिछले कार्य के वश कहीं चला गया है।

४ शेष=सोकर जल से मुख धो रहा है।

५ शेष=सोने से उठकर भोजन कर रहा है।

६ शेष=मार्ग चलते हुए अवश्य मिलना होगा।

७ शेष=स्त्री के साथ भोग आदि व्यवहार में लगा है।

८ शेष=मन में बहुत उद्वेग हो रहा है।

९ शेष=वह धर्म के कार्य में लगा है।

१० शेष=राजा के सम्मान से युक्त है।

११ शेष=भोजन कर रहा है।

१२ शेष–वह दुःखी है स्त्रीभोग की इच्छा कर रहा है धनवान है।

चोर मर गया=सप्तमेश अस्तंगत हो व केन्द्र में हो।

राजा की आज्ञा से चोर मारा जायगा=सप्तम में पापग्रह हो।

चोर की अवस्था

लग्नेश से या लग्नेश के नवांश से चोर को अवस्था जाति गुण आदि का विचार करना चाहिये।

लग्नेश चंद्र=बाल। मंगल=८ वर्ष से अधिक। बुध=ब्रह्मचारी १२ वर्ष का। शुक्र=युवा १६ वर्ष का। गुरु=३० वर्ष का। सूर्य वृद्ध=५० वर्ष से ऊपर। शनि=अतिवृद्ध ५० वर्ष से अधिक।

अन्यमत—लग्नेश चंद्र=बच्चा दूध पीता है। मंगल=छोटा लड़का है। बुध= १२ वर्ष के भीतर बिना विवाह का है। गुरु=१५ वर्ष के भीतर है। शुक्र=३२ वर्ष के भीतर है। सूर्य ७० वर्ष के भीतर है। शनि ८०-९० वर्ष के भीतर है।

अन्यमत—चंद्र-बुध=कुमारी कन्या या बालक। मंगल-शुक्र=विस्मय युक्त स्त्री या चितायुक्त पुरुष। शनि वृद्धा स्त्री या पुरुष। सूर्य-गुरु= प्रसूता स्त्री या संतान युक्त पुरुष।

अन्यमत—बुध=बालक। शुक्र=युवा। मंगल=तरुण। गुरु=मध्यम आयु। शनि=बुड्ढा। सूर्य=अति वृद्ध।

अवस्था—सूर्य १०-१२ घर में हो=अल्प आयु।

सूर्य स्वगृही	मध्य आयु।
सूर्य सप्तम में	वृद्ध।
सूर्य चतुर्थ में	अति वृद्ध।

चोर की जाति

लग्नेश या सप्तमेश सूर्य=क्षत्रिय। चंद्र=वैश्य, मंगल=क्षत्रिय, बुध=शूद्र, गुरु=ब्राह्मण, शुक्र ब्राह्मण, शनि=अंत्यज।

सप्तम में जो बलीग्रह हो या सप्तमेश से चोर की जाति जानना चाहिये संयुक्त ग्रह से चोर के साथी की जाति जानना चाहिये।

राशि अनुसार जाति

लग्न मेष=ब्राह्मण चोर, वृष=क्षत्रिय, मिथुन=वैश्य, कर्क=शूद्र; सिंह= अंत्यज।

अन्यमत से—अपना ही बंधु, कन्या=स्त्री चोर, तुला भाई या मित्र, वृश्चिक सेवक।

अन्यमत से—पुत्र, धनु=भाई या स्त्री चोर।

अन्यमत से—सेवक, मकर=वैश्य।

अन्यमत से—पुत्र की स्त्री, कुंभ=चूहा, मीन=पृथ्वी या धरातल में वस्तु।

मतान्तर=मीन चूहा चोर।

चोर का स्वभाव आदि—द्रेष्काण के अतिरिक्त लग्नेश से भी देखना। द्रेष्काण के अनुसार वर्णन पहिले दे चुके हैं। लग्न में जो द्रेष्काण हो उससे चोर का स्वभाव आदि का अनुमान करना चाहिये।

चोर का रूप और बल

१-७-१० स्थानों में जो ग्रह बलवान हो उसके समान चोर का रूप जाने, इससे चोर का बल भी प्रगट होगा, इनमें उच्च आदि कोई बलीग्रह न हो तो सप्तम से ही चोर का बल जानना चाहिये।

सप्तमेश से भी चोर का रूप विचार ले।

चंद्र को देखने वाले ग्रह का जैसा रूप हो वैसा ही चोर के रूप का अनुमान करना चाहिये।

चोर का स्वरूप

राशिस्वामी के गुण-धर्म में जो दिया है उसके अनुसार भी अनुमान करना सप्तमेश चोर का रूप है इससे भी विचार कर लेना।

चोर का कार्य

अष्टमेश से विचार करना चाहिये।

चोर के घर की दिशा

लग्न से चंद्र जिस दिशा में हो वह जिस दिशा का स्वामी हो उस दिशा की ओर चोर का घर होगा।

चंद्रमा लग्न=पूर्व, चतुर्थ=उत्तर, सप्तम=पश्चिम, दशम=दक्षिण दिशा में जाने।

इनके बीच की राशियों में कोण की दिशा समझना चाहिये।

जैसे—२-३ भाव-ईशान। ५-६ वायव्य। ८-९ नैऋत्य। ११-१२ आग्नेय।

चोर के घर का द्वार

चन्द्र स्थिर राशि का=एक ही द्वार, द्विस्वभाव=२ द्वार।

चोर कितने हैं

सप्तमेश सिंह राशि में हो=१ चोर। मीन या मिथुन=कई चोर। सप्तमेश के साथ जितने ग्रह से सम्बंध हो उतने ही चोर जाने। सप्तमेश उच्च या वक्री हो तो चोर संख्या दुगुनी या पचगुनी भी हो सकती है।

अन्यमत-सप्तमेश सिंह राशि में १। मीन मिथुन बहुत। अल्पसंतान वाली राशि पर=१। बहु संतान वाली राशि पर सप्तमेश=बहुत चोर होते हैं।

वर्ग के अनुसार चोर का विचार

प्रश्नसमय प्रच्छक के मुख से निकला आदि अक्षर से या प्रच्छक से कोई नाम लेने को कहे।

प्रातःकाल-पुष्प का। मध्यान्ह-फलका। तीसरे प्रहर-कोई देवता का नाम। संध्या-कोई नदी या पहाड़ का नाम लेने को कहे। उसके आदि अक्षर से वर्ग का विचार कर फल कहे।

अ वर्ग—का प्रश्न अक्षर हो या प्रश्न अक्षर में अ वर्ग की प्रधानता हो ब्राह्मण स्त्री चोर होगी पुरुष नहीं, माल मिलेगा।

क वर्ग—क्षत्रिय चोर। २ पुरुष चोरी करते हैं। माल बहुत दूर चला जाता है। प्रयत्न करने से माल मिले चोर का मध्यम दर्जे का कद है या पैर से लंगड़ा है।

च वर्ग—चोर वैश्य और संतानहीन व्यसनी और दुराचारी अति डरने वाला पुरुष है।

ट वर्ग—शूद्रवर्ण नपुंसक, पुराना चोर विश्वास बढ़ाते आ रहा है गाल या मस्तक पर मसा या तिल का दाग है।

त वर्ग—अंत्यज चोर २-३ सहायक हैं या इनकी राय से चोरी होती है। नीच व्यक्तियों को विश्वास में लेकर चोरी की जाती है। घर से आधा मील दूर पर माल छिपाया जाता है। द्रव्य खर्च करने पर माल मिल जाता है।

. वर्ग—घर की नौकरानी चोर, माल मिले निम्न श्रेणी की ४०-५० वर्ष की आयु की है, बिना किसी सहायक के चोरी की। घर के किसी व्यक्ति से इसकी जानकारी रहती है।

य वर्ग—शूद्र चोर, घर का सेवक भी संभव है या घर से उसका कोई सम्बंध हो। किसी नौकरानी से भी उसका मेल है जिससे उस चोर ने भेद लिया हो या चोर की सहायता की हो।

श वर्ग—वैश्य चोर जिसके सिर के बाल कम है बाल झड़ने लगते हैं जिससे चांद दिखने लगती है।

३५-४० वर्ष की आयु मध्यम कद, दक्ष चोर है। जिसे चोरी के काम में अभ्यास है। दाहिने कंधे पर लहसुन आदि का चिह्न है।

चोर के नाम का वर्ण जानना

नवांश चक्र	राशि अंश	१ मेष	२ वृष	३ मि.	४ कर्क	५ सिंह	६ कन्या	७ तुला	८ वृश्चिक	९ धन	१० मकर	११ कुंभ	१२ मीन
१	३°-२०'	क	प	झ	ल	ख	फ	ञ	ष	ग	व	च	य
२	६°-४०'	च	फ	घ	ई	छ	ब	ङ	उ	ज	भ	क	ऐ
३	१०°०	ट	थ	द	ट	ठ	द	ध	ठ	ड	ध	न	ड
४	१३-२०	य	ग	ब	च	व	घ	भ	छ	स	ङ	य	ज
५	१६-४०	अ	ज	भ	क	ई	झ	म	ख	ऊ	ञ	प	ग
६	२०-०	ठ	ड	ध	न	ड	ढ	न	त.	ह	ण	त	थ
७	२३-२०	छ	र	ङ	म	ज	श	क	प	झ	ह	ख	फ
८	२६-४०	ख	आ	ञ	प	ग	उ	च	फ	घ	ए	छ	व
९	३०-०	त	ढ़	ण	त	थ	ण	ट	थ	द	ट	ठ	द

इस चक्र में विशेष क्रम से वर्ग के क्रमानुसार अक्षर दिये हैं। अ वर्ग में ८ अक्षर हैं य+श वर्ग में भी ८ अक्षर हैं। शेष में ५ अक्षर हैं नीचे उनके क्रम और स्वामी दिये गये हैं।

क वर्ग	च वर्ग	ट वर्ग	त वर्ग	प वर्ग	य वर्ग	अ वर्ग
८+६	६+८	४+१०	४+१०	२+१२	१३+१३	१३+१३
मंगल	शुक्र	बुध	गुरु	शनि	चंद्र	सूर्य

जैसे मेष के नीचे क दिया है। इसको १ गिनले आगे ८ गिनती पर ख। ख को १ गिनकर वृष के नीचे ६ वाँ ग दिया है। इसे १ गिनकर मिथुन के नीचे आठवां घ है। इसी प्रकार उपरोक्त क्रम से वर्ग के अक्षर चक्र पूरा होने तक एक ही वर्ग के दिये हैं।

प्रश्नलग्न की नवांश कुंडली बना लेना चाहिये। लग्न, चतुर्थ, सप्तम और दशम घर के नवांशों के अक्षर उपरोक्त चक्र से जानकर क्रम से जोड़ने से नाम के वर्ण होते हैं।

जैसे—मेष का पांचवाँ नवांश का अक्षर है इसी प्रकार वर्ण खोज लेना।

यदि केन्द्र की नवांशराशि में पापग्रह हो तो उस नवांश के वर्ण को मिटा देता है। और केन्द्रांश राशि में शुभग्रह युक्त या दृष्ट हो तो अपने नवांश के तुल्य वर्ण को देता है। यदि अक्षर देने वाला ग्रह उच्च का हो तो अपनी राशि के अक्षरों को द्वित्व करता है। विषम राशि का हो तो विषम और सम राशि का हो तो सम अक्षरों को द्वित्व करता है। यदि अक्षर दाता ग्रह अपनी उच्च या स्वराशि का होकर अपने नवांशों को देखता हो या

५

उनके मध्य में हो तो अक्षर देता है। बहुत अक्षर हो तो आदि में संयोग और थोड़े हों तो अंत में संयोग होता है।

इन अक्षरों की मात्रा का विचार

वलवान शुभग्रह केन्द्र या त्रिकोण में शीर्षोदय राशि का हो तो सिर पर मात्रा जैसे—ए ओ अं। पृष्ठोदय की नीचे मात्रा जैसे—उ ऊ और उभयोदय राशि हो तो अक्षर के पार्श्व में मात्रा जैसे—अ इ। ये लघु हैं इनकी सवर्ण मात्रा दीर्घ जानना चाहिये।

विषम द्रेष्काण हो तो विषम, सम द्रेष्काण हो तो सम मात्रा होती है। यदि इष्ट दीर्घराशि का हो तो दीर्घ, ह्रस्व का हो तो ह्रस्व मात्रा होगी। यदि पापग्रह त्रिकोण में हो तो मात्रा का हरण होता है। यदि राशि नवांशेश निर्बल होकर नवांश में हो तो मात्रा का नाशक होता है। यदि अपने उच्च का स्वामी या नवांश का स्वामी ग्रह से दृष्ट हो तो मात्रा का नाशक नहीं होता अन्यथा नाशक होता है। जब नवांशपति बलहीन होकर अपने क्षेत्र में हो। और बली होकर चौथे घर में हो तो ए, दशवें हो तो अनुस्वार, सातवें हो तो विसर्ग देता है। मकर से लेकर ६ राशि हो तो लघु, शेष में दीर्घ मात्रा नाम के अक्षरों में जोड़ना चाहिए।

नाम में कितने अक्षर होंगे

लग्न में चरराशि का नवांश हो तो नाम के २ अक्षर, स्थिरराशि के नवांश में ३ अक्षर द्विस्वभावराशि का नवांश हो तो नाम के युग्म अक्षर अथवा द्विस्व के क्रम से नाम के लग्न के पूर्वदल में ५ और परदल में ३ अक्षर जानो। यदि द्विस्वभावराशि का नवांश शुभग्रह से दृष्ट हो तो लग्न के द्रेष्काण के अनुसार विचार करना चाहिये।

विषम लग्न हो तो पहिले द्रेष्काण के ३, दूसरे के ५, तीसरे के ७ वर्ण जानना चाहिये। यदि सम लग्न हो तो द्रेष्काण क्रम से २, ४, ६ वर्ण नाम के जानना चाहिये। यदि उक्त द्रेष्काण वली शुभग्रह से दृष्ट हो तो उक्त वर्णों की बहुलता हो। किन्तु विषमराशि हो तो विषम, समराशि हो तो सम वर्ण बहुत हों।

चोरी की सिद्धि विचार

चोरी सिद्ध नहीं होगी—लग्न में शुभग्रह का योग होने से या पापदृष्टि होने से सफलता नहीं मिले।

सफलता सुख—राहु शनि दोनों लग्न में हों तो चोरी करने में शरीर का सुख हो।

सफलता—पापयोग दृष्टि रहित लग्न को लग्नेश देखे तो सफलता हो, इस प्रकार न हो तो सफलता न हो।

चोरी के वाद आग्रह या लड़ाई में सुख—लग्न में पापग्रह हों या शुभग्रह की दृष्टि हो तो सुख हो अन्यथा हानि, भय या बंधन हो।

हानि भय बंधन या मृत्यु—लग्नेश शुभग्रह की दृष्टि रहित २ घर में=हानि। ६ घर में=भय। १२ घर में=बंधन। ८ घर में हो=मृत्यु।

क्या मिलेगा—लग्न में मंगल सूर्य=सुवर्ण। शुक्र चंद्र=चांदी। बुध गुरु रत्न सहित सुवर्ण। शनि राहु= लोहा।

खोई हुई वस्तु

चोरी के विषय में इस विषय पर भी योग दे दिये गये हैं उन पर भी विचार करना चाहिये।

खोई चीज का तत्त्व से विचार

अस्त और आरूढ़ से करना चाहिये कि वस्तु कहां है–लग्न से चतुर्थ स्थान में यदि उसका पृथ्वी तत्व हो तो=भूमि पर। अग्नि तत्व=हो अग्नि के समीप। जलतत्त्व पानी के निकट। वायुतत्व=हवा में होना चाहिये। आकाशतत्व=आकाश में (ऊपर)।

वस्तु शीघ्र मिले

लग्न में पूर्णचंद्र हो गुरु या शुक्र की दृष्टि हो।

लाभभाव में शुभग्रह हो।

वस्तु मिले

५-२-३ स्थान में सभी ग्रह हों।

लग्न से २, ३, ५ स्थान में शुभग्रह हों।

आरूढ़ से दशम या चतुर्थ में चंद्र हो।

वस्तु वहीं है मिलेगी

लग्न में स्थिरराशि २-५-८-११ हो या स्थिर नवांश हो या वर्गोत्तम हो तो वस्तु मिलेगी। उसी स्थान में स्थित है दूसरे घर में वस्तु नहीं गई।

शीघ्र लाभ

शीर्षोदय लग्न हो उसमें पूर्णचंद्र हो या कोई शुभग्रह का योग या दृष्टि हो।

या शुभग्रह वलवान हो लाभस्थान में हो।

वस्तु मिले

पृष्ठोदय लग्न में पापग्रह हो।

नक्षत्र के अनुसार

अंध लोचन=शीघ्रलाभ=पूर्व दिशा में ।

मंद लोचन=प्रयत्न करने से लाभ=दक्षिण दिशा में ।

काण लोचन=बहुत दिनों में सुनने में आवे=पश्चिम दिशा में ।

सुलोचन=न सुनाई दे और न मिले=उत्तर दिशा में ।

किस नक्षत्र में कौन सा लोचन होता है बता चुके हैं । चोरी के दिन जो नक्षत्र हो उससे विचार करना चाहिये कि वस्तु किस दिशा में है बताया है ।

वस्तु मिले

लग्न में सप्तमेश, लग्नेश सप्तम हो ।

चोरी गई वस्तु

(प्रश्न तिथि + वार + नक्षत्र + लग्न) ÷ ५=शेष १=पृथ्वी में, २=जल में, पर नहीं मिले । ३=आकाश में वह भी नहीं मिले । ४=तेज में वह राज मार्ग में गई जानो । ५=वायु में इसमें शोक हो ।

खोया धन नहीं मिले

आरूढ़ लग्न से २-६-८-१२ में छत्र हो ।

खोया धन न मिले बल्कि गांठ का और जाय

प्रश्न करते समय प्रच्छक या अन्य पुरुष नाक छिनके या मुख सिकोड़ कर या जम्हाई लेवे या तुतला कर बोले या निशाना लेवे ।

वस्तु नष्ट नहीं हुई

केन्द्र में गुरु चंद्र हो पापग्रहों से युक्त या दृष्ट हो तो वस्तु नष्ट नहीं हुई ।

पृष्ठोदय राशि में चंद्र हो ।

स्थिर राशि लग्न में हो ।

वस्तु नष्ट हो गई

चरराशि लग्न में हो तो नष्ट हो गई ।

लग्न द्विस्वभाव हो तो पूर्वार्द्ध में स्थिर का फल, उत्तरार्द्ध में चरराशि का फल होता है ।

वस्तु चोरी हो गई

आरूढ़ और छत्र लग्न में क्रूरग्रह हो या अस्तंगत हो ।

खोया धन किधर गया

लग्न में चंद्र=पूर्व । दशम=दक्षिण । चतुर्थ=उत्तर । सप्तम=पश्चिम । इनके बीच के कोण को विदिशाएं जानना चाहिये ।

था जलतत्व राशि=ईशानकोण, अग्नितत्व=आग्नेय, पृथ्वीतत्व=नैऋत्य। वायुतत्व=वायव्य कोण जानना चाहिये।

द्रेष्काण के अनुसार

लग्न में प्रथम द्रेष्काण=द्वार देश में वस्तु है।

,, द्वितीय द्रेष्काण=मध्यदेश में वस्तु है।

,, तृतीय द्रेष्काण=अंतभाग गृह के पीछे वस्तु है।

त्रिपुष्कर योग

इसमें में जो चीज जाती है ३ चीजें जायेंगी। भद्रातिथि (२-७-१२) शनि, मंगल, रविवार और नक्षत्र-विशाखा, उ०फा०, पू०भा०, पुनरवसु कृतिका और उ०षा० इन तिथि वार नक्षत्र तीनों के आपसमें मिलने से त्रिपुष्कर योग होता है।

गिरे हुए धन का विचार

धन का लाभ=धनेश लग्नेश व चंद्र के साथ इत्थशाल करे।

या लग्नेश धनेश और चंद्र एक घर में हों।

या लग्न या दूसरे घर में इत्थशाल करें।

सूर्य और चंद्रमा लग्न को देखते हों यदि मित्रदृष्टि हो तो विशेष लाभ।

वस्तु नहीं मिले

चौथे घर से नीचे के स्थानों में सूर्य व चंद्र हों।

भूले हुए धन का विचार

जहां रखा था धन वहीं है=चंद्र और चतुर्थेश चौथे घर में हो या उसे देखे।

मिलेगा=२, ७, ८, १० घर में चंद्र और गुरु हो।

धन वहां रखा था पर नहीं मिलेगा=पापग्रह चतुर्थ में हो।

वहुत धन है=सप्तमेश दूसरे या चौथे घर में हो।

नहीं मिलेगा=लग्न में राहु, सूर्य अष्टम या मंगल सप्तम या अष्टम में हो।

अन्य प्रकार

(प्रश्न समय की तिथि + वार + गत नक्षत्र + प्रहर × ८) ÷ ७ शेष १=भूमि में, २=वर्तन में, ३=जल में, ४=अंतरिक्ष में, ५=तुष में, ६=गोबर में, ७=भस्म में जाने।

चतुष्पद विचार

चतुष्पद नष्ट नहीं=दशम घर में पापग्रह।

,, नष्ट हो गया=लग्न में चतुष्पद राशि में राहु हो।

,, वंधन में=लग्न में द्विपद राशि में राहु हो।

बहुपद नष्ट =बहुपद लग्न में राहु हो।

पक्षी बंधन में=पक्षी राशि में राहु हो।

चोरी गये पशु का प्रश्न=सूर्य नक्षत्र से चंद्र नक्षत्र तक गिने।

प्रथम ९ नक्षत्र=वन में। आगे ६ नक्षत्र=बगीचे के मार्ग में! आगे के ७ नक्षत्र=अपने घर चला आवे। बाद के २ नक्षत्र=न मिले। अन्त के १ नक्षत्र=पशु मर गया है।

प्रश्न का ध्रुवांक (पिंडांक) जो ध्वज धूम आदि के अनुसार वर्ग का पिंडांक निकालना बताया है वह लेकर (पिंडांक ३ + वस्तु का वर्णांक + १) ÷ २=शेष १=लाभ होगा। २=नहीं होगा।

चोरी गई वस्तु के अनुसार उसके आने की दिशा और मिलने का समय आदि का भी विचार करना चाहिये।

चोरी गये पशु का प्रश्न

सूर्य नक्षत्र से वर्तमान चंद्र नक्षत्र यदि नवम हो=पशु वन में, आगे ६ नक्षत्रों में हो=मार्ग में। आगे ७ नक्षत्रों में आवे=घर में आया जानो। बाद के २ नक्षत्रांत में=आने वाला नहीं है। बाद के ३ नक्षत्रांत हों तो=पशु की मृत्यु जाने।

धन लाभ प्रश्न

भुजाओं से धन और यश प्राप्त=सूर्य धनु में, शुक्र मकर का हो।

धन मिले=७-८-१०-४ स्थानों में चंद्र और गुरु हो।

धन लाभ=चंद्र, लग्नेश, धनेश ये आपस में युक्त या दृष्ट होकर लग्न, धन या त्रिकोण में हों।

लग्नेश धनेश लग्न में हो या लग्नेश लाभेश लाभ में हो, या लाभेश लग्न में हो, निश्चय लाभ हो।

यदि चंद्र योगकर्ता हो तो विशेष कर लाभ होगा। स्वामी के स्वरूप के अनुसार।

चंद्र या लाभेश द्वितीय स्थान में हो तो निश्चय लाभ।

द्वितीयेश द्वितीय में हो या लग्न में हो।

धन स्थान में शुक्र चंद्र और गुरु धनेश युक्त हों।

लाभेश लग्न को देखे और शुक्र गुरु चंद्र ११, ९, २ स्थान में हों यहां चंद्र योग से लाभ होता है।

लग्नेश से चंद्र राशीश तथा धनेश इत्थशाल करे शुभग्रह से युक्त या दृष्ट भी हो।

लग्नेश या चंद्र से धनेश इत्थशाल करे और शुभग्रह से युक्त या दृष्ट हो।

लग्न में ७-६-३-११ राशि हो और शुभग्रह से युक्त या दृष्ट हो।

परम लाभ

लग्नेश या लाभेश लाभस्थान में हो चंद्र से दृष्ट हो ।

तुरंत लाभ

चंद्र लग्नेश धनेश परस्पर एक-दूसरे को देखते हो ।

चतुर्थ या सप्तम में चंद्र, दशम में सूर्य, लग्न में शुभग्रह हों ।

लग्न धन या त्रिकोण में चंद्र हो, धन स्थान में लग्नेश हो या परस्पर दृष्टि हो ।

त्रिकोए या केन्द्र में शुभग्रह हों ।

शीघ्र धनलाभ

केन्द्र त्रिकोण या धन में चंद्र लग्नेश धनेश परस्पर दृष्ट या युक्त हों ।

लग्न में शुभग्रह या लग्नेश का षड्वर्ग हो ।

शुभग्रह से युक्त दृष्ट हो ।

चंद्र चोथे सातवे हों सूर्य दशम हो शुभग्रह लग्न में हो ।

लग्नेश अष्टमेश दोनों अष्टम में एक ही द्रेष्काए में हों ।

लग्नेश और लाभेश पर चंद्र की दृष्टि हो ।

नवम स्थान दशमेश से युक्त या दृष्ट हो ।

या लाभेश को दशमेश से व्ययेश से अष्टमेश से योग हो और उन स्थानों में शुभ दृष्टि हो ।

चंद्रमा या लग्नेश के साथ धनेश स्वगृही या उच्च का हो ।

लग्नेश धनेश और चंद्र ६-५-२ और लग्न में हो आपसमें युक्त या दृष्ट हों ।

शुक्र बुध गुरु कोई लग्न २-६-५ भाव में हो या उच्च के चतुर्थ में हों ।

पूर्ण शुभग्रह केन्द्र में हो ।

बलवान शुभग्रह केन्द्र त्रिकोण या ३ भाव में हों पापग्रह युक्त न हों ।

लग्न में चन्द्र, लाभ में गुरु या शुक्र, लाभ में शुभदृष्टि हो ।

धन प्राप्त

लग्न मे धनेश चतुर्थेश शुभ युक्त दृष्ट हो पापग्रह से अदृश्य हो ।

गुरु शुक्र या बुध वली हों लाभस्थ चंद्र से दृष्ट हो तो वहुत धन लाभ हो ।

गुरु लग्न में हो ।

मिथुन से गुरु और शुक्र, लग्न में बुध, दशम में मंगल हो ।

लग्नेश लग्न में वली हो शुभग्रहों से युक्त या दृष्ट हो ।

लाभ में विघ्न

लग्न व्यय या अष्टम चंद्रमा यदि पूर्ण भी हो तो धन लाभ में विघ्न करता है ।

धन लाभ में अनर्थ

लग्नस्थ बुध को चंद्रमा या पापग्रह देखें तो शीघ्र धनलाभ हो परन्तु कुछ अनर्थ भी हो।

देर से लाभ

पापग्रह धन स्थान में हो तो विलम्ब से लाभ हो और कुछ अशुभ भी हो।

लाभ न हो

लाभेश अष्टमेश युक्त हो तो लाभ न हो।

लग्नेश धनेश पापग्रहों से पीड़ित हो।

शीघ्र न मिले

धनेश चतुर्थ में हो परन्तु पापग्रह भी हों तो धन शीघ्र न मिले।

धन हानि

लग्नेश पापग्रह हो या लग्न में पापग्रह हो तो धनहानि और कलह व्याधि हो।

लग्नेश ६, ८, १२ भाव में लाभ न हो कष्ट हो।

लग्न आरूढ़ और छत्र में शनि मंगल हो।

६, ७, ८ घर में पापग्रह या लग्नेश हो।

लग्न में पापग्रह का षड्वर्ग पापग्रह युक्त या दृष्ट हो।

केन्द्र त्रिकोण लाभ में पापग्रह हों।

मरण

धनेश का पापग्रह से इत्थशाल हो तो प्रच्छक का मरण।

लग्नेश षष्टम हो तो आत्मा भी शत्रु हो जाती है।

अष्टम हो तो मरण बारहवें हो तो बहुत खर्च कराता है।

नष्ट धन मिले

चन्द्र शुभग्रह से इत्थशाल कर लग्न या दशम में हो।

चन्द्र लग्न में हो उसे सूर्य या शुभग्रह मित्रदृष्टि से देखें।

विस्मृत धन मिले

लग्नेश सप्तम में सप्तमेश लग्न में हो या लग्नेश सप्तमेश का इत्थशाल हो।

इष्ट स्थान में धन है

धनेश धनभाव में या चतुर्थ हो तो प्रश्न स्थान में बहुत धन है।

चिंतित वस्तु लाभ

आरूढ़ छत्र और लग्न इन तीनों को उच्च के ग्रह देखते हों तो इच्छित वस्तु लाभ हो।

नवम भाव शुभग्रह युक्त या दृष्ट हो और स्वामी से भी दृष्ट हो इच्छित वस्तु का लाभ हो।

शुभग्रहों से युक्त या दृष्ट लाभेश धन में होकर लग्नेश से इत्थशाल करे तो सब प्रकार की प्राप्ति हो।

लाभेश लाभ में होकर लग्नेश से इत्थशाल करे वस्तु प्राप्त हो।

पुर घर आदि लाभ

लग्न में शुभग्रह पंचम में उच्च का ग्रह लाभ में उच्च का शुक्र हो।

किसके द्वारा लाभ

धनेश तनु धन सहज आदि में से जिस भाव से इत्थशाल करता हो उस भाव सम्बंधी व्यक्ति द्वारा धनलाभ हो अर्थात् जिस भाव में मंदगामी ग्रह हो जो धन देने वाला हो, उससे धनेश इत्थशाल करे तो उस भाव सम्बंधी व्यक्ति से लाभ हो।

प्राप्त कहां होगा

लग्न में चर राशि—दूर देश से धन प्राप्त हो।

स्थिर राशि—अपने नगर या घर में

द्विस्वभाव—दूर या समीप से प्राप्त होगा यदि प्राप्ति का योग हो।

लाभ कब होगा

धनप्राप्ति योग में जो समय निकाल लेना बताया है उससे समय निकाल लेना चाहिये।

मतांतर—

अन्य प्रकार से भी समय जानना इस प्रकार है। पूर्ववत लग्न स्पष्ट की कला पिंड में १२ अंगुल के शंकु की छाया का गुणा कर १२ का भाग दे कर शेष से मेषादि राशि जानना। शुभग्रह की राशि शेष के अनुसार प्राप्त हो तो कार्य सिद्ध होगा। पापग्रह की राशि हो तो कार्य की हानि होगी। फिर कला पिंड में शंकु की छाया का गुणा कर ग्रहगुणक के योग ७१ से भाग देकर शेष में क्रमानुसार सूर्य से आदि से लेकर गुणक घटाते जाना चाहिये जिस ग्रह का गुणक न घटे उससे समय विचार करना चाहिये।

गुणक=	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	= योग
	५	२१	१४	९	८	३	११	= ७१

समय=सूर्य मंगल=उतने दिन। शुक्र चंद्र=पक्ष। गुरु=मास।

बुध = ऋतु। शनि का गुणक न घटे तो उतने वर्ष में कार्य होगा।

धनप्राप्ति के अतिरिक गमन, आगमन, जय, पराजय, शत्रुनाश, आधान प्रसव आदि में भी इसी प्रकार समय निकाल लेना चाहिये।

सट्टा या लाटरी में कुछ मिलेगा या नहीं ?

सट्टा या लाटरी में मिलने का योग निम्न प्रकार है–

(१) अष्टमेश चतुर्थ या लाभ में धनकारक शुभग्रह के साथ बलवान योग करता हो पंचमेश से भी सम्बन्ध हो तो अकल्पित लाभ प्राप्त हो।

ये योग धनकारक इसमें विचारणीय हैं—

लग्नेश का धनेश या चतुर्थेश या पंचमेश या नवमेश या दशमेश या लाभेश से सम्बन्ध हो या धनेश या पंचमेश, नवमेश या दशमेश या लाभेश से सम्बन्ध हो।

या इनके स्वामियों का सम्बन्ध ४+५, ४+६, ४+१०, ४+११, या ५+६ या ५+१०, ५+११, या ९+१०; ६+११, या १०+११ इनके भाव स्वामियों का सम्बन्ध हो तो धनयोग होता है। जो उपरोक्त योग में विचार करना चाहिये।

(२) इसका विशेष विचार पंचमभाव से भी करना। यदि पंचम में चंद्र हो शुक्र से दृष्ट हो तो लाटरी से लाभ होगा।

(३) यदि द्वितीयेश और लाभेश चतुर्थ में हो और चतुर्थेश शुभग्रह की राशि में शुभग्रहों से युक्त या दृष्ट हो तो अचानक धनलाभ हो।

(४) राहु, केतु; बुध नवम या पंचमभाव में। राहु नवम या पंचम हो स्वामी बुध हो शुभग्रह की दृष्टि हो तो अचानक धन मिले।

(५) नवम में बुध की राशि हो उसमें राहु या केतु हो लग्न में सूर्य या चंद्र हो या दोनों हों, बुध शुभभाव में बलवान हो तो अचानक धन प्राप्त हो, राज कृपा हो।

(६) पंचम में चंद्र हो शुक्र की दृष्टि हो तो लाटरी आदि मिले।

(७) नवमभाव या नवमेश राहु केतु तथा बुध ये सब अचानक धन देते हैं। इनका धनदायक शुभस्थानों में होना और शुभ सम्बन्ध होना चाहिये।

(८) पंचम या अष्टमभाव से धनदायक और शुभग्रहों के योग से अकस्मात धन मिलने का योग विचारना। पंचमभाव से राजा द्वारा लाभ, सट्टा-लाटरी आदि से अकल्पित धन प्राप्त होने का योग प्रगट होता है।

भूमिगत द्रव्यप्राप्ति का प्रश्न

(१) चतुर्थस्थान पाताल है। धन, भाग्य, लाभस्थान से सम्बन्ध होने से भूमिगत द्रव्य प्राप्ति की संभावना रहती है।

(२) यदि द्वितीयेश और चतुर्थेश शुभग्रह की राशि में शुभग्रहों से युक्त या दृष्ट हो तो भूमिगत सम्पत्ति मिले।

(३) द्वितीयेश और चतुर्थेश शुभग्रह के साथ नवम में शुभराशि गत हो तो भूमि में गड़ी सम्पत्ति मिले।

(४) लाभेश और द्वितीयेश चतुर्थ में हो चतुर्थेश शुभग्रह के साथ हो और शुभदृष्टि हो तो भूमिगत धन मिले।

(५) लाभेश चतुर्थ स्थान में हो और शुभग्रह से युक्त या दृष्ट हो तो भूमिगत धन मिले।

(६) लग्नेश द्वितीय स्थान में, द्वितीयेश लाभ में, लाभेश लग्न में हो तो भूमिगत सम्पत्ति मिले।

(७) लग्नेश शुभग्रह होकर धनस्थान में हो, धनेश अष्टमस्थान में हो तो गड़ा धन मिले।

(८) लग्नेश, धनेश, लाभेश धनकारक गुरु से युक्त या दृष्ट हो या इनका परिवर्तन योग हो तो धनलाभ हो।

विवाह सम्बन्धी प्रश्न

विवाह होगा—यदि ३, ५, ६, ७ या ११वें घर में चन्द्र हो जिस पर गुरु सूर्य और बुध की दृष्टि हो तो विवाह होगा।

विवाह शीघ्र हो—केन्द्र या कोण में शुभग्रह हो।
विवाह होगा—समराशि में शनि हो तो विवाह होगा।
६,५, १०, ११ स्थान में चंद्र हो दशमेश या सूर्य से दृष्ट हो।
विवाह न हो—केन्द्र, त्रिकोण में पापग्रह चन्द्रमा ३, ५, ६, ७, ११ स्थान में न हो।
शनि सप्तम घर में न हो।
कृष्णपक्ष का चन्द्र अच्छे स्थान में हो उस पर ६-८ स्थानी पापग्रहों की दृष्टि हो।

वर को वधू मिले

लग्न को छोड़कर लग्न से सम स्थान में शनि हो।
लग्न में चंद्र दशमेश से दृष्ट हो या दूसरे घर में चंद्र शुक्र से दृष्ट हो

पापग्रह से अदृष्ट हो ।

लग्न सप्तमस्थ शुक्र चंद्र से इत्थशाल करे ।

या ३, ९, ७, १० स्थित चंद्र से दृष्ट हो ।

शुक्र शुभग्रहों से दृष्ट हो ।

उच्च का शुभग्रह केन्द्र लाभ में बली होकर शुभग्रह से दृष्ट हो ।

४, ७, २, ८ राशि में चंद्र हो ये राशियाँ लग्न में हो और लग्न में चंद्र हो ।

लग्न आरूढ़ और छत्र में चर राशि हो ।

चंद्र २, ७, १० ११, ६, ३ स्थान में हो गुरु की पूर्णदृष्टि हो ।

वर को स्त्री मिले

१, ७, १०, ११ घर में शुक्र शुभग्रह से दृष्ट हो ।

गुरु लग्न में हो सप्तम में चरराशि केन्द्र में पापग्रह न हो ।

दशम सप्तम में उच्च का चन्द्र शुक्र गुरु से दृष्ट हो ।

लग्न आरूढ़ और छत्र को उच्च का गुरु देखे तो विचार किया काम सिद्ध हो स्त्री प्राप्त हो ।

लग्न या छत्र में शुक्र हो ।

सप्तमेश का लग्नेश या चंद्र से इत्थशाल हो तो बिना प्रयास के स्त्री मिले ।

लग्नेश बलवान चंद्र सप्तम हो और लग्नेश का सप्तमभाव से मुशरिफ हो और चंद्र का सप्तमेश में मुत्थसिल हो तो बिना प्रयत्न स्त्री मिले ।

७, २ और उपचय स्थान में चंद्र हो गुरु से दृष्ट हो ।

केन्द्र त्रिकोण और सप्तम में शुभग्रह की राशि या शुभग्रह हो ।

सप्तम में शनि हो ।

उक्त योगों में पापग्रह हो तो कुरूपा स्त्री मिले ।

बहुत स्त्री हों

सप्तमेश लग्नेश एक द्रेष्काण में हों ।

सप्तम में चरराशि का चंद्र हो शुक्र से दृष्ट हो केन्द्रों में पापग्रह हो ।

शुक्र के वर्ग से युक्त मंगल तथा मंगल के वर्ग से युक्त शुक्र हो तो कई स्त्री होंगी परन्तु वे खराब स्त्रियां होंगी ।

प्रश्नकालिक लग्न से विवाह योग

(१) १०, ११, ३, ७, ५ स्थान में किसी में चन्द्र होकर गुरु से दृष्ट हो तो शीघ्र विवाह होगा ।

(२) २, ४, ७ राशियों में से लग्न होकर शुभग्रहों से युक्त या दृष्ट हो तो विवाह शीघ्र हो ।

(३) लग्न में विषमराशि में या विषमराशि के नवांश में चन्द्र और शुक्र दोनों बली होकर लग्न को देखते हों तो कन्या को वर का लाभ हो।

(४) लग्न में समराशि या समराशि के नवांश में शुक्र और चन्द्र बली होकर लग्न को देखते हों तो वर को स्त्री मिले।

प्रश्नकाल में शकुन

यदि प्रश्नकाल में अचानक शंख, तुरही, बीणा आदि बाजों का शब्द सुनाई पड़े तो वर-कन्या का मंगल हो। यदि कौवा, गधा, कुत्ता, सियार अचानक शब्द करने लगें तो अमंगल हो।

कन्या को वर मिले

लग्न से विषम स्थान में अकेला शनि हो।

पुरुष लग्न हो लग्न या लाभ में गुरु हो।

सप्तम या लाभ में शुक्र चंद्र शुभग्रह युक्त या दृष्ट हो।

लग्न आरूढ़ और छत्र इन तीनों को उच्च ग्रह देखें।

विवाह के जो योग दिये हैं उनमे भी विवाह होगा।

वर के जो योग दिये गये हैं कन्या को भी वही लागू होगें।

स्त्री लाभ किसके द्वारा

सप्तम और सप्तमेश पर शुभग्रह की योगदृष्टि हो तो उससे सम्बन्ध रखने वाले भाव द्वारा लाभ हो अर्थात् दृष्टि करता ग्रह जिस भाव में हो उस भाव के व्यक्तियों द्वारा लाभ होगा।

स्त्री लाभ में किसके द्वारा हानि या बाधा

सप्तम में पापग्रह हो तो स्त्रीसम्बन्धी कार्य का नाश हो, तृतीय पापग्रह हो तो भाई, बन्धु आदि द्वारा कार्य नष्ट, चतुर्थेश पापग्रह से संबन्ध हो माता-पिता आदि द्वारा। इसी प्रकार जिस भाव से सम्बन्ध हो उस संबन्ध से हानि हो।

कैसी स्त्री मिलेगी

अष्टम में स्वक्षेत्री शनि और सूर्य=वंध्या।

अष्टम में स्वक्षेत्री चंद्र बुध=रोग युक्त वंध्या।

,, ,, ,, शुक्र गुरु=मृतवत्सा।

,, ,, ,, मंगल =गर्भपात वाली।

लग्न में चन्द्र शुक्लपक्ष में २–१० तक क्वारी कन्या।

शु० १० से कृष्णपक्ष में ५ तक=युवा। ५ से अमावास्या–वृद्धा।

लग्न में बुध युक्त या दृष्ट=कन्या युवा।

शनि युक्त या दृष्ट=वृद्ध ।

सूर्य या गुरु से युक्त या दृष्ट=प्रसन्ना स्त्री ।

मंगल शुक्र=कर्कशा तरुण । इसी प्रकार पुरुष का भी जानना चाहिये ।

विवाह होगा या नहीं

वर्ग के अनुसार ध्वज आदि से जो पिंडांक बना हो वही लेना चाहिये । पिंडांक ÷ ८=शेष १ हो तो अनायास विवाह हो जायेगा । २-कष्ट से होगा । ३-विवाह नहीं होगा । ४-कन्या मर जावगी । ५-पितृव्य आदि का मरण । ६-राजा का भय । ७-वर-कन्या दोनों की मृत्यु या स्वसुर का मरण । ८-संतान का मरण हो ।

	१	२	३	४	५	६	७	८
नाम	ध्वज	धूम्र	सिंह	श्वान	वृष	खर	गज	ध्वांक्ष
फल	रूपशील गुणयुक्त शीघ्रमिले	नहीं मिले कलह हो	सदृश फल	नहीं मिले कलह	सदृश फल	नहीं मिले कलह	नहीं मिले कलह	नहीं मिले कलह हो।

स्त्री प्राप्त न हो

८-११ और केन्द्र में पापग्रह से इत्थशाल करे ।

या ८ या केन्द्र में पापग्रह हो ।

लग्नेश में चन्द्र मुशरिफ योग करता हो या सप्तमेश से इत्थसाल योग होने पर जो स्त्री लग्न का योग है । इसमें जिसके साथ-साथ मुंथसिल योग हो यह पाप युक्त या दृष्ट हो और सप्तम में बलहीन व पापग्रह हो तो स्त्री प्राप्त सम्बंधी कार्य नष्ट हो जायगा ।

प्रश्नकर्त्ता कटि का बाँया भाग, बांये कूल्हे को स्पर्श करे तो विवाह कार्य में बाधा हो या विवाहित पुरुष को कष्ट हो या स्त्री का मरण हो । दक्षिण शिरोभाग दक्षिण छाती या दक्षिण पैर का स्पर्श करे तो उपरोक्त कार्य में हानि नहीं होगी ।

विवाह होगा

लग्नेश लग्न में सप्तमेश सप्तम में हो या लग्नेश द्वितीयभाव में हो ।

सप्तम में चंद्रमा शुक्र या दोनों हों ।

सप्तम और दूसरे घर पर शुभग्रहों की दृष्टि हो तथा द्वितीयेश और सप्तमेश शुभ राशि पर हो ।

सप्तमभाव में शुभग्रह हो या सप्तमेश शुभग्रह युक्त २ या ७ घर में हो ।

सप्तमेश लग्न में हो या सप्तमेश शुभग्रह युक्त लाभ में हो ।

सप्तमभाव शुभग्रह युक्त या दृष्ट हो सप्तमेश बलवान हो ।

सप्तमेश और धनेश केन्द्र त्रिकोण में हो।

जितने अधिक वलीग्रह सप्तमेश से दृष्ट होकर सप्तम में हो उतने शीघ्र विवाह हो।

शुक्रस्थग्रही या कन्या राशि का हो।

सप्तमेश और चंद्र तृतीय में हो एवं दशम में लग्नेश बलवान बुध युक्त हो।

शीघ्र विवाह हो

लग्नेश या चंद्र के साथ सप्तमेश का इत्थशाल हो।

सप्तम में लग्नेश या चंद्र हो।

विवाह न हो

सप्तम में शनि चंद्र हो।

शुक्र चंद्र किसी भाव में हो उससे सप्तम नें मंगल और शनि हो।

सप्तम में पापग्रह हो।

लग्न सप्तम और धन में पापग्रह हो और निर्बल चंद्र पंचम में हो।

सप्तमेश व्यय में हो।

सप्तमेश शुक्रयुक्त न होकर ६-८-१२ घर में हो या नीच या अस्तंगत हो।

६-८-१२ के स्वामी सप्तम में हो तथा शुभग्रह युक्त या दृष्ट न हो।

पंचम में चंद्र हो और ७-१२ घर में २-२ पापग्रह हों इन सब में विवाह होने का योग नहीं है।

विवाह कब होगा ?

लग्नेश और सप्तमेश को जोड़ने से जो राशि हो उस राशि में गोचर में जव भी गुरु आवे।

लग्नेश से शुक्र जितना समीप हो उतने शीघ्र ही विवाह हो।

जन्मराशीश और अष्टमेश को जोड़ने से जो राशि आवे उसमें गोचर में जव गुरु आवे।

सप्तमराशि की जो संख्या हो उसमें अष्टम की राशि जोड़ने से जो संख्या आवे वह विवाह की वर्ष-संख्या होगी।

सप्तम या सप्तमेश पर शुभग्रह की दृष्टि हो तो विवाह ३ महीने के भीतर हो।

शुक्र जिस राशि में हो उस राशि के स्वामी की दशा में विवाह हो।

लग्नेश का नवांशेश जिस राशि में हो उस राशि से द्वितीयभाव में जब गोचर मे चन्द्र-गुरु हो तव विवाह हो।

सप्तम में जो राशि हो उसका स्वामी और सप्तमेश का नवांशेश इन दोनों

में से जो वली हो उसके त्रिकोण में जब गोचर का गुरु आवे तब विवाह होगा ।

विवाह होने की दिशा

शुक्र से सप्तमेश की जो दिशा हो उसी दिशा में विवाह होगा ।

सप्तमभाव में यदि ग्रह हो तो उस भाव की राशि की दिशा में हो ।

या सप्तम पर जिन ग्रहों की दृष्टि हों वे जिस राशि में हों उनसे दिशा =विचारना चाहिये ।

विवाह समीप या दूर होगा ?

उपरोक्त दिशा सूचक राशि स्थिर हो तो समीप, चर हो तो दूर और द्विस्वभाव हो तो थोड़ी ही दूर पर विचारना चाहिये ।

प्रत्येक भाव के अनुसार प्रश्न में स्त्री का विचार

(१) लग्न में सूर्य मंगल=जिस स्त्री का विचार है वह विधवा होगी । चंद्र=बाल्यावस्था में मृत्यु । गुरु बुध शुक्र=सुमंगली । राहु मृतवत्सा ।

मतांतर—राहु शनि लग्न में=दीर्घकाल तक वंध्या रह कर संतान हो पर संतान नष्ट हो जावे ।

(२) द्वितीयभाव में सूर्य शनि मंगल राहु=स्त्री विपत भोगे, चंद्र=बहुत संतान, बुध गुरु शुक्र=सर्वसुख युक्त ।

(३) तृतीय में सूर्य या राहु=वंध्या और दीन । शेष ६ ग्रहों में=सब प्रकार से सुखी । मंगल बुध गुरु शुक्र से विशेष ।

(४) चतुर्थ में सूर्य या चंद्र=स्त्री पापकर्त्ता होगी । मंगल बुध गुरु शुक्र=सब प्रकार से सुखी । शनि=दुग्धये क्षीण, राहु=उस पर सौत आयगी चाहे व्याहता हो या करी हुई (रखनी) हो ।

(५) पंचम सूर्य चंद्र=पति सहवास की इच्छुक नहीं । मंगल=मृत वत्सा । बुध गुरु शुक्र=बहुत संतान । शनि=रोगपीड़ित । राहु=युवा में मृत्यु ।

(६) षष्टम सूर्य मंगल गुरु शनि राहु=स्त्री धनी सुखी, चंद्र=विधवा । शुक्र=दीर्घ जीवी मंगली । बुध=कलहप्रिय ।

(७) सप्तम सूर्य या चंद्र=रोगी स्त्री । मंगल=कारावास भोगे । बुध गुरु=भाग्यवान । शुक्र=युवावस्था में मृत्यु । शनि राहु=विधवा ।

(८) अष्टम सूर्य मंगल=विधवा । चंद्र=युवा में मरे । बुध शनि=कुटुम्ब वाली । गुरु शुक्र राहु=मृतप्रजा ।

(९) नवम सूर्य मंगल=स्त्री का क्षीण दुग्ध । चंद्र गुरु=पुत्र कन्या वाली । बुध=रोगी । शुक्र=पुत्रवती । शनि राहु=वंध्या ।

(१०) दशम सूर्य बुध=स्त्री पूर्ण सुखी। चंद्र=विना पति। मंगल शनि राहु=विधवा। गुरु=निर्धना। शुक्र=वैश्य।

(११) लाभ में सूर्य= समृद्ध वती। चंद्र गुरु शुक्र शनि राहु=ऐश्वर्य वती पुत्र कन्या संतति। मंगल बुध=सदा सुमंगली।

(१२) व्यय में सूर्य या राहु=निपुत्री। चंद्र=अल्पायु। शनि मंगल=शरावी। बुध=पुत्रवती। गुरु=धनी। शुक्र=सर्वसुख युक्त।

प्रश्न लग्न और आरूढ़ एक होने से उक्त फल अवश्य होगा।

मतांतर

(१) लग्न चंद्र=स्त्री पुरुष दोनों मरें।
(२) द्वितीय राहु=व्यभिचारिणी।
(३) तृतीय गुरु=वंध्या। सूर्य=शुभ :
(४) चतुर्थ सूर्य चंद्र=दुग्ध क्षीण। मंगल बुध गुरु शुक्र=अल्पायु।
(५) पचम सूर्य चंद्र=वांझ।
(६) सप्तम मंगल=दूसरा हर ले जाय।
(७) अष्टम सूर्य मंगल=दूसरा पति होवे।
(८) नवम बुध=रोगी न हो। सूर्य मंगल शुक्र=वंध्या।
(९) दशम=चंद्र=वंध्या। गुरु=विना संतान या बिना पति।
(१०) व्यय में चंद्र=नाश।

विवाह के बाद स्त्री के सौभाग्य पर विचार

विधवा होगी—लग्न में मंगल सूर्य बुध हो तो स्त्री शीघ्र विधवा हो।
छठे चंद्र या सप्तम शनि या सप्तम राहु या दशम पापग्रह हो।
आरूल वग्न छठे या बारहवें हो तो जिस स्त्री के बारे में पूछा गया है विधवा हो या पुरुष के बारे में पूछा है तो वह विधवा पुत्र होगा।
१-८-७ या १२ वें घर पापग्रह हो।
मंगल शनि उच्च के लग्न सप्तम में हो धनवती बिधवा हो।

वंध्या—लग्न में शनि हो तो स्त्री वांझ हो या बालक न बचें।
तीसरे राहु हो या पंचम सूर्य चंद्र हो।
नवम में गुरु चंद्र छोड़कर अन्य ग्रह हो।
दशम चंद्र या व्यय में सूर्य राहु हो।
अष्टम में सूर्य शनि ९-१०-११ राशि में बैठा हो।

प्रेत बाधा—चंद्र बुध अष्टम हो या एक संतान होकर वंध्या हो या कन्या हो चंद्र बली हो तो कन्या होगी। यदि पुरुषग्रह की दृष्टि हो तो काक वंध्या हो।

६

अल्पायु—चतुर्थ में मंगल वुध गुरु शुक्र ।

स्त्रीमरण—पंचम में राहु हो या अष्टम में चंद्र हो ।

सप्तम में शुक्र हो ।

लग्न चंद्र चरराशि के हो केंद्र में वलवान पापग्रह हों सप्तम घर शुभग्रह युक्त या दृष्ट न हो ।

स्त्री पुरुष दोनों मरे या जियें—लग्न में चंद्र दोनों मरें ।

लग्न में गुरु शुक्र दोनों रहने से बहुत दिन जियें ।

वर स्त्री की मृत्यु—६-८ घर में चंद्र ।

सूर्य अष्टम, चंद्र लग्न में, मंगल सप्तम हो तो वर-स्त्री आठवें महीने में मरे ।

स्त्री मरे—सप्तम में पापग्रह या राहु—विवाहिता स्त्री मरे ।

चतुर्थ में पापग्रह या राहु=करी स्त्री मरे ।

बीमार रहे—पंचम में शनि हो या सप्तम में सूर्य हो ।

ताप की पीड़ा हो चंद्र सप्तम में ।

बीमार न हो—नवम बुध हो तो बीमार कमी न हो ।

दरिद्रता हो—द्वितीय सूर्य मंगल शनि हो ।

निर्धन कुल की सौख्यहीन—पंचम में पापग्रह हो ।

धन धान्य युक्त—व्यय में गुरु हो ।

सुखी—व्यय में शुक्र ।

नाशकारक—अष्टम गुरु शुक्र राहु या व्यय में चन्द्र ।

वृद्धि हो—सप्तम में बुध गुरु या अष्टम में शनि बुध ।

पुत्रवती—दूसरे में चन्द्र । या पंचम बुध शुक्र या दूसरे में शुभग्रह हो तो बहुत पुत्र हों ।

नवम चन्द्र गुरु या व्यय में बुध=पुत्रवती ।

सौत हो—चतुर्थ राहु ।

स्तन में दूध न हो—सूर्य चन्द्र चतुर्थ हो या वहां शनि हो ।

पुत्रनाश—पंचम में मंगल ।

कन्या परीक्षा यह निर्दोष है क्या

दोषी है या नहीं—प्रश्नलग्न लग्नेश और चन्द्र स्थिर राशि में—निर्दोष ।

चर=सदोष (आचरणहीन) ।

अल्पदोष—द्विस्वभाव राशि में लग्नेश चन्द्र और लग्न चर में ।

अक्षता—लग्नेश और चन्द्र स्थिरराशि में यदि चरराशि में हो तो क्षता (भोगी हुई) हो ।

सदोष—मंगल शनि केन्द्र में चन्द्र से दृष्ट हो या शुक्र वृश्चिक का व वृश्चिक के द्रेष्काण में हो।

चन्द्र द्विस्वभाव का हो लग्न चर हो या केन्द्र में शुक्र, बुध चन्द्र से दृष्ट हो या वृश्चिक के शुक्र बुध हो।

गुप्तभोगी—चन्द्रमा लग्न द्विस्वभाव राशि का हो।

शनि मंगल एक स्थान में स्थिरराशि में न हो अर्थात् चर द्विस्वभाव राशि में हों।

मंगल शनि केन्द्र में हो और शुक्र व चन्द्र की दृष्टि हो और शुक्र चन्द्र के द्रेष्काण में हो।

स्थिरराशि छोड़कर अन्य राशि में मंगल हो चन्द्र से इत्थशाल करे।

प्रगट भोगी—चन्द्र शनि लग्न में हो।

विषकन्या—छठे घर में शुभग्रह न हो।

स्त्री का स्वभाव व आचरण

पतिव्रता—लग्न से ११-७-३-१० स्थान में चन्द्र हो गुरु से युक्त या दृष्ट हो।

चन्द्र को सूर्य या शुक्र देखे या युक्त हो।

पूर्वोक्त शुभयोग में मित्र उच्च स्वक्षेत्री होकर उच्च मित्र या स्वक्षेत्री ग्रह से दृष्ट हो।

लग्नेश और चन्द्र का गुरु के साथ इत्थशाल हो।

केन्द्र त्रिकोण में गुरु हो।

भाग्यवान=पंचम या केन्द्र में गुरु बुध हो या केन्द्र त्रिकोण या लाभ में शुभग्रह हो।

सधवा—दूसरे घर में पापग्रह न हो, लग्न में चन्द्र के साथ शुभग्रह हो या केन्द्र में उच्च का ग्रह हो।

सुहागिन—तीसरे में राहु गुरु छोड़कर अन्य ग्रह हो सौभाग्यवृद्धि।

छठे शुक्र अखंड सुहागिन।

छटे बुध चन्द्र छोड़कर अन्य ग्रह सुखी भाग्यवान।

दुष्ट स्त्री—प्रश्न लग्न आरूढ़ लग्न इनके केन्द्र में राहु हो।

चन्द्र पुरुष ग्रह युक्त या दृष्ट हो।

भ्रष्ट—सप्तम में नीच या शत्रुक्षेत्री चन्द्र को शत्रुग्रह देखें तो वह बंधुओं से वैर करने वाली भ्रष्ट अर्थात् धर्म पर न चलने वाली हो। यदि शुभग्रह देखें तो अच्छा फल हो।

कलहकारी=छठे बुध हो तो लोगों से झगड़ा करने वाली हो।

स्थूल देह—सप्तम शुक्र हो तो स्थूल देह हो ।
दूसरा हर ले जावे—सप्तम में मंगल हो ।
दूसरा पति करें—सूर्य मंगल अष्टम हो ।
विना सन्तान या बिना पति के—दशम में गुरु हो ।
व्यभिचारिणी—दूसरे राहु हो ।
केन्द्र राहु से युक्त या दृष्ट हो ।
११, ७, ३, १० स्थान में चंद्र नीच का या शत्रुक्षेत्री हो । नीच शत्रु क्षेत्री ग्रह से दृष्ट हो ।
चंद्रमा शनि युक्त हो ।
पर पुरुष से प्रेम—चंद्रमा, सूर्य मंगल से युक्त या दृष्ट हो ।
परकीया—मंगल शुक्र से युक्त या दृष्ट हो तो वह दूसरे की हो जायगी ।
कुमारीपन भंग—गुरु बुध और मंगल इन दोनों से युक्त हो तो बाल्यावस्था में अन्यपुरुष से संग हो ।
स्त्री देवरगामिनी—लग्नेश सप्तम में शत्रुक्षेत्री हो ।
पति को छोड़ पर पुरुष के साथ रहे—लग्न व लग्नेश से एक राशि आगे मंगल हो ।
अपने घर में पर पुरुष सेवे—मंगल, यह चंद्र या लग्नेश से एक ही अंश में या समीप इत्थशाल करे । यदि मंगल स्वगृही हो तो यह जार के घर स्वतः जावे ।
वेश्या हो—दशम में शुक्र हो तो वेश्या हो ।
स्त्रीस्वभाव—लग्न में ग्रह के अनुसार ।
लग्न में सूर्य—क्रूर स्वभाव ।
चंद्र=मूर्खा, मंगल=रोगिणी । बुध=कुटिल मुह । गुरु=धनी । शुक्र=सुन्दरी शनि=विधवा ।
पुंश्चली—लग्न में मकर या कुंभराशि में शुक्र चंद्र पापग्रह से दृष्ट हो ।
कुल क्षय करे—लग्न चंद्र २ पापग्रहों के बीच हो पापग्रह से दृष्ट हो ।
राजकीय पुरुष द्वारा भोगा—पापग्रह या सूर्य के साथ चंद्र का इत्थशाल हो । या स्वगृही मंगल सूर्य के साथ इत्थशाल करे ।
लेखक या वैश्य से—बुध शुक्र के साथ इत्थशाल करे ।
स्वगृही मंगल बुध से इत्थशाल करे ।
खोटे आदमी दास आदि से—सप्तमेश का शनि से इत्थशाल हो ।
स्त्री समान पुरुष या स्त्री से—स्वगृही मंगल शुक्र से इत्थशाल करे ।
जार के साथ परदेश—लग्नेश चंद्र से इत्थशाल करे मंगल स्वगृही हो ।

वृद्ध जार को त्यागे—मंगल पर एक राशि गत बुध शुक्र की दृष्टि हो तो लज्जावश जार को त्यागे ।

जार त्यागे—जार योग पर गुरु की दृष्टि हो तो पुत्रभय से जार त्यागे सूर्य की दृष्टि हो तो राजभय से, शुक्र की दृष्टि हो तो जार की स्त्री के भय से जारता त्यागे ।

जार ले भागे-सप्तमेश का शुभग्रह से इत्थशाल हो ।

जार कौन-उदय का आरूढ़ लग्न सूर्य युक्त=ब्राह्मण या क्षत्रिय जार, मंगल=वैश्य या शूद्र, शनि=शूद्र से भी नीच । राहु चाण्डाल जार ।

व्यभिचार से पुत्र-लग्न और चन्द्र को पापग्रह देखे गुरु नहीं देखे तो व्यभिचार से पुत्र उत्पन्न हो ।

स्त्री प्रेम कैसा रहेगा

स्नेह-लग्नेश पुरुष व सप्तमेश स्त्री समझ कर विचार करे ।

स्त्री का अतिस्नेह=शुभग्रह से चन्द्रयुक्त या दृष्ट हो तो भार्या पति से प्रेम करेगी । यदि वे शुभग्रह उच्च के या मित्रक्षेत्री हों तो अत्यन्त स्नेह करे ।
जो चन्द्र गुरु के क्षेत्र में या स्त्रीग्रहों के क्षेत्र में हो तो पति से प्रेम करेगी ।
सप्तमेश लग्नेश का इत्थशाल हो ।

पति से स्नेह न करे—अशुभग्रह से चन्द्र युक्त या दृष्ट हो ।

बिलकुल स्नेह न करे-जो वे अशुभग्रह नीच व शत्रुक्षेत्री हों ।

कलह—लग्नेश और सप्तमेश में शत्रुता हो या शत्रुदृष्टि हो तो कलह होगी ।

सरल स्वभाव-सप्तमेश लग्नेश से चन्द्र कम्बूल योग करता हो तो स्त्री अच्छे स्वभाव की होगी ।

स्त्री-पुरुष का सम्बन्ध कैसा रहेगा

दोनों में प्रीति—सप्तमेश लग्नेश का इत्थशाल हो या दोनों की परस्पर दृष्टि हो ।

दोनों में मित्रता-सप्तमेश लग्नेश लग्न में या सप्तम में ।

स्त्री आज्ञाकारिणी-लग्न में लग्नेश हो ।

पति स्त्री का आज्ञाकारी—लग्नेश सप्तम हो ।

पति स्त्री के धन को भोगे—चतुर्थ स्थान शुभग्रहों से दृष्ट हो ।

पति स्त्री को सब धन देवे-चतुर्थ स्थान शुभग्रहों से युक्त हो ।

दोनों में विरोध-लग्नेश सप्तमेश की परस्पर वैर दृष्टि ।

दोनों में कलह-चन्द्र मंगल से युक्त या दृष्ट हो ।

स्त्री से कलह-शुक्र शनि से युक्त हो तो विवाहिता स्त्री से कलह हो ।

४,३,५,७ स्थान में चन्द्र हो शुक्र युक्त या दृष्ट हो तो अपनी स्त्री से लड़ाई हो।

दम्पति में कौन बली—सप्तम घर बलवान हो तो स्त्री बलवती।

लग्न बलवान हो तो पुरुष बलवान हो।

स्त्री से विवाद में कौन बलवान

वादी बली या पुरुष—लग्नेश और शनि केन्द्र में हों तो स्त्री विवाद में पूछने वाला बलवान।

लग्नेश शनि हो या कोई मन्दगति वाला ग्रह होकर केन्द्र में हो तो पूछने वाला मनुष्य जीते।

प्रतिवादी या स्त्री—जो सप्तमेश और शनि केन्द्र में हो तो प्रतिवादी बलवान।

सप्तमेश शनि तो मन्दगति वाला ग्रह होकर केन्द्र में हो तो प्रतिवादी 'स्त्री' जीते।

लड़ाई के बाद प्रेम—लग्नेश सप्तमेश पापयुक्त एक ही स्थान में हो तो लग्नेश स्त्री-पुरुष में लड़ाई के ब द प्रेम हो जायेगा।

सप्तमेश एक ही राशि में ो।

कलह—लग्नेश सप्तमेश सूर्ययुक्त हो तो कलह हो।

दोनों रूठे—जो उपरोक्त योगकर्त्ता दोनो निर्बल हों तो दोनो रूठें।

कौन किसको अच्छा नहीं—सूर्य पुरुष है, शुक्र स्त्री है। यदि सूर्य बलहीन हो तो पुरुष को अच्छा नहीं होता।

शुक्र निर्बल हो तो स्त्री को भला नहीं होता है।

सुरत संभोग कैसा होगा

सुरत—जैसा सप्तम स्थान हो उसके अनुसार अर्थात् जैसा सप्तम घर हो, वैसा रति व रति कर्ता।

प्रेमपूर्वक—लग्न में गुरु सप्तम में शुक्र चतुर्थ चन्द्र हो तो हास-विलास युक्त सुन्दर रमणी से रति हो।

चन्द्र केन्द्र में शुभग्रह से इत्थाशाल करता हो यदि पापग्रह से इत्थशाल करे तो कोप युक्त हो।

क्लेश—पापग्रह सप्तम हो तो सुरत में स्त्री को क्लेश हो, पीड़ा रजदोष आदि हों या क्रोध युक्त संग हो।

कलह—चन्द्रमा पाप युक्त हो तो दोनों में कलह हो या स्त्री को पीड़ा हो।

स्त्री भोग प्राप्त—लग्नेश पुरुषराशि सप्तमेश स्त्रीराशि में हो इनका इत्थशाल हो ।

सुख मिले भोगे नहीं—लग्नेश सप्तमेश का एक ही स्वामी हो ।

सुन्दरी के साथ उत्तम भोग—चन्द्र दशम केन्द्र में हो शुक्र से इत्थशाल करे ।

स्वभार्या से कलह युक्त—चन्द्रमा उदय लग्न में शुक्र या शनि से युक्त हो तो स्वभार्या से कलह युक्त ।

उदय लग्न में तृतीय चतुर्थ या सप्तम में चन्द्र और शुक्र हो तो कलहयुक्त उपरोक्त फल ।

अव्यवस्थित शैय्या रहित—सातवें घर में पापग्रह हो दशम मंगल और तृतीय बुध हो तो शैय्या रहित भूमि आदि पर विवाद पूर्वक मनोद्वेग सहित भोग ।

कलह प्रथक शयन—चन्द्र मंगल से युक्त या दृष्ट हो तो भोग समय दोनों में कलह हो प्रथक २ शयन करें ।

भोग समय कपड़ा फटा—सप्तम या दशम में पापग्रह हो तो भोग समय स्त्री का कपड़ा फटा हो ।

कलह में भूमि में शयन—बुध तीसरा हो ।

डर से जागरण—लग्न में चन्द्र हो मंगल दूसरा हो तो रात्रि में चोर के डर से जागरण हो ।

या मंगल लग्न में चन्द्र द्वितीय हो ।

कैसी स्त्री के साथ भोग—केन्द्र में स्थिर या द्विस्वभाव का शनि=अपनी स्त्री के साथ । केन्द्र में चर राशि का शनि=पराई दुर्भगा से । केन्द्र में मंगल क्रोध पूर्ण । चतुर्थ में पापग्रह=धूर्ता से ।

अपनी स्त्री या कामिनी से भोग विलास—५-६-७-३-११ घरों में चन्द्र शुक्र गुरु तथा सूर्य से दृष्ट हो और शुभग्रह केन्द्र और नवम में हो ।

कितने बार भोग—स्थिर लग्न=१ बार । द्विस्वभाव=२ बार । चर=३ बार भोगी गई ।

विषम लग्न या विषम स्थान में लग्नेश=१ बार । सम में=२वार ।

लग्नस्थ ग्रहों की संख्या तुल्य गणना करना जो सबसे बलवान हो उसकी जितनी किरणें हो उतने बार । या लग्नेश का बल जान कर उसकी किरण की संख्या तुल्य या लग्न को देखने वाले ग्रहों की संख्या तुल्य ।

सुरत स्थान—लग्नेश व सप्तमेश स्वगृही या उच्च के हो तो अच्छे घर में अच्छे स्थान में ।

चन्द्र स्वगृही या उच्च का उपरोक्त फल ये ग्रह=स्वगृही=अपने घर में।
मित्रगृही=मित्र के घर में। शत्रुगृही=शत्रु के घर में।
यदि पापग्रह या अन्य ग्रह की राशि हो =अन्य के घर में।
यदि लग्नेश या सप्तमेश नीच आदि स्थान में हो तो मार्ग में या कंटक आदि युक्त बुरे स्थान मे हो।

सुरत समय—लग्न दिनबली हो तो दिन में। रात्रि बली हो तो रात्रि में।
सन्ध्या बली हो तो सन्ध्या में। द्विस्वभाव से दिन व रात्रि में भी।
केन्द्र में या दिनर्क्ष मे दिनसंज्ञक ग्रह हो तो दिन में। उस स्थान में राशि संज्ञक एक ग्रह हो तो रात्रि के अन्त में। रात्रि संज्ञक २ ग्रह हों तो रात्रि में और सूर्य हो तो सन्ध्या में भोगी गई।

रज विचार—लग्नेश व सप्तमेश से शुभग्रहों का कम्बूल योग हो तो रज पुष्प की सुगन्ध युक्त। पाप कम्बूल से दुर्गन्ध युक्त होगा।
चन्द्र केन्द्र में हो तो अधिक कामातुर या विकार रहित रज हो।
अष्टमेश अष्टम में बली हो तो उस स्त्री के रज भी न हो।

रूठी स्त्री लौटेगी या नहीं

हर्षस्थान—लग्न से चतुर्थ तक=स्त्री का हर्षस्थान।
चतुर्थ से सप्तम तक—पुरुष का हर्षस्थान इनमें स्त्री-पुरुषग्रह के वश से विचार करे।

लौट आवे—पूर्णचंद्र सूर्य से दृष्ट हो।
शुक्र समीप ही उदय हुआ हो या बलवान हो।
शुक्र वक्री हो या शुक्र ५-६-७ घर में वक्री हो।

नहीं लौटे—सूर्य १-२-३ घर में हो शुक्र ५-६-७ घर में हो।
शुक्र अस्त हो मार्गी हो।
सूर्य से शुक्र निकल गया हो।

बिलम्ब से लौटे—जो क्षीणचंद्र का सम्बन्ध हो।

स्त्री पति से पीड़ित है—पंचम स्थान में सूर्य हो।

मन में कौन स्त्री है

मन में स्त्री—सप्तम में सूर्य शुक्र मंगल बली=परस्त्री। गुरु=अपनी स्त्री।
बुध=वैश्या, चंद्र=वैश्या। शनि=हीनजाति की स्त्री।
इसकी अवस्था तात्कालिक चंद्र के अनुसार विचारकरे। बाल चंद्रया बुध= कुमारी कन्या। शनि=वृद्धा स्त्री। सूर्य गुरु=प्रसूता स्त्री। मंगल शुक्र= कर्कशा या कठोर स्वभाव वाली स्त्री के सम्बन्ध में प्रश्न होगा।
पुरुष की अवस्था आदि का भी विचार ग्रह से ही करना चाहिये।

किस स्त्री से भोग किया

बिधवा से–प्रश्नकाल में शुक्र मंगल से युक्त हो तो प्रच्छक स्वजाति की विधवा से भोग कर दुःखी हुआ।

राजपत्नी से—सूर्य के वर्ग में शुक्र हो या सूर्य शुक्र एकत्र हों।

अपनी स्त्री से—गुरु सप्तम हो या सप्तम में द्विस्वभाव राशि हो।

परस्त्री से–लग्न में मंगल शुक्र सप्तम या सप्तम में चरराशि हो या सूर्य शुक्र या चंद्र हो।

सप्तम में सूर्य शुक्र मंगल ये सब हों।

रजस्वला में—शनि केन्द्र में हो।

शत्रु मित्र या नीच स्त्री से—चंद्र शत्रुक्षेत्री=शत्रु से सम्बन्ध रखने वाली स्त्री से। मित्रक्षेत्री हो तो मित्र के सम्बन्ध की स्त्री से। नीच क्षेत्री हो तो नीच से सम्बन्ध रखने वाली स्त्री से या वैश्या से।

वैश्या से—सप्तम में स्थिरराशि हो या बुध सप्तम हो तो वैश्या से। सप्तम में शनि=नीच स्त्री से।

अपने कुटुम्ब या उच्चकुल की स्त्री से—चंद्र स्वक्षेत्री हो==अपने कुटुम्ब की या अपनी स्त्री से।

उच्च का चंद्र—उच्चवंश की स्त्री से।

सबकी स्त्री से—चंद्र सब ग्रह युक्त या दृष्ट हो।

स्त्री की आयु रूप सुन्दरता–योगकर्ताग्रह से विचार करे चंद्रमा से भी आयु विचारे। चंद्रमा बाल-तरुण-वृद्ध के अनुसार बाला-तरुणी स्त्री-वृद्धा जानना चाहिये।

शुक्ल १ से ५=बाल। ६-१०=कुमारी। ११-१५=युवा।

कृष्ण १-५=प्रौढ़ा। ६-१०=वृद्धा। ११-३०=मृतवत।

स्वप्न में रति—उदय लग्न या ५, ७, ९ घर चंद्र और शनि से युक्त या दृष्ट हो तो किसी स्त्री से स्वप्न में संभोग किया गया।

चोरी से भोग—१-१०, ७, ५ स्थान में चंद्र शनि युक्त हो तो रात में छिप कर चोरी से भोग किया।

स्वाधीन स्त्री से भोग—चंद्र स्त्री वर्ग में हो तो कोई ऐसी स्त्री से भोग किया होगा जो स्वयं आप स्वाधीन हो।

भोग समय—दिन में उदय होने वाली राशियों के स्वामी यदि ३-९ स्थान में हो तो दिन में। रात्रि में उदय होने वाली राशि के स्वामी ३-९ में हो तो रात्रि में समझना चाहिये। बलीग्रहों से भी दिन-रात का समय अनुमान से ज्ञात करना चाहिये।

स्त्री प्रसूता हुई या नहीं (संतान हुई या नहीं)

प्रसूती नहीं हुई—कुंभ का शुक्र व सिंह का बुध हो।

मंगल बुध शुक्र या चंद्र धनु में हों तो स्त्री प्रसूता हुई न होगी।

प्रसूता हुई—वृश्चिक का शुक्र, वृष का बुध।

मंगल बुध शुक्र और चंद्र धनु राशि को छोड़ कर और राशि में द्विस्वभाव राशि में हो तो स्त्री प्रसूता हो चुकी।

शक्र और बुध दोनों वृश्चिक में या वृष में ही हों तो प्रसूता हुई।

स्त्री प्रसववती होगी या नहीं

प्रसूती होगी—पंचमेश व षष्ठेश सूर्य के साथ में उदय हो गया हो या गुरु मंगल शुक्र दशम में हो।

संतान होगी—यदि पंचमेश लग्नेश व चंद्र से इत्थशाल करे तथा पंचमेश शुभग्रह हो और शुभ युक्त या दृष्ट हो।

स्त्री बंध्या—शनि और सूर्य स्वगृही हो लग्न से अष्टम में हो।

काकवंध्या—चंद्रमा और बुध अष्टम हो तो काकवंध्या हो या कन्या ही कन्या हों।

संतान होगी या नहीं

संतान होगी—पंचमेश शुभग्रह हो और लग्नेश व चंद्र से इत्थशाल करता हो शुभग्रह से युक्त दृष्ट हो।

उदय या आरूढ़ लग्न सूर्य राहु से युक्त हो।

चंद्र उदय लग्न या आरूढ़ में शुभग्रह युक्त हो।

उदय लग्न या आरूढ़ या १-७ घर में गुरु हो।

उदय लग्न या आरूढ़ में परिवेष राहु चंद्र गुरु हो।

पंचम या नवम घर में गुरु या शुक्र बली हो।

लग्नेश पंचमेश चंद्र परस्पर इत्थशाल करें।

लग्नेश पंचमेश का इत्थशाल हो तो इस वर्ष निश्चय संतान हो।

लग्नेश पंचम में पंचमेश लग्न में।

पंचमेश लग्न में या लग्नेश चंद्र पंचम में।

लग्नेश पंचमेश एक ही स्थान में शुभग्रह युक्त या दृष्ट।

पंचमेश युक्त शुक्र ११-५ घर में।

पंचमेश अपने स्वामी या शुभग्रहों से युक्त या दृष्ट।

पंचमेश लग्न में, लाभेश व चंद्र पंचम में।

अल्प संतान—लग्नेश व चंद्र से पंचम घर में ८-२-५-६ राशि हो। या लग्न या चंद्र से पंचम पापदृष्ट हो।

बिलम्ब से संतान—लग्न में पापग्रह, गुरु ४-२ घर केन्द्र में शुभग्रह हो।

दूसरे विवाह से पुत्र—चंद्र के तुल्य बुध से भी चंद्र का वर्ग पंचमभाव में सूर्य शनि से दृष्ट हो।

संताननहीं=चंद्र बुध शुक्र द्विस्वभाव धनु राशि में हों।

पुत्र सुख की हानि—पंचम में गुरु की राशि।

संतान न हो-चन्द्र ३,५,९ धर में सूर्य या शुक्र से युक्त हो।

संतान होकर मरे या गर्भश्राव-अष्टम में गुरु शुक्र हो तो संतान होकर मरे। मंगल हो तो गर्भश्राव हो।

संतान हानि फिर न हो-पापग्रह २-८-१२ में हो तो प्रथम हुई संतान की हानि हो फिर संतान न हों।

स्त्रीवंध्या-अष्टम में स्वगृही सूर्य शनि।

काकवंध्या—अष्टम में चन्द्र बुध।

जप दान आदि से पुत्रलाभ—पंचम में शनि का वर्ग बुध से दृष्ट हो सूर्य मंगल से अदृष्ट हो। एवं पंचम में बुध का वर्ग शनि से दृष्ट हो मंगल बुध से अदृष्ट हो।

संतान न हो-लग्नेश और पंचमेश परस्पर एक दूसरे को न देखे तथा लग्न और पंचम को भी न देखें।

सन्तान विचार—लग्न लग्नेश, द्वितीय द्वितीयेश, पंचम और पंचमेश एवं गुरु की स्थिति पर से विचार करना चाहिये।

संतान विचार-तिथि × ४ + १ + वार + योग ÷ २=लब्धि × ३ ÷ ४=शेष १ =विलम्ब से हो, २=अभाव। ३=प्राप्ति। ४=शीघ्र प्राप्त हो।

लड़की को कैसी सन्तान होगी-प्रश्नलग्न में या प्रश्नमुहूर्त में कोई स्त्री या कन्या जैसी सन्तान लिए अकस्मात ज्योतिषी के समीप आ जावे वैसी सन्तान होगी अर्थात पुत्र लिए हुए हो तो पुत्र। कन्या लिए हुए हो तो कन्या होगी।

गर्भ है या नहीं

गर्भ है—प्रश्न लग्न में लग्नेश और चंद्र पंचम हो।

या पंचम घर में इनकी दृष्टि हो।

सप्तमेश लग्नेश पंचम घर में या सप्तमेश पंचमेश लग्न में।

केन्द्र में लग्नेश और चंद्र का इत्थशाल हो।

केन्द्र में लग्नेश और चंद्र दोनों ही पंचमेश से इत्थशाल करते हों।

लग्न स्थिर हो या लग्न में बुध हो या बुध की दृष्टि हो।

लग्न लाभ या पंचम में बली शुभग्रह हो ग्रस्त वक्री या नीच के न हों।
लग्न आरूढ़ या छत्र में राहु हो।
लग्न व चंद्र से ९-५-७ वें घर में गुरु युक्त या दृष्ट हो।
चंद्र शुभग्रहों से युक्त दृष्ट कहीं भी हो।
चंद्र सूर्य और शुक्र तीनों एकत्र हों।
उदय लग्न या आरूढ़ लग्न से ४-५-९ घर में राहु।

गर्भ है या नहीं—ध्वज आदि में बताये अनुसार वर्ग का पिंडांक ले लेवे।
(पिंडाक + २६ क्षेपक) ÷ ३=शेष १=गर्भ है, २=संदेह है। शेष ० = गर्भ नहीं है। यहां पिंडांक में २६ क्षेपक जोड़ कर ३ का भाग देकर शेष से उपरोक्त फल जानना चाहिये।
(वर्तमान वार × ३ ÷ वर्तमान तिथि) ÷ २=शेष १ गर्भ है, शेष—२ गर्भ नहीं है।

गर्भ नहीं है—लग्नेश और चंद्र का इत्थशाल आपोक्लीम में हो और पंचमेश लग्न व पंचम को न देखे।
लग्न से तीसरा शुक्र, नवम सूर्य, पंचम चंद्र हो।
चंद्र का पापग्रह के साथ इत्थशाल हो।
क्षीण चंद्र के योग से भी विचार करना चाहिये।

गर्भ नाश तो नहीं होगा

गर्भ स्थिर रहे—पंचमेश शुभग्रहों से युक्त या दृष्ट हो और शुभग्रह बलवान भी हों।
व्ययेश शुभग्रह युक्त व दृष्ट केन्द्र में हो।

गर्भ (पात) गिरे—पंचम ग्रह का नवांश जितने पापग्रहों से युक्त या दृष्ट हो उतने गर्भ गिरें यदि शुभग्रह की दृष्टि न हो तो ऐसा योग होता है।
पापग्रह पंचम में हो और लग्नेश भी अशुभ हो तथा चंद्रमा पापग्रह से इत्थशाल करे।

गर्भ नष्ट होगा—चर लग्न में पापग्रह चंद्र से इत्थशाल करता हो।
लग्नेश और चंद्र का नीचादि पाप या वक्री ग्रह से इत्थशाल हो।
पंचम स्थान में पापग्रह की दृष्टि हो।
चंद्र का चरलग्नेश तथा वक्री ग्रह से इत्थशाल हो।

गर्भ गले—अष्टम मंगल हो।

मृतवत्सा—गुरु शुक्र अष्टम हों तो संतान मर जावें।
सूर्य शुक्र अष्टम हो तथा २-१२ में पाप ग्रह हों।

गर्भ गिरे—उदय या आरूढ़ लग्न परिवेष ग्रह से युक्त या दृष्ट हो।
पंचम घर मंगल या शुक्र युक्त हो।

गर्भस्थिर—पंचम घर में गुरु या शुक्र की दृष्टि हो या नवम में हों।

सुख प्रसव=गुरु शुभ वर्ग में हो।

प्रसूति होवे—पंचमेश व षष्ठेश सूर्य से उदित हो (अस्त न हो)।
बुध गुरु शुक्र ये उदित हों (आकाश में)

गर्भपात स्त्री मरण—उदय या आरूढ़ लग्न से अष्टम घर में परिवेष और चंद्र दोनों हो तो गर्भपात हो चंद्र शत्रुक्षेत्री या नीच का हो तो स्त्री मरण। जो चंद्र उच्च का या मित्रक्षेत्री हो तो स्त्री मरे नहीं केवल प्रसव की पीड़ा ही भोगे।

गर्भ किससे रहा (संतान के संदेह में विचार)

अपने पति का गर्भ——लग्नेश पंचमेश शुभग्रहों से युक्त या दृष्ट हो।
पापग्रह स्थिर राशि का हो।
लग्नेश व पंचमेश पापग्रह चर राशि में।
लग्नेश व पंचमेश शुभयोग दृष्टि व इत्थशाल हो।

दूसरे का——लग्नेश पंचमेश पापग्रहों से युक्त व दृष्ट हो।
पापग्रह चर राशि के हो।
लग्नेश व पंचमेश पापग्रह चर राशियों में हो।
लग्नेश पंचमेश पापग्रह से इत्थशाल करें।
उदय लग्न या आरूढ़ लग्न गुरु या शुक्र से दृष्ट न हो और चन्द्र सूर्य मंगल शनि राहु इन ग्रहों से युक्त हो चाहे इन ग्रहों से युक्त न भी हो।

मिश्रित—पापग्रह व शुभग्रह चर स्थिर द्विस्वभाव में हो तो दोनों का अर्थात् पति का और अन्य पुरुष का है।
पापग्रह द्विस्वभाव में हो तो प्रथम होरा में पति का दूसरे होरा में अन्य पुरुष का होगा।
(विषकुम्भ आदि योग × ५ + वार) ÷ ३=शेष १ या ३ शेष हो तो अपने पति का। शेष २=अन्य पुरुष के वीर्य से उत्पन्न हुआ।

कितने महीने का गर्भ है

गर्भमास—लग्न से बली शुक्र जितने स्थान में हो उतने ही महीने का।
जो नवम स्थान से ऊपर शुक्र हो तो पंचम भाव से शुक्र तक भाव गिनकर गर्भमास कहे।
लग्न के कितने नवांश व्यतीत हुए हों उतने ही गर्भ के मास जानना चाहिये जितने नवांश भोग्य हो उतने शेष मास हैं।

प्रश्न में चन्द्रमा जिस द्वादशांश में हो उसके तुल्य राशिस्थ चंद्र में नवम या दशम मास में जन्म होगा।

लग्न से दशम तक बलिष्ट ग्रह जिस स्थान में बैठे हों उतने ही मास गर्भ के जानो।

प्रसव कब होगा

प्रसव समय—जिस लग्न में बलिष्ठ ग्रह हो उसी मास में जन्म जानो।

जिस दिन घड़ी पल में आरूढ़ लग्न से चन्द्रमा सप्तम घर में प्रवेश करे उसी घड़ी पल में उसी दिन संतान का जन्म होगा यह प्रश्न संतान होने वाले मास में कहना चाहिये।

आरूढ़ से सप्तम राशि पर जब चन्द्र आवेगा उतने नक्षत्रसंख्यक दिनों में ही संतान होगी।

लग्न नवांश से समय का उदाहरण—मान लो लग्न=राशि ५-१६°-२३'-४०"है नवांश चन्द्र देखा १३"-२०" तक ४ नवांश गत हो गए वर्तमान ५वां नवाश वर्तमान है, जो१६-४०' तक होता है। नवांश भोग्य है। (१६°-४०")-(१६°-२३'-४०")=शेप १६°-२०" एक नवांश २००' का ३० दिन में भोगता है तो शेप १६= $\frac{१६ \times ३०}{२००} = \frac{१२}{५}$ =२ दिन वर्तमान नवांश के गए शेष ४ मास २८ दिन भोग्य है उतने समय में जन्म संभव है।

दिन या रात्रि में जन्म होगा

लग्न दिवाबली और लग्नेश भी दिवाबली राशि में हो तो दिन में, रात्रिबली हो तो रात्रि में जन्म जानना।

दिवाबली राशि पर दिवाबली ग्रह तो दिन में अन्य प्रकार से हो तो रात्रि में जन्म जानना चाहिये।

गर्भाधान कब हुआ था

जन्म समय से पूर्व नवम या दशमभाव में चन्द्र और लग्न बराबर हो उस समय गर्भाधान हुआ।

गर्भ में क्या होगा पुत्र या कन्या

पुत्र या कन्या—विपम राशि या नवांश में सूर्य गुरु हो तो पुत्र, सम राशि के नवांश में शुक्र चन्द्र मंगल हो तो कन्या।

विपम राशि या नवांश में शनि हो तो पुत्र, सम में कन्या।

सातवें घर में चन्द्र को छोड़कर शेष शुभग्रह विषम हो तो पुत्र, सम राशि में अशुभग्रह या सम ग्रह हो तो कन्या होगी।

प्रश्नकाल में विषम नक्षत्र का उदय हो तो पुत्र, सम हो तो कन्या। १-१ नक्षत्र छोड़कर विषम होता है। जैसे–अश्विनी कृतिका मृग आदि विषम, भरणी रोहिणी आदि सम हैं।

सूर्य उदय लग्न से ३, ६, ७, १०, ११ वें घर में हो तो पुत्र इन पांचों घर में से किसी में चन्द्र हो तो कन्या।

चन्द्र व शनि और लग्नेश विषम राशि में हो तो पुत्र, सम में कन्या।

प्रश्न गत पुरुषराशि हो और बली पुरुषग्रह की दृष्टि हो तो पुत्र, यदि लग्न में सम राशि हो स्त्रीग्रह देखे तो कन्या होगी।

पुत्र या कन्या—उदय लग्न या आरूढ़ में परिवेष राहु चन्द्र गुरु से युक्त हो तो सन्तान होगी उनमें पुरुषग्रह हो तो पुत्र, स्त्रीग्रह हो तो कन्या होगी।

लग्न को छोड़ अन्य राशि को सम विचारना चाहिये।

लग्न को छोड़कर विषम राशि में शनि हो तो पुत्र, सम राशि में कन्या।

लग्न में बलवान पुरुषग्रह की दृष्टि होकर ग्रह पुरुष षडवर्ग मे हो और पुरुषराशि में हो तो पुत्र, यदि लग्न स्त्रीराशि में हो स्त्री षडवर्ग में हो और बली स्त्रीग्रह की दृष्टि हो तो कन्या हो।

सूर्य गुरु मंगल शनि लग्न में हो तो पुत्र। शुक्र चन्द्र बुध हो तो कन्या।

लग्न सूर्य गुरु चन्द्र विषम राशि और पुरुषराशि के नवांश में बलयुक्त हो तो पुत्र। यदि लग्न चन्द्र सूर्य गुरु समराशि में हो और स्त्री राशि के नवांश में बलयुक्त हो तो कन्या हो।

३ या ७,९,५, स्थान में रवि, मंगल, गुरु (पुरुषग्रह) हो तो पुत्र हो। इन स्थानों में दूसरे ग्रह हों तो कन्या हो।

पुरुष लग्न में १,३,५,७,९,११ विषमराशि हो पुरुषग्रह सूर्य मंगल गुरु की दृष्टि होवे ये बली हों तो पुत्र। लग्न समराशि हो स्त्रीग्रह चन्द्र शुक्र की दृष्टि हो तो कन्या।

लग्न से ३-६,१०,११ घर में सूर्य शनि हो तो पुत्र।

लग्न या ३,५,७,९ घर में सूर्य गुरु या मंगल हो तो पुत्र। अन्य ग्रह हो तो कन्या।

पुत्र या कन्या—सर्व ग्रह विषमराशि में हो तो पुत्र सम हो तो कन्या।

पंचमेश और लग्नेश विषमराशि में पुत्र, सम में कन्या।

पंचमेश लग्न में और चन्द्र पंचम में हो तो पुत्र हो।

लग्नेश पुरुषग्रह पुरुषराशि में।

उच्च का चन्द्र शुभग्रहों से युक्त या दृष्ट पंचम में हो तो दीर्घायु पुत्र हो। चन्द्र पुरुषराशि में पुरुषग्रह से युक्त व मुथशिल हो तो पुत्र। चन्द्र अपरान्ह समय का हो व कृष्णपक्ष का तथा सूर्य से पीछे हो तो कन्या।

शनि लग्न से विषमस्थान में हो तो पुत्र, सप्तम स्थान में हो तो कन्या। पंचमभाव या पंचमेश चन्द्र से युत हो शुभग्रह से युत या दृष्ट हो या पंचमेश उच्च में हो तो और विषमराशि में हो तो धर्मात्मा पुत्र हो। प्रश्नलग्न के होरा का स्वामी सूर्य विषमराशि में हो तो पुत्र होगा।
(तिथि + वार + नक्षत्र + योग + नाम अक्षर) ÷ ७।
फल–शेष विषम हो तो पुत्र-सम हो तो कन्या।
ध्वज आदि वर्ग का निकाला हुआ पिंडांक लेकर पिंडांक ÷ ३=शेष १=पुत्र २=कन्या। ३=गर्भ नहीं है।
प्रश्न समय ओठ कण्ठ, गर्दन, मस्तक, कान, सिर या नखों को स्पर्श कर पूछे तो पुत्र। नाभि हाथ पैर छाती स्पर्श कर पूछे तो कन्या होगी।
आय के अनुसार=१ ध्वज=पुत्र। २ धूम=कन्या। ३ सिंह=पुत्र। ४ स्वान=कन्या। ५ वृष=पुत्र। ६ खर=कन्या। ७ गज=पुत्र। ८ ध्वांक्ष=कन्या होगी।

पुत्र–लग्न और लग्नेश पुरुषराशि या विषमराशि के नवांश में हो तथा विषमराशि में शनि हो तो पुत्र होगा।
सूर्य लग्न में चर राशि का हो तो पुत्र।

पंचमस्थान का नवांशेश पूर्ण बली होकर पुरुष चरराशि में हो या उसे शुभग्रह देखते हों तो पुत्र।
पुरुषराशिस्थ चंद्र से किसी पुरुषग्रह का इत्थशाल हो तो पुत्र।
समराशि के चंद्र को पुरुषग्रह देखे तो पुत्र।

गर्भहानि—पंचमेश मंगल राहु से युक्त या राहु मंगल के मध्य में या अस्त हो तो गर्भहानि होगी।

मंगल–लग्न में द्विस्वभाव राशि शुभग्रहों से युक्त या दृष्ट हो।
लग्न में द्विस्वभाव राशि हो और द्विस्वभाव राशि स्थित शुभग्रहों से युक्त या दृष्ट हो और बुध की पूर्ण दृष्टि हो।
लग्न में समराशि हो शुभग्रह युक्त या दृष्ट हो।

स्वरोदय से विचार गर्भ में क्या होगा

प्रश्नसमय चंद्रनाड़ी चले तो कन्या। सूर्यनाड़ी=पुत्र।
दोनों स्वर चलें तो गर्भ नष्ट होगा।

प्रश्नसमय पृथ्वी तत्व स्वर में हो=कन्या। जल तत्व=पुत्र। वायु तत्व=कन्या। तेज तत्व=गर्भपात। आकाश तत्व=नपुंसक हो।

अन्य प्रकार–प्रश्न लग्न से सप्तम तक के अंकों को जोड़कर स्त्री के नाम के अक्षर मिलावे जो योग आवे उसमें ७ का गुणा कर उस दिन की तिथि जोड़ कर ८ का भाग दे। शेष अंक सम बचे=कन्या। विषम बचे=पुत्र। शेष ०बचे=गर्भपात हो।

या तिथि प्रहर वार नक्षत्र जोड़ कर १ घटा दे शेष में ७ का भाग दे। शेष सम=कन्या। विषम=पुत्र।

बालक बचेगा या मरेगा

बचेगा––व्ययेश केन्द्र में शुभग्रह दृष्ट हो तथा शुक्लपक्ष का चंद्र शुभ युक्त बारहवां हो।

व्ययेश केन्द्र में शुभग्रह युक्त या दृष्ट हो।

अष्टमेश शुभग्रह युक्त या दृष्ट हो।

शुक्लपक्ष का चंद्र शुभ युक्त केन्द्र में हो तो दीर्घायु हो।

उदय लग्न आरूढ़ या ५-७ वें घर में गुरु स्वक्षेत्री उच्च का या मित्रक्षेत्री हो तो पुत्र दीर्घायु हो।

शुभग्रहों से युत या दृष्ट द्वादशेश केन्द्र व पंचम में हो और पूर्णचंद्र केन्द्र में हो तो जियेगा।

मरे––अशुभग्रह शत्रु या नीचक्षेत्री हो ये १-७-८-१०-१२ घर में हो और गुरु तथा अन्य शुभग्रह से दृष्ट न हो तो बालक उत्पन्न होते ही मरे।

सूर्य अष्टम मंगल या शनि उदय लग्न या सूर्य से सप्तम घर में हो तो बालक जन्मते ही मर जाय। यदि योगकारक ग्रह पर बली शुभग्रह की दृष्टि न हो।

चंद्रमा उदय लग्न में हो चंद्र से अष्टम मंगल हो शुक्र या शनि नवम हो और बली शुभग्रह की दृष्टि योगकारक पर न हो तो जन्मते ही मरे।

व्ययेश पापयुक्त अस्त तथा आपोक्लिम में पापदृष्ट हो तो बालक जन्म होने पर या गर्भ में ही मर जावे।

३ पापग्रह शत्रु या नीच क्षेत्री होकर दूसरे घर में हो तो बालक मरेगा चाहे योगकारक शुभग्रहों से दृष्ट हो या न हो।

जो ग्रह ६-८ में हो और चंद्र को देखे तो बालक मरे।

उदय लग्न से २-१२ घर में मंगल शनि राहु हो तो मरेगा।

बालक मरे—लग्न में राहु हो और गुरु की दृष्टि नहीं हो तो मरेगा ।

व्ययेश पापग्रह युक्त आपोक्लिम में हो तो मरेगा ।

बारहवां घर अशुभ ग्रहों से युक्त या दृष्ट हो और गुरु भी पापग्रह युक्त या दृष्ट हो तो मरेगा ।

पंचमेश मंगल ग्रह के साथ या पापग्रह के मध्य में हो तो बालक मरेगा ।

गुरु शत्रुक्षेत्री या निच्च का हो तो बालक बड़ा होने पर मरेगा ।

चन्द्रमा पापग्रहों से दृष्ट हो या लग्न या आरूढ़ से शनि छठवां या आठवां हो तो बालक ४ दिन में मरे ।

चन्द्रमा उदय लग्न में हो पापग्रह चतुर्थ-अष्टम हो तो बालक ४ या ८ दिन में ही मरे ।

पंचमेश अष्टम में जितने ग्रहों के साथ हो उतनी सन्तान नष्ट हो ।

पापग्रह ६-८-१२ घर में हो बुध गुरु शुक्र से अदृष्ट हो तो १ मास के बाद बालक मरे ।

चन्द्र लग्न में हो, पापग्रह केन्द्र में या २-८ घर में हो तो १ वर्ष में मरे ।

जो शुभग्रह चन्द्र को न देखे पापग्रह उदय लग्न या सप्तम में हो व पापग्रह चन्द्र युक्त हो तो १ वर्ष में मरे ।

उदय लग्न से ८-१२ घर में पापग्रह हो शुभयुत दृष्ट न हो तो बालक १ वर्ष में मरे और उसके माता-पिता आदि संबंधियों को कष्ट हो ।

उदय लग्न से अष्टम मंगल व नवम सूर्य हो १२ वां शनि हो शत्रुक्षेत्र नीचक्षेत्र में हो शुभयुक्त या दृष्ट न हो तो २ वर्ष में बालक मरे ।

कितनी संतान होगी

जितने पुरुषग्रह अतिबली होकर पंचमभाव को देखें उतने ही पुत्र ।

जितने स्त्रीग्रह अतिबली होकर पंचम को देखे उतनी ही कन्या ।

पंचम में जितने भुक्त नवांश हों उतनी संतान हो, जब पंचमभाव स्वस्वामी से शुभग्रह से युक्त हो या इनका इत्थशाल करता हो ।

पंचमभाव या पंचमेश को शुभग्रह या अपने स्वामी से संयोग होने पर पंचम की नवांश संख्या तुल्य ही पुत्र व कन्या होगी ।

पंचमभाव के अंश की वा पंचमभाव या पंचमेश की नवांश संख्या तुल्य संतान हो ।

पंचमभाव में जितने पुरुषग्रह की दृष्टि उतने पुत्र जितने स्त्रीग्रह की दृष्टि उतनी कन्या । शुभग्रह की दृष्टि हो तो दुगनी अशुभग्रह की दृष्टि से उतनी संतान की हानि या निष्फल मिश्रितग्रह की दृष्टि से मिश्रित फल हो ।

बहुत संतान—पंचम में शुक्र का नवांश हो शुक्र से दृष्ट हो या चंद्र का नवांश चंद्र से दृष्ट हो तो बहुत संतान वाली स्त्री से हो।

कन्या—चंद्र शुभ हो तो जितनी संख्या वाली राशि पर चंद्र हो उतनी ही कन्या हो।

२ संतान—यदि २-२ ग्रह ४ स्थानों में हों तो २ संतान हो, पुरुषराशि के हों तो २ पुत्र। स्त्रीराशि या द्विस्वभाव के ग्रह हों तो २ कन्या हों।

२ पुत्र—पंचम में शुभग्रह हो या समराशि का चंद्र शुक्र और विषमराशि के गुरु शनि सूर्य मंगल हो २ पुत्र होंगे।

२ पुत्र—यदि मिथुन और धन राशि के नवांश में सूर्य गुरु हो और बुध कहीं से पूर्ण दृष्टि से देखे तो २ पुत्र हो।

२ कन्या—यदि कन्या मीन राशि नवांश में चंद्र शुक्र मंगल हो और बुध की पूर्ण दृष्टि हो तो २ कन्या हो।

१ पुत्र १ कन्या—यदि द्विस्वभाव राशि के नवांश में सूर्य गुरु शुक्र चंद्र मंगल मिल कर रहें बुध की पूर्ण दृष्टि हो तो १ पुत्र १ कन्या हो।

२ संतान—द्विस्वभाव राशि लग्न में हो तथा पंचम में दो शुभग्रह हों तो।

पुत्र जन्म होने पर कोई अरिष्ट तो नहीं होगा

माता-पुत्र मरण—लग्न से छठे चंद्र हो, चंद्र से सप्तम पापग्रह हो तो माता-पुत्र दोनों का ही मरण हो।

चंद्र गुरु से दृष्ट न हो २, ६, ८, १२ घर में हो उस चंद्र से सप्तम पाप ग्रह हो।

चंद्र लग्न में हो मंगल सप्तम हो या मंगल लग्न में हो चंद्र सप्तम में हो या चंद्र लग्न में हो शुक्र सप्तम हो या शुक्र लग्न में चंद्र सप्तम हो और गुरु या कोई शुभग्रह का योग या दृष्टि न हो।

उदय लग्न में कोई ३ पापग्रह (सूर्य को छोड़ कर) हो और वे पापग्रह नीच या शत्रुक्षेत्री हो तो बालक और मां दोनों ही मरें।

बालक और बाप मरे—सूर्य गुरु से दृष्ट न हो २, ६, ८, १२ घर में हो और सूर्य से सप्तम पापग्रह हो तो बालक और पिता दोनों मरे।

सूर्य लग्न में शनि सप्तम हो या शनि लग्न में देखे सप्तम हो। या सूर्य लग्न में शुक्र सप्तम हो शुक्र लग्न में सूर्य सप्तम हो इन पर गुरु की दृष्टि न हो।

उदय लग्न में सूर्य ३ पापग्रहों से युक्त हो या पापग्रह नीच या शत्रुक्षेत्री हों।

सूर्य छठा हो पापग्रह सप्तम हो तो बालक व पिता दोनों मरें।

माता का मरण—पंचम षष्ठम पापग्रह हो तो माता मरे।

चन्द्र से सप्तम शनि या मंगल हो।

चंद्र से २-१२ घर में शनि मंगल हो।

उत्तराफाल्गुनी या चित्रा का प्रथम द्वितीय चरण उदय हो तो माता मरे।

बाप मरे—सूर्य से मंगल शनि २-१२ वें घर में हो।

सूर्य से सप्तम मंगल शनि हो।

पुष्य या पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र के दूसरे या तीसरे चरण का उदय हो तो पिता मरे।

माता या पिता मरें या बीमार हों—मंगल व शनि सूर्य को देखे बाप मरे या बीमार हो।

मंगल व शनि चन्द्र को देखे माता मरे या बीमार हो।

सूर्य उच्च का या स्वक्षेत्री मित्रक्षेत्री हो तो बाप मरे नहीं केवल बीमार पड़े। इसी प्रकार चंद्र हो तो माँ मरे नहीं केवल बीमार ही पड़े।

पिता बीमार—सूर्य से सप्तम मंगल शनि हो पिता बीमार पड़े।

माता बीमार—चंद्र से सप्तम मंगल शनि हो माता बीमार पड़े। यदि सूर्य या चंद्र स्वक्षेत्री आदि के हों।

माता या पिता मरें—चंद्र से युत या दृष्ट पापग्रह से माता का मरण। सूर्य पापयुक्त या दृष्ट हो तो पिता का मरण हो।

या रोग—उपरोक्त योग में गुरु चंद्र को देखे तो माँ को रोग हो मरे नहीं।

गुरु सूर्य को देखे तो पिता मरे नहीं केवल बीमार हो।

माता-पिता मरण—पाँचवें या छठें पापग्रह हो इनमें शनि अवश्य होवे चंद्र सूर्य को देखे तो माता-पिता का मरण हो।

माँ-बाप बालक या भाई मरे—उदय लग्न से छठें या दशम घर में क्षीण चन्द्र या नीच का या शत्रुक्षेत्री हो तो मां मरे। ऐसा सूर्य हो=पिता मरे। शनि=बालक। मंगल=बालक का भाई मरे परन्तु ये ग्रह नीच या शत्रुक्षेत्री हो तब ये फल देंगे।

अन्य मत—लग्न से पंचम सूर्य=पिता। चंद्र=माँ। शनि=बालक। शुक्र=बालक के संबंधी मरे। पंचम में ग्रह न हो तो आरूढ़ या छत्र से विचारे।

नक्षत्र के अनुसार—पूर्वाषाढ़ा या पुष्य उदय हो ये सूर्य से दृष्ट हो पिता मरे। बुध से=मां। शुक्र से=बालक। मंगल से=बालक का मामा या कुटुम्बी मरे।

पूर्वाषाढ़ा पुष्य उत्तराफा० चित्रा इन ४ नक्षत्रों में पहिले चरण का

उदय=बाप मरे। दूसरे में=मां। तीसरे में=बालक। चौथे चरण में=
बालक के कुटुम्बी मरें।

अन्य विचार—उदय लग्न सिंह हो सूर्य से दृष्ट=बांप मरे। लग्न मिथुन कन्या
बुध से दृष्ट=माँ। वृष तुला शुक्र से दृष्ट=बालक। मेष वृश्चिक मंगल से
दृष्ट=मामा या कुटुम्बी मरे।

अन्य अरिष्ट

नेत्रकष्ट—बारहवां चन्द्र=पुत्र का बाया नेत्र नष्ट। सूर्य हो तो दाहिना नेत्र नष्ट।
दोनों नेत्रनष्ट—बारहवां सूर्य चन्द्र हो तो दोनों नेत्र नष्ट।
अंधा-काना—बारहवें सूर्य दाहिना नेत्र काना। चंद्र=बाम नेत्र काना। दोनों
ग्रह वहां हो तो अंधा ही हो।

वामन—उदय लग्न में शनि, सप्तम मंगल या लग्न में बुध और सप्तम शनि हो
तो बालक छोटे कद का (वामन) हो।

दूषित अंग—उपरोक्त योगकारक ग्रह पापग्रहों से दृष्ट हो तो उसके अंग में
दोष होगा। छोटा कद अशक्त गूंगा बहरा लंगड़ा लूला अन्धा आदि
कोई भी दोष हो सकते हैं या समय के पहिले ही जन्म होता है।

हाथ टूटे—लग्न से पंचम चंद्र हो उस चन्द्र से पंचम पापग्रह हो।

अरिष्ट भंग

अरिष्ट दूर—लग्न आरूढ़ छत्र इनके केन्द्रों में शुभग्रह हों जो मित्रक्षेत्री स्व-
क्षेत्री या उच्च के हों या उच्चवर्ग में हो तो सभी अरिष्ट दूर हों।

भाग्यवान्—शुभग्रह उच्च के होकर उदय लग्न के दोनों बाजू हों या ४, ७,
१० वें घर में हो तो भाग्यवान हो।

पापग्रह स्वक्षेत्री छत्र लग्न में हो या शुभग्रह स्वगृही या उच्च का
उदय लग्न में हो तो बालक भाग्यवान हो।

यदि पापग्रह नीच का १, २, १२, ४, ७, १० वें घर में हो या शुभग्रह
छत्र में शत्रुक्षेत्री शुभग्रह हो या लग्न में पापग्रह शत्रुक्षेत्री या निच्च
का हो तो अभागा होगा।

जो फल लग्न से हो वही फल चंद्र और आरूढ़ से भी होता है।

यात्रा विचार

यात्रा में विचार—लग्न से=जैसा ह्रस्व या दीर्घ हो वैसा ही मार्ग होगा और
शरीर सुख। सप्तम से=जाने की जगह या परदेश से आगमन। यात्रा
का विचार। चतुर्थ से=गमन या कार्य का परिणाम। दशम से=कार्य या
कर्तव्य कार्य का विचार। परदेश जाना। लग्न से=मार्ग के दुख-सुख का
अनुभव या बिछोह होगा या नहीं। ये सब ग्रहों के बलाबल तथा स्वभाव

आदि संज्ञा से जैसे लक्षण प्रतीत हों वैसा ही विचार करना चाहिये। समानतः यात्रा संबन्धी बातों का विचार दशम स्थान व दशमस्थग्रह से होता है। तीसरे भाव से छोटी यात्रा, नवम भाव से लम्बी यात्रा का विचार होता है।

यात्रा की चिन्ता मेरा जाना होगा या नहीं

जाना होगा—लग्न चन्द्र चरराशि का होकर सौम्यग्रहों से युक्त या दृष्ट हो तो जाना होगा जय प्राप्त होगा।

लग्न में लग्नेश नवमेश का इत्थशाल हो।

लग्नेश व चन्द्रमा से नवमेश का इत्थशाल हो व लग्नेश नवम हो तो जाना होगा।

लग्नेश केन्द्र में तृतीयेश से इत्थशाल हो पापग्रह रहित हो।

चतुर्थेश लग्न में हो लग्नेश केन्द्र या तीसरे स्थान में हो।

लग्नेश नवमेश दोनों लग्न में हो या इत्थशाल हो।

दशम या चतुर्थ में पापग्रह हो।

लग्न लग्नेश नवमेश चर राशि में हो।

नवमेश लग्न में लग्नेश केन्द्र में हो।

शीर्षोदय राशि का लग्न हो।

१,४,७,१० राशि में दशम में ग्रह हो स्वामी व शुभग्रह से दृष्ट हो।

शीघ्र जाना होगा—लग्नेश या चन्द्रमा नवम घर में हो।

चर लग्न हो तो शीघ्र। द्विस्वभाव हो तो विलम्ब से जाना होगा।

जब लग्नेश व चन्द्र के साथ नवमेश का इत्थशाल हो।

लग्न चर हो सूर्य शनि बुध शुक्र इनमें से वहां एक भी ग्रह हो।

यात्रा होगी—उदय लग्न आरूढ़ दशम स्थान में चर राशि हो और कोई शुभ ग्रह से युक्त या दृष्ट हों।

शगुन—रोझ, घोड़े का सवार बंदर, उदारचित्त का आदमी, कन्या, राजा व यात्री इनका दर्शन हो तो यात्रा होगी।

जाना न हो—लग्नेश और नवमेश की नवम स्थान में दृष्टि न हो।

केन्द्र में क्रूर ग्रह हों।

उदय लग्न आरूढ़ और दशम घर में स्थिर राशि हो और सूर्य मंगल या शनि से युक्त या दृष्ट हो।

लग्न आरूढ़ या छत्र से केन्द्र में राहु हो।

लग्न व चंद्र स्थिर राशि में हो सौम्यग्रह से युक्त दृष्ट हो तो जाना न

हो अपने स्थान में रहने से प्रतिष्ठा मिले।

अन्य मत-क्रूर ग्रह से युक्त या दृष्ट हो।

दशम व चतुर्थ में सौम्यग्रह हो।

सप्तम में क्रूरग्रह हो तो कार्य नष्ट हो यात्रा नहीं हो।

मंगल से त्रिकोण में शनि बुध शुक्र गुरु में से कोई ग्रह हो या सूर्य से चंद्र त्रिकोण में हो।

चंद्र व लग्न पृष्ठोदय राशि के हों।

लग्नेश नवमेश निर्बल हो।

लग्नेश का पापग्रह से इत्थशाल हो।

पापग्रह लग्न में हो लग्नेश नवमेश का शुभग्रह से इत्थशाल हो।

पापग्रह लग्न में हो चंद्र या लग्नेश का केन्द्रेश ग्रह से इत्थशाल हो।

बली स्थिर लग्न हो पापग्रह या शत्रुग्रह से दृष्ट हो तो विघ्न भी हो।

मना करने पर यात्रा नहो—दशम में पापग्रह हो तो ज्येष्ठ भ्राता या राजा के मना करने पर यात्रा न हो।

लग्न में दुर्धरायोग हो तो सबसे बड़े या मुखिया के मना करने पर जाना नहीं होगा।

शगुन—शोकाकुल पुरुष, असाध्य रोगी, लंगड़ापन वाला, कलहकारक व्यक्ति घातक अहंकारी आलसी, या बेकार पुरुष का दर्शन हो तो यात्रा नहीं होती।

अभीष्ट दिशा में जाना न हो—मंगल से नवम पंचम शनि शुक्र बुध गुरु में एकत्र या पृथक २ हों या सूर्य से नवम पंचम चंद्र हो तो इच्छित दिशा में जाना नहीं होगा।

तीर्थ यात्रा होगी या नहीं—ध्वज आदि के द्वारा वर्ग का पिंड लेना (अक्षर पिंड + क्षेपक ३९) + ३० शेष १=यात्रा होगी। २=थोड़ी यात्रा होगी। ३=यात्रा नहीं होगी।

यात्रा में कष्ट तो नहीं होगा मार्ग के दुःख-सुख

यात्रा में विघ्न—सप्तम में पापग्रह हो तो जिस कार्य के लिये जाना है उसमें विघ्न होगा।

द्विस्वभाव लग्न हो तो यात्रा में विघ्न होगा।

किस से विघ्न—दशम में पापग्रह हो तो राजकुल से या ज्येष्ठ से या स्वतः से ही विघ्न हो।

विघ्न—सप्तम में धनेश या नवमेश पापयुक्त हो विघ्न हो।

कलह—चतुर्थ में पापग्रह हो तो कलह होगी।

उत्पात—लग्न या लग्नेश से नवम या बारहवें में जितने पापग्रह हों उतने उपद्रव गमन में होते हैं।

भय—अष्टम में मंगल शनि पापयुक्त या दृष्ट हो।

किस से भय—लग्न व चंद्र को पापग्रह पीड़ित करे वह पुरुषराशि या पुरुष द्रेष्काण में हो तो मनुष्य से। जलराशि हो तो जल का भय। चतुष्पद राशि हो तो चतुष्पद प्राणी से। धन कुंभ राशि हो वृक्ष कंटक आदि से। सिंह राशि हो तो बाघ आदि से यात्रा में भय हो।

कष्ट—लग्नेश का नवमेश से इत्थशाल हो परन्तु पापयुक्त हो शुक्र से दृष्ट हो तो गमन के अंत में कष्ट और धन हानि होता है।

कष्ट—सप्तम या अष्टम में लग्नेश का नवमेश से इत्थशाल हो तो कष्ट हो।

शस्त्रभय—मंगल या शुक्र पापयुक्त या दृष्ट अष्टम हो तो मार्ग में शस्त्रभय हो।

कष्ट—त्रिकोण या सप्तम में पापग्रह और पृष्ठोदय लग्न हो शत्रुग्रह से दृष्ट हो तो मार्ग में कष्ट हो।

लग्न में पापग्रह हो तो कष्ट हो।

विघ्न—धनेश वक्री हो तो कार्य सिद्ध नहीं हो।

क्षय—तीसरे या एकादश स्थान में पापग्रह हो तो यात्रा में क्षय या हानि हो।

विघ्न—लग्न चंद्र द्विस्वभाव राशि के हो केवल पापग्रहों से युक्त या दृष्ट हो तो यात्रा में विघ्न पराजय हो और लौट आना पड़े।

क्लेश—चरलग्न पापग्रह युक्त हो तो क्लेश या रोग हो।

आधे मार्ग से लौटे—द्विस्वभाव लग्न गुरु से युक्त हो।

उल्टी यात्रा—लग्न स्थिर पृष्ठोदय राशि का हो तो जहाँ विचार हो वहाँ तक न जाकर दूसरी जगह ही जाना पड़े।

मार्ग से लौटे—चतुर्थ में पापग्रह हो।

रोगभय—लग्न में पापग्रह।

कार्यनाश—केन्द्रों में पापग्रह।

शत्रु या चोर से भय—अष्टमेश सप्तमेश क्रूरग्रह से दृष्ट हो।

चोर व रोगभय—लग्नेश व्ययभाव में हो।

मृत्युभय—लग्नेश पापग्रह युक्त हो।

बंधन या रोग—षष्ठेश द्वादशेश क्रूरग्रह हो तो बंधन या रोग हो।

मृत्यु—शनि पापग्रह युक्त शुभग्रह रहित अष्टम में हो।

रोग या मृत्यु—नवम में शनि पाप युक्त हो शुभ योग या दृष्टि रहित हो। सप्तम में पापग्रहों से दुरुधरा योग हो तो शत्रु, रोग या चोर से मृत्यु तुल्य कष्ट या मृत्यु हो।

रोग—नवम में सूर्य ।

विदेश में रोग से मरे—शनि पापयुक्त अष्टम हो तो मृत्यु हो, परन्तु शुभग्रह का योग दृष्टि से बीमार ही रहे ।

ताड़न व बन्धन—पृष्ठोदय लग्न हो पापग्रहों से दृष्ट हो या केन्द्र में पापग्रह हो शुभग्रह का योग दृष्टि न हो तो यात्री को ताड़न (पिटाई) व बंधन हो ।

यात्रा नहीं करना—द्विस्वभाव लग्न हो और द्विस्वभाव राशि पर चंद्र हो पापग्रहों से युक्त या दृष्ट हो शुभग्रह का योग दृष्टि न हो तो यात्रा न करे यात्रा में क्लेश' हानि, संकट होगा ।

यात्रा में सुख—दशम में शुभग्रह=कार्य सिद्ध । सप्तम में शुभग्रह=सुख से गमन । चतुर्थ में शुभग्रह=कार्य का परिणाम शुभ होगा ।
अष्टम में शुक्र बुध=सुख मिले ।

कार्य सिद्ध—चतुर्थ में चर लग्न हो चतुर्थेश शुभग्रह से दृष्ट हो ।

यात्रा शुभ—लग्न दशम या लाभ में नवनेश धनेश युक्त हो ।

हर्ष—लग्न या लग्नेश से जितने शुभग्रह नवम में हो उतने स्थानों में यात्री को हर्ष होगा ।

निर्विघ्न यात्रा—चर लग्न हो चंद्रमा स्थिर राशि में हो लग्न । सौम्यग्रह युक्त या दृष्ट हो तो यात्रा में सुख, जय धन प्राप्त हो कल्याणकारण श्रेष्ठ यात्रा निर्विघ्न होगी ।

शत्रुनाश—पापग्रह ३-६-११ घर में हो ।

जय अर्थसिद्धि—लग्नेश नवमेश का इत्थशाल हो शुभग्रह को मित्रदृष्टि से दृष्ट हो ।

शुभग्रह का फल—लग्न=शरीर सुख । चतुर्थ=सुख अर्थ मनोरथ सिद्ध । पंचम=सुख विजय अर्थलाभ । सप्तम=अर्थसिद्धि स्थान वस्त्र आदि प्राप्त । दशम=धन वाहन प्राप्त । लाभ में शुभग्रह=कार्य सिद्ध सुख धन अर्थ लाभ ।

सुख और अर्थ प्राप्ति—शुभग्रह लग्नेश जिस भाव में हो उसी भाव से सुख और अर्थप्राप्ति हो ।

किससे भय—लग्नेश चंद्र जलराशि स्थदृष्ट होकर पापग्रहों से पीड़ित हो तो जलचर जीव से भय । सिंह राशि के हो तो सिंह से भय । वृश्चिक=सर्प भय । चतुष्पद राशि=चौपाए से भय । नर राशि=चोर व वैरी से भय । वृश्चिक के मंगल के साथ हो=विष भय । निर्जल राशि=तृषा । शनि से पीड़ित चंद्र=जलाशय से भय ।

मार्ग में कितने उपद्रव—लग्न या लग्नेश से चौथे बारहवें स्थान में जितने क्रूर ग्रह हों उतने उपद्रव मार्ग होंगे ।

सुख–जितने शुभग्रह व्यय में हों उतना ही मार्ग में सुख मिले।

लग्न व लग्नेश के पार्श्व में जितने शुभग्रह हों उतने स्थानों में मार्ग में सुख हो। यदि पापग्रह हों तो उतने स्थानों में उपद्रव हो।

लग्न में बलवान गुरु या शुक्र लग्नेश हो तो सुख।

नवम अष्टम घर में बुध शुक्र हो।

विलास–नवम में शुक्र, सप्तम चंद्र बलवान हो तो अधिक भोग मिले।

राजा से लाभ–दशम स्वगृही गुरु हो=गत द्रव्यलाभ। शुक्र=धनप्राप्ति। चंद्र या बुध=सुख मिले।

मार्ग में उपद्रव–अष्टम में जितने पापग्रह हो उतने मार्ग में उपद्रव।

मार्ग में चोरभय–सूर्य मंगल अष्टम हो। आठवें घरमें जितने ग्रह हों उतने ही चोर।

भय नहीं–शुक्र व गुरु व लग्नेश बलवान हों तो चोर शत्रु या चोट आदि का भय नहीं हो।

शस्त्र भय–अष्टम सूर्य चंद्र हो शनि से दृष्ट हो या अष्टम में चंद्र मंगल के साथ हो।

शुभ काम में अटकाव या बाधा–चंद्र के दूसरे और बारहवें स्थान में शुभग्रह हों तो शुभकार्य में अटकाव होगा। यदि पापग्रह हों तो चोर शत्रु आदि के कारण हानि होगी और आने में बाधा होगी।

गमन आगमन न हो—बुध शुक्र शनि वक्री हो तो गमन आगमन नहीं होता।

लग्न में गुरु शनि बैठा हो।

लग्न में स्थिरराशि हो।

लग्न आरुढ़ में स्थिर राशि उसमें शनि सूर्य मंगल हो या दशम में सूर्य शनि मंगल हो।

सूर्य शुक्र गुरु और बुध इनमें एक भी बारहवें स्थान में हो।

चंद्र से दूसरे बारहवे भी कोई ग्रह हो यह दुरुधरा योग है।

यात्रा पर जाय या नहीं, यात्रा में सुख होगा क्या

यात्री घर में सुखी – उदय लग्न शीर्षोदय यात्री स्व-स्थान में सुखी परदेश में दुःखी रहे।

परदेश में सुखी—पृष्ठोदय लग्न हो तो परदेश में सुखी घर में दुःखी रहे।

यात्रा की दिशा—

उदय लग्न में चरराशिस्थ ग्रह हो व लग्नेश चरराशिस्थ हो इन दोनों में जो राशि बली हो उसकी दिशा में यात्रा होगी। लग्नेश का चर

राशिस्थ होने का जो फल है। वही आरूढ़ लग्न और दशमेश का चर राशिस्थ होने का फल है।

चर राशि लग्न आरूढ़ हो और जिन २ ग्रहों की दृष्टि हो उन्हीं ग्रहों की दिशा में जाना होगा। इन ग्रहों में जो बली हो उसकी दिशा विचारना। शुक्र गुरु चंद्र बुध में स्वराशि के हो इनमें बलीग्रह की दिशा में जाना आना होगा।

इच्छित दिश में जाना न हो—मंगल से नवम पंचम शनि बुध गुरु शुक्र ये एकत्र या प्रथक्-प्रथक् हों या सूर्य से नवम पंचम चंद्र हो तो अभीष्ट दिशा को जाना नहीं होता है।

परन्तु इन ग्रहों के मध्य में जो बलवान ग्रह हो वह अपनी दिशा में यात्री को ले जाता है।

पिता परदेश गया है वहीं है या अन्यत्र चला गया

दूसरे देश चला गया—लग्न से अष्टम में सूर्य हो शुभग्रह युक्त या दृष्ट हो।

उसी देश में है—इसके विपरीत सूर्य हो।

इसी प्रकार अन्य का विचार – लग्न से अष्टम सूर्य से जैसे पिता का विचार किया उसी प्रकार चंद्र से=माता या उसके रिस्तेदार। बुध=भाई, चचेरे भाई या मामा। गुरु=गुरु या संतान। शुक्र=स्त्री या स्त्री के रिस्तेदार। शनि=नौकर या अश्रित।

जब अष्टम के ग्रह पर शुभ दृष्टि हो तो जाने वाले की वापसी सुरक्षित जानना। यदि पापग्रह या निर्बलग्रह की दृष्टि हो तो यात्री को भय होगा या मृत्यु संभव है।

लौटने का समाचार कब मिलेगा

लौटने के पहिले समाचार मिले—उदय आरूढ़ दशम स्थान से दूसरे तीसरे घर द्विपद राशियां द्विपद ग्रहों से युक्त हो तो यात्री के लौटने के पहिले आने का समाचार आजावे।

लौटने के बाद समाचार—द्विपदग्रहों को छोड़कर उक्त स्थानों में अन्य ग्रह हों तो यात्री के आने के बाद समाचार मिले।

यात्रा में विश्राम होगा या नहीं

विश्राम—लग्न के उदित नवांश के चौथे सातवें नौवे नवांश में ग्रह मित्र की राशि आदि का हो तो यात्री जाने वाला सुखपूर्वक विश्राम करेगा।

फिर चल देगा—यदि वह ग्रह वक्री हो तो फिर चल देगा। अतिचारी हो तो शीघ्र ही जायगा।

विश्राम—उक्त नवांशों के वीच के नवांशों में अर्थात् ५, ६, ८ वे नवांशों में शुभग्रह हो तो यात्रा में सुखपूर्वक अच्छा विश्राम होगा। यदि पापग्रह हो तो कष्टपूर्वक विश्राम होगा।

वली लग्नेश से भी विश्राम का विचार करें।

बलवान ग्रह से भी विश्राम का विचार करना। लग्न चन्द्र चर राशि के हों तो १ स्थिर के=२ द्विस्वभाव में ३ विश्राम साधारणतः होंगे।

लग्न में द्वितीयेश वक्री हो तो वहां ठहरना नहीं होता। या लग्नस्थ धनेश अतिचारी हो तो ज्यादा दिन नहीं ठहरे कार्य भी अल्प सिद्ध हो।

यात्रा कब होगी—अब लग्नेश लग्न में पहुंचे या लग्नेश से इत्थशाल हो।

लग्नेश चन्द्रराशीश नवम में जब हो।

दशम में चन्द्र बुध गुरु या शुक्र हो इन ग्रहों के काल जो हैं बीतने पर यात्रा होगी।

नवमेश लग्न में आवे या नवमेश के साथ इत्थशाल हो।

जो ग्रह जितने दिन में अपने क्षेत्र में आवे उतने दिन में यात्रा हो।

मार्ग कैसा है—ह्रस्व दीर्घ आदि जैसी लग्न हों वैसा मार्ग विचारना।

स्वरोदय से गमन विचार-स्वर में पृथ्वी तत्त्व=बहुतों के संग गमन। जल या वायु तत्व=अकेला। अग्नि=दो मनुष्य। आकाश तत्व हो तो कभी जाना नहीं होगा।

यात्रा में कार्य सिद्ध होगा या नहीं

कार्यसिद्ध—केन्द्र में शुभग्रह हो तो यात्रा सिद्ध होगी।

लग्न में शुभग्रह हो तो कार्यसिद्ध से सुख हो।

चतुर्थ में शुभग्रह हो तो कार्यसिद्ध जय सुख।

शुभग्रह केन्द्र त्रिकोण में हो तो शुभ कार्य सिद्ध हो।

लाभेश दशम या लाभ में हो तो शुभ कार्य सिद्ध हो।

शुभग्रह धनभाव में हो तो सुख जय अर्थलाभ हो।

लग्नेश दशमेश लग्न में या लाभ या केन्द्र में हो तो श्रेष्ठ फल हो।

चन्द्र लग्नेश धनेश और शुभग्रह केन्द्र में हो या पूर्णदृष्टि से लग्न या केन्द्रस्थान को देखे तो शुभ फल हो। यदि पापग्रह देखे तो चोर से व अन्य प्रकार से धनहानि हो।

दशम में शुभग्रह नीच या शत्रुक्षेत्री हो तो कार्य होगा परन्तु रोग या पीड़ा हो।

यदि पापग्रह नीच या शत्रु क्षेत्री हो तो कार्य नहीं होगा, परन्तु संकट रोग कष्ट आदि हो।

लग्न या चतुर्थ का शुभग्रह से २-३ घर में शुभग्रह हो तो नष्ट धन लाभ हो।

धनेश नवम या तृतीय में हो तो कार्य सिद्ध कर के आवे।

धनेश १-१० या ११ वें घर में हो तो कार्य सिद्ध हो।

धनेश सप्तम में पापयुक्त हो तो मार्ग में विघ्न हो।

धनेश चतुर्थ में पापयुक्त मार्ग में झगड़ा हो।

ये किससे मिलने जा रहा है

किसके समीप—चन्द्र सूर्य के साथ इत्थशाल करता हो तो राजा के पास। चंद्र या अन्य ग्रहों से इत्थशाल गुरु से=साधू के पास। शुक्र से=स्त्री के पास। शनि=नीच पुरुष के पास। बुध=लेखक पंडित राजा या वाणिज्य करने वाले के पास। मंगल=उग्र पाप करने वाले राजाओं के पास। चन्द्र शनिके साथ इशराफ करे=विशेष आश्रय से मंगल के साथ इशराफ=अपने स्वामी के भय से।

चंद्र यदि इशराफ सूर्य से=राज शंका से व्याकुल होकर बुध या पापग्रह से=साधारण कार्य साधन को जाता है।

कौन आ रहा है—इसी प्रकार आने वाला कौन है इसका विचार करें।

यात्रा में किस से मिलन होगा

मिलन—उजय लग्न आरूढ़ और दशम पर मित्रक्षेत्री ग्रह की दृष्टि=इष्ट मित्रों से। ग्रह नीच क्षेत्र=नीच से। उच्च क्षेत्री=कुलीन पुरुषों से। स्वगृही=अपने लोगों से। शत्रुक्षेत्री में=शत्रु से भेंट होगी।

पुरुष या स्त्री से—उदय लग्न आरूढ़ और दशम में पुरुष राशि हो या पुरुष ग्रह की दृष्टि हो तो पुरुष से मिलन।

स्त्रीराशि या स्त्री ग्रह से स्त्री के पास गमन हो या मिलन हो।

यात्री लौटेगा या नहीं

आगमन विचार—सप्तम स्थान से परदेशी के निवृत्ति और आगमन का विचार होता है।

यात्री लौटे—लग्न में चर राशि हो और चन्द्र द्विस्वभाव या चर राशि तथा चर नवांश में हो तो लौटेगा।

६, ७ स्थान में कोई ग्रह हो केन्द्र में गुरु हो।

त्रिकोण में बुध या शुक्र हो।

पंचम में चंद्र तृतीयस्थ ग्रह से इत्थशाल करे।

२, ३, ५ स्थानों में शुभग्रह हो।

अष्टम से व्ययस्थान तक कोई वक्री ग्रह हो।

सप्तमेश वक्री हो।

सप्तम में चर राशि हो स्वामी से या शुभग्रह से युक्त या दृष्ट हो।

लग्न स्थिर हो क्रूर ग्रह युक्त या दृष्ट हो।

१, २, ३ घरों में सब ग्रह हों।

७, ८ घर में कोई ग्रह हो केन्द्र में गुरु हो।

लग्न का व्यय में लग्नेश चन्द्र से इत्थशाल हो।

शीघ्र लौटे—लग्नेश बारहवें स्थान में हो चन्द्र से इत्थशाल करे।

लग्न में चन्द्र हो।

चर लग्न हो चंद्र भी चर में हो शुभग्रह केन्द्र या ३, ६, ५, २ घर में हो या लग्न पृष्ठोदय हो।

२, ३, ५, ६, ७ घर में विशेषकर वक्री ग्रह हो केन्द्र में बुध या गुरु हो त्रिकोण में शुक्र हो।

उदय लग्न या दूसरे तीसरे दशम घर में शुभग्रह हो।

लग्नेश वक्री होकर लग्न को देखे या चन्द्र वक्री ग्रह से इत्थशाल करे।

शुभग्रह ६ या ७ घर में हो तथा गुरु केन्द्र में हो या बुध शुक्र त्रिकोण में हो।

लग्न से २-३ घर में शुभग्रह हो।

शुक्र तथा गुरु १-४ घर में हो।

४-११ में सूर्य बुध गुरु शुक्र में से कोई ग्रह हो।

शीघ्र लौटे—३, ५, ६, ९, ७ घर में वक्री गुरु हो।

पृष्ठोदय राशि चंद्र लग्नस्थ ग्रह से इत्थशाल करे।

तत्काल लौटे—चंद्र २, ४, [illegible], ९ राशि का हो तो शीघ्र लौटे अन्य राशि का हो तो देर से लौटे।

धन युक्त लौटे—२, ३, ५ घर में शुभग्रह हो तो धन युक्त लौटे। यदि गुरु शुक्र हो तो शीघ्र लौटे। पापग्रह हो तो देर से लौटे।

शुभग्रह केन्द्र में हो तो धन सहित आयेगा।

सुखपूर्वक लौटे—अष्टम में चंद्र हो पापग्रह केन्द्र में न हो तो सुख पूर्वक आयेगा।

कार्य कर सुखी लौटे—लग्न में चर राशि हो चर राशि चर नवांश में चंद्र हो तो कार्य कर शीघ्र सुखी लौटे।

लग्न चर या चर नवांश में या चतुर्थ में चंद्र।

सप्तम में गुरु या त्रिकोण में बुध या शुक्र हो।

लग्नेश से लग्न स्थित ग्रह इत्थशाल करे।

निरोग लौटे—उदय लग्न आरूढ़ और दशम घर से पाँचवें या छठें घर में शुभ ग्रह हो। जो पापग्रह हो तो रोग युक्त लौटे।

सुख से लौटे—गुरु शुक्र तीसरे हो तो सुखपूर्वक लौटे ये चतुर्थ में हो कार्य कर शीघ्र लौटे।

एक स्त्री सहित लौटे-चंद्र और गुरु चतुर्थ में हों तो उसी दिन एक तरुण स्त्री सहित आवेगा।

लग्न में ६, ७, ३, ९ राशि हो तो स्त्री सहित राजप्रसाद व्यापार से धनलाभ सहित घर आयेगा।

थोड़ी देर में आगमन—६, ४, २, ७ घर के स्वामियों के साथ या चतुर्थ घर से नीचे के घर में स्थित ग्रह के साथ चंद्र का इत्थशाल हो ग्रह बलवान हो तो यात्री का आगमन थोड़ी देर में ही होगा।

शत्रु पीड़ा देर से लौटे—चौथा घर पापग्रह हो तो यात्री को शत्रु से पीड़ा हो और देर से लौटे।

धन खोये लौट न सके—उदय लग्न या दूसरे स्थान में पापग्रह हो तो यात्री अपना धन खोये और धन न होने से लौट न सकेगा।

मार्ग में उपद्रव—लग्न या लग्नेश से जितने पापग्रह ६-१२ घर में हो उतने उपद्रव मार्ग में हों।

मार्ग में अभ्युदय—७-६-१२ घर में जितने शुभग्रह हैं उतने स्थानों पर मार्ग में अभ्युदय हो।

कष्ट से लौटे—लग्नेश से लग्न स्थित ग्रह ४-७-१२ घर में हो।

लग्नेश सप्तम या चतुर्थ हो सप्तमेश से इत्थसाल करे।

शुभाशुभ विचार—लग्न चर हो और शुभग्रह युक्त हो तो यात्री की भलाई होगी। पापग्रह युक्त होने से बुरा फल होगा। लग्न स्थिर है और पाप युक्त हो तो मिश्रित फल होगा। यदि पापग्रह उच्च का या स्वगृही मित्रगृही या मूलत्रिकोण हो तो कुछ अच्छा होगा परन्तु ये बुरे स्थान में बुरे ग्रह से युक्त दृष्ट हो तो अधिक बुराई करेंगे।

यात्री न लौटे—लग्नेश ८-२ घर में हो केन्द्र स्थित ग्रह से इत्थशाल करे।

लग्न पर किसी की दृष्टि न हो तो यात्री अभी नहीं आया।

शुक्र सूर्य बुध गुरु इनमें से एक बारहवें हो तो पथिक नहीं लौटा।

४-१० घर में शुभग्रह हो तो नहीं लौटे पापग्रह हो तो आयगा।

दशम में सूर्य मंगल शनि हो तो अभी आना न हो।

सप्तम में चंद्र हो उसके आगे पीछे पापग्रह हो तो हैजा या शत्रु के कारण यात्री नहीं आ रहा है।

सप्तम में चंद्र हो उसके आगे पीछे शुभग्रह हो तो मित्र या स्वामी के कारण नहीं आ रहा है।

यात्री कहां है

यात्री मार्ग में है—तृतीयेश ३ या ९ स्थान में हो लग्नस्थ किसी ग्रह से इत्थशाल करे।

लग्नेश अष्टम या धन स्थान में हो दशमस्थ किसी ग्रह से इत्थशाल करे।

लग्नेश केन्द्र में होकर दशमेश से इत्थशाल करे।

चंद्रमा लग्न से सप्तम हो।

मार्ग स्थान ९ का स्वामी राशि के उत्तरार्द्ध में हो।

दशम में गुरु चंद्र हो।

लग्नेश ९, ३, ८, २ स्थानों में हो।

सप्तमेश किसी राशि के दूसरे होरा में हो तो यात्री लौट पड़ा है। मार्ग में है।

यात्री ने अभी स्थान नहीं छोड़ा—लग्न स्थिर हो।

मार्ग में है—चर राशि के शुभग्रह २, ३, ८; ९ घर में हो।

अमुक कहाँ चला गया (गुमा या भागा हुआ)

छोटी यात्रा का प्रश्न तीसरे भाव से विचारना—नष्ट वस्तु या चोरी गई वस्तु में बताये अनुसार दिशा का अनुमान करना। लग्न की राशि या लग्न के ग्रह से चोरी मिलने के जो योग वताये हैं उससे उसके मिलने के विषय में या मिलने का समय विचारना चाहिये जैसे चंद्र जिस राशि में हो लग्न की राशि में आने का कितना समय लगेगा उतने दिन में वह वापिस आ जायगा आदि और यात्री के बारे में जो योग वताये हैं उन पर भी विचार करना चाहिये।

यात्री कहां है—तिथि वार नक्षत्र प्रहर जोड़ कर ७ का भाग दे-शेष १=परदेश में स्थित। २=आयगा। ३=आधे मार्ग में है। ४=आने को वाहन पर चढ़ रहा है। ५=आकर फिर चला जायेगा दूसरी बार आयेगा। ६=वहीं व्याधि से युक्त है। ७=मृत्यु को प्राप्त।

अन्य—तिथि वार नक्षत्र यात्री के नाम के अक्षर का योग कर ७ का भाग दे। शेष १=आने को होता है। २=चित्त में दुविधा यही रहूँ या घर जाय। ३-४ मार्ग में है। ५=घर को अभी आता है। ६=वहीं रोग युक्त। ७=मृत्यु।

कहां है–लग्न में सूर्य मंगल=यात्री दूर गया। शुक्र गुरु=मार्ग में है। चंद्र बुध=नगर के अति समीप या सीमा पर है। शनि राहु=वहीं से परदेश में है।

अन्य–(प्रश्न अक्षर × २ + १३) ÷ ८। शेष १=अपने स्थान से चला है। २=मार्ग में। ३=आधे मार्ग में। ४=द्वार के समीप। ५=एक वार चल के लौट गया फिर आयेगा। ६=रोग युक्त। ७=शून्यता। ८=मरण। सूर्य नक्षत्र से दिन नक्षत्र तक गिन लो। प्रथम ७=निर्जीव। १२=जीव युक्त। ९=रोग युक्त।

तिथि वार लग्न नामाक्षर नक्षत्र कारण जोड़ कर ७ का भाग दे। शेष १=वहीं है। २=वहां से चला गया। ३=आधे मार्ग में। ४=ग्राम के समीप आ गया। ५=पीछे लौट जाता है। ६=रोग से दुःखी। ७ और शून्य ० में कार्य अर्थात् कार्य नहीं हुआ।

स्वरोदय से–सूर्य स्वर में वायु तत्व=अन्य स्थान में चला गया। पृथ्वी तत्व=जहां गया था वहीं है। जल तत्व=आगमन हो रहा है। अग्नि तत्व=यात्री मर गया।

वार अनुसार–प्रश्न सोमवार-बुधवार=मार्ग में चलता हुआ। गुरु-शुक्र=समीप आया जानो। रविवार-मंगल=दूर जानिये। शनिवार=पीड़ा युक्त है।

यात्री कब लौटेगा

जब शुभग्रह लग्न से तीसरे स्थान में पहुंचे तब यात्री लौटेगा।

जब चंद्र सप्तम घर छोड़कर केन्द्र से आगे बढ़े उस समय लौटेगा।

लग्न से जिस घर में बलवान ग्रह हो उस घर के अंक को १२ से गुणा करे जो आवे उतने दिन में लौटेगा। यदि वह वक्री ग्रह हो तो फिर लौट कर चला जायगा।

जब सप्तमेश लग्न में आये या लग्नेश से इत्थशाल करे तब लौटेगा चर लग्न हो तो विशेष फल होगा।

सब ग्रहों में बलीग्रह लग्न से जिस स्थान में हो उतने समय में आवेगा चर नवांश में जब ग्रह हो तब उतना समय, स्थिर में दुगुना, द्विस्वभाव में तिगुना समय जानना चाहिये।

लग्न से सप्तम स्थान का स्वामी जब वक्री हो।

चतुर्थ में शुभग्रह जितने दिन में आवेगा उतने समय में यात्री आवेगा।

लग्न के आगे वक्री ग्रह जितने घर आगे हो उतना गिनकर १२ से गुणा करे उतने ही दिन जानना चाहिये।

चतुर्थ घर में चंद्रमा पहुँचने में जितना समय लगे उतने दिन में यात्री आवेगा। सप्तम घर में शुभग्रह हो उनके समय बीतने पर आवे।

फल जो लग्न और चंद्र के अन्तर को इष्ट लग्न में गुणा कर ३ का भाग दे तो लब्धि मास घटी मिले उसी समय यात्री आवेगा।

लग्न से ६-५-३ स्थान में गुरु शुक्र दोनों हों तो उसी दिन घर आ जावेगा।

६ या ७ स्थान में कोई ग्रह हो और केन्द्र में गुरु हो तो ७ या १७ दिन में घर आ जावेगा।

यात्री लौट पड़ा या नहीं

स्थान से नहीं चला—स्थिर लग्न हो तो नहीं चला, और यदि द्विस्वभाव लग्न अपने स्वामी शुभग्रह से युक्त हो या पूर्णदृष्टि हो।

चर लग्न स्वामी व शुभग्रह से युक्त दृष्ट हो पापग्रह से युक्त दृष्ट न हो।

चल दिया—लग्नेश और चन्द्र केन्द्रों से निकलकर अन्यस्थान में हो और केन्द्रस्थग्रह के साथ इशराफ योग करता हो।

सप्तम में चन्द्र हो।

१, ७, ८, ६ घरों में सभी ग्रह हों।

लग्न या लग्नेश पापग्रहों से युक्त या पूर्णदृष्टि हो।

चर लग्न पापग्रहों से युक्त या दृष्ट हो।

यात्री मार्ग में—लग्नेश २, ३, ८, ९ घर में हो।

कितना चला कितना और बाकी है—लग्न के भुक्तांशों के तुल्य मार्ग चल चुका है भोग्यांशो के समान चलने को शेष बाकी है।

प्रवासी कहां है—प्रश्न अक्षर × ६ + १ ÷ ७=शेष १=आधे मार्ग में। २=घर के समीप। ३=घर पर। ४=लाभ में है। ५=रोगी। ६=पीड़ित। ०=आने को तत्पर है।

अन्य—(तिथि + बार + प्रहर + नक्षत्र) ÷ ७=शेष। शेष से फल जाने।

या कृतिका से वर्तमान नक्षत्र तक गिनकर ÷ ७=शेष। शेष से फल जावे।

या प्रश्न अक्षर + ११ ÷ ७=शेष के फल नीचे है।

१=स्थान में ही। २=मार्ग में। ३=अर्द्धमार्ग में। ४=ग्राम में आया जानो। ५=मार्ग से लौट गया। ६=रोगग्रस्त। ७ या ०=मरण जानो।

यात्री जीवित है या मर गया अथवा उसका क्या हुआ

जीवित है सुखी है आयगा—चतुर्थ से सप्तम के भीतर किसी ग्रह से चंद्र का इत्थशाल हो शुभग्रह से युक्त या दृष्ट भी हो तो वह सुख से जीवित है। सुख से आयेगा।

यात्री वहीं है जीवित है—लग्न स्थिर हो तो परदेशी जो गया है वह मरा नहीं जीवित है । उसी स्थान में है ।

एक स्थान से दूसरे स्थान गया—पापग्रह तीसरा हो शुभ दृष्टि न हो ।

चोर लूटे—समी केन्द्रों में पापग्रह हो शुभदृष्टि न हो ।

रोग हो—शनि पापग्रह से युक्त दृष्ट हो नवम में हो और शुभयोग की दृष्टि न हो ।

सूर्य नवम में हो ।

क्लेश— पापग्रह सप्तम और लग्न में हो तो क्लेश हो, शुभग्रह हो तो यात्री को आराम मिले ।

कष्ट—पापग्रह ५, ७, ६, ६ घर या लग्न में हो शत्रु से दृष्ट हो तो परदेशी को कष्ट होगा ।

बंधन—शनि केन्द्र या त्रिकोण में पापराशि में हो पापग्रह से दृष्ट हो तो अवश्य बंधन हो ।

वहां स्थिर लग्न हो शुभग्रह से युक्त दृष्ट हो तो बंधन । स्थिर हो चर राशि से कुछ दिनों को बंधन हो । यदि द्विस्वभाव हो तो बंधन और मोक्ष भी क्रम से होता है ।

यदि पापग्रह ४, ७, ८, ५, ९ घर में पापदृष्टि हो तो निश्चय ही बंधन हो ।

पापग्रह ७, ८ घर में हो तो वह बांध कर पीटा गया हो ।

या पापग्रह १, ७, ८ घर में हो तो भी वही फल होगा ।

बंधन से छूटे- यदि पापग्रह ७, ८ घर या १, ७ वें घर या ८-१ घर में हो तो बंधन में पड़ा हुआ जल्दी छूटे ।

न मारा या न बांधा गया—१, १२, ७ घर में क्रूरग्रह हों तो ना मारा गया और न बांधा ही गया ।

यात्री दूर देश में मर गया—लग्नेश चंद्र ६-८-४ घर में नीच का हो अस्त न हो तथा अष्टमेश से इत्थशाल करता हो या पापग्रहों से युक्त हो ।

शुभग्रह ६-८-१२ घरों में निर्बल होकर पापग्रहों से दृष्ट हो एवं चंद्र सूर्य लग्न में हो ।

पापयुक्त दृष्ट शनि अष्टम हो शुभ योग दृष्टि से रहित ।

चंद्र चतुर्थ घर के नीचे के ३-२-१ स्थान में स्थित होकर वक्री ग्रह के साथ इत्थशाल करता हो शुभग्रह की दृष्टि न हो ।

प्रश्नलग्न पृष्ठोदय हो और पापग्रह से दृष्ट हो तो प्रवासी का वध या बंधन हो ।

छटे स्थान में पापग्रह हो शुभदृष्टि न हो तो मरण होगा।

छठे स्थान में पापग्रह हो ६-८ घर में पापग्रह की दृष्टि हो शुभदृष्टि न हो।

पापग्रह ३-६ और केन्द्र में हो शुभदृष्टि न हो तो वह देश छोड़कर दूसरी जगह जाकर मरेगा या लुटेरे उसे ले जावें। अर्थात ३ में पाप ग्रह हो तो दूसरे देश भेजे। ६ में यात्री की मृत्यु। केन्द्र में पापग्रह शुभ दृष्ट हीन हो तो लुटेरे उससे कठोर बर्ताव करें।

दशम में शनि हो तो यात्री का मरण।

तीसरे में पापग्रह हो शुभग्रह युक्त या दृष्ट न हो तो यात्री मर गया या अन्यत्र चला गया।

त्रिकोण केन्द्र या अष्टम में पृष्ठोदय राशि में पापग्रह हो शुभदृष्टि न हो।

शस्त्र से मृत्यु—अष्टम मंगल हो तथा चंद्र पर शनि की दृष्टि हो।

वध और बंधनकारक—पृष्ठोदय राशि पापग्रहों से दृष्ट हो।

गणित—तिथि वार नक्षत्र इष्टघड़ी चैत्र से गतमास यात्री का नाम सबका योग कर ७ का भाग देना। शेष बचे १-२=यात्री को धनलाभ। ३-४= कष्ट युक्त। ५=मृत्यु। ६=दीर्घ रोग युक्त। ७=मृत्यु।

जाने वाले की हार—लग्न चतुर्थ स्थान और चंद्र चर हों।

विजय होकर वापिस—चर लग्न हो पापग्रह की दृष्टि न हो चंद्र शुभग्रह से इत्थशाल करता हो और अपने स्वामी या शुभग्रहों से दृष्ट हो तो अपना कार्य पूर्ण कर जय प्राप्त कर शीघ्र लौटे।

कार्य सिद्ध कर चलने पर मृत्यु—चंद्र पापग्रह से इत्थशाल करे पापग्रह से दृष्ट हो।

राजा द्वारा पकड़ा जायगा—स्थिर लग्न में उच्च का पापग्रह हो।

छूट जायगा—यदि चर लग्न में उच्च का पापग्रह हो।

ग्रह के अनुसार यात्री के मृत्यु का कारण

अष्टम सूर्य—अग्नि से। चंद्र=जल से। मंगल=शस्त्र से। बुध=अतिसार से। गुरु=उदर रोग। शुक्र=वायु या सरदी। शनि=भूख से। राहु=विष से। ये ग्रह अष्टमभाव में हों तब ये फल होता है।

जीवित या मृत्यु—सूर्य-नक्षत्र से चंद्र-नक्षत्र तक गिन कर लिखले। ७ नक्षत्र तक चंद्र हो=निर्जीव। आगे के १२ नक्षत्र तक=जीवित। आगे के ७ नक्षत्र तक=रोगों की उत्पत्ति।

यात्रा में क्या शगुन होगा

उदय लग्न में चरराशि – अच्छा शगुन होगा गमन करे।

,, स्थिर ,, —कुछ अच्छे कुछ बुरे शगुन होंगे गमन न करे।

,, द्विस्वभाव ,,—अच्छे शगुन नहीं होंगे इससे लौटे।

क्या शगुन होगा—बली सूर्य=बाज और गरुड। चंद्र=नीलकंठ कबूतर उल्लू के दर्शन। मंगल=खंजन भरद्वाज या शृगाली। बुध=तोता मैना, कुर्री, खंजन, काक, खरगोश, बिल्ली, बंदर, हिरन, सुअर या बिना जमा दही का पात्र। गुरु=कबूतर, तीतर, कंकण पक्षी या घृत का पात्र, या सुनहरी रंग का पक्षी। शुक्र=किल किला तीतर बगुला या दूध का पात्र। शनि व राहु =गधा, घोड़ा, सुअर, हिरन, खरगोश, कुत्ता, बिल्ली, बंदर, कौवा-लाल सांप शृगाल या चोर नीच पुरुष तेली छिपकली। ग्रह जो सबमें बली हो या प्रश्न लग्न जिस ग्रह से युक्त या दृष्ट हो उससे शगुन कहना।

अन्यमत —सूर्य=सफेद गरुड़, चंद्र—नीलकंठ, कबूतर, घुघ्घू या भयदायक पक्षी देखे। मंगल स्यारी कुत्ता रीछ। बुध=छछुन्दर खूसट पक्षी। गुरु= दूध घी कौवा या भरद्वाज। शुक्र=दही पक्षी या गिरगिट। शनि=चिड़िया चोर तथा अग्नि।

विचार—मन में विचार शगुन को प्रगट करना हो तो आरूढ़ लग्न से होने वाले शगुन को विचारना चाहिये।

शगुन—लग्न में चरराशि हो तो जानवर देखे। स्थिरराशि में स्थिर शगुन। द्विस्वभाव=मार्गचलना बंद हो।

यात्रा में शगुन राशि के अनुसार—लग्न में मेष=बकरा, मेढ़ा। वृष=बैल। मिथुन=अच्छी स्त्री। कर्क=अग्नि लिए स्त्री या दक्षिण की ओर मुर्गे का शब्द। सिंह=बिलाव। कन्या=वधू या दक्षिण की ओर उलूक या काक का शब्द। तुला=पूर्ण अंग वाला मनुष्य या लोखरी का शब्द। वृश्चिक—कपिल पुरुष। धन=सुन्दर पुरुष। मकर=नीच स्त्री या पपीहा पक्षी। कुंभ=दासी। मीन=विधवा स्त्री। जाते समय में सामने दिखेगी इनको पुरुष-स्त्री संज्ञक राशि से उनके भेद के अनुसार जानना।

यात्रा के शगुन कौन अच्छे बुरे हैं विचार—

अच्छे शगुन—सामने से जल भरा घड़ा आये या पीछे से खाली घड़ा मंगल शब्द, गीत, वेद, शब्द, पताका, रोदन सहित शव, सिंहासन, मछली, घृत रजक, गौ, दूध-दही, अन्न-फल, हाथी, घोड़ा, विप्र, सरसों, कमल, मोर

वाद्य, वैश्य, नीलकंठ, श्वेतवस्त्र, मांस वृद्धपशु गन्ना, फूल, छत्र, मृतिका कन्या, इत्र, सुपुत्र स्त्री, सफेद बैल, मेढ़ा अस्त्र मधु पालकी भरद्वाज पक्षी इत्यादि।

अपशगुन—मुंडित संन्यासी, विधवा, गर्भवती, क्रोधी, नग्न, अंगहीन, वंध्या स्त्री, अस्थि, सर्प, ईंधन, नमक चर्म चर्बी, तृण बिल्ली की लड़ाई गुड-मही, कीचड़ अंधा, बहिरा चूहा, सांप सुअर, रजस्वला, गधा, रक्त भुसा विष्ठा, तैल नपुंसक पागल क्षुधित घट दाह गीलेवस्त्र दुर्वाक्य गोह, अंगार, वड़ा शत्रु, पतित औषधि इत्यादि।

रोग विचार

किस भाव से क्या विचारना—लग्न से=वैद्य। सप्तम=रोग। दशम=रोगी रोग का स्वभाव व लक्षण। चतुर्थ=औषधि।

छठे स्थान से भी–रोग। अष्टम=मृत्यु। छठे स्थान से छठा घर ग्यारहवां उस से भी=रोग का विचारकरे। अष्टम से अष्टम घर तीसरा है=वह भी मृत्यु का घर है। रोग का कारण आरूढ़ से भी देख ले।

राशि के अनुसार रोग के अंग—मेष=सिर। वृष=मुख, चेहरा गर्दन। मिथुन=हाथ कंधे। कर्क=छाती। सिंह=हृदय, कन्या=पेट, आंते। तुला=कमर, वस्ति। वृश्चिक=गुप्त इंद्रियाँ। धन=जांघ। मकर=घुटने। कुंभ=पिंडली। मीन=पांव।

ग्रह अनुसार अंग—मंगल=मस्तक। शुक्र=मुख चेहरा। बुध=गर्दन-कंधा-भुजा। चंद्र=छाती। सूर्य-उदर, कूख। गुरु=नितम्ब। शनि=जांघ। राहु=टांग। केतु=पांव।

नक्षत्र के अनुसार अंग—१ अश्वि०=पांव के ऊपर का भाग या हथेली। २ भरणी=पांव का तलुवा या अंगुली। ३ कृत्तिका=सिर। ४ रोहणी=कपाल ललाट। ५ मृग=भौंह। ६ आर्द्रा=नेत्र। ७ पुन०=नाक। ८ पुष्य=चेहरा। अन्य मत से कान। ९ श्ले०=कान अन्यमत ओंठ। १० मघा=दाडी ओंठ और मुंह का ऊपरी भाग। ११ पूफा=दक्षिण बाहु अन्यमत अंगुली। १२ उफा०=वाम बाहु अन्य० कंठ। १३ हस्त=अंगुलियां अन्य० छाती। १४ चि०=गर्दन अन्य० स्तन। १५ स्वा०=छाती अन्य० पेट। १६ वि०=स्तनमुख अन्य० पेट के नीचे का भाग। १७ अनु०=उदर अन्य० नितम्बा १८ ज्ये०=दक्षिण पार्श्व अन्य शिश्न। १९ मू०=वाम पार्श्व अन्य अंडकोष०। २० पूषा०=पीठ अन्य० अंडकोष के नीचे का भाग या ओंठ। २१ उषा० पुट्ठे अन्य घुटने=२२ श्र०=मूत्रेन्द्रिय अन्य जंघा। २३ धनि०=गुदा अन्य० पांव। २४ शत०=दक्षिण जांघ

अन्य० पीठ । २५ पूभा=बाम जांघ अन्य० फूल्हे २६ उभा०=घुटने अन्य० गुल्फ । २७ रेवती=टखने अन्य० पांव का अग्र ।

ग्रह जो रोग करते हैं—सूर्य=उदर रोग । मंगल=शिरोरोग या शीतज्वर अतिसार संग्रहणी । चंद्र=छाती की पीड़ा, सर्दी, जुखाम । बुध=कांख बिलाई । गुरु=बवासीर । शुक्र=नेत्ररोग । शनि=बात और पंगुता । स्वांसशूल । राहु=फेफड़े का क्षयरोग ।

अन्यमत—सूर्य पिशाचजन्य पीड़ा, मंगल=जिस रोगमें खाल निकलती है चर्म-रोग । शनि=क्षयरोग ।

ग्रहदृष्टि से रोग—षष्ठम भाव पर ग्रहदृष्टि फल—सूर्य=उदरपीड़ा या प्रेत बाधा । चंद्र=नेत्ररोग । मंगल=मस्तक पीड़ा, ताप । बुध=कांख बिलाई । गुरु=बवासीर । शुक्र=हैजा या नेत्ररोग । शनि=वायु पीड़ा और पंगु । राहु=विष से पीड़ा । सब ग्रहों की दृष्टि=मिरगी (मृगी) ।

अमुक बीमार है अच्छा होगा या नहीं

निरोग हो—केन्द्र के स्थानों में शुभग्रह हों ये भाव बलवान हो ।

रोग-नाश—लग्नेश तथा चंद्र का शुभग्रह से इत्थशाल हो ।

चंद्र शुभग्रह युक्त दृष्ट होकर केन्द्र में हो लग्नेश से इत्थशाल करे ।

शुभग्रह उदय लग्न या ९-१० घर में हो ।

एक ही बली शुभग्रह लग्न में हो ।

शुभग्रह ९, ३, ६, ११ वें स्थानों में हो ।

लग्न या छत्रलग्न में शुक्र हो ।

७, ८, ५ स्थान में शुभग्रह हो और शुभदृष्टि हो और ३, ६-१०-११ वें स्थान में चंद्र हो ।

स्वगृही चंद्र शुभग्रह से इत्थशाल करता हो ।

रोग घर या चंद्र उच्च के या स्वक्षेत्री मित्रक्षेत्री पापग्रह से युक्त या दृष्ट हो ।

लग्नेश बलवान हो केन्द्र या त्रिकोण में उच्च के शुभग्रह हों ।

रोगी और वैद्य अर्थात् दशमेश लग्नेश की तथा औषधि और रोग की अर्थात ४-७ भाव के स्वामी परस्पर मित्र हो या अन्योन्य इत्थशाली हों तो रोग शांत होता है ।

रोगनाश—केन्द्रस्थ लग्नेश और चंद्र केवल शुभग्रह से युक्त दृष्ट हो तथा वक्री सप्तमेश अष्टमेश सूर्य से रहित हो ।

चर या द्विस्वभाव लग्न में चन्द्र और लग्नेश शुभग्रह से दृष्ट हो व स्वगृही चन्द्र १० या ४ थे घर में हो ।

रोगनाश—दशमेश लग्नेश की मित्रता हो।

लग्नेश लग्न में सौम्यग्रह युक्त हो पापदृष्टि किसी की न हो।

मंगल दशम घर में शत्रुक्षेत्री या नीच का हो।

केन्द्र त्रिकोण तथा अष्टम में शुभग्रह हो चन्द्र उपचय में हो और लग्न को शुभग्रह देखे तो रोग दूर हो।

लग्न आरूढ़ और छत्र चर हो तो रोग दूर हो कार्य सिद्ध हो।

उदय लग्न आरूढ़ और छत्र लग्न में गुरु हो तो रोग दूर हो द्रव्य की प्राप्ति हो।

लग्न में पूर्णचंद्र, बुध, केन्द्र में शुक्र गुरु हो। पापग्रह ६-११ में हो। केन्द्र कोण में शुभग्रह हो। शुभग्रह लग्न पर शुभग्रह की दृष्टि हो। पूर्ण चंद्र केन्द्र या ३-११ घर में हो।

रोग कुछ हटे—उदय लग्न या नवम घर में शुभग्रह शत्रुक्षेत्री या नीच के हों तो कुछ रोग हटे परन्तु पूरा रोग न हीं जायगा।

क्षण में सुख-दुःख—चर लग्न हो तो क्षण में दुखी, क्षण में सुखी हो जाय।

रोग बढ़े - दशमेश, लग्नेश, चतुर्थेश और सप्तमेश इनकी परस्पर शत्रुता हो या इनका इशराफयोग हो तो रोग बढ़े।

फिर रोग हो जाये—लग्नेश या चन्द्र का इशराफयोग हो या लग्नेश वक्री हो तो फिर रोग बढ़े।

रोग में रोग—सप्तम में पापग्रह हो तो एक के वाद दूसरा रोग हो जाय।

रोग फिर हो जाय—दशमेश या चतुर्थेश तथा सप्तमेश वक्री हो।

रोग दूर न हो—६-८ घर में पापग्रह हो तो रोग न जाय। यदि इनमें शुभग्रह हो तो रोग दूर होय।

रोग या मृत्यु घर पापग्रहों से युक्त या दृष्ट हो तो आराम नहीं होगा। यदि शुभयुक्त या दृष्ट हो तो रोग हटे।

रोग न हटे कष्ट—नवम पंचम लग्न में नीच या शत्रुक्षेत्री ग्रह हो तो देह को पीड़ा हो।

रोग न जाय—मंगल दशम में उच्च का मित्रक्षेत्री या स्वक्षेत्री हो तो देखने से जान पड़े कि अच्छा है परन्तु रोग दूर नहीं होता है।

रोग न हटे—रोग घर में आरूढ़ राशि हो या शत्रुक्षेत्री या नीच का पापग्रह रोग घर को देखे तो रोग नहीं हटे यदि रोग घर में पापग्रह भी हो तो रोग न हटे परन्तु मित्रक्षेत्री स्वक्षेत्री या उच्च का हो तो कुछ अच्छा दिखे परन्तु लाभ न हो।

यदि आरूढ़ या छत्र अधोदृष्टि राशियों में हो उनको अधोदृष्टिग्रह देखे या पापग्रह देखे तो रोग दूर न हो अधोदृष्टि राशि ४-८ हो अधोदृष्टि ग्रह बुध शुक्र हैं।

रोग घर व उसके सप्तमस्थान में पापग्रह हो या रोग घर से षष्टम स्थान में चंद्र हो या पापग्रहों से दृष्ट चंद्र कभी भी हो तो रोग न हटे।

छत्र लग्न आरूढ़ लग्न से ६-८-१२ वें घर में हो।

लग्न आरूढ़ छत्र ये स्थिर या द्विस्वभाव हो।

पीड़ा—केन्द्र में पापग्रह व अष्टमेश हो तो रोग से पीड़ा हो।

रोग में रोग—लग्न द्विस्वभाव हो तो रोग में दूसरा रोग हो।

रोग स्थिर--लग्न स्थिर हो तो आदि से अन्त तक एक ही रोग रहेगा।

चन्द्रमा वक्रीग्रह से मुथसिली हो तो रोग स्थिर रहे।

रोग बढ़े—लग्न में पापग्रह हो।

पथ्य से ही फिर विकार पैदा करे—चंद्र के घर में कोई वक्री ग्रह हो।

शगुन—रोग हटे=प्रच्छक यह कहे कि दो दिन में आराम हो जाने की आशा है तो रोग हटेगा।

रोग न हटे—यदि कहे ओहो बड़ा दुख है सहन नहीं होता है तो बड़े दुख की बात है क्या ये बच जायगा ऐसे कहे तो रोग न हटेगा।

रोग बढ़े—प्रच्छक वांए जांघ का स्पर्श करे तो रोग बढ़ेगा।

रोग न हटे—प्रश्नकाल में पृच्छक या अन्यपुरुष नाक छिनके या मुख संकोच करे या तुतला कर बोले या जम्हाई ले या निराशा से स्वांस ले तो रोग न हटे।

वैद्य और औषधि विचार

वैद्य से रोग बढ़े—लग्न पापाक्रांत हो (पापयुक्त या दृष्ट हो) तो वैद्य से लाभ न होवे उसकी दवा से रोग बढ़े।

वैद्य से लाभ—लग्न में शुभग्रह हो तो वैद्य की दवा से लाभ हो।

औषधि से रोग बढ़े—चतुर्थ में पापग्रह हो तो दवा से रोग बढ़े।

मूल से रोग बढ़े—दशम में पापग्रह हो तो उसकी भूल से रोग बढ़े।

दवा से लाभ—चतुर्थ में शुभग्रह हो तो अच्छे वैद्य की दवा से लाभ हो।

औषधि और वैद्य से अन्य रोग हो—सप्तम में पापग्रह हो।

" " सुख हो—सप्तम में शुभग्रह हो।

अपूर्व रोग—चंद्र शनि से मुथशिली हो तो मूत्र वंद होने से रोगोत्पत्ति हो।

रोग बढे—लग्नेश व चंद्र षष्ठेश से मुथशिली हो या अस्तंगत हो।

परदेश में रोग—शनि पापयुक्त नवम में हो उस पर शुभदृष्टि न हो तो वह परदेश में रोग से पीड़ित होता है ।

रोग भारी है या हल्का—उदय लग्नेश या योग कर्त्ता ग्रह चरराशि में या शत्रु क्षेत्री हों तो भारी रोग जानना । स्वक्षेत्री मित्रक्षेत्री या उच्च के हों तो हल्का रोग जानना ।

लग्न राशि में जो नक्षत्र उदय हो उस राशि का स्वामी यदि नीच का या शत्रुक्षेत्री हो तो बीमारी भारी होगी । यदि उच्च के या मित्रक्षेत्री स्वक्षेत्री हों तो रोग हल्का हो ।

कहां पीड़ा—प्रश्नलग्न में जो नक्षत्र उदय हो उस नक्षत्र के अंग में पीड़ा होगी ।

विचार—प्रश्न समय ४ सप्ताह तक देखते रहना चाहिये यदि वे शुभग्रह से युत या दृष्ट हों तो अच्छा होगा ।

रोगी को देव-दोष बाधा तो नहीं है

कुलदेव का दोष—लग्न से ३, ६, ९, १२ स्थानों में पापग्रह हों तो जल, शस्त्र आदि से वंशक्रमागत रोग से पीड़ित हो और अपने कुलपूजित देव का दोष होता है उसकी पूजा से निरोग होता है ।

देवदोष राशि के अनुसार—प्रश्नलग्न में मेष=इष्टदेव का । वृष=पितरों का । मिथुन=आकाशदेवी मातृका पति आदि का । कर्क=शाकिनी, डाकिनी आदि का । सिंह=भूमिपाल देवता का । कन्या=कुलपूजित देव का । तुला=मातुल पक्ष का देव । वृश्चिक=नागदेव । धन=यक्षपति, महादेव, नारसिंह भैरव आदि का । मकर=जलदेवी का । कुंभ=यक्षिणी पिशाच आदि का । मीन=कुलदेव का दोष हो ।

पूर्वोक्त दोष साध्य—जिसका दोष शांत करना है वह ग्रह स्वगृही या उच्च में या मित्रगृही हो तो उपाय से दोष शांत होता है ।

यदि शुभग्रह केन्द्र में हो तो पूजन आदि से दोष शांत हो ।

चंद्रबली हो और ४-२ राशि में हो तो साध्य हो ।

दोष असाध्य—चंद्र और गुरु निर्बल हो तो रोग असाध्य हो ।

केन्द्र में बली पापग्रह हो तो देवदोष असाध्य हो ।

अन्यविचार, किसकी पीड़ा—तिथि वार नक्षत्र एकत्र कर ८ से भाग दे शेष ३, ७=देवपीड़ा । २-८=पितर पीड़ा । ४-६=भूत पीड़ा । १-५=बाधा नहीं है । दोष मात्र है ।

किसके दोष से रोग—८-१२ स्थान में राहु=प्रेत दोष से । गुरु=पितर दोष । चंद्र=जलदेवी । सूर्य=देवी । शनि=कुलदेवता । बुध=भूत-प्रेत बाधा ।

मंगल=शाकिनी दोष। शुक्र=जलदेवी का दोष। ईश्वर भक्ति से रहित को ये दोष होते हैं।

बाधा—अन्यमत से—

प्रश्नलग्न मेष—देवी का दोष। वृष=पितृ। मिथुन=शाकिनी। कर्क=भूत। सिंह=भाइयों का। कन्या=कुलदेवता। तुला=चंडिका। वृश्चिक=नाड़ी दोष। धन=यक्षिणी। मकर=ग्रामदेवता। कुंभ=वांझ स्त्री की दृष्टि। मीन=आकाश गामियों की बाधा या दोष होता है।

मृत्यु—षष्ठेश या पापग्रह लग्न में होकर जन्मराशि को देखते हों तो मृत्यु हो। चंद्रमा ४ या ८ घर में हो तथा पापग्रहों के बीच में हो। यदि वलि शुभ-ग्रह की दृष्टि हो तो शीघ्र सुख हो।

रोग से मृत्यु—लग्नेश चतुर्थ हो चंद्र के साथ मुथशिली हो।

लग्न में अष्टमेश हो चंद्र अष्टम हो।

लग्नेश चतुर्थ हो तथा चंद्र सप्तमेश से मुथसिली हो व सप्तमेश से छठा हो।

अष्टमेश अस्त व बलहीन होकर केन्द्र में हो लग्नेश से इत्थशाल करता हो।

लग्नेश अष्टमेश का केन्द्र में इत्थशाल होकर ग्रह से पीड़ित भी हो।

सूर्य के द्वादशांश में लग्नेश हो।

लग्नेश अष्टम में अष्टमेश लग्न में व परस्पर दृष्टि हो।

चंद्र लग्न में सूर्य सप्तम हो अर्थात् पूर्णिमा की संधि में प्रश्न हो।

वक्री ग्रह १-४-७ घर में हो यहाँ चंद्र से इत्थशाल करे।

लग्नेश अष्टम में अष्टमेश लग्न में व चंद्र से अष्टम हो।

लग्नेश सूर्य हो चंद्र सप्तमेश से इत्थशाल करे या सप्तमेश छठे हों।

केन्द्रस्थित लग्नेश या अष्टमेश से नीच स्थित ग्रह या अस्तंगत ग्रह से इत्थशाल करे।

लग्नेश अष्टमेश दोनों केन्द्र में पापाक्रांत दोनों में इत्थशाल हो।

पापयुक्त चंद्र ४, ८, १२ में हो और पापग्रह ३-७-१२ में हो।

उपरोक्त योग में सूर्य लग्न में बुध सप्तम हो तो रोगी शीघ्र मरे।

लग्नेश अष्टमेश ८-११ घर में पापग्रह से दृष्ट हों या लग्ने अकेला अष्टम में हो।

चंद्र और लग्नेश अष्टम हो। या शनि अष्टम हो।

चौथे घर से नीचे के स्थान में लग्नेश हो षष्ठम चंद्र सप्तमेश के साथ इत्थशाल करता हो सप्तमेश छठे स्थान में हो।

सूर्य अष्टम, चंद्र लग्न में, शनि व्यय में, मंगल दशम हो।

लग्नेन व चंद्र केन्द्र में या आठवें होकर पापग्रह से इत्थशाल करते हों या अस्तंगत होकर पापग्रहों से दृष्ट हों।

रोगी की मृत्यु—१, ७, ८, घर में पापग्रह शुभग्रह निर्बल हो।
पापग्रह केन्द्र में हो और अष्टम चन्द्र पृष्ठोदय राशि का हो।
चंद्रमा ४-८ घर में २ पापग्रहों के बीच हो।
जन्मराशिस्थ शनि को पापग्रह विषम-दृष्टि से देखता हो शुभग्रह की दृष्टि न हो।
अष्टम घर में जिसकी जन्मराशि पापग्रहों से दृष्ट हो।
शनि या मंगल की राशि पर चंद्र, लग्न लग्न में पापग्रह अष्टम शनि और मंगल, सप्तम शुक्र हो शुभग्रह निर्बल हों।
लग्न या चंद्र जिस राशि में हो। वह शत्रुग्रह युक्त या दृष्ट हो।
चंद्र से ६, ७, ८ का पापग्रह हो और रोग व मृत्युस्थान से ६, ७, ८ घर में पापग्रह हो।
लग्न में चंद्र सूर्य सप्तम हो।

आरूढ़ और छत्र लग्न से विचार

मृत्यु न हो—वृष, सिंह, वृश्चिक, कुम्भ आरूढ़ और छत्र लग्न दोनों हो।
मारी रोगपीड़ा—तुला आरूढ़ और धन उसका छत्र लग्न हो।
सख्त बीमार—मेष आरूढ़ और मिथुन उसका छत्र लग्न हो।
कर्क ,, ,, कन्या ,, ,,
मकर ,, ,, मीन ,, ,,

मृत्यु हो—धन आरूढ़ और तुला उसका छत्र लग्न हो।
मिथुन ,, ,, मेष ,, ,,
कन्या ,, ,, कर्क ,, ,,
मीन ,, ,, मकर ,, ,,

छत्र का उच्च रोगी मरे नहीं-छत्र वृष का वृष। कुम्भ=कुम्भ। सिंह=सिंह। वृश्चिक=वृश्चिक। ये उच्च स्थान हैं ये आरूढ़ या उदय लग्न में हो तो रोगी नहीं मरे।

छत्र का नीच मृत्यु—तुला का धन नीच है। धन का तुला मृत्यु छत्र। मेष का मिथुन नीच। मिथुन का मेष मृत्यु। कर्क का कन्या नीच। कन्या का कर्क मृत्यु छत्र। मकर का मीन नीच। मीन का मकर मृत्यु छत्र है।
रोग न हटे या मृत्यु—नीच हो तो रोग दूर न हो, मृत्युछत्र हो तो मरण हो।

रोग आराम न हो—आरूढ़ अष्टम घर हो चंद्र उससे अष्टम हो या अष्टम घर या चंद्रराशि या अंग स्पर्श से जो राशि ज्ञात हो उस पर केवल पापग्रह हो तो आराम न हो।

मरण—आरूढ़ मरण स्थान वहां से अष्टम चंद्र पापदृष्ट हो।

मरण-अष्टम और आरूढ़ लग्न पापयुक्त हो या दृष्ट हो।

परदेश में मरण—निर्बल सौम्यग्रह ६-८-१२ में अशुभग्रहों से दृष्ट हो, सूर्य और चंद्र पापग्रह युक्त हो तो दूर देश गया हुआ मर जाता है।

रोग से पीड़ित—शनि नवम में हो पापग्रह युक्त हो शुभ दृष्टि नहीं हो।

मरण—शनि पापग्रह युक्त शुभग्रह सहित अष्टम में हो।

जीवन-मरण विचार—पूर्व बताये ध्वज आदि के वर्ग के अक्षरों का पिंड लेना (अक्षर पिंड+४० क्षेपक)÷३=शेष १ जीवित है। २=कष्ट साध्य बहुत प्रयत्न करने से बचे। शेष=० मरण होगा या मर गया।

अन्यमत—(प्रश्न अक्षरों के वर्णांक ध्रुवांक×२+मात्राएँ २४)÷३=शेष १ जिये। २=अति कष्ट। ०=मरे।

मृत्यु अवधि—प्रश्न आलिंगित=१ दिन। अभिधूमित=१ मास। दग्ध=१ वर्ष। आरूढ़ या मृत्यु घर को जो ग्रह देखते हैं उनकी जो अवधि वर्ष मास दिन घटी की है उस अवधि में मृत्यु हो।

प्रश्नकाल में चंद्रमा उदय लग्न में हो और पापग्रहों से युक्त हो या उदय लग्न से छठे घर में चंद्र हो और सातवें घर में पापग्रह हो तो जो ग्रह चंद्र को देखते हैं। उन दृष्टा ग्रह की जो अवधि है उसमें मृत्यु हो।

१० दिन में मृत्यु—लग्न से सातवें घर में पापग्रह हो और तीसरे घर में सूर्य हो। तीसरे घर में सूर्य, दशम पापग्रह। सप्तम में पापग्रह।

१४ दिन में मृत्यु—लग्न से दूसरे स्थान मे पापग्रह हो।

८ दिन में मृत्यु—सूर्य मंगल शनि राहु आरूढ़ से अष्टम घर में हो।

७ दिन में मृत्यु—शुक्र और गुरु तीसरे स्थान में हो।
मतांतर=दशम घर से तीसरे घरमें शुक्र गुरु हो।
लग्न में चौथे आठवें पापग्रह हो।

३ दिन में मृत्यु—सूर्य मंगल शनि या राहु २; ७ या १० घर में हो।
दशम मे पापग्रह हो।

उसी दिन मृत्यु—दशम में सूर्य वा राहु और सप्तम में मंगल या शनि हो।

मृत्यु कहां होगी—अष्टम घर में स्थिर राशि=स्वदेश। चर=परदेश। द्विस्वभाव =निकट के देश में मृत्यु हो।

स्वरोदय से विचार

बाधा–प्रश्नसमय पृथ्वीतत्व–अपने प्रारब्ध का रोग है। जलतत्व हो=मातृकाओं का। अग्नितत्व=शाकिनी या पित्र दोष से रोग की पीड़ा है।

रोगी जीये–पृच्छक दाहिने शून्य अंग की ओर आया हो पश्चात पूर्ण अंग की ओर (चालू स्वर) आकर बैठ जाय तो रोगी निश्चय जी जायगा। यदि जिस अंग में स्वर स्थित है उसी अंग की ओर बैठा हुआ प्रश्न पूछे तो वह रोगी अवश्य जियेगा।

यदि स्वर दक्षिण नाड़ी का बहता हो प्रच्छक के मुख से अचानक वचन निकले तो वह जियेगा।

मरे–जीव (स्वास) चंद्रमा में स्थित हो और प्रश्नकर्ता सूर्य की ओर स्थिर हो तो कितनी ही दवा हो वह मरेगा अवश्य।

यदि जीव पिंगला में स्थित हो और प्रच्छक बाम ओर बैठकर पूछे तो उपरोक्त फल हो।

शगुन–प्रश्न समय–कोई शस्त्रधारी दिखाई पड़े, संन्यासी, विधवा लंगड़ा या दुःखित या बहेलिया या शत्रु या काष्टभार लिये या हाथ में डण्डा लिये कोई रस्सी या सूत बाँटता दीखे या नेत्र मसलता या टांगों को पकड़े हुए या लेटे हुये प्रश्न करे या तेल लगा रहा हो। बाल बनवाता हो इत्यादि अपशगुन दीखे तो रोगी की मृत्यु संभव है।

रोग कब अच्छा होगा—सबसे बलवान ग्रह की जो अवधि है उस अवधि में रोग जायगा।

६-८ स्थान में शुभग्रह जितने दिन हो उतने दिनों में रोग दूर होगा। चंद्ररोग स्थान को देखे और चंद्र को जो ग्रह देखे उसके जितने वर्ष मास दिन आदि हैं उतने दिन में रोग दूर होगा।

अब नक्षत्रों से रोग की उत्पत्ति हो और कितने तक कष्ट भोगना पड़ेगा यह चक्र दिया जाता है।

इन नक्षत्रों के इतने चरणों में कोई बीमार हो तो नीचे के चक्र के दिनों तक कष्ट होगा। अधिक कष्ट के दिन अन्यमत से अंकों में भी बताया है। और उसके आगे बताये दान से कष्ट शांत होगा।

जिस नक्षत्र पर रोग पैदा हो उसके अनुसार कष्ट के दिन

क्रम	नक्षत्र	१ चरण	२ चरण	३ चरण	४ चरण	१ चरण	२ चरण	३ चरण	४ चरण	कष्ट दिन
		दिन	दिन	दिन	दिन	अन्य मत				
१	अश्वि०	९	१३	१३	३	९	११	१०	२०	९
२	भरणी	११	१३	२७	१७	०	८०	४०	११	११
३	कृतिका	९	८	२५	१४	९	११	१६	२८	९
४	रोहि०	७	२०	४	३४	७	९	१८	३०	७
५	मृग	३	१८	२२	२८	९	५	१७	१०	१०
६	आर्द्रा	१	२७	२८	१७	०	१८	०	०	मृत
७	पुनर्व	७	५	१८	२८	७	१४	२	२१	७
८	पुष्य	७	१७	२४	१९	७	७	२०	२१	७
९	श्ले०	६	०	०	०	०	७	४१	०	मृत
१०	मघा	२०	१६	१८	२८	१५	७	१७	२०	२०
११	पूफा	१	१८	२४	१६	०	१५	०	३०	मृत
१२	उफा	७	१५	२९	२८	७	१४	६	६०	७
१३	हस्त	१५	२३	१४	२६	१५	१७	१५	०	१५
१४	चित्रा	११	१८	१६	१५	११	९	९	१६	११
१५	स्वाती	१	२२	१५	२४	६०	१७	३०	०	मृत
१६	विशा०	१४	६	२८	१९	१५	०	४	१३	१५
१७	अनु०	१	२६	१४	२६	६०	१२	३६	६०	स्थिर
१८	ज्ये०	६	१५	२८	१७	६९	९	६	४	मृत
१९	मूल	९	३०	१९	११	०	९	१५	६	९
२०	पूषा	१	२६	१७	१८	०	१५	२४	१०	मृत
२१	उषा	३	१५	२६	१७	३०	२४	२६	१६	३०
२२	श्रवण	११	२६	१४	२९	६०	२४	६	९	११
२३	धनि०	१५	१८	२६	२५	१५	४	२०	२१	१५
२४	शत०	१२	१६	१८	१६	०	४५	३	२२	११
२५	पूभा	१	१४	१	१९	०	१२	२१	१९	मृत
२६	उभा	७	१३	२६	१८	१०	१	९	१५	७
२७	रेवती	१	२८	२०	४०	१८	१०	१९	२०	स्थिर

ग्रहशांति के निमित्त दान

१ अश्वि=ब्राह्मण भोजन। २ भर०=अन्नदान गोदान। ३ कृत्तिका=सुवर्ण दान। ४ रो०=घृतदान। ५ मृग=तिलदान। ६ आर्द्रा=गोदान। ७ पुन०=पीतल दान। ८ पु०=चावल अन्न तिल। ९ श्ले०=गो भैंस दान मृत्युंजय जप। १० मघा=वस्त्र भोजन। ११ पूफा०=ब्राह्मण भोजन। १२ उफा०=अन्न। १३ ह०=तिल। १४ चित्रा=दुग्धदान। १५ स्वाती=घी गो। १६ विशा=सोना, गो। १७ अनु०=घी गोदान। १८ ज्ये०=

तिल, उपानह । १६ मूल=गौ चांदी । २० पूषा=गौदान मोती । २१ उषा=ब्राह्मण भोजन । २२ श्रव०=नारियल । २३ घनि०=अन्न घोड़ा । २४श०=भोजन अन्न । २५ पूभा०=अन्न भोजन । २६ उभा०=अन्न । २७ रे०=वृषभ ।

मूक प्रश्न

इसके अन्तर्गत मुष्टि एवं चिंता भी है अर्थात् जब कोई अपनी मुट्ठी में कोई वस्तु रख कर पूछता है कि बताओ इसमें क्या है । या मन में किसी वस्तु का विचार कर या किसी विषय का विचार या चिन्ता कर पूछता है कि बताओ मेरे मन में क्या है या किस विषय की चिन्ता है । या किस विषय पर प्रश्न पूछना चाहता हूँ ।

इसके लिये प्रश्नकुंडली बना कर उदय लग्न आरूढ़ एवं छत्रलग्न से एवं ग्रहों की परिस्थितियों पर से विचार करना पड़ता है । और प्रश्नकर्ता के मुख से निकले शब्दों व अंगस्पर्श पर भी ध्यान रखना होता है ।

ये प्रश्न पहिले ३ भागों में बट जाते हैं (१) धातु सम्बन्धी । (२) मूल अर्थात् वृक्ष आदि सम्बन्धी । (३) मनुष्य पशु पक्षी आदि जीव सम्बन्धी ।

हमको पहले ग्रहस्थिति आदि से जानकर फिर आगे गुरु आदि के अनुसार भेद जानना पड़ता है । और फिर उस विषय का सूक्ष्म विचार कर एव राशि और ग्रहों के गुण धर्मपर पूर्ण रूप से विचार कर फल का बुद्धि से अनुमान करना होता है ।

आगे तीनों वर्ग का निश्चय कर उन प्रत्येक वर्ग के भेद का वर्णन दिया है ।

प्रच्छक प्रश्न पूछने को आकर बैठ जाता है परन्तु अपना प्रश्न प्रगट नहीं करता है तब ज्योतिषी को ग्रहस्थिति आदि पर से अनुमान करना पड़ता है कि किस सम्बंध का प्रश्न होगा ।

यह जानने को प्रश्न ३ भाग में बँट जाता है—

(१) धातु सम्बंधी (२) जीव सम्बंधी (३) मूल सम्बंधी चिंता ।

धातु–में लोहा पत्थर सोना चांदी आदि सब प्रकार की धातु खनिज पदार्थ आदि आते हैं ।

मूल–वृक्ष लता घास भाजी तरकारी जड़ पौधे कंद आदि फूल फल सभी आते हैं ।

जीव–सम्पूर्ण जीवधारी पशु पक्षी कृमि पतंगे गाय घोड़े आदि एवं जंगली पशु आदि आते हैं ।

मूल + धातु–सड़ी हुए अस्थि आदि शेष अर्थात् मृतक शरीर छाल जल घास के फल लता-वृक्षादि जाने ।

जीव + धातु–शेष चपड़ा राख मांस कीड़े पक्षी आदि जीवधारी जानें।

धातु + मूल–जो मूल धातु और जीव धातु पदार्थों से घास लता वृक्ष के आकार में बनाये गये हो शामिल हैं।

मूल + जीव–जो पदार्थ मूल में शामिल हैं वही इसमें भी होंगे। जैसे वृक्ष लता घास आदि।

धातु + जीव–पक्षी कृमि और जीवधारियों की आकृति जो मूल-धातु और जीव-धातु से बनी है।

मूल + धातु–पशु पक्षी जीवधारियों की आकृति जो मूल-धातु से बनी है।

विचार–उदय लग्न से धातुचिंता। आरूढ़ से मूल चिंता। छत्र से जीवचिंता कहना चाहिये।

पहिले ३ प्रकार के भेद जानने के पश्चात ग्रह परिस्थितियों के अनुसार प्रत्येक के पृथक २ भेद मालूम करना होगा।

चर आदि के अनुसार–लग्न चरराशि=धातु। स्थिर=मूल। द्विस्वभाव=जीव।

नवांश के अनुसार–विषमराशि में	१-४-७	२-५-८	३-६-९ नवांश
	धातु	मूल	जीव
समराशि में	जीव	मूल	धातु

ग्रह अनुसार–केन्द्र में बली सूर्य या मंगल=धातु। बली बुध शनि=मूल। चंद्र गुरु बली केन्द्र में=जीव।

अन्यमत–मंगल चंद्र शनि राहु=धातु। सूर्य शुक्र=मूल बुध गुरु=जीव।

लग्न राशि व ग्रह अनुसार १-५-८ राशि मंगल व सूर्य से युक्त या दृष्ट=धातु।
३-६-११-१० बुध व शनि " =मूल।
२,४,५,७,९,१२ चंद्र गुरु शुक्र " =जीव।

अन्यमत–मंगल चंद्र शनि राहु या केतु=धातु। सूर्य शुक्र=मूल। बुध गुरु=जीव।

विशेष विचार–धातु=सूर्य चंद्र स्वगृही बुध स्वक्षेत्री, शनि अन्यक्षेत्री
मूल=सूर्य चंद्र अन्यक्षेत्री या शनि स्वक्षेत्री।
जीव=बुध अन्य क्षेत्री हो इन्हीं के लिये विशेष नियम है अन्य के लिए नहीं।

चंद्र के बारे में अन्य मत है स्वगृही=मूल, अन्यक्षेत्रका=धातु।

धातु–लग्नेश या चंद्र अपने अंशम में होकर लग्न को देखे चाहे वह लग्न त्रिकोण या किसी स्थान में हो।

जीव–ये लग्नेश शत्रु या सव अंशक में होकर लग्न चंद्र को देखे।

मूल–परांशक में बैठकर परांश की ग्रहों को देखे या लग्नेश परांशी हो व लग्न में कोई ग्रह परांश को हो।

धातु—धातु राशि चर धातु ग्रह चंद्र मंगल शनि राहु से दृष्ट हो और धातु छत्र से युक्त हो ।

मल—मूल राशि मूल ग्रहों से युक्त या दृष्ट हो तथा उसी में छत्र युक्त हो ।

जीव—जीव राशि से जीव ग्रह युक्त दृष्ट हो उसी में छत्र हो ।

पृच्छक की दृष्टि से—सम=धातु । अधो=मूल । ऊर्ध्व=जीव । जब राशि और ग्रह भिन्न हो ।

जीव—धातु राशि में	मूल	ग्रह से युक्त या	दृष्ट हो ।
फल—जीव राशि में	धातु	,,	,,
धातु—,,	,, जीव	,,	,,

ये सब ग्रहों से दृष्ट हो तो जो बली हो उससे विचारना ।

धातु + मूल=जीव । जीव + धातु=मूल । मूल + जीव=धातु ।

जीव—आरूढ़ लग्न	धातु	उसका छत्र	मूल	आरूढ़ पर	मूलग्रह	की दृष्टि ।
,,	मूल	,,	धातु	,,	धातु	,,
मूल— ,,	जीव	,,	धातु	,,	धातु	,,
,,	धातु	,,	जीव	,,	जीव	,,
धातु— ,,	मूल	,,	जीव	,,	जीव	,,
,,	जीव	,,	मूल	,,	मूल	,,

यहाँ आरूढ़ लग्न और उसका छत्र एवं दृष्टाग्रह इन तीनों से धातु-मूल आदि विचारना चाहिये । यदि ये तीनों पृथक-पृथक हों तो इनमें से जो निर्बल हो उसे छोड़कर शेष को उपरोक्त के अनुसार बिचार करना चाहिये ।

मूल जीव—आरूढ़	धातु	और बली	मूल	की दृष्टि ।
जीव मूल— ,,	,,	,,	जीव	,,
जीव धातु— ,,	मूल	,,	जीव	,,
धातु जीव- ,,	,,	,,	धातु	,,
धातु मूल— ,,	जीव	,,	धातु	,,
मूल धातु— ,,	,,	,,	मूल	,,

अर्थात्-

धातु-यदि उदय लग्न धातु हो धातु ग्रह धातु राशि में धातु ग्रह से दृष्ट हो ।

जीव-यदि दृष्टा ग्रह मूलराशि में हो तो मूल होगा, जीवराशि हो तो जीव ।

मूल—उदय लग्न मूल ग्रह मूल राशि में दृष्टा मूल ग्रह ।

जीव-इससे प्रथक किसी राशि में हो तो जीव ।

जीव-उदय लग्न जीव राशि में दृष्टा जीव ग्रह हो ।

मूल—इससे प्रथक किसी अन्य राशि में हो तो मूल संबन्धी है ।

यदि उपरोक्त विचार मे धातु मूल आदि निर्णय किया परन्तु उदय लग्न चंद्र से युक्त या दृष्ट हो तो धातु के वदले मूल के स्थान में जीव और जीव के स्थान में धातु ही कहना ।

धातु—लग्न और त्रिकोण से विचारना । स्वनवांश का ग्रह लग्नस्थ ग्रह या त्रिकोणस्थ ग्रह को या दूसरे ग्रह को देखता हो जो स्वनवांश में हो ।

अन्यमत—ग्रह स्वनवांश में लग्न में हो या उसके मूलत्रिकोण में हो और किसी ग्रह को देखे जो स्वनवांश में हो ।

जीव—ग्रह स्वनवांश के अतिरिक्त और कोई नवांश में हो उसकी दृष्टि लग्न-के ग्रह पर या उसके मूलत्रिकोण में या कोई ग्रह पर हो जो स्वनवांश में हो यदि लग्न या उसके त्रिकोण में कोई ग्रह नहीं हो तो उस ग्रह की जो अन्य नवांश में हो दृष्टि लग्न या त्रिकोण में हो जबकि ये स्वनवांश में हों ।

मूल—ग्रह स्वनवांश के अतिरिक्त और कोई नवांश में हो उसकी दृष्टि लग्न या उसके मूलत्रिकोण पर रहने वाले किसी ग्रह पर हो जो भी अन्य नवांश में हो अर्थात् जवकि वैसा ग्रह या वे राशि या स्वनवांश को छोड़ कर और कोई नवांश में हो ।

स्वरोदय से विचार

पृथ्वी तत्त्व—मूल वृक्षों की चिन्ता । जल व वायु=जीव की । अग्नि=धातु । आकाश तत्त्व=शून्य अर्थात कोई चिन्ता नहीं ।

मूक प्रश्न—(दृष्टकाल × २ + १) ÷ ३=शेष १=जीव । २=धातु । ३=मूल की चिन्ता ।

संकेत से—धातु=हाथ में कोई चीज लेकर भुजा फैलावे या उच्चारित शब्द अकरादि हो ।

मूल—भुजा समेट के रखे या उच्चारित शब्द इकारादि हो ।

जीव—भुजा को फैलावे या समेटे भी नहीं उच्चारित शब्द उकारादि हो ।

पृच्छक के आगमनकाल की दिशा द्वारा ।

मुख पूर्व=धातु । दक्षिण=जीव । उत्तर=मूल । पश्चिम=मिश्रित ।

अंग स्पर्श से—जीव=सिर स्पर्श करे भुजा मुख, जानु जंघा शब्द करते समय स्पर्श करे ।

मूल-पांव, गुदा, वृषण ।

धातु-कीट, उदर, हृदय ।

बेला व समय के अनुसार विचार

वेला के ३ प्रकार के प्रश्न है (१) आलिंगन, (२) अभिधूमित, (३) दग्ध इन के अनुसार धातु मूल जीव विचारना चाहिये।

समय दिनमान ÷ ३=१० घटी। १० घटी तक उदय। २० तक मध्यान्ह ३० तक अस्तंगत। प्रत्येक तृतीय खंड के भी पल के ३ भाग करना एक भाग=१० घटी का $\frac{१}{३}$=$\frac{१०}{३}$=३-२० का प्रत्येक विभाग हुआ। इसके अनुसार वेला में धातु मूल आदि इस प्रकार विचार करना चाहिये।

		१	२	३
१ प्रश्न उदय वेला में—आलिगित के विभाग	=	१ जीव	२ धातु	३ मूल
२ ,, मध्यान्ह ,, —अभिधूमित ,,	=	धातु	मूल	जीव
३ ,, अस्तंगत ,, —दग्ध ,,	=	मूल	जीव	धातु

फल—१ आलिगन वेला में=आलिगन प्रश्न हो=आलिगित फल होगा। अभिधूमित प्रश्न हो तो अभिधूमित फल होगा। दग्ध प्रश्न में दग्ध फल होगा।

२ अभिधूमित वेला में—अभिधूमित प्रश्न =आलिंगित फल होगा। दग्ध प्रश्न=अभिधूमित फल होगा। आलिंगित प्रश्न अभिधूमित फल होगा।

३ दग्ध वेला में—दग्ध प्रश्न आलिंगित फल।
आलिंगित प्रश्न=अभिधूमितफल।
अभिधूमित फल=दग्ध फल।

उदाहरण—दिनमान ३२-३६ ÷ ३=१ भाग १०-५२ प्रातः। दूसरा भाग २१-४४। तीसरा ३२-३६ हुआ। इष्ट २५-५६ है।
१ भाग १०-५२ ÷ ३=३-३७$\frac{१}{३}$।

दूसरा भाग ७-१४$\frac{२}{३}$ का हुआ। इष्ट २५-५६ यह तीसरे भाग ३२-३६ के भीतर है।

तीसरा ३२-३६	दूसरा भाग २१-४४
इष्ट २५-५६	१ विभाग ३।३७$\frac{१}{३}$
शेष ६-४०	२५।२१$\frac{१}{३}$
	२ विभाग ३।३७$\frac{१}{३}$
	२८।५८$\frac{२}{३}$

यहाँ इष्ट तीसरेखंड में=दग्ध वेला के दूसरे विभाग के भीतर है, अतः जीव आया।

आय ध्वज आदि के अनुसार

पिछले बताये वर्ग के अक्षरों से बनाया हुआ पिंड लेना चाहिये।

पिंडांक ÷ ३=शेष १=जीव। २=धातु। ३=मूल।

ध्वज आदि आय के अनुसार

आय	१ ध्वज	२ धूम	३ सिंह	४ स्वान	५ वृप	६ खर	७ गज	८ ध्वांक्ष
धातु आदि	धातु	धातु	मूल	जीव	जीव	जीव	मूल	जीव
धातु प्रकार	सोना	चाँदी	तांवा	लोहा	कांसा	रांगा	सीसा	पीतल
भूषण किस अंग का	सिर का	मुख	गला	कान	हाथ	अंगुली	कमर	पांव का
मुष्ठी की वस्तु	पत्र	पुष्प	फल	काष्ठादि मिश्रित	धान्य	तृण	बीज	भूसी
रंग	कुसमी	श्वेत	रक्त	पांडु मिला नीला	पीला	कई रंग	श्याम वर्ण	मिश्रत

धातु के भेद या प्रकार का ग्रहों से विचार

ग्रह की धातु—सूर्य=तांबा। चंद्र=कांसा। मंगल=तांबा। बुध=रांगा। गुरु=सुवर्ण। शुक्र=चांदी। शनि और राहु=लोहा।

सूर्य=शिला (पत्थर)। चंद्र बुध=मिट्टी के बर्तन या बिखरी मिट्टी। मंगल=मूंगा। गुरु मैनसिल। शुक्र=मोती=स्फटिक। शनि=लोहा।

सूर्य मंगल शुक्र शनि ये स्वगृही हों तो अपनी-अपनी धातु बताते हैं। चंद्र गुरु बुध ये स्वगृही या मित्रगृही हों तो अपनी-अपनी धातु बताते हैं। सूर्य, मंगल, शुक्र, शनि मित्रगृही हों तो मिली हुई धातु बताते हैं। चंद्र बुध, गुरु शत्रुगृही हो तो मिली हुई धातु बताते हैं।

उच्च का ग्रह हो तो इस प्रकार मणि होंगे

मणि—सूर्य=सूर्यकांत (आतसी सीसा) या लाल माणिक्य। चंद्र=चंद्रकान्त, या मोती। मंगल=प्रवाल (मूंगा)। बुध—पन्ना। गुरु=पुखराज। शुक्र=वैदूर्यमणि लहसुनिया या बिल्लोर कांच। शनि=नीलम। राहु=वैदूर्य या हीरा। केतु=गोमेद।

उच्च का ग्रह हो तो धाम्य अर्थात् गढ़ी हुई वस्तु। निच्च का हो तो अधाम्य अर्थात् अघटित धातु।

भूषण—भूषण का रंग कैसा है या मिश्रित है इसका विचार ग्रह और राशि के बल के अनुसार विचारना।

सूर्य=कंठ का। चंद्र=कान का। मंगल=कंठ का। बुध=कान। गुरु=कंठ का सोने का। शुक्र=सिर का। शनि=हाथ पाँव के। नीलमणि जड़ित भूषण या ऊन, नख, हड्डी या लोहा इनसे जड़ित भूषण। गुरु राहु किसी

मी राशि में हों तो कर्ण भूषण सुनहरी कलावत्तू या इस किस्म के गोटा आदि की वस्तु कहना ।

गुरु और शुक्र किसी राशि में हो=बिल्लोर मोती आदि से जड़ा हुआ गहना होगा ।

गुरु और चंद्र किसी राशि में हों तो ताबीज होगा ।

इन बैठे हुए ग्रहों में गुरु भी हो तो मित्र के पहिरने के भूषण कहना । यदि गुरु युक्त न हो तो नैमित्तिक होगा ।

मंगल हो तो उधार लिया हुआ गहना होगा । यदि मंगल न हो तो घर का गहना कहना चाहिये ।

यदि नरराशि में नरग्रह हो या उस घर में बैठने वाला ग्रह नर (द्विपद) हो तो मनुष्य का कहना ।

राशि के रूप को विचार कर भूषण का आकार अनुमान करना । चाहिये ।

आय के वर्ग के अनुसार पिंड योग लेना चाहिये ।

पिंड योग ÷ २=शेष १=धाम्य (वस्तु जो अग्नि में डाल कर धोकाई गई हो)

शेष = २ अधाम्य=जो अग्नि में न डाली जावे ।

धाम्य भेद ८ प्रकार—१ सोना, २ चांदी, ३ तांबा, ४ कांसा, ५ पीतल, ६ रांगा, ७ सीसा, ८ लोहा ।

योगपिंड ÷ ८=शेष से उपरोक्त सोना चांदी आदि जानो ।

धाम्य में भी २ भेद हैं–जो १ घटित जिससे गहना आदि सामान बना ।

२ अघटित=जिसका गहना नही बना ।

ग्रह धातु अन्य प्रकार से ।

सूर्य—मोती वैडूर्य स्फटिक तांबा पत्थर ।

चंद्र—मोती चांदी छुरी दूध कपाल कमल ।

मंगल—वैडूर्य रत्न तांबा पत्थर ईंट सींग सीसा धाम्य बंदूक तलवार आदि शस्त्र ।

बुध—सुवर्ण हरित मणि चित्र कांच ।

गुरु—सुवर्ण गोमेद मणि पीत वस्तु पुस्तक सूत शास्त्र आदि की वार्ता ।

शुक्र—वैडूर्य चांदी का जेवर स्फटिक मोती कमल स्वर्ण आदि पात्र प्रतिमा तथा पवित्र स्वेत वस्तु ।

शनि—लोहा नीला पत्थर भैंसचर्म, सीसा, धातु चंवर, सुरमा शराब तिल
कमल सूअर का दांत ।

राहु—विष हड्डी, कांटा ।

ग्रह निर्बल है तो सामान्य मूल्य की वस्तु होगी ।
बलवान ग्रह से उसके मूल्य का अनुमान करना चाहिये ।

शस्त्र-शस्त्र की धार ग्रह संज्ञा में दी है ।
ग्रह स्वक्षेत्री हो तो शस्त्र का आकार ग्रह तुल्य विचारना ।
यदि अन्य क्षेत्री हो तो क्षेत्र तुल्य शस्त्र का आकार कहना ।
राहु जिस राशि पर हो उस राशि के समान ही विचारना चाहिये ।

ग्रह से—लग्न में सम्पूर्ण ग्रहों में बली सूर्य=मोती ।
चंद्र या शुक्र=चांदी । बुध=सोना ।
मंगल=लाल रत्न से जड़ित सोने की अँगूठी आदि ।
शनि=लोहा ।
राहु केतु=हड्डी पत्थर काष्ठ आदि ।

चंद्र नवांश से विचार

मेष नवांश—सुवर्ण । गुरु या शुक्र की दृष्टि हो तो चांदी ।

वृष नवांश—बली शुक्र से दृष्ट=रत्न युक्त भूषण । नवांश में चंद्र हो वक्रीग्रह
या अतिचारी ग्रह की दृष्टि हो=पुराना धन ।

मिथुन या कर्क नवांश में जल से उत्पन्न होने वाली कमल आदि वस्तु ।

सिंह नवांश में सूर्य की दृष्टि हो=सोना और चांदी ।

कन्या नवांश—सूर्य की दृष्टि न हो=चांदी । बुध से दृष्ट=कांसा । बुध से
अदृष्ट=मुद्रा । शुक्र से दृष्ट=वस्त्र । शनि से दृष्ट=कचनार ।

तुला नवांश—शुक्र दृष्ट=गंध और वस्त्र । शुक्र से अदृष्ट=जीर्ण वस्त्र ।
वृश्चिक नवांश=शुक्र से दृष्ट=लोहा । मंगल से दृष्ट=सोना, चांदी ।

धन नवांश—गुरु से दृष्ट=रत्न ।

मकर नवांश—गुरु से दृष्ट=थोड़ा चमक वाला रत्न । चंद्र शनि से दृष्ट हो=
कांच आदि से बना रत्न ।

मूल विचार

ग्रह	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु
मूल प्रकार	वृक्ष	लता	क्षुद्र धान्य	वृहत् धान्य	सांटा	वृहत धान्य सांटा	कंटकवृक्ष	कंटकवृक्ष
कांटा	कांटेदार बड़ा कांटा और सरल	कंटकहीन	कांटेदार छोटा कांटा	कंटकहीन	कंठहीन	कंटकहीन	कांटेदार टेढ़े कांटा	कांटेदार टेढ़ा कांटा
जहरील वृक्ष प्रकार	जहरीला पहाड़ी	विषहीन केला वृक्ष पुष्प	विषैला पौधा	विषहीन केला घास समान	विषहीन नारियल चंपावृक्ष बड़े पत्ते के	विषहीन केला पुष्पवृक्ष लता और मूल	विषैला ताड़वृक्ष अदरक हल्दी आदि	विषैला ताड़वृक्ष
पंचांग	छाल	कन्द	मूल	पत्र	पकाफल	कच्चा फल	मूल	लता
फल	निष्फल वृक्ष	निष्फल	सफल	सफल	सफल	सफल	निष्फल	
बाहर या भीतर	—	—	बाहर	बाहर	भीतर	—	—	बाहर
धान्य	एक प्रकार का धान्य	स्वेत धान्य	प्रियंगु तथा कंगनी	उड़द	उड़द	स्वेत तिल्ली	उड़द	—
अन्य मत	—	स्वेततिल्ली	चना	मूंग चावल	लाल तुअर	स्वेत तुअर	काले तिल	कालेउड़द
स्थान	ऊंची भूमि	जल	पथरीली भूमि	ऊँची भूमि	पथरीली	जल	मरुस्थल	वामीभूमि
मतांतर	,,	,,	ऊँची भूमि	जलमय भूमि या वामी युक्त भूमि	पहाड़ की तली	,,	काली शिला स्थान	

मूल—मूल वस्तुओं का वर्णन वृक्ष प्रकार छाल, मूल, पत्र, फूल, फल आदि का वर्णन लग्नेश लग्न व नवांशेश से विचार कर करे।

मूक प्रश्न में—पूर्वप्राप्त पिंडांक ÷ ४=शेष।

१=वृक्ष। २=गुल्म। ३=वल्ली। ४=छुद्र।

पिंडांक ÷ २=शेष १ भक्ष (खाने योग्य) २ अभक्ष।

अंग स्पर्श से—सिर स्पर्श करे=वृक्ष। उदर=गुल्म। बाहु=लता। पीठ=छुद्र पैर=कंद सकला सूरन आदि।

राशि अनुसार

वृक्ष प्रकार—मेष=क्षुद्र धान्य कंगनी आदि। वृष=लता और वृहत धान्य। मिथुन=कंटकहीन वृक्ष। कर्क=लता, वृहत धान्य कंटकवृक्ष। सिंह=वृक्ष। कन्या=कंटकहीन वृक्ष। तुला=लता और वृहत धान्य। वृश्चिक=क्षुद्र धान्य प्रियंगु कंगनी आदि। धनु=वृक्ष। मकर=कंटकवृक्ष। कुंभ=कंटक वृक्ष। मीन=सांटा और इसी प्रकार के वृक्ष।

वृक्षपंचाङ्ग=मेष १=फूल। २=कच्चे फल। ३=पत्र। ४=कंद। ५=छाल ६=पत्र। ७=कच्चे फल। ८=फूल। ९=पके फल। १०=जड़। ११=जड़। १२=पके फल।

कांटा=मेष=छोटा कांटा। सिंह=बड़ा कांटा। वृश्चिक=छोटा कांटा। मकर कुंभ=टेढ़े कांटे।

लिंग=राशि या ग्रह स्त्री पुरुष भेद से जानना नपुंसक=अफल वृक्ष।

वांश से=लग्न या नवांश पृथ्वनी तत्व की=पृथ्वीजनित मूल वस्तु पृथ्वी तत्व की राशि की सुगंधी वस्तु। जल राशि की लग्न वनवांश=जल से उत्पन्न वस्तु। ग्रामचारी राशि की लग्न व नवांश=बगीचे सम्बन्धी पदार्थ वनचारी लग्न व नवांश=वन सम्बंधी पदार्थ।

ग्रह से वृक्ष=सूर्य=ढ़ाक शाखादि। चंद्र=ढ़ाक गोंदनी खिरनी। मंगल=कांटे वाला वृक्ष। बुध शनि=वेर आदि के वृक्ष। गुरु=दूध वाले वृक्ष। शुक्र=कदली आदि। शनि सूर्य=खंडित और सूखे वृक्ष।

मूक प्रश्न में फूल विचार

फूल=मेष लग्न में मेष नवांश=विना सुगंध की लाल कनेर। वृष=गुलाब। मिथुन=तुरई। कर्क सिंह=गुलाब। कन्या=तिवरैया या गुलवांश कई रंग के। धन=सुगंध युक्त चंपा। वृष लग्न में=मेष नवांश=कमल। वृष=मोंगरा। कर्क=चमेली। सिंह=सफेद चंपा। कन्या=कमल। तुला=केवड़ा। वृश्चिक=गुलाव। धन=सफेद चंपा। मकर=चमेली। कुंभ=धतूरा मीन=गुलदावदी।

फूल का अक्षर=मिथुन में मिथुन नवांश=गकारादि ३ अक्षर। वृष लग्न में वृष नवांश=मकारादि ३ अक्षर। सिंह में सिंह=जकारादि ३ अक्षर। सिंह में कुंभ=वकारादि ३ अक्षर। कन्या में कन्या=जकारादि २ अक्षर। तुला में वृष या तुला=मकारादि ३ अक्षर। वृश्चिक में वृश्चिक या मेष=ककरादि या तकारादि ४ अक्षर। धन में धन=अकारादि २ अक्षर। मकर में मकर लकारादि अक्षर का फूल।

रंग=लग्न व नवांश स्वामी एक=१ रंग। इनमें भिन्नता हो तो=भिन्न रंग। लग्न व नवांश राशि जो बली हो उसके समान रंग।

चिंता विचार=मूक प्रश्न या चिंता में आरूढ़ लग्न और दृष्टा ग्रह से विचारे। जीवित देहधारी के सम्बंध में भी दृष्टाग्रह से विचारे। मुट्ठी आदि चिंता छत्र लग्न और उसके दृष्टा ग्रह से विचारना। की दृष्टाग्रह बलवान हो तो फल देगा। जिन ग्रहों को केन्द्र बल प्राप्त हो वे उच्च के हो तो उससे मूक चिंता का विचारकरे। यदि वे स्वक्षेत्री हो तो नष्ट वस्तु का उससे विचाकरे। यदि वे मित्रगृही हों तो मुट्ठि गत पदार्थ को उनसे विचारे।

किससे क्या विचार करना=मूक विचार=दशम घर से। मुट्ठि=छत्र लग्न से। स्वप्न=चतुर्थ घर से। भूत काल का वृत्तांत=सप्तम घर से। भविष्य का=उदय लग्न से।

ग्रह अनुसार मुष्टि की वस्तु—बुध दूसरे गुरु तीसरे हों=रेशमी वस्त्र। मंगल केन्द्र में=मूंगा तांबा। केन्द्र में चन्द्र राहु=शंख आदि। केन्द्र में बुध =नमक। कर्क का शुक्र केन्द्र में=चांदी का सिक्का। गुरु ७, ६, १० घर में=रत्नयुक्त सुवर्ण या स्वर्णयुक्त वस्त्र। मंगल शुक्र त्रिकोण में=मृत्तिका। दशम गुरु=ग्राम आदि फल। शुक्र से दृष्ट चन्द्र केन्द्र में=खार खट्टा फल। सूर्य केन्द्र में बुध नवें मंगल पंचम=मीठा फल। छठे चन्द्र=पिप्पली फल। छठे शुक्र युत चन्द्र=इलायची फल। केन्द्र में शनि=श्याम पुष्प। शनि छठे नवम मंगल=लाल काले वर्ण की गोलाकार वस्तु या श्याम तिल मसूर आदि। ग्यारहवें शुक्र-गेहूं-जो। तीसरे सूर्य=अर्कपत्र। केन्द्र में राहु=शस्त्र लोह। केन्द्र में शनि=श्याम पुष्प। केन्द्र में बुध=कमल। राहु चन्द्र शुक्र केन्द्र में=अनार। शनि राहु बुध केन्द्र में=ऐरंड फल। बुध दृष्ट राहु केन्द्र में=मालती पुष्प। मंगल और बुध को देखने वाला चन्द्र धन स्थान को देखता हो=लाल-पीला वस्त्र। राहु मंगल केतु लग्न को देखे=धूम्र रक्त वस्त्र और मूंगा। बुध से पांचवें त्रिकोण को शुक्र देखे और चन्द्रमा छठे हो तो भी=धूम्र रक्त वस्त्र मूंगा। त्रि-

कोण में चन्द्र और केन्द्र में मंगल हो=मृत्तिका लाल घुँघची या फल। शुक्र चन्द्र शनि चतुर्थ=जायफल धातु या मृत्तिका। बुध शनि मंगल राहु ग्यारहवें=श्वेत फल।

जीव भेद विचार

जीव—३ प्रकार के हैं (१) पैर से चलने वाले मनुष्य और पशु (२) उड़ने वाले=पक्षी पतंगे आदि (३) रेंगने वाले=सर्प आदि।

अन्य भेद-द्विपद मनुष्य देव पक्षी आदि है। द्विपद राशि ३, ६, ७, ९ पूर्वार्द्ध कुम्भ। चतुष्पद=पशु राशियां १, २, ५, ९ परार्द्ध सरीसृप (बहुपद जीव) राशियां ४-८-१०-१२ अपद सर्प आदि मीन राशि।

मनुष्य—नरराशि लग्न में उच्च के सूर्य की दृष्टि=राजा की चिन्ता। सिंह राशि को सूर्य देखे तो प्रधान की। सूर्य मित्रगृही हो तो राजा के आश्रित मनुष्य की। समगृही हो तो=सिपाही अन्य राशि युक्त या दृष्ट से मिश्रित फल सुनार, चूड़ीवाला धूर धोबा कुम्हार कांसा बेचने वाले संकरजाति। नरराशि को उच्च का गुरु देखे=श्रेष्ठ ब्राह्मण। आगे जैसा सूर्य के गृह अनुसार विचार हुआ था वैसा लघुश्रेणी का विचार करे बुध=तपस्वी। शुक्र=शूद्र। राहु=संकरजाति।

इसमें विचार है यदि मीन का सूर्य हो=नौकर। चन्द्र=वैद्य। बुध=बनिया और चोर। राहु=चाण्डाल, नट, नचैया, कारीगर, बढ़ई, बुनकर, नाई, धोबी, चमार। धीमर माली चूड़ीवाला या विष देनेवाला चोर। शनि =पेड़ काटने वाला। शुक्र=समुद्र से मोती निकालने वाला। उस राशि-स्थ ग्रह से मनुष्य की राशि विचारे।

बलीग्रह या लग्न नवांशक से विचार—बलीग्रह या लग्न का नवांशेश यदि लग्न में हो=शरीर सम्बन्धी। तीसरे=भ्रातृ। चतुर्थ=माता बहिन। पंचम=पुत्र। छठां=शत्रु या मामा। सप्तम=स्त्री। नवम=दानी या धार्मिक व्यक्ति। दशम==गुरु या राजसम्बन्धी ये सबसे बली ग्रह से विचारे। मित्र राशि में=मित्र सम्बन्धी। शत्रुराशि में=शत्रु संबन्धी।

किस सम्बन्ध में प्रश्न=लग्न से अष्टम में सूर्य=पिता सम्बंधी। लग्न में चंद्र=माता वा माता के सम्बधी। बुध=भाई या चचेरे भाई। गुरु=संतान या गुरु। शुक्र=स्त्री या स्त्री के सम्बंधी। शनि=आश्रित या सेवक।

स्त्री=सप्तम में सूर्य मंगल शुक्रबली हो=परस्त्री। गुरु=अपनी स्त्री। चंद्र बुध=वैश्या। शनि=हीन जाति की स्त्री प्रच्छक के मन में है।

तत्काल चंद्र के सदृश अवस्था जानना

सप्तम में बाल चंद्र या बुध=कुमारी कन्या। सूर्य गुरु=प्रसूता स्त्री। मंगल शुक्र=कर्कशा कठोर स्वभाव वाली स्त्री। शनि=वृद्धा स्त्री।

पुरुष की अवस्था आदि का इसी प्रकार विचार करे।

लग्न से विचार=लग्न मेष=मनुष्य की। वृष=चौपाये की। मिथुन=गर्भ की। कर्क=उद्योग जीविका की। सिंह=जीव की। कन्या=स्वामी की। तुला=धन की। वृश्चिक=व्याधि चिंता। धन=धन की। मकर=शत्रु की। कुंभ=स्थान की। मीन=दैविक चिंता।

ग्रह से जीव चिंता=सूर्य राशि १=व्याघ्र। २=रोझ। ५=सिंह। ७=गाय १०=चतुष्पद। ११=मस्त हाथी। ६=हाथी।

चंद्रराशि १=बैल। २,-=गाय। ५=सिंह। ॰=घोड़ा। १०=चतुष्पद। मंगल राशि-१ मेढ़ा। ॰=मृग, सिंह। ३=कुत्ता। ४=गधा। ५=शेर ६ स्यार। ६=घोड़ा। १०=भैंसा।

बुधराशि १=लंगूर। २=वंदर। ५=वानर। ६-११=वानर।

गुरु राशि १=घोड़ा। २ और ५=घोड़ा। ९=घोड़ा, ११=वानर। १२=हाथी। शुक्रराशि १-२=गाय। ५=कुत्ता। ७=बच्छा, ६=घोड़ा। १०=चतुष्पदशनिराशि १-२ भैंसा। १२=मस्त हाथी, ५=भैंसा, ६=हाथी।

राहु राशि१=रोझ। २ और ५=भैंसे। १२=मेढ़ा। ९=भैंसा।

जितने ग्रह चंद्र या शुक्र को देखे उतने ही पशु की संख्या होगी।

ग्रह के अनुसार सींग और अवस्था विचार

पिंडांक से चिंता विचार=ध्वज आदि के वर्ग से प्राप्त पिंडांक लेना पिंडांक ÷ १२=शेष मेष आदि राशि के अनुसार शेष १=द्विपद। २=चतुष्पद। ३=जोड़ी की। ४=रोजगार की। ५=राजसम्बंधी। ६=विवाह। ७=द्रव्य या धातु। ८=रोग। ९=द्रव्यलाभ की। १०=कलह। ११=गर्भ। १२=गृहादि की।

ग्रह से चिंता=मकर को गुरु देखे=गर्भ। शनि देखे=बाँझ। मंगल=शुष्क गर्भ। कुंभ पर नवम पंचम गुरु की दृष्टि=हाथी। धन मीन पर शुभ ग्रह दृष्टि वंदर। शनि मेष का=मस्त हाथी। मेष में मंगल=बकरा। मेष में बुध=गाने वाला। गुरु सूर्य शुक्र हो तो=कपड़ा बेचने वाला बनिया। चंद्र=बनिया। सिंह का शनि=शत्रु। वृष का शनि=भैंस। तुला का शनि=चक्रवर्ती राजा। वृश्चिक का शनि=रोग। मेष का शनि=मृत्यु कष्ट की ये ग्रह मित्रगृही शत्रुग्रही आदि हैं इसका भी विचार करके फल कहना।

भाव से विचार=लाभेश या लाभेश से या इनके नवांश में चंद्र किस भाव में हैं उस भाव सम्बंधी प्रश्न होगा। इनमें जो बलवान हो उससे विचारना या चंद्र बलवान हो तो इससे लग्नेश किस भाव में है उसका विचार करना।

ग्रह से और भी विचार=मेष लग्न पर सूर्य=भूप चिंता। स्वक्षेत्री, सेनापति

मित्रक्षेत्री या शत्रु-नीचक्षेत्री=उससे क्रमानुसार कम दरजे का राज आश्रित व्यक्ति। लग्न में उच्च का मंगल कसेरा। स्वक्षेत्री कुम्हार। मित्रक्षेत्री चित्रकार तेली आदि। लग्न में उच्च का बुध=नाटक का आचार्य। स्वक्षेत्री=पुजारी। मित्रक्षेत्री=व्यापारी। लग्न में उच्च का चंद्र=वैद्य। स्वक्षेत्री=नट। मित्रक्षेत्री=ज्योतिषी। लग्न में उच्च का गुरु=ब्राह्मण। स्वक्षेत्री=मंत्री। मित्रक्षेत्री=जैनी। लग्न में उच्च का शुक्र=कृषक। स्वक्षेत्री=गड़रिया। मित्र क्षेत्री=वनिया।

लग्न में उच्च का शनि--नीच जाति का मनुष्य।

स्वक्षेत्री—चंडाल। मित्रक्षेत्री=चमार।

लग्न में उच्च का राहु—कालवेलिया। स्वक्षेत्री=गवैया। मित्रक्षेत्री=चोर। यदि शत्रुक्षेत्री या नीच के सूर्य मंगल गुरु बुध हों=नीच जाति का व्यक्ति। चंद्र=चूना जलाने वाला। शुक्र=धोबी। शनि=शाकभाजी वेचने वाला। राहू=मछली पकड़ने वाला।

लग्न में कुंभ का गुरु और चंद्र ५; ७, ९ घर में राजा की चिंता इन्हीं नवम पंचम घर में कोई शुभग्रह हो=हाथी। इसी योग में कुंभ के गुरु न होकर यदि धन मीन के हों=बंदर।

तत्व के अनुसार जीव—आकाश तत्व का स्वामी शनि है जिसका १ गुण मूल है। बुध वायु तत्व का स्वामी है जिसके २ गुण शब्द और स्पर्श है इसके भेद शंख, कौड़ी, सीप आदि। मंगल तेज का स्वामी है जिसके ३ गुण शब्द स्पर्श और रूप इससे चीटी खटकीय लिख जूं मक्खी आदि है। शुक्र जल तत्व का स्वामी है जिसके ४ गुण शब्द स्पर्श रूप रस है भौंरा आदि है। गुरु पृथ्वी तत्व का स्वामी है जिसके ५ गुण शब्द स्पर्श रूप रस गंध है इसके अंतर्गत देव मनुष्य पशु पक्षी आते हैं।

पशु अवस्था—बुध या स्त्रीकारक ग्रह से दृष्ट=पशु गर्भवती। सूर्य या शुक्र से दृष्ट=दूध देने वाला पशु। शनि और राहु से दृष्ट=वंध्या पशु। मंगल से दृष्ट=दूध न देने वाला पशु।

जीवलिंग—प्रश्न आलिंगित=पुरुष। अभिधूमित=स्त्री। दग्ध=नपुंसक।

जीव भेद—पिंडांक पूर्व वर्णित वर्ग के अनुसार ÷ ४। शेष—

१=द्विपद। २=चतुष्पद। ३=बहुपद। ४=पदहीन।

पक्षीभेद—मकर मीन लग्न ये पक्षी हैं इनमें चंद्र युक्त या दृष्ट=मोर। मंगल या शनि=मुरगा मुरगी कौआ। सूर्य=गरुड़। बुध=तोता + गुरु=स्वेत बगुला। शुक्र=स्वेत हंस। राहु=कौआ या भरद्वाज (रूपरेला)। बुध= मुर्गा। शुक्र=घुघ्घु भी होता है।

इनमें सौम्यग्रह=क्रौञ्चपक्षी। पापग्रह=क्रूरपक्षी।

जीव चिंता में— लग्न ८ नवांशक चर=द्विपद। स्थिर=चतुष्पद। द्विस्व-भाव=अपद जीव।

द्विपद ४ प्रकार—चंद्रराशि १-५-९=देव। २-६-१०=मनुष्य। ३-७-११ वायस। ४-८-१२=राक्षस।

जीव २ प्रकार—स्थल एवं जलचारी। तात्कालिक चंद्र की राशि के स्वभाव से विचार करे।

जीव ग्रह अनुसार—ग्रह की राशि पर चंद्र होने से विचारना। सूर्य=यती चंद्र=विप्र। मंगल=अधिकारी। बुध=स्त्री। गुरु=इष्ट मित्र शुक्र=मित्र। शनि=अन्त्यज। राहु=चोर।

किस की चिंता

चिंता - प्रश्न लग्न में सप्तम में बली ग्रह होने से मन में स्त्री की चिंता।

नवम में बली ग्रह=धर्म युक्त पुरुष की। दशम में बली ग्रह= गुरु की। यदि नवांश का स्वामी लग्नेश होकर लग्न में=धन की। नवांशेश का मित्र लग्न में=मित्र की। लग्न में नवांशेश का शत्रु=शत्रु की चिंता मन में हैं।

किस स्त्री की चिंता—प्रश्न लग्न में बाल चंद्र की दृष्टि=कन्या की। बुध हो या बुध से दृष्ट=कन्या की। युवा चंद्र लग्न में युक्त या दृष्ट=युवती की। वृद्ध चंद्र और शनि लग्न में युक्त या दृष्ट=वृद्धा की। सूर्य और गुरु लग्न युक्त या दृष्ट=प्रसव युक्ता की। मंगल और शुक्र लग्न युक्त या दृष्ट=कर्कशा अति तरुणी की। चंद्र शुक्ल १ से १०=बाल। शुक्ल १० से कृष्ण ५=युवा। कृष्ण ६ से ३०=वृद्ध।

चिंता—प्रश्न चर लग्न में या चर राशि के नवांश में या लग्न के पंचमांश व्यतीत होने पर प्रश्न=प्रवास की चिंता। लग्न सातवी राशि में यदि चलित ग्रह हो=प्रयासी मनुष्य के प्रवास निवृत्ति की चिंता। लग्न से सातवीं राशि में ग्रह वक्री हो या न हो तो भी उक्त फल।

चिंता—मेष लग्न=मनुष्य की। वृष=गाय-भैंस। मिथुन=गर्भ की। कर्क=व्यापार की। सिंह=जीव की। तुला=धन की। वृश्चिक=रोग की। धन=धन की। मकर=शत्रु की। कुंभ=स्थान की। मीन=भूत-पिशाच आदि वाहरी बाधा की चिंता।

ग्रह और भाव के अनुसार चिंता—सूर्य=स्वग्रही=राजा के राज्य की। स्व० चंद्र=क्षेत्र खोदने की। स्व० मंगल=शत्रु के भय की। स्व० बुध=खेती क्षेत्र खेल हथियार। स्व० गुरु=धर्म मित्र और राजा की। स्व० शुक्र=शुभ बातों की। शनि=राजद्वार के विषाद की।

सूर्य लग्न में—शरीर सम्बन्धी या कपटी के कपट झूठ और मंत्र की। २ धन भाव=धन।३=झगड़ा। ४=जय उच्चता का। ५=पुत्र। ६=मार्ग के कार्य का। ७=स्त्री। ८=नौका जल। ९=विदेशसम्बन्धी यात्रा। १०=राज-कर्म। ११=धन लाभ क्रय-विक्रय। १२=मार्ग खर्च। शत्रु की।

चंद्र—१ लग्न=क्षेत्र धन भोजन का। २=धन झगड़ा, परदेश। ३=वर्षा जल। ४=माता घर। ५=पुत्र। ६=रोग। ७=युवा स्त्री। ८=मृत्यु, भोज्य वस्तु। ९=घर या पुण्य। १०=यात्रा। ११=क्षेत्र, वस्त्र पवित्र वस्तु, दुष्ट पुरुष। १२=चोरी गई वस्तु के प्राप्ति की।

मंगल—१ लग्न=भय या झगड़े का। २=नष्ट वस्तु के प्राप्ति की ३=भाई मित्र झगड़ा। ४=मित्र वैरी पशु आयु। ५=क्रोध युक्त समझाने की नौकरी। ६=चांदी सोना सिक्का अग्नि। ७=नष्ट वस्तु नौका घर भूमि। ८=मार्ग। ९=वादाविवाद। १०=शत्रु के आने का, शत्रु को मारने की युक्ति। ११=लाभ। १२=झगड़ा युद्ध का।

बुध—१ लग्न=शास्त्र या सुख। २=वस्त्र, धन, शरीर। ३=भाई बहिन सास। ४=खेती बगीचा जल-वात्रली। ५=संतान, कार्यवृद्धि। ६=गुप्त स्त्री के कार्य धन कार्य सिद्ध। ७=स्त्री, यक्षी। ८=राजा की आज्ञा व नष्ट चीज। ९=पशु पक्षी। १०=शास्त्रकथा सुख। ११=धन लाभ की। १२=पाखंड़ी विद्रोही के सुख की।

गुरु—१=व्याकुलता दूर करने को सुख की। २=धन कल्याण सुख। ३=संबंधी स्वसूर की। ४=कुल सम्बन्धी विवाह की। ५=पुत्र, प्रीत, विवाह का। ६=स्त्री विवाद गर्भ की। ७=अर्थ मंत्र सिद्ध पुत्री का। ८=कृपण। ९=परदेश मार्ग धन प्राप्ति। १०=मित्र लड़ाई सुख। ११=स्थिरता सुख। १२=यश।

शुक्र—१=इष्ट देव नृत्य मित्र सुख। २=रत्न धन और वस्त्र। ३=स्त्री गर्भ बहिन भाई। ४=विवाह सुख। ५=मित्र भाई पुत्र। ६=गर्भोत्पत्ति। ७=स्त्री प्रति योगाभ्यास। ८=परस्त्री। ९=स्वप्न। १०=श्रेष्ठकर्म। ११=स्त्री व झगड़े का। १२=नष्ट वस्तु।

शनि—१=रोग व स्त्री। २=पुत्र के पढ़ाई की। ३=भाई के नाश की। ४=स्त्री के व अन्य के दूध बढ़ाने की। ५=दो पुरुषों के कार्य सिद्धि का। ६=वैरिणी स्त्री की। ७=स्त्री व पुत्र के विवाह की। ८=व्यापार गये धन की, दासी। ९=यात्रा, निंदित मनुष्य की। १०=धन व आरोग्य। ११=विद्या यश। १२=शुभकार्य में खर्च का।

राहु—१=पुत्र विद्या । २=यश आरोग्य । ३=मित्र व माई । ४=स्त्री सुख । ५=धन । ६=व्यापार । ७=अन्य देश की । ८=नष्ट धन कूप । ९=जयका । १०=मय शोक दुःख । ११=लाभ । १२=विवाह का खर्च ।

केतु—१=मैत्री व जय । २=पुत्र माई का शोक । ४=द्रव्य व वृक्ष का । ५=अधिकार नौकर या स्त्री । ६=रोग नृत्य गाय । ७=मंत्र सिद्धि । ८=मारण क्रूर कर्म । ९=विद्या परस्त्री संग का । १०=घर व सुख । ११=सब प्रकार का लाम । १२=नष्ट वस्तु व खर्च ।

विचार —लग्नेश लाभेश में जो बली हो उससे चन्द्रमा जिस भाव में हो उस भाव सम्बन्धी बातें प्रश्नकर्ता के मन में होगी ।

अन्यमत—सूर्य स्वगृही स्वतः की । अन्य राशि का=माता-पिता की । चन्द्र स्व०=बन्धुओं की । अन्यराशि=विदेश गये पुरुष की । मंगल=जीव चिंता बुध स्व०=चाचा की । अन्य राशि=सचिव और स्वामी की । शुक्र स्व०=सपिंड की । शनि स्व०=अन्य जन की । राहु स्वगृही=पिता चाचा की चिंता ।

अन्यमत ग्रह से चिंता—स्वगृही सूर्य=राजा का राज्य (नौकरी की) । चन्द्र=जल क्षेत्र या गड़ी हुई वस्तु का । मंगल=शत्रु या राजमय । बुध=खेती या खेती के औजार की । गुरु=धर्म राजा या मित्र के विषय में । शुक्र=अच्छी बातों की चिंता । शनि-स्वगृही हो तो घर भूमि या पितरों की ।

बली सूर्य=पिता की । बली चन्द्र=माता की । बली मंगल=अपने विषय में । बली बुध=भाई । बली गुरु=स्त्री की । बली शुक्र=स्त्री की । बली शनि=शत्रु की ।

चन्द्र लग्न में=मार्ग या शत्रु की । २=क्षेत्र, धन, यात्रा । ३=प्रवास । ४=वृष्टि, घर या माता । ५=संतान । ६=रोग । ७=स्त्री । ८=मृत्यु । ९=मार्ग या यात्रा । १०=क्षेत्र, धोखेबाज मनुष्य की । ११=वस्त्र या स्वच्छ वस्तु । १२=चोरी गई वस्तु के प्राप्ति की ।

अन्यचिंता—नरराशि में सूर्य चन्द्र बुध गुरु शुक्र=मनुष्य की चिंता । नरराशि को शनि मंगल देखे=उसका नाश । नरराशि में मंगल=कलह की । नरराशि में शनि=विष या चोर की । नरराशि सूर्य युक्त या दृष्ट=देव या राजा की । नरराशि में गुरु=शुभ काम की । नरराशि में बुध शुक्र=विवाह की=लग्न के नवांश का स्वामी लग्न में=अपने शरीर की ।

अंग स्पर्श से चिंता—कपाल का स्पर्श=मुकुट पात्र आदि धातुओं की। कान को हाथ लगावें=कर्णाभूषण आदि की। दांत स्पर्श=खाने के पदार्थ की। ग्रीवा=विवाह व उसकी अंगूठी आदि का। हाथ=हस्त आभूषण। उदर=गर्भ की। गुप्तेन्द्रिय स्पर्श=विवाह की। कंठ=विद्या की। नाक=विवाह या विद्या के अधिकार की। दीपक या पुष्प=महत्व कार्य संबंधी। पांव=क्रोध या कलह सम्बन्ध की चिंता।

मूक चिंता वाहन संबंधी

वाहन चिंता—लग्न मेष का चरनवांश=घोड़ा। स्थिर=हाथी। द्विस्वभाव=दुविधा। हाथी का विचारने घोड़ा। वृष का १-५-९-१० वां नवांश=रथ वाहन। नर राशि ३, ६, ७, ११ लग्न और ये ही नवांश हो=पालकी। वृष में वृष नवांश=हाथी। चर लग्न में ८-९-१० नवांश=ऊंट। इन्हीं लग्नों का द्विस्वभाव नवांश=ऊँट कुंभ में कुंमराशि का नवांश=महिष चतुष्पद राशि में नीच राशि का नवांश=गधा। मिथुन धन के उत्तरार्द्ध में भी गधा। अग्नि तत्व की लग्न व नवांश=रेल या मोटर।

परदेश चिंता—लग्न चर या चरराशि का नवांश हो या दशम से अन्यत्र हो या सप्तम भाव से आगे बढ़ कर बक्री होकर ग्रह उसी भाव में लौटे।

त्रिकाल सम्बन्धी=आरूढ़ लग्न ३, ६, ९, १२ वें घर में हो=भूतकाल सम्बन्धी
आरूढ़ लग्न १-४-७-१० वे घर में हो=भविष्य काल ,,
,, ५, ८, ११ ,, ,, =वर्तमान ,,

रोग या चोरी सम्बंधी—अशुभग्रह आरूढ़ लग्न में हो=रोग सम्बंधी पापग्रह बारहवे हो=रोग

आरूढ़ या उदय लग्न से दूसरे घर में पापग्रह=चोरी के द्रव्य सम्बन्धी शुभग्रह बारहवे हों तो स्वास्थ सम्बंधी।

अन्यमत लग्न में ग्रह—लग्न में सूर्य=राजा के भय सम्बन्धी। चन्द्र, बुध, गुरु, शुक्र=सम्पत्ति सम्बन्धी। मंगल=लड़ाई झगड़ा। शनि=चोरी के धन सम्बन्वी। राहु=रोग या विष सम्बन्धी। अशुभग्रह=मृत्यु सम्बन्धी।

चंद्र अवस्था के अनुसार चिंता विचार

चंद्र अवस्था निकालना पहिले बता चुके है। १२ अवस्था हैं उनके फल—

१. प्रवास—जाने आने की चिंता या प्रवासी व पृच्छक व धन सम्बन्धी चिंता।
२. नाश—राजा का भय, बंधन, शत्रु का क्रोध, जाना, हानि, उद्वेग भयानक।
३. मरण—मरना, मारना, यात्रा, क्रूरकर्म।
४. जय—अपनी व अन्य की जय की आशा करना।
५. हास्य—अपने जनों के लिए प्रसन्नता, आकांक्षा धमकी, स्त्री गर्भ आदि।

६. रति—स्त्री व मित्र से चिंता, अथावधि लाभ-अलाभ परम परा से व्याकुलता होना।

७. क्रीड़ा—पुत्र, मित्र आदि का मंगल कार्य, में चित्त उत्साह, सुख, लाभालाभ की चिंता।

८. सुप्त—अपनी व अपने जन की लाभ आशा होना।

९. मुक्त—पराये के समीप जाने की चिंता, लाभ अलाभ वहां से शुभ या कष्ट।

१०. ज्वर—पुत्र, स्त्री द्रव्य की चिंता होना या द्रव्य की चिंता होना।

११. प्रकम्पित—क्रूर कर्म से और शत्रु से भय, दुःख, चिंता।

१२. स्थित—पुत्र, मित्र के मिलने में या द्रव्य के मिलने में चिंता।

युद्ध या राजद्वार आदि में जय-पराजय विचार

जय-पराजय—लग्न में स्थिर राशि=शत्रु से पराजय नहीं हुआ।

चरराशि=शत्रु से पराजय।

द्विस्वभाव=मिश्रफल।

द्विस्वभाव में पूर्वार्ध में स्थिर का परार्द्ध में चर का फल होता है।

अपनी जय—लग्न लग्नेश संबन्धी शुभयोग में अपनी जय।

सप्तम सप्तमेश संबन्धी से शत्रु की जय।

जय—मिथुन कन्या लग्न का उदय हो तब लड़ाई को जावे तो शत्रु को जीत कर धन लावे।

जय मित्रता—लग्न में शुक्र हो तो शत्रु से मित्रता हो।

जय—मंगल शनि गुरु ये सब यदि बुध शुक्र चंद्र से अधिक बली हों और राशि आदि में अधिक हो तो जय।

या बुध शुक्र चंद्र निर्बल हो और शनि मंगल गुरु इनसे न्यून हो तो पृच्छक की जय।

जय—मंद लग्नेश अधिक अंश में हो और सप्तमेश स्वल्पअंशों में कम्बूली योग हो तो जय।

सप्तमेश धनस्थान में धनेश से मुथसिली हो तो शत्रुनाश।

लग्नेश दशमेश बली होकर मुथसिली हो तो जय।

१०, ७ और लग्न में शुभग्रह हो तो झगड़ने वाले प्रश्नकर्त्ता की जीत होगी।

नवम में मंगल और शनि हो तो शत्रु की हार हो।

शीर्षोदय लग्न हो शुभ या मिश्रग्रह से युक्त या दृष्ट हो शुभग्रह बलवान

हो केन्द्र पंचम या धर्मस्थान में शुभग्रह हो तो जय हो। धन लाभ व अभीष्ट कार्य सिद्ध हो।

दशमेश लग्न में हो तो जय।

चन्द्र दशम शुक्र बुध चौथे पांचवें या दशवें चौथे हो पापग्रह ३-६-११ में हो तो जय।

जय—चंद्र दशम बुध शुक्र चौथे पांचवे, सूर्य छठे, गुरु लग्न में मंगल शनि ६-११ में हों तो जय।

राहु शनि लग्न, सूर्यमंगल दशम, बुध शुक्र चौथे हों तो जय धन और राज्य प्राप्ति।

लग्न में शुक्र, चौथे बुध, सप्तम गुरु, लाभ में मंगल, तीसरे शनि हो तो जय वाहन और राज्यलाभ।

लग्न में गुरु लाभ में सूर्य, तीसरे शनि, चौथे चंद्र, दशम शुक्र और बुध हो तो जय हो।

गुरु लग्न में, सप्तम चंद्र या बुध शुक्र से दशम में या चौथे हो तथा ३-६-११ में पापग्रह हो।

लग्नेश मंदगति ग्रह हो और चंद्र से कम्बूल करता हो और शीघ्रगति से आगे हो तो जय।

गुरु लग्न में सूर्य छठे, चंद्र दशम।

गुरु शुक्र व चंद्र सूर्य अष्टम हो।

सूर्य लाभ में मंगल दशम, शनि तीसरे, चंद्र छठे शेष ग्रह लग्न में हो तो जय द्रव्य लाभ।

सूर्य मंगल और बलवान राहु लाभ में बुध शुक्र लग्न में हो तो जय और सुख।

शुक्र सप्तम चंद्र अष्टम चतुर्थेश केन्द्र में हो तो=ऋद्धि सिद्धि लाभ जय।

लग्न में गुरु बुध शुक्र और तीसरे चंद्र सूर्य तो विजय।

लग्न में गुरु दशम सूर्य सप्तम चंद्र चौथे बुध हो तो अर्थ और जय लाभ।

पापग्रह लाभ में दशम गुरु, लग्न में शुक्र हो जय।

गुरु शुक्र लग्न में चरराशि का सूर्य, छठे घर में बली मंगल शनि, बारहवें बुध शुक्र हो तो जय धन प्राप्त।

लग्न में मंगल शनि पंचम गुरु लाभ में बुध दशम शुक्र व सूर्य।

जय=बुध गुरु शुक्र नवम में हो।

हानि=चंद्र चौथे या पंचम में शत्रुक्षेत्री या नीच का हो तो कुछ हानि हो।

प्रश्नकर्ता की मृत्यु=लग्नेश अष्टम हो अष्टमेश से इत्थशाल करता हो।

नष्ट=लग्नेश बारहवां हो।

प्रश्नकर्त्ता की हानि=जो मंदग्रह अधिक अंश में शीघ्र अल्पांश चंद्र से इत्थशाल करे अस्तंगत नीच गत हो व सप्तमेश केन्द्र में अस्त नीच गत हो तो रण में हानि हो।

शत्रु से पराजय=लग्न या चंद्र को पापग्रह की दृष्टि हो।

शत्रु पराजय=चौथे घर में जलचर राशि हो।

शत्रु सहायक हो=दशमेश लग्न में या चतुर्थेश छठा हो तो शत्रु की सेना अपनी सहायता करे।

पृष्टा को शुभ=व्ययेश बलवान और शुभग्रह से दृष्ट हो।

रण में सहायता मिले=लग्न के अधः अर्थात् दशम में लग्न तक शुभग्रह और लग्न के बाद १ से ४ घर तक शनि हो तो युद्ध में सहायक अच्छा मिलेगा।

शत्रु बलवान=छठा स्थान बलवान हो तो शत्रु बलवान हो।

शत्रु बल नष्ट हो=उदय या आरूढ़ लग्न से गुरु ३, ५, १०, १२ घर में हो।

हार=मंगल शनि नवम हो तो हार हो।

शत्रु नष्ट=सप्तमेश छठा हो।

शत्रु बंधे=लग्नेश सप्तमेश ६-१२ घर में हों तो शत्रु को कोई अन्य बांधे।

शत्रु से शस्त्र छीने=सूर्य बारहवां हो।

शत्रु से विरोध=पापग्रह द्विस्वभाव राशि में हो या ४, ७, १० घर में पापग्रह पापदृष्ट हो तो विशेष विग्रह वैर भाव हो।

किसका पक्ष प्रबल=व्ययभाव या व्ययेश बली हो तो प्रश्नकर्ता बलवान षष्ठ भाव या षष्ठेश बली हो या सप्तमभाव व सप्तमेश बली हो तो शत्रु प्रबल अर्थात् बलवान होता है।

शत्रु की जय—शनि मंगल गुरु बलवान अधिक अंश में तथा बुध शुक्र और चन्द्र उनसे हीन बली अल्पअंश में हो अर्थात् शीघ्रगामी अल्पभाग में मंदगामी बहुभाग में होकर इत्थशाल हो तो शत्रु की जय।

सप्तमेश चतुर्थेश का इत्थशाल हो।

नवम में गुरु बुध शुक्र हो।

सप्तम में क्रूर ग्रह हो।

लग्नेश अष्टम हो व अष्टमेश से मुथसिली हो।

लग्न स्थिर और चन्द्र चरराशि में हो तो शत्रु बल सहित आकर विरोधी को हरा देवे।

शत्रु लूटकर लौट जावे—शनि ३, ५, ६, ११, १२ वें घर में हो तो शत्रु लूट कर मालसहित स्त्रियों को अपनी दासी बनाकर साथ लेकर लौट जावे।

शनि उदय या आरूढ़ लग्न से १०, ११, १२ वें घर हो तो भी उपरोक्त फल होगा।

शत्रु के आने की सूचना सत्य या झूठ है।

	१	२	३	४	५	६	७	८
आय	ध्वज	धूम्र	सिंह	स्वान	वृष	खर	गज	ध्वांक्ष
फल	सत्य	झूठ	सत्य	झूठ	सत्य	झूठ	सत्य	झूठ

शत्रु सेना न आवे=सूर्य चंद्रमा चतुर्थ हो।

शत्रु न आये=उदय से चौथे घर या छठे घर या आरूढ़ में गुरु हो।

उदय लग्न या आरूढ़ से चौथे या छठे घर में गुरु हो।

स्थिर लग्न में गुरु या शनि हो या सूर्य हो।

चतुर्थ में पापग्रह हो।

चंद्र के साथ सूर्य और गुरु हो।

उदय या आरूढ़ लग्न से शनि २, ३, ४, ८ घर में हो।

चतुर्थ में सूर्य मंगल हो तो शत्रु नहीं आयेगा।

उदय लग्न या आरूढ़ से छठे घर में चंद्र उच्च का या स्वगृही या मित्रगृही हो तो शत्रु के आने की खबर प्रसिद्ध करेगा परन्तु आयेगा नहीं।

चन्द्र चरराशि का लग्न स्थिर हो।

स्थिर लग्न में गुरु और शनि की दृष्टि हो तो शत्रु अपना देश न छोड़े।

उदय लग्न स्थिर हो तो शत्रु अपनी जगह नहीं छोड़ता

शत्रु लौट जावे—लग्न चर हो उसमें सूर्य शनि बुध या शुक्र हो शत्रु कुछ दूर आकर लौट जायेगा।

१, २, ५, ९ में से कोई एक राशि लग्न में या चौथे हो।

पाँचवें छठे यदि पापग्रह हो।

चौथे पापग्रह हों।

शत्रु के आने का डर नहीं—उदय या आरूढ़ लग्न से चंद्र चौथे या पांचवें हों।

शीघ्र शत्रु सेना आवे=चतुर्थ में गुरु बुध शुक्र हो।

शत्रु आवे—उदय लग्न चर हो और सूर्य मंगल गुरु या शनि युक्त या दृष्ट हो।

उदय लग्न चर हो और पंचम घर पापग्रह युक्त या दृष्ट हो।

उदय लग्न से छठे घर में या आरूढ़ लग्न में सूर्य बुध हो।

उदय लग्न से छठे या सातवे स्थान आरूढ़ हो।

उदय लग्न या आरूढ़ से दूसरे घर में शनि हो।

उदय या आरूढ़ लग्न से छठे घर में सूर्य और शुक्र हो।

लग्न चर सूर्य या गुरु से युक्त हो तो लड़ने को तैयार होकर आयेगा।

लग्न से दूसरे या तीसरे घर में गुरु या शुक्र हो तो उपरोक्त फल।

लग्न और आरूढ़ चर हो पापग्रह पंचम हो तो शत्रुसेना आवे।

लग्न और आरूढ़ चर हो उन दोनों स्थानों में मंगल सूर्य या गुरु से युक्त या दृष्ट हो तो बड़ी फौज लेकर शत्रु आवे।

स्थिरराशि में चंद्र हो लग्न चर हो तो आने की खबर न हो तब भी आयेगा।

द्विस्वभाव में चंद्र हो लग्न चर हो तो शत्रु का आगमन २ प्रकार से हो २ सैन्य के बल से।

चतुर्थ में सूर्य चंद्र हो शत्रु समूह आवे।

स्थाई तौर पर ठहरे—लग्न में बली शनि बुध या शुक्र हो तो शत्रु वहां स्थाई तौर पर ठहरेगा।

शत्रु का आगमन सुने—उदय या आरूढ़ लग्न से चंद्र छठा हो। यदि चंद्र चौथे या पांचवे हो तो कोई डर नहीं।

शत्रु आवे—सूर्य शनि बुध शुक्र इनमें से कोई एक ग्रह चरराशि का हो।

बुध गुरु शुक्र चौथे या सातवें हों।

सूर्य चंद्र छठे, गुरु और शुक्र चौथे हों।

२ सेना लेकर आकर जीते—चर लग्न, चंद्र द्विस्वभाव राशि का हो।

शत्रु सेना से अपनी पराजय—लग्न और चद्र को पापग्रह देखते हों।

शत्रु से युद्ध=३, ५-६ ठे स्थानों में पापग्रह हो।

उदय लग्न द्विपदराशि हो पापग्रहों से युक्त हो।

उदय लग्न बहुपद या चतुष्पद हो उस पर पापग्रह हो।

उदय या आरूढ़ लग्न से सूर्य और शुक्र शत्रुगृही हों।

उदय या आरूढ़ लग्न से सूर्य तीसरे या पांचवे घर में स्वक्षेत्री हो।

केन्द्र में पापग्रह हो या पुरुषराशि में पापग्रह की दृष्टि हो।

सूर्य-चंद्र नक्षत्र में हो और चंद्र सूर्य नक्षत्र में हो।

लाभ में बलहीनग्रह हो।

लग्नेश वक्री और पापग्रह युक्त केन्द्र में हो।

षष्ठेश सप्तम में हो या पापग्रह सप्तम में हो।

लग्न में पापग्रह पापग्रह से युक्त या दृष्ट हो या दूसरे बारहवें पापग्रह हो तो घोर युद्ध होता है।

लग्न राशि के आगे पीछे पापग्रह हो अर्थात् कर्तरीयोग हो तो घोर युद्ध होता है।

आरूढ़ लग्न पापग्रह से युक्त हो या पापग्रह के अंश में हो तो घोर युद्ध हो।

आरूढ़ पृष्ठोदय हो या पापग्रह युक्त या दृष्ट हो दशम में पापग्रह हो या चतुष्पद लग्न हो तो घोर युद्ध होता है।

मित्रदृष्टि से रहित लग्नेश सप्तमेश का इत्थशाल हो।

द्विस्वभाव राशि में पापग्रह हो।

केन्द्र में शनि शुक्र हो वक्रीग्रह निर्बल मार्गी ग्रह बलवान हों।

लग्न में चंद्र या सूर्य का पापग्रह से इत्थशाल हो।

स्थिर लग्न में शुभग्रह पापग्रह रहित हो शुभग्रह उच्च के बली हो चंद्र का शुभग्रह के साथ इत्थशाल हो।

अल्पयुद्ध=केन्द्र में स्थिरराशि का मंगल तो अल्पयुद्ध। यदि चरराशि हो अत्यंत अल्पयुद्ध हो।

दिन रहते युद्ध=चंद्र दशम हो सूर्य मंगल स्वगृही या उच्च के हों।

दीर्घ रण न हो=योधा प्रतियोधा के वर्ग स्वामी से मुशरिफी हो तथा अस्तंगत हो तो दीर्घ रण नहीं होगा।

युद्ध में कहां घाव हो

घाव या मृत्यु=सूर्य नक्षत्र से योधा का जन्मनक्षत्र व जन्मनक्षत्र का चरण यदि १० वां=दाहिने हाथ तथा पेट में घाव। १२ वां=हाथ पर। १४ वां नक्षत्र या जन्म नक्षत्र हो=भुजा में चोट लगे जीता रहे। १६-२०-२६ वां हो।

शरीर के घाव से वा २४ वां=दाहिने पैर से लेकर पीठ में घाव लगने से मृत्यु होती है।

ग्रहफल=यदि लग्न से व योधा की जन्मभूमि में सूर्य=शिर में घाव। चंद्र व्यय में=मुख। मंगल लाभ में=मुख और हृदय। दशम बुध=छाती। नवम गुरु=जंघा। अष्टम शुक्र=गुदा। चतुर्थ शनि=घुटना। पंचम राहु=दोनों भुजा। छठे केतु=ठोड़ी व सिर।

भावेश फल=योधा की जन्मराशि से अष्टमेश अष्टम=दाहिने हाथ में। तृतीयेश और लग्नेश तृतीय घर में=कंठ में। और अपने गृह निर्माण की लग्न में शेष ग्रह हो तो कान में घाव।

अश्व चक्र से फल

राहु के नक्षत्र से ७ नक्षत्र=मुख। ७=स्कंध। ७=पेट। ७=कमर पर लिख कर योधा का जन्मनक्षत्र कहाँ पड़ा है तो उसे देखना फिर उनमें ग्रह स्थापित करना चाहिये।

अंग फल=मुंह=मृत्यु । कंधा=भय । पेट=विजय । कमर=घात ।

मुख फल=जन्म नक्षत्र या गुरु=मध्यम फल । शनि=सिर में घाव । मंगल=घात । चंद्र=मरण । बुध=अकल्याण । शुक्र=युद्ध विमुखता । केतु=शस्त्र त्याग । सूर्य=शत्रुता बढ़े ।

कंधा फल=सूर्य=शत्रु के वश । चंद्र=शस्त्रभ्रंश । मंगल=शरीरछेदन । बुध=स्खलन । गुरु=विजय । शुक्र=शस्त्रत्याग । शनि=भंग । केतु=आत्मघात ।

उदर फल=सूर्य=जय । चंद्र=बड़ा भय । मंगल=शत्रु मृति । बुध=वीरता । गुरु=विजय । शुक्र=विमुखता । शनि=समता । केतु=संधि ।

कटि फल=सूर्य=शत्रु के वश । चंद्र=अपचय । मंगल=मृत्यु । बुध=भारी कष्ट । गुरु=विजय । शुक्र=समता । शनि=भय । केतु=श्रीहानि और युद्ध में विमुखता ।

उपग्रह=सूर्य के नक्षत्र से १३, ९, ३, २० वां इष्ट नक्षत्र हो या केतु का २२ वां हो तो मृत्यु देने वाला उपग्रह कहा है ।

शत्रु हारे—चतुर्थ स्थान में, ४, ८, ११, १२ राशि हो तो शत्रु की हार हो व अपनी सवारी भाग जाय ।

शत्रु भागे—चतुर्थ में चतुष्पद राशि हो तो शत्रु भाग जावे ।

शत्रु हटे—पापग्रह छठे हों तो शत्रु मार्ग से हट जावे ।

चतुर्थ में पापग्रह हों तो शत्रु पहुंच भी गया हो तो भाग जावे ।

सूर्य उदय या आरूढ़ लग्न से ग्यारहवां हो तो शत्रु अपने भाई-बंधु तथा सेना की हानि उठाकर तथा अपनी स्त्री को दूसरे की दासी बनाकर घर लौट जावे ।

लग्न से ५ और ६ घर में पापग्रह हो तो शत्रु लौट जावे ।

लग्न स्थिर राशि हो और चंद्र द्विस्वभाव हो तो शत्रु वापिस लौट जावे यद्यपि वह हमला करने को कुछ बढ़ आया हो ।

लग्न द्विस्वभाव और चंद्र चर हो तो शत्रु आधी यात्रा करके आने पर भी लौट जावे ।

लग्न चर और चंद्र द्विस्वभाव का हो तो उपरोक्त फल ।

४, ८, ११, १२ राशियां लग्न या चौथे घर में हो तो शत्रु आधीदूर से लौट जाये ।

उदय या आरूढ़ लग्न में शुक्र चौथे या पांचवे घर में हो तो शत्रु अपनी सम्पत्ति खोकर और स्त्रियों को बंधन में छोड़ लौट जाय ।

उदय लग्न द्विस्वभाव हो और मंगल से पंचम घर दृष्ट हो तो शत्रु आधी दूर आकर भी लौट जावे ।

चंद्र द्विस्वभाव का उदय लग्न में हो तो उपरोक्तफल ।

लग्न चतुष्पद हो या द्विपद हो लग्नेश वक्री हो तो शत्रु सेना रास्ते से लौट जावे ।

उदय आरूढ़ छत्र में केन्द्र में राहू हो तो उपरोक्त फल ।

आरूढ़ लग्न ४, ८, ११, १२ है केन्द्र में बलीग्रह हो तो उपरोक्त फल

द्विस्वभाव का चंद्र, लग्न स्थिर राशि हो तो उपरोक्त फल ।

लग्न या चतुर्थ में ग्रह युक्त या रहित १, २, ५, ९ राशि हो तो शत्रु न ठहरे लौट जाय ।

मेल—लग्नेश सप्तमेश की परस्पर मित्र दृष्टि हो ।

संधि—लग्नेश यदि सप्तमेश से ३, ६, १०, ११ स्थानों में सप्तमेश के साथ मुंथसिल योग करता हो ।

लाभ में बलवान ग्रह हो तो संधि हो ।

चौथे दशवें घर में शुभग्रह हो ।

चतुर्थ में सब या ३ शुभग्रह हों ।

लग्न में नरराशि हो और अशुभ ग्रह वहां हो ।

केन्द्र में नरराशि गत शुभग्रह हो और शुधग्रह की दृष्टि हो और पापग्रह से अदृष्ट हो ।

लग्न व एकादश में नर राशि गत शुभग्रह हो ।

लग्नेश सप्तमेश की आपस में मित्रदृष्टि हो ।

आरूढ़ या उदय लग्न से शुक्र छठे घर हो ।

उदय या आरूढ़ लग्न से सूर्य और शुक्र मित्र घर में हो ।

उदय लग्न बहुपद या चतुष्पद हो शुभग्रह युक्त हो ।

दो पदार्थ संयुक्त दिखें या दो टूटे या फटे पदार्थ जोड़े जाते दिखे ।

शत्रु सन्धि चाहे—उदय लग्न बुध या शुक्र से युक्त हो तो शत्रु संधि चाहे ।

उदय आरूढ़ लग्न से गुरु दूसरे घर में हो ।

केन्द्र में शुभग्रह हो या पुरुषराशि में शुभग्रहों को दृष्टि हो ।

लग्न नरराशि में शुभग्रह हो या लग्न से ११-१२ घर में शुभग्रह हो ।

आरूढ़ शुभग्रहों से दृष्ट हो ।

सप्तम से १२ तक शुभ—पाप दोनों ग्रह हों ।

३, ५ घर में मित्रग्रही सूर्य हो ।

सम स्थानों में चंद्र और सूर्य हो ।

शुभग्रह ४-१० घर में हों ।

चर लग्न हो चर में चंद्र हो तो शत्रु स्वयं सुलह करे ।

जव युद्ध आरंभ हो चंद्र चंद्रनक्षत्र में और सूर्य-सूर्यनक्षत्र में हो।
२-१० घर में शनि और छठा शुक्र हो।
चंद्र लग्न में चरराशि का हो तो प्रगट में शत्रु मित्रता करेगा परन्तु गुप्त रीति से उस देश को लेने की इच्छा करे।

किसके द्वारा संधि—लग्नेश सप्तमेश से जो ग्रह स्वगृही या उच्च में हो उसके पक्ष के मनुष्यों द्वारा संधि करावे। यदि उपरोक्त बुध=लेखक या पंडित के द्वारा। सूर्य चंद्र=राजा-रानी। मंगल=सेनापति। बुध=युवराज। गुरु शुक्र=मंत्री। शनि=दास द्वारा।

युद्ध न हो=लग्नेश सप्तमेश का मित्रदृष्टि से इत्थशाल हो।
सूर्य से बारहवां चन्द्र हो।

युद्ध होगा या नहीं—लग्नेश सप्तमेश आपस में मित्र हों तो युद्ध नहीं होगा यदि शत्रु हों तो युद्ध होगा।

संधि न हो—छत्र लग्न दूसरे या चौथे घर में हो।
संयुक्त पदार्थों में कोई एक पृथक हो जाय।
प्रश्नकाल में कोई पदार्थ टूट जाय या फट जाय।

सन्धिनाश-लग्नेश क्रूरग्रह हो तो सधि हो गई हो वह भी नाश हो।

किस ओर से युद्ध हो—यायी और स्थाई दोनों के घरों में समान बल वाले ग्रह हों तो दोनों ओर से युद्ध छिड़ेगा।
जो दोनों ओर वालों के पापग्रहों के बल समान हों तो जिस घर में विशेष बली ग्रह हों उसकी ओर से लड़ाई छिड़ेगी।

शत्रु हमला करे—लग्न पर गुरु और शनि की दृष्टि हो और ३, ५; ६ घर में पापग्रह हों तो शत्रु स्वतः हमला करे।

कितने समय में शत्रु आयेगा—लग्न से चन्द्रमा जितने राशि पर हो उतने दिन में शत्रु आयेगा। यदि उनके बीच ग्रह न हो। यदि बीच में कोई ग्रह हो तो शत्रु नहीं आयेगा।
इसमें चन्द्र-बल विचारकर और उसकी स्थिति पर विचारकर दिन घट-वढ़ हो सकते हैं। जैसे लग्न में उच्च या नीच का ग्रह हो या चंद्र उच्च नीच आदि का हो और बीच में कोई ग्रह न हो तो ग्रह की योगदृष्टि या उच्च आदि स्थान के अनुसार दिन घट बढ़ हो सकेते हैं।

शत्रु कब खाली करेगा अर्थात कव वापिस होगा—ग्रह षड्बल में जो सबसे अधिक बली हो, लग्न से उस ग्रह तक गिनने पर जितनी संख्या आवे उतने महीने में वापिस होगा। मान लो मीन लग्न है और बलवान षड्-

बल में कर्क का गुरु है तो मीन से कर्क ५ वे होने से ५ महीने में वह वापिस होगा। यदि लग्न में गुरु है तो शीघ्र वापिस लौटेगा।

सप्तमेश लग्न से वक्रत्व को दूर करेगा उस समय शत्रु खाली करेगा अर्थात सप्तमेश वक्र है तो कितने समय में वक्रत्व उसका दूर होगा सूर्य चन्द्र वक्र नहीं होते। राहु केतु सदा वक्री हैं, केवल यह १० राशियों पर लागू होता है।

बहुत बली ग्रह चर नवांश में हो तो मास संख्या उपरोक्त, स्थिर में दुगनी, द्विस्वभाव में मास संख्या तिगुनी होगी। जैसे उपरोक्त उदाहरण में कर्क चरराशि का गुरु षड्बली है। यदि यह चर नवांश में है तो ५ मास साधारण हुए यदि यह स्थिर नवांश में हो तो १० मास द्विस्वभाव में १५ मास हुए।

स्थायी के—६ घर दशम से १०, ११, १२, १, २, ३ घर।

यायी के—शेष ६ घर ४, ५. ६, ७, ८, ९।

स्थायी—जो अपने नगर या पैर में रहता है।

यायी—जो नगर पर चढ़ाई करने वाला।

स्थायी की जय—१०-१-७ घर में शुभग्रह हो तो नगर स्वामी की जय हो।

नवम में बुध गुरु शुक्र हो।

गुरु शुक्र और चन्द्र बलवान होकर एक राशि या लग्न में हो या गुरु शुक्र में से एक भी हो तो स्थायी जीते।

आरूढ़ लग्न में उच्च का या स्वक्षेत्री या मित्रक्षेत्री ग्रह हो।

आरूढ़ लग्नस्थ ग्रह बली हो।

आरूढ़ लग्न से ६ घरों के भीतर बुध हो और सूर्य पीछे के लग्नों पर हो।

शीर्षोदय लग्न में हो उसमें शुभग्रह हो।

सूर्य उदय लग्न में हो चन्द्र बारहवां हो।

बुध बारहवें हो तो स्थायी जीते।

सूर्य मंगल विषम राशि में हो।

युद्ध के आरम्भ काल में सूर्य यदि चन्द्र नक्षत्र में हो।

लग्न व दशम में शुभग्रह हो।

४-५ घरं में चन्द्र हो।

लग्न से तीसरे घर में शुभग्रह हो दूसरे सूर्य हो।

१०, ११, १२ घर में सौम्यग्रह हो।

तृतीय और नवम के बीच शुभग्रह हो।

१०, ११ घर में गुरु।

दशम से ६ घरों में शुभग्रह चंद्र और लग्नेश हो।

३, ४, ५, ६, ७, ८ घर में शुभग्रह।

लग्नेश और लग्नेश का स्वामी ग्रह उदय और बलवान हो।

स्थाई हारे=नवम में मंगल शनि हो।

सूर्य मंगल विषम राशि में हो तो।

स्थाई को यायी मारे=सूर्य चंद्र मंगल शनि राहु सब या इनमें से तीन लग्न में हो।

सप्तम में सब बली शुभग्रह हों या उनमें से गुरु सहित तीन ग्रह बलवान हो।

चंद्र लग्न या चतुर्थ में मंगल से इत्थशाल करे।

स्थाई हारे=उदय आरूढ़ लग्नों से सूर्य तीसरे पांचवे हो।

उदय लग्न में चंद्र हो सूर्य बारहवां हो।

१०-११ स्थान में पापग्रह हो।

शत्रुगृही या नीच का सूर्य हो।

स्थाई यायी को धन देकर शांत करे=सप्तम में पापग्रह लग्न में शुभग्रह।

चतुर्थ सूर्य हो या बली पापग्रह १२ वें हों।

स्थाई गिरफ्तार=आरूढ़ नीच या शत्रुग्रहों से युक्त या दृष्ट हो।

स्थाई यायी को कर या राज्य दें=पंचम घर में बुध हो।

स्थाई भंग या भागे=नवम में मंगल शनि हो तो बड़ा संग्राम हो स्थाई भागे।

स्थाई मरे=छठे सूर्य हो।

लग्नेश अष्टम होकर अष्टमेश से इत्थशाल करे।

लग्नेश बलवान हो चरराशि में बारहवें हो।

स्थाई बलहीन=सप्तम शुक्र या लग्नेश चरराशि का सप्तम में।

स्थाई बलवान=लग्नेश स्थिरराशि में हो।

स्थाई की सेना बलवान=दशमेश लग्न में हो।

स्थाई का बंधन मरण=लग्न में चंद्र हो मंगल से इत्थशाल करे।

स्थाई को यायी मारे=चंद्र बुध गुरु शुक्र ये सब या इनमें से ३ ग्रह बली होकर सप्तम में हो।

सूर्य चंद्र मंगल राहु इनमें से सब या ३ ग्रह लग्न में हों।

स्थाई संधि करे=लग्नेश ४, ७, १० घर में होकर सप्तमेश से इत्थशाल करे।

स्थाई का सहायक बलवान=१, २, १०, ११ घर में शुभग्रह।

स्थाई की सेना का बल बढ़े=११, २ घर शुभग्रह से युक्त या दृष्ट हो।

यायी जीते=शनि मंगल सूर्य लग्न में युक्त या दृष्ट हो।

दूसरे तीसरे स्थान में बुध हो।

छत्र लग्न में उच्च का वा स्वक्षेत्री मित्रक्षेत्री ग्रह हो।

आरूढ़ लग्न में नीच का या शत्रु=क्षेत्री ग्रह हो।

उदय लग्न पृष्ठोदय हो उसमें शुभग्रह हो।

बुध ग्यारहवां हो।

लग्न से १०-११-१२ घर में पापग्रह।

लग्न के चौथे घर से ६ घर।

लग्न से आगे ६ राशि तक सूर्य हो। पीछे की ६ राशियों में बुध हो।

यायी के ६ घर चतुर्थ से हैं इनमें उच्च के या स्वगृही मित्रगृही ग्रह हों तो यायी जीते।

५, ६, ११, १२, ३ घर में सूर्य हो तो शत्रु से धन स्त्री आदि लेकर जाय।

सप्तमेश और सप्तमेश का स्वामी ग्रह ३ दिन और बलवान हो।

यायी हारे=४-५ घर शुक्र हो तो यायी अपनी स्त्री धन आदि देकर जावे।

लग्न से पंचम तृतीय बारहवां गुरु हो तो यायी हारे।

यायी गिरफ्तार=छत्र नीच शत्रुग्रह से युक्त दृष्ट हो।

यायी भागे=उदय लग्न गुरु से युक्त या दृष्ट हो तो हार कर भागे।

यायी स्वराज देगा=दूसरे या तीसरे घर में हो।

यायी धन देवे=मंगल ३, ७, ८-९ घर में हो।

यायी के सम्बंधी मरे=एकादश सूर्य हो तो यायी के स्त्री-भाई आदि सब मरेंगे।

यायी को स्थाई मारे=बुध गुरु शुक्र बलवान होकर लग्न में या किसी एक स्थान में हो या इनमें से २ या केवल गुरु या शुक्र लग्न में हो।

यायी का बंधन मरण=मंगल से इत्थशाल करता चंद्र सप्तम में हो।

यायी को स्थाई मारे= सूर्य चंद्र मंगल राहु ये चारों सप्तम में हो।

यायी को स्थाई से धन मिले=सूर्य चतुर्थ हो तो यायी को धन मिले।

लग्न से पचम बुध हो तो उपरोक्त फल।

ययायी की मृत्यु—सप्तम में चंद्र और मंगल का इत्थशाल हो।

सप्तमेश दूसरे घर में होकर धनेश से इत्थशाल करे।

यायीपुर के राजा को जीत कर मरे—बली सप्तमेश चरराशि का बारहवें हो।

यायी राजा निर्बल—सप्तमेश सप्तम में हो।

यायी के सेना का बल बढ़े—८-५ घर शुभग्रहों से युक्त हो।

यायी संधि करे—लग्नेश लग्न में होकर सप्तमेश से इत्थशाल हो।

यात्रा करने वाले का नाश या पराजय

प्रश्नलग्न चंद्र से युक्त हो शनि से दृष्ट हो या प्रश्नलग्न में सूर्य हो और उससे ७, ८ घर में चंद्र हो या प्रश्नलग्न में या उससे ४, ७, ८ घर में पापग्रह हो तो यात्रा करने वाले का नाश या पराजय हो।

अन्य प्रकार से जय पराजय विचार

	१	२	३	४	५	६	७	८
आय	ध्वज	धूम	सिंह	स्वान	वृष	खर	गज	ध्वांक्ष
फल	स्थाई	यायी	स्थाई	यायी	स्थाई	यायी	स्थाई	यायी
	जय	जय	जय	जय	जय	जय	जय	जय

जय पराजय—वर्ग अनुसार शब्द पिंड लेना।

(अक्षर पिंड + ३४ क्षेपक) ÷ ३=शेष १=जय। २=संधि। ३=हार।

आलिंगितप्रश्न	अभिधूमित	दग्ध
जय	मेल	अंग, नाश, पराजय

प्रश्नकालिक शुभ यात्रा या विजय का योग

(१) प्रश्नलग्न में जन्मराशि या जन्मलग्न की राशि हो या इनके लग्नेश या राशीश हों या जन्मराशि या जन्मलग्न से ३, ६, १०, ११ स्थान में यदि प्रश्नलग्न पड़ती हो तो यात्रा करने वाले की विजय होगी।

(२) या जिसके शत्रु के जन्मराशि या जन्मलग्न की राशि प्रश्नलग्न से ४, ७ स्थान में हो या शत्रु के जन्म लग्नेश या जन्म राशि का स्वामी प्रश्नलग्न से ४, ७ स्थान में हो या शत्रु की जन्मराशि जन्मलग्न से ३, ६, १०, ११ वीं राशि यदि प्रश्नलग्न से ४, ७ स्थान में पड़ती हो या शुभग्रह का गृह होरा द्रेष्काण नवांश आदि षड्वर्ग प्रश्नलग्न में हो या ३, ५, ६, ७, ८, ११ इनमें से कोई राशि प्रश्नलग्न में हो तो उस यात्रा करने वाले राजा की विजय हो।

(३) या यात्रा करने वाला ऐसे स्थान में पूछे कि जहां की भूमि फूल, दूर्वा देवमंदिर इत्यादि शुभ वस्तुओं से अति मनोरम हो या प्रश्न पूछने के काल में कोई शुभ वस्तु देखने या सुनने में आजावे या पूछने वाला बड़े आदर से पूछे या १, ४, ७, १० राशियों में से

कोई प्रश्नलग्न हो और ग्रह से युक्त या दृष्ट हो तो भी यात्रा करने वाले की विजय हो ।

जय किसकी=आरूढ़ बलवान हो तो स्थाई की जय ।
छत्र बलवान हो तो यायी की जय ।

लग्न से तीसरे स्थान में शुभग्रह हो दूसरा सूर्य हो तो स्थाई की जय । इसके विरुद्ध हो तो यायी को जय ।

लग्न से ६ राशि तक शुभग्रह हो स्थाई की जय ।
सप्तम से १२ तक शुभग्रह यायी की जय ।

सिंह से ६ राशि स्थाई को भंग करते हैं और कुंभ से ६ राशि यायी को भंग करते हैं ।

यायी या स्थाई के ६ घर है जिसमें घर में नीच शत्रुक्षेत्री पापग्रह हों उसकी हार हो ।

दोनों में समता=सप्तम घर में पापग्रह ।

राजा भागे=लग्नेश बाहरवें हो तो स्थाई और छठें हो तो यायी राजा भाग जावे ।

अन्यमत=३ घर से ८ घर तक शुभग्रह हो और नवम घर से २ रे घर तक पापग्रह हो तो स्थाई जीते । इसके विरुद्ध ३ घर से ८ वें घर तक पापग्रह हो और नवम से २ रे घर तक शुभग्रह हो तो यायी जीते ।
१०-११-१२ घर में पापग्रह हो तो यायी हारे ।

अन्यमत है कि १० से ३ रे घर तक स्थाई का बल और ४ सें ६ राशि तक अर्थात् नवम तक यायी का बल है ।

दोनों का नाश=लग्न में केतु सूर्य मंगल, सप्तम में लग्नेश शनि चंद्र या लग्न में लग्नेश शनि चंद्र और सप्तम में केतु सूर्य मंगल हो और शुभग्रह बलवान हो ।

किसका पक्ष बली=दोनों के वर्ग स्वामी में जो केन्द्र में स्थानेश से मुथशिली हो उसका पक्ष बलवान होगा ।

किसकी हार=जिसके वर्गेश से सूर्य चंद्र मुथशिली व मुशरिफी हों उसकी सेना की हार हो ।

शत्रु को जीत कर अपना क्षय=जिसका वर्गेश चरराशि में बलवान हो वह प्रथम शत्रु को जीत कर आप भी नाश हो जाता है ।

स्वरोदय से जय पराजय विचार

जय–दूर देश में युद्ध को जाना हो तो चन्द्र का पूर्ण स्वर जयदाता होता है। जिस दिशा का स्वर बहता हो उसी दिशा में युद्ध के लिए सेना भेजे तो जय हो।

चन्द्र या सूर्य के प्रवाह में वायु तत्व हो उस समय गमन करने से जय हो।

जिस नाड़ी का स्वर चलता हो युद्ध के समय उसी दिशा में खड़े होना (चन्द्र नाड़ी में पूर्व या उत्तर। सूर्य नाड़ी में दक्षिण पश्चिम) इस प्रकार जय पावे।

युद्ध के समय बाम नाड़ी चलती हो तो स्थायी की जय।
युद्ध में सूर्य स्वर लगातार चलता हो तो यायी की जय।
जो सुषम्ना नाड़ी के बहने पर गमन करे तो युद्ध नहीं होता। सूर्य स्वर बहने में गमन करे तो जय हो।

प्रश्नकर्ता—यदि प्रश्न करता वाम या दक्षिण ओर बैठकर प्रश्न करे और उस समय पूर्ण स्वर हो तो नाश न होगा। शून्य हो तो घात होगा।

यदि वाम भाग में बैठकर प्रश्न करे और प्रश्न के सम अक्षर हों तो उसकी जय। विषम अक्षर वाले की पराजय।
यदि दक्षिण नाड़ी की ओर बैठकर प्रश्न करे तो विषम अक्षर वाले की जय, सम अक्षर वाले की पराजय हो।

पूछने के समय चन्द्र स्वर चले तो सन्धि, सूर्य स्वर में प्रश्न करे तो युद्ध हो। उस समय आकाश तत्व हो=शत्रु की हानि या मृत्यु। वायु तत्व=शत्रु अन्यत्र चला जावे। अग्नितत्त्व=शत्रु की हानि या मृत्यु। जलतत्त्व=शत्रु का आगमन। पृथ्वीतत्त्व=शुभ होता है।

युद्ध के आरम्भ समय पृथ्वीतत्व=युद्ध में बराबरी। जलतत्त्व=जय। अग्नितत्त्व=नाश।वायु और आकाश तत्व=मृत्यु।

स्वर ठीक न समझ पड़े तो पुष्प ऊपर फेंके। यदि आगे बांये या आसन से ऊँचे स्थान में गिरे तो चन्द्र स्वर। दाहिने, पीठ या आसन के नीचे गिरे तो सूर्य स्वर जानना। फिर पुष्प गिराने पर अपने अग्रभाग में गिरे तो पूर्णफल, दूर पड़े तो शून्यफल।

जय पराजय—स्वांस भीतर जाते समय प्रश्न करे तो जय।
स्वांस छोड़ते समय पराजय।

राशि बेधक चक्र

राशि चक्र में वेध इस प्रकार समझना चाहिये कि मीन का मेष से वेध है और तिरछे मेष का वृश्चिक से और वृश्चिक का सीधा मीन से भी वेध होता है। इसी प्रकार सबका वेध समझना चाहिये।

नक्षत्र बेधक चक्र

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १०

अ. भ. कृ. रो. मृ. आ. पु. पुष्य श्ले. मघा

रेवती — पू.फा.

उ.भा. — उ.फा.

पू.भा. — ह०

शत० — चित्रा

घनि. — स्वाती

श्रवण — विशाखा

अभि. — अनु.

उषा. — ज्येष्ठा

पूषा. — मूल

नक्षत्रवेध भी इसी प्रकार समझना जैसे अश्विनी का वेध मघा से और मूल से भी है। इसी प्रकार सब समझ लेना चाहिये।

इन दोनों चक्रों में ग्रहस्थापित कर फल का विचार करना चाहिये। इसमें अपनी जन्मराशि और जन्मनक्षत्र पर शुभ या पापग्रहों का विचार करें।

जन्मराशि या जन्मनक्षत्र पर सब ग्रह अपनी उच्चराशि के हों तो अर्थ और ख्याति प्राप्त हो।

सब ग्रह नीच या शत्रुराशि के हों तो शत्रु की ओर से और अपने पक्ष से भी क्लेश और भय होता है।

कौन युद्ध चाहे–जिसकी राशि व नक्षत्र पर क्रूरग्रहों से विद्ध हो।

युद्ध नहीं होगा–वक्र अतिचार अस्तंगत पाप-शुभग्रह दोनों से विद्ध हो।

युद्ध हो–जन्मराशि व नक्षत्र पर सूर्य मंगल केतु शनि हो।

जन्मराशि का द्रेष्काण पापग्रहों से विद्ध हो।

अल्पयुद्ध हो—यदि राजा की जन्मराशि व नक्षत्र पर पापग्रहों से विद्ध हो, दूसरे की न हो।

उग्र युद्ध–जिसकी जन्मराशि या नक्षत्र पापग्रहों से विद्ध हो।

जय-पराजय—जिसका जन्मलग्न अपने उच्चराशिस्थ स्वामी से दृष्ट हो तो युद्ध में जय। यदि ऐसा न हो तो पराजय।

सन्धि हो–जन्मराशि या नक्षत्र शुभग्रहों से विद्ध हो।

युद्ध में भंग—जन्मराशि व नक्षत्र पर राहु पापग्रहों से युक्त व नीच से दृष्ट हो।

सुख-द्रव्य-लाभ आदि–जन्मराशि पर शुभग्रह की पूर्ण दृष्टि हो।

भय-क्लेश, अर्थ-नाश–यदि ग्रहों की दृष्टि हो।

दुर्ग (किला) विचार

किला न टूटे—प्रश्नलग्न में पापग्रह विशेषकर मंगल व राहु हो।

सप्तम में तथा लग्न में पापग्रह हो लग्नेश व्यय में हो या २–६–८ घर में हो।

पापग्रह लग्न से ४ या १० घर में हो तो भंग करने वाले मारे जावे किला भंग न हो।

बलवान व निर्बल पापग्रह लग्न में हो।

बारहवें या दूसरे घर पापग्रह हो।

गढ़पति बाहर निकले युद्ध में जय—लग्न या ६-१० घर में ८-५ राशि का बलवान लग्नेश शुक्र व गुरु हो।

गढ़पति की जय–गुरु लग्न में या मित्रदृष्टि से लग्न को देखे तथा बली उदय के शुभग्रहों तथा चन्द्रमा से सूर्य और शुक्र दृष्ट हो।

दुर्गस्थित वालों को शुभ—लग्नेश लग्न में, शुक्र व गुरु ग्यारहवें शुभग्रह या मित्रग्रह से दृष्ट हो।

दुर्गभंग न हो—लग्न में उच्चराशि गत ग्रहों का कंबूलयोग या बुध गुरु शुक्र का इत्थशाल हो।

पूर्ण बली शुभग्रह मन्द गति होकर ४-७ घर में हो तो दुर्गभग न हो यायी का नाश हो।

दुर्गभंग—अष्टम पापग्रह हो।

दुर्ग शीघ्रभंग–सप्तम राहु।

दुर्गभंग—द्विस्वभाव लग्न में सूर्य चंद्र मंगल और शनि का इत्थशाल हो। लग्न में दशमेश या सूर्य का अधिकार न हो।

विशेष यत्न से भंग—लग्न चरराशि में पापग्रह हो तो विशेष यत्न से भंग।

शुभ-अशुभ—लग्न में पापग्रह=शुभ। पापदृष्टि=अशुभ फल। यदि लग्न में शुभग्रह है तो दुर्ग भंग होगा। यदि लग्न में शुभदृष्टि है तो दुर्ग रक्षा होगी।

दुर्गभंग—लग्न पंचम व दशम घर में गुरु हो तो जो दुर्गभंग करने में उद्यत हो तो चारो तर्फ से दुर्ग को सिद्ध कर लेता है, शत्रु भाग जाता है।

स्थाई भागे—नवम में शनि मंगल हो स्थाई का भंग दृढ़ संग्राम हो स्थाई भागे।

स्थाई हारे=१०-११ घर में पापग्रह।

स्थाई जीते=उपरोक्त के बिपरीत १०-११ घर में शुभग्रह।

किले में भय न हो=२-११-५ भाव में गुरु हो।

स्थाई को निकाल कर स्थान दे=लग्न में पापग्रह सप्तम में शुभग्रह हों तो स्थाई को यायी किले से निकाल कर फिर स्थान देवे।

स्थाई बली=लग्नेश पूर्णबली होकर स्थिरसंज्ञक केन्द्र में हो। स्वराशि पति लग्न या लग्नेश को मित्रदृष्टि से देखे।

शत्रुबली=चतुर्थेश, सप्तमेश षष्ठेश को मित्रदृष्टि से देखे।

यायीबली=सप्तमेश पूर्णबली होकर स्थिरसंज्ञक केन्द्र में हो।

शत्रुदुर्ग को लेकर लौटे=१-५-१० घर में गुरु हो।

यत्न से दुर्गभंग=लग्न में पापयुक्त चंद्र दशमस्थ पापग्रह से दृष्ट। लग्न में सूर्य के मित्र राहु मंगल शनि और सप्तम में शुभग्रह।

स्थाई किला छोड़ कर भागे=यदि चर लग्न में उपरोक्त ग्रह हों।

घेरने वाले राजा के बंधु का यंत्रपात से नाश=पापग्रह केन्द्र में हो।

सेना का बल नष्ट होने से दुर्गभंग=लग्नेश केन्द्र में होकर शुभग्रह से समय-समय पर इत्थशाल करे। पापग्रह और लग्न के अंतर के अंशो के समान दिन में या ८ महीने में दुर्ग भंग हो।

दुर्ग कैसे भंग हो=लग्नेश सूर्य केन्द्र में=अग्नि द्वारा। शनि=खंडन करने से। मंगल बुध=युद्ध द्वारा। लग्नेश पापग्रह से पीड़ित या शनि मंगल युक्त हो=भेदन तथा खंडन के बल से। राहु=पाखंड और छल से। केतु=स्थाई गढ़ को त्यागे। शनि युक्त चंद्र=जल क्षय होने से। शनि युत मंगल नरराशि के लग्न में हो=अन्न नाश हो जाने से दुर्गलाभ हो।

बहुत मरें=शनि मंगल केन्द्र में हो तो बहुत मरें या बांधे जावे।
केन्द्र में पापग्रह हो तो किले में बहुत मरें।
पापग्रह केन्द्र में हो या कर्क वृश्चिक राशि में हो तो किले में बहुत मनुष्यों का नाश हो।

रण में भागे=चंद्र और बुध लाभ में हो तो सर्वस्व खोकर रण से भागे।
कर देवे=सूर्य चतुर्थ में हो तो स्वराज भेंट करेगा।
सेना अध्यक्ष मरे=सूर्य नीच या शत्रुक्षेत्री होकर लग्न में हो।
राज्य विस्तार हो=चतुर्थ में सूर्य और चंद्र।
नया राज्य शीघ्र मिले=चतुर्थ में गुरु बुध या शुक्र हो।
राजा बना रहे=सूर्य से दृष्ट द्वितीयेश हो।

गढ़पति बली बना रहे=लग्न द्वितीय में शुभग्रह होने से बहुत सहायता मिलने से स्थाई बलवान बना रहे।

गढ़ को अधिक भय पहुंचे=केन्द्र की दिशाओं में केन्द्रस्थ पापग्रह लग्न और लग्नेश को पीड़ित करता हो तो उन दिशाओं में भय पहुंचेगा।
धन और वस्त्रलाभ=चंद्रमा शुभग्रहों से युक्त और लग्नेश से दृष्ट हो।
भय न हो=आरूढ़ या उदय लग्न से शुक्र सातवाँ हो।

शत्रु नम्र हो=छत्र गुरु से युक्त हो तो कष्ट के साथ गुरु नम्र हो।
गढ़पति दूत द्वारा संधिपत्र भेजे=चंद्र पर लग्नेश की मित्रदृष्टि होकर चंद्र सप्तमेश के साथ इत्थशाल करे तो दूत के संधिपत्र को यायी मान लेता है।

यायी राजा दूत भेजे=यदि चंद्र पर सप्तमेश की शुभदृष्टि होकर चंद्र लग्नेश के साथ इत्थशाल करे तो दूत भेजने पर उसके वचन को स्थाई गढ़पति मान लेता है।

सेनापति का शुभाशुभ विचार

विचार—राजा=शनि। मन्त्री=सूर्य। सेनापति=चंद्र। कोटपाल=बुध। इनसे इनका शुभाशुभ विचारे।

किस से सेना की रक्षा—चरराशि में शीघ्रगति वाले ग्रह=अपने पुरुष। शनि नीच का—पुरवासी। सूर्य नीच का=रास्तागीर रक्षा करते हैं।

ग्रहफल=शनि व सूर्य राहु युक्त=बंधन। शत्रु से दृष्ट=मृत्यु। शत्रु से युक्त=घाव। शुभग्रह युक्त=भय रहित।

सेना में संधि—शीघ्रगति ग्रह मित्रग्रहों से युक्त दृष्ट हो तो दोनों सेनाओं में संधि हो।

सेना की रक्षक स्त्री—चंद्र स्त्रीग्रह के नवांश में हो स्त्रीग्रह से दृष्ट हो स्त्री-राशि गत हो तो सेना की रक्षा करने वाली स्त्री होती है।

कोट चक्र द्वारा विचार
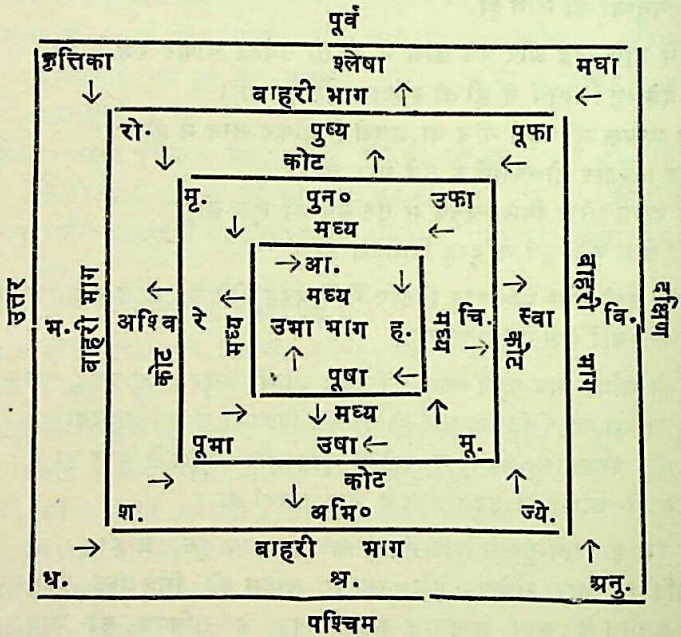
यहां चक्र में तीर तथा घन के चिन्हों द्वारा बताया गया है कि नक्षत्र किस क्रम से कहां २ लिखे जायेंगे।

यहां कृतिका से नक्षत्र आरंभ किया परन्तु अपने नगर का जो नक्षत्र हो उसको आदि लेकर लिखना आरम्भ करना। अर्थात कृतिका के स्थान में

अपने नगर के नक्षत्र से क्रमानुसार लिखना आरम्भ करना। और इन नक्षत्रों पर जो ग्रह जहाँ हो लिखना चाहिये।

भंग या रक्षा—गुरु मंगल बुध शुक्र वक्री हो तो क्रम से पूर्वादि दिशाओं में भंग करते हैं तथा पश्चिम आदि दिशा में रक्षा करते हैं। यदि सूर्य शनि युक्त हो तो भंग नहीं करते।

विजय–इच्छित पुरुप प्रवेश के नक्षत्र में युद्ध आरम्भ करे तो विजय हो निर्गम नक्षत्र में युद्ध आरम्भ करे तो शत्रु विजयी होगा।

यायी नष्ट—मध्यभाग में शुभग्रह और बाहरीभाग में पापग्रह हो तो यायी का भंग और नाश। अन्यप्रकार हो तो किलाभंग होगा।

दुर्ग अखण्ड—शुभग्रह भीतर हो और क्रूरग्रह कोट के बाहर हो।

दुर्गभंग–सब पापग्रह मध्य में हों।

दुर्ग स्वामी की जय—सब शुभग्रह मध्य में हों।

दुर्गपति किला छोड़कर भागे—कोई एक भी पापग्रह कोट के मध्य में हो शुभग्रह बाहर हो।

दुर्गपति स्वयं नष्ट–यदि मध्यभाग में वक्री पापग्रह हो।

दोनों राजा नष्ट–यदि कोट के बाहर भीतर शुभ और पापग्रह हों।

गढ़पति को बल या भय–जब तक कोट के मध्य में शुभग्रह रहते हैं तब तक वह बली रहता है। जब पापग्रह मध्य में आ जाते हैं तो भय होने लगता है।

अखंड युद्ध—यदि कोट के बाहर भीतर केवल पापग्रह हो तो कोई हारता-जीतता नहीं दोनों समान ही रहते हैं।

सन्धि - कोट के भीतर-बाहर पाप और शुभग्रह हो। शुभ बलवान हो तो शुभ, यदि पापग्रह बली हों तो भयदायक हैं।

कोट के मध्य ग्रहफल—वक्री पापग्रह=दुर्गपति स्वतः नष्ट हो। कोट के नक्षत्र पर वक्री पापग्रह=दुर्गपति स्वयं भागे। सूर्य हो=बंधन से दुःख। मंगल=अतिदाह। शनि=मृत्यु। राहु=अपना भेदन। केतु=भीतर विष-दान। और सब पापग्रह मध्य में हो तो दुर्गभंग हो।

यदि गुरु=समर्थ और जलयुक्त। शुक्र बुध शुभग्रह युक्त चन्द्र तथा सब शुभग्रह हो=दुर्गेश की जय।

किसकी जय—कोट के मध्य में पापग्रह रहित मंदगति स्वगृही उच्चगत शुभ-ग्रह बलवान होकर स्थिरराशि व नक्षत्र पर हों तो दुर्गपति की जय हो। यदि ये बाह्यभाग में हों तो शत्रु की जय हो।

जासूस हैं क्या

गुप्त जासूस—बुध सूर्य से इत्थशाली हो तो ४ गूढ़ जासूस हैं।

चन्द्र का मंगल के साथ इशराफयोग हो और ग्रह चन्द्र पापग्रहों से युक्त हो तो ४ जासूस अन्य भेष में घूम रहे हैं।

बुध से मंगल का इशराफ हो चन्द्र से युक्त भी हो तो जासूस छिपे घूम रहे हैं।

बुध सप्तम हो सूर्य से इत्थशाल करे तो गुप्तचर हैं।

चन्द्र का सूर्य के साथ इत्थशाल हो तो जासूस छिपे हैं।

अमुक स्थान में लाभ होगा या नहीं

लाभ—३, ५, ७, ११ वें घर में शुभग्रह हों तो लाभ, यदि इनमें पापग्रह हों तो अर्थहानि हो।

३, ६, ७, ११ राशि के लग्न में शुभग्रह युक्त या दृष्ट हो।

लग्न में शुभग्रह हो या शुभग्रह का घर या अपने वर्ग (षड्वर्ग) में हो। शीर्षोदय लग्न हो तो सर्वकार्य सिद्ध हो, इसके विपरीत लग्न में पापग्रह युक्त या दृष्ट हो या क्रूरग्रह का घर हो और पृष्ठोदय लग्न हो तो कार्य सिद्ध न हो।

विलंब से—शुभ पापग्रह मिलकर सौम्यलग्न में पृष्ठोदय हो तो विलम्ब से कार्य हो। शुभग्रह की अधिकता पर भी विचारकर फल निर्णय करे।

अन्य प्रकार—(दाता के नामाक्षर ५३ + पृच्छक के नाम अक्षर) ÷ ३=शेष १=प्राप्ति। २=प्राप्ति नहीं। ०=बहुत काल में प्राप्ति हो।

अन्यप्रकार से क्या लाभ होगा—

(पृच्छक के नाम अक्षर × ६ + ५) ÷ ०=दशक संज्ञा।

(लब्धि अंक × ५–दशक)=शेष अंक के समान लाभ होगा।

यहां उक्त अंक सैकड़ा हजार या लाख का बतलाता है। यह व्यापार हैसियत, जाति, कुल, देश का विचारकर निर्णय करना चाहिये।

आय के अनुसार ग्राम प्राप्ति या लाभ विचार—

	१	२	३	४	५	६	७	८
आय	ध्वज	धूम्र	सिंह	स्वान	वृष	खर	गज	ध्वांक्ष
फल	प्राप्त	प्राप्त	प्राप्त	प्राप्त	प्राप्त	प्राप्त	प्राप्त	प्राप्त
	निश्चय	नहीं	निश्चय	नहीं	निश्चय	नहीं	निश्चय	नहीं

स्थान प्राप्त हो—प्रश्नलग्न में स्थिरराशि हो तो प्राप्त होता है। यदि चर राशि हो तो प्राप्त नहीं होता।

मैत्री होगी या नहीं

मित्र शत्रु या मित्र–उदय आरूढ़ और छत्र को मित्रग्रह देखें तो शत्रु भी मित्र हो। यदि शत्रुग्रह देखे तो मित्र भी शत्रु हो जावे।

अन्यविचार–तिथि वार नक्षत्र योग और स्वामी या मित्र का नाम जोड़कर ३ मिला के २ का भाग देवे। शेष १=मैत्री होगी। ०=मैत्री नहीं होगी।

मित्रता होगी–लग्नेश लाभ में लाभेश लग्न में ये केन्द्रस्थ होकर दोनों में परस्पर मित्रदृष्टि हो।

मित्रता पूर्णतः होगी—लग्नेश लाभेश केन्द्रों से तीसरे घर में हों।

पूर्व मैत्री दृढ़—लग्नेश लाभेश केन्द्र से दूसरे घर में हो और दोनों की मित्र दृष्टि हो।

मिलाप होगा—लग्नेश लाभेश का इत्थशाल हो दोनों की परस्पर मित्र दृष्टि हो।

सेवा चक्र

अ	इ	उ	ए	ओ
क	ख	ग	घ	च
छ	ज	झ	ट	ठ
ड	ढ	त	थ	द
ध	न	प	फ	ब
भ	म	य	र	ल
व	श	ष	स	ह
सिद्ध	साध्य	सुसिद्ध	शत्रु	मृत्यु
१	२	३	४	५

वर्गस्वामी चक्र

वर्ग	अ वर्ग	क वर्ग	च वर्ग	ट वर्ग
स्वामी	देव	दैत्य	नाग	गंधर्व
वर्ग	त वर्ग	प वर्ग	य वर्ग	श ष स ह
स्वामी	ऋषि	राक्षस	पिशाच	मनुष्य

देव से दैत्य बली है। इसी प्रकार क्रमानुसार आगे के बली हैं। इन सबसे बली मनुष्य है। इससे दुर्बल वाले से व्यवहार नहीं करना। सेवाचक्र में सेव्य-सेवक का नाम एक ही में पड़े वह बहुत शुभ। दूसरे घर में पोषक, तीसरे में धनदाता, चौथे में आत्मनाशक, पांचवे में मृत्यु। चौथे पांचवे अशुभ हैं।

तारा से भी मैत्री विचारना चाहिये १ जन्मतारा २ संपत, ३ विपत, ४ क्षेम, ५ प्रत्यरि, ६ साधक, ७ वंध, ८ मैत्र ९ अतिमैत्र। जैसे राम और हनुमान में भाव कैसा रहेगा। ह=पुनर्वसु और र=चित्रा नक्षत्र है। पुनर्वसु से चित्रा ८ वां है। ८ मैत्र तारा होने से अच्छा है।

इसके अतिरिक्त नाम अक्षरों के वर्गों की संख्या में स्वर संख्या जोड़कर उसमें २० का भाग देना। जिसकी शेष संख्या अल्प हो वह व्यक्ति अधिक शेष वाले से लाभ उठाता है। जैसे–राम और हनुमान। अंक नीचे दिये है। राम=र+आ+म+अ योग।

४+२+२+ १=९

हनुमान—ह+अ+न+उ+म+आ+न+अ=योग=ये १० से कम है।

५+१+२+३+२+२+२+ १=१८

राम का शेष अल्प होने से हनुमान से लाभ उठायेगा।

प्रेम बढ़े—लग्नेश लाभ में लाभेश लग्न में हो।

मैत्री हो रही है—लग्नेश लाभेश केन्द्र में हो।

मैत्री हो रही है–लग्नेश लाभेश पणफर में हों।

मैत्री बहुत बढ़ेगी—लग्नेश लाभेश आपोक्लिम में हो।

बैर मिटेगा या नहीं

बैर मिटे—धन मीन लग्न हो तो द्वेष शांत हो बैर मिटे श्रेय धन और जय प्राप्त हो।

बैर शांत न हो—आरूढ़ लग्न से छत्र २; ६, ८, १२ वें घर में हो।

शत्रुता बढ़े—लग्न से ६-८-१२ घर में आरूढ़ लग्न हो।

शत्रु विचार—लग्न से छठे घर में और छठे घर के ग्रह से बैर करने वाला कैसा है उसकी जाति स्वभाव आदि का विचार करना चाहिये।

मेल होगा या नहीं–पंचम में लग्नेश और केन्द्रों में शुभग्रह हो तो दोनों पक्ष का मेल होता है अन्यथा नहीं।

संधि-लग्नेश और शुभग्रह तथा पुत्रदाता ग्रह सब केन्द्र में हों।

परस्पर विरोध–लग्न से सप्तमेश और षष्ठेश में शत्रुता हो।

विरोध में आक्रमण–लग्न और सप्तम स्थान छोड़कर यदि २ पापग्रहों की शत्रु दृष्टि हो तो एक दूसरे पर आक्रमण कर के घात करता है।

उत्पात और भय विचार

विशेष भय—लग्न और चंद्र पापराशि में पापग्रह युक्त।

किससे भय–लग्न पापग्रह युक्त हो और चंद्रपाप युक्त जिस घर में हो उस घर के सम्बंध से भय हो।

बहुत भय—लग्नेश पापग्रह की राशि में हो पापग्रह से दृष्ट हो।

मृत्यु का भय–लग्नेश पापग्रह हो केन्द्र में अष्टमेश से इत्थशाल हो।

धन हानि–द्वितीयेश पाप लग्नेश के साथ केन्द्र में इत्थशाल करे।

नाश-हानि—द्वादशेश और पाप लग्नेश का इत्थशाल बारहवें या सातवें घर में हों पापग्रह से दृष्ट हो ।

भय नहीं होगा—बली लग्नेश केन्द्र में हो शुभ ग्रहों से इत्थशाल करे और शुभ दृष्ट हो ।

बन्धु मित्र सहित भय—चंद्र और पापराशिस्थ लग्नेश का इत्थशाल हो ।

वाद-विवाद में जीत

लग्न—प्रश्नकर्ता । सप्तम=प्रतिवादी ।

विवाद में जीत—बलवान क्रूरग्रह लग्न में ।

प्रश्नकर्ता बली—ऐसा लग्नेश जिसके बहुत थोड़े अंश बीते हों बलवान होकर केन्द्र में हो ।

वादी बली—इसी प्रकार बली सप्तमेश केन्द्र में हो ।

किसकी जय—लग्न और सप्तम में जिसके पापग्रह बली हों वही अन्त में जीते ।

विवाद में नहीं जीते—लग्न में नीच व अस्तंगत पापग्रह हो ।

पराजय—सप्तम स्थान में नीच ग्रह के हो ।

बहुत समय तक विवाद चले—सप्तमेश और लग्नेश का चन्द्र के साथ इशराफ योग हो ।

शीघ्र विवाद शांत—लग्नेश सप्तमेश का चन्द्र के साथ इत्थशाल हो ।

विवाद बढ़े—लग्न या सप्तम में पापग्रह हो । इसमें जिसका बल अधिक हो वह दूसरे को दबा देता है ।

लग्न सप्तम, छठे भाव के स्वामी तात्कालिक व नैसर्गिक मैत्री में शत्रु हो तो कलह बढ़े ।

अपनी आत्मा भी शत्रु हो—यदि लग्नेश छठे हो ।

राजा के स्थान में सभा हो—द्वितीय घर में द्विस्वभाव राशि पर सप्तमेश और लग्नेश हो ।

राजा द्वारा दोनों का विवाद शान्त—लग्नेश सप्तमेश की मित्रदृष्टि से दशमेश के वर्ग में लग्नेश और सप्तमेश का इत्थशाल हो या चतुर्थेश से युक्त या दृष्ट लग्नेश सप्तमेश हो ।

कौन बली या अन्यायी- जो दशमेश से दृष्ट हो वह सभा में अन्यायी और जो सूर्य के साथ इत्थशाल करे उसका पक्ष बली ।

कौन निर्बल—लग्नेश सप्तमेश दोनों में जो वक्री हो सभा में वही निर्बल हो ।

किस का सहायक राजा—जो उच्च का होकर केन्द्रेश से इत्थशाल करे ।

न्याय में दण्ड, पर धर्म युक्त नहीं—शनि दशमेश बली केन्द्र में हो, मंगल से दृष्ट हो।

राजा की दूसरी सभा हो—लग्न और दशम में शुभग्रह हो।

झगड़ा—लग्न में राहु हो चन्द्र सूर्य तथा मंगल से दृष्ट हो।

छुरी प्रहार—लग्न और सप्तम को छोड़कर अन्य स्थान में २ पापग्रह परस्पर शत्रु दृष्टि से देखे।

विवाद में दण्ड—दशम में बुध=मिला-जुला। सूर्य=दंडयुक्त। चन्द्र शुभ युक्त=शुभ। अशुभ युक्त=दण्ड युक्त एवं अशुभ।

बंदी छूटेगा या नहीं या उसका क्या होगा

बंदी छूटे—लग्नेश के दृश्यार्द्ध में चन्द्र मुथशिली हो।

तृतीयेश व नवमेश से भी चन्द्र मुथशिली हो।

सौम्यग्रह लग्न में हो तो शीघ्र छूटे।

तृतीयेश और नवमेश साथ हो।

लग्न में शुक्र अस्तंगत हो तो छूटना सम्भव है।

शनि या शुक्र अस्तंगत हो तो छूटना संभव है।

तीसरे व नवम भावगत ग्रह से क्षीणचंद्र का सम्बन्ध हो ३व ११वें भाव का स्वामी जो केन्द्र में हो उसको मिलना चाहता हो तो शीघ्र छूटे।

शुक्र या शनि मेष या तुला में हो तो जल्दी छूटे।

पापग्रह की राशि का चन्द्र पापयुक्त दृष्ट हो, ३-९ स्थान के ग्रहों से संबन्ध करता हो।

यदि वैसा ही चन्द्र केन्द्रस्थित तृतीयेश या नवमेश से इत्थशाल करता हो तो जल्दी से छूटे।

लग्नेश व चन्द्र चर राशि का हो।

दशम घर में स्वराशि का चन्द्र और लग्नेश तृतीयस्थ ग्रह के साथ इत्थशाल करे।

बहुत दिनों में छूटे—मीन का चन्द्र हो।

लग्नेश केन्द्र में हो।

लग्न में लग्नेश, पापग्रह केन्द्र में।

केन्द्र में शुभग्रहों का इत्थशाल और कंबूल योग हो।

लग्नेश और चन्द्र कर्क राशि के हों तो कष्ट से छूटे।

लग्नेश व चन्द्र स्थिरराशि के हों।

सुखपूर्वक छूटे—नवम में चन्द्र व लग्नेश का तृतीयस्थ ग्रह के साथ इत्थशाल हो।

तृतीयस्थ चन्द्र व लग्नेश का तृतीयेश व नवमेश के साथ इत्थशाल हो।
चन्द्रमा गुरु की राशि से दाहिने ओर हो और केन्द्र रहित स्थान में हो अपने स्वामी या शुभग्रह से दृष्ट हो।

आप ही छूटे=यदि पुरुष ग्रह लग्नेश को शत्रुदृष्टि से देखे यह दृष्टिकर्ता तृतीयेश या नवमेश से इत्थशाल करे।

कष्ट से छूटे=चंद्र और लग्नेश का इत्थशाल हो।

इसी वर्ष छूटे=केन्द्र गत पतित ग्रह से सम्बंधी लग्नेश हो।

हठ करने पर छूटे=केन्द्रस्थ लग्नेश ३, ६, ९, १२ स्थानस्थित ग्रह के साथ इत्थशाल करे।

बंधन से न छूटे=केन्द्र में केन्द्रेश के साथ लग्नेश का इत्थशाल हो।
केन्द्रस्थ लग्नेश के साथ चंद्र का इत्थशाल हो तो चाहने पर भी नहीं छूटे।
केन्द्रेश केन्द्र में हो तो छुटकारा नहीं होता।

कैद=लग्न आरूढ़ और छत्र में राहु हो तो कैद हो चोर विष से भय मरण।
लग्न में द्विपद राशि राहु से युक्त हो तो बंधन हो।
चंद्र शत्रु राशिस्थ हो तो बंधन हो।
लग्न आरूढ़ छत्र में केन्द्र में राहु हो तो दूर गया आदमी नहीं आयगा। बंधन में पड़ गया।

शुभग्रह सप्तमेश शुभग्रह लग्नेश को देखे।

बंधन ताड़न=केन्द्र गत चंद्र मंगल से युक्त या दृष्ट हो तथा लग्नेश के पूर्वार्द्ध में व्ययेश से इत्थशाल करता हो।
केन्द्रस्थित चन्द्र मंगल से युक्त या दृष्ट हो।

बहुत काल तक बंधन—लग्नेश को आपोक्लिम स्थान में पाप और व्ययेश देखता हो। यदि लग्नेश और चन्द्र शुभग्रहों से युक्त हों तो शुभ है।

बहुत काल जेल में रहकर कष्ट और रोग—तृतीयस्थ चन्द्र यदि शनि से युक्त दृष्ट होकर चतुर्थस्थग्रह से इत्थशाल करें।

बंधन में घात और पीड़ा—केन्द्रस्थित चन्द्र को मंगल देखे।

दीर्घकालीन बंधन—द्वितीयेश चतुर्थ में हो।

कैद में पीड़ा—चन्द्र केन्द्र में शनि से युक्त या दृष्ट हो तो अधिक समय तक पीड़ा रहे।

बंधन से समय पर न छूटे अधिक समय में छूटे—लग्न या चन्द्र द्विस्वभाव राशि का हो।

कैदी भागे—लग्नेश व्ययभाव में हो।

३-९ भाव का स्वामी बारहवां हो लग्नेश से इत्थशाल चाहता हो।

लग्नेश लग्न के पीछे ६ राशियों में हो और व्ययेश से इत्थशाल करता हो।

व्ययेश लग्न में हो या तृतीयेश और नवमेश व्ययस्थान में हो यदि लग्नेश से इत्थशाल करने वाला हो तो जेल से भागे।

कैद में मृत्यु—क्रूर अष्टमेश, क्रूर लग्नेश, क्रूरग्रह से संबन्धी हो।

अष्टमेश पापग्रह चतुर्थ होकर चन्द्र से युक्त या संबन्धी इत्थशाली हो।

केन्द्रगत चन्द्र शनि से युक्त या दृष्ट हो।

लग्नेश अस्तंगत होकर चतुर्थ में हो, मंगल से दुष्ट हो।

चन्द्र चतुर्थस्थानस्थित पापग्रह से या अष्टमेश से इत्थशाल करे।

वर्ष कुण्डली में यदि लग्नेश पापस्थान में पाप युक्त या दृष्ट हो और केन्द्र स्थित पापग्रह से संबन्ध करने वाला हो वहां अष्टमेश पापग्रह हो।

लग्नेश अस्तंगत व क्रूर दृष्ट हो।

अष्टमेश और चन्द्र का इत्थशाल हो।

चौथे घर में पापग्रह और चन्द्र से इत्थशाल हो।

अष्टमेश पापग्रह लग्नेश को चतुर्थ में इत्थशाल करें।

दशम में द्वादशेश लग्नेश का इत्थशाल हो।

बारहवें घर में लग्नेश तृतीयेश और नवमेश के साथ इत्थशाल करे।

आप ही नष्ट हो जावे—सप्तमेश नौवें घर में हो सप्तम में शुभग्रह की दृष्टि हो।

रक्षा स्थान से निकलकर मारा जावे-मंगल अस्तंगत हो क्रूरग्रह से दृष्ट हो।

बंध मोक्ष विचार=दिन नक्षत्र से बंदी के जन्मनक्षत्र तक गिने। यदि इसका जन्मनक्षत्र ४ नक्षत्र के भीतर हो तो बंदी का नाश। इसके आगे ३ नक्षत्र के भीतर हो छूटे। आगे ४=मृत्यु। २=दंड पाकर छूटे। ४=शत्रु नाश। २=४ महीने में छूटे। ४=मृत्यु। ३=छूटे। इस प्रकार २८ नक्षत्र का एक के बाद दूसरे का उपरोक्त विचार करना चाहिये।

छूटने का समय—शुक्र लग्न में हो तो शुक्र गोचर में जब तक उस राशि में रहे उतने समय में छूट जावे।

लग्न में शुक्र २-७ का हो शीघ्र छूटे। ४-१० राशि का कष्ट से छूटे। स्थिरराशि का बहुत दिनों में। द्विस्वभाव का=मध्यकाल में। लग्न में शुक्र न हो तो लग्न से ही विचारना चाहिये।

कलहकारी या अन्य का क्या हुआ

मारा गया या बन्धन में—लग्न में पापग्रह हो तो मारा गया। या बन्धन में पड़ गया।

सप्तम या अष्टम में पापग्रह हो तो उपरोक्त फल ।

पृष्ठोदयराशि लग्न में हो पापग्रह से दृष्ट हो तो प्रवासी का बध, बंधन ताड़न हो।

लग्न से तीसरे में पापग्रह हो, शुभदृष्टि न हो तो प्रवासी को बन्धन या वध हो।

लग्न या सप्तम में तथा लग्न और अष्टम में पापग्रह हो तो बन्धन या बध हो ।

बन्धन—९' ५, ८, ७ भाव नें पापग्रह हो या लग्नेश को भी पापग्रह देखे तो निश्चय बन्धन हो ।

केन्द्र या त्रिकोण में पापग्रह तथा पापराशि में पापदृष्ट शनि हो तो पथिक अवश्य बन्धन में पड़ गया ।

बन्धन में है या छूट गया—स्थिर लग्न शुभयुक्त शुभयोगों में हो तो बन्धन स्थिर होगा । चर लग्न में हो तो बन्धन नाममात्र का हो । द्विस्वभाव में बन्धन से छूट गया है ।

राज्य या अधिकार लाभ प्रश्न या अधिकार बना रहेगा क्या

राज्य लाभ-सुख मिले—लग्नेश व चंद्र दशमेश में मुथसिली हो मित्रदृष्टि हो (दशम दृष्टि से दृष्ट हो) तो कुल अनुमान राजसुख मिले ।

लग्नेश दशम, दशमेश लग्न में पापरहित हो तो एकाएक बिना प्रयत्न चिंतित राज्यसुख मिले ।

लग्नेश का किसी दशमस्थ शुभग्रह से मुथसिल हो तो उपरोक्त फल हो ।

दशमेश लग्न में हो किसी शुभग्रह से इत्थशाल करता हो तो उक्त फल हो ।

यदि उक्त योग में मंदगति पापग्रह से आक्रान्त हो तो समीप आया हुआ राज्य भी नहीं मिले ।

अपनी राशि में लग्नेश और उच्च में मंगल हो तो राज्यलाभ हो ।

लग्नेश दशमेश का अपनी राशि स्थित चंद्र से इत्थशाल हो तो पूर्ण राज्यलाभ हो ।

लग्नेश दशमेश के इत्थशाल से चंद्र स्वगृही या उच्च का कम्बूली हो अर्थात् उत्तमोत्तम कम्बूल हो तो उत्तम राज्य प्राप्ति हो ।

लाभ आरूढ़ छत्र इन तीनों को उच्च का ग्रह देखे तो चिंतित वस्तु व राज्य का लाभ हो ।

४, ९, ११, २ भाव के स्वामी लग्न के सम्बन्धी और बलवान हों तो उनकी दिशा में क्रम से राज्यप्राप्ति भाग्योदय धन लाभ और कार्य सिद्ध हो ।

लग्न में लग्नेश स्वगृही या उच्च का हो अपने उच्च से दृष्ट हो।

मीन लग्न में गुरु शुक्र बुध हो।

लग्नेश लग्न या दशम में हो उच्च का मंगल हो।

लग्नेश दशमेश लग्न में हो शेष शुभग्रह वली ६-५-११ में हों तो बहुत उन्नति हो।

चंद्र और लग्नेश बलदान होकर दशम में शुभग्रहों से युक्त या दृष्ट हो और दशमेश लग्न में हो।

दशमेश का चंद्र व लग्नेश के साथ इत्थशाल हो या उच्च का शुभग्रह दशन को देखे।

लग्नेश दशमेश व चंद्र शुभग्रहों से युक्त या दृष्ट हों तथा शुभग्रह उच्च के हों।

चंद्र वली होकर केन्द्र में शुभग्रहों के साथ हो नीच का न हो।

राज्यप्राप्ति— गुरु केन्द्र में हो तथा शीर्षोदय राशियों पर चन्द्र बुध शुक्र युक्त हो।

लग्नेश युक्त शुभराशि पर शुभग्रह हो।

भ्रमण से राज्यप्राप्ति— गुरु बलवान उच्च का हो नीच का न हो या शुभग्रहों से युक्त या दृष्ट चंद्र समबली हो।

आय से विचार अधिकार प्राप्त होगा या नहीं

	१	२	३	४	५	६	७	८
आय	ध्वज	धूम्र	सिंह	श्वान	वृष	खर	गज	ध्वांक्ष
फल	देर से मिले	नहीं मिले धाई से कलह	शीघ्र प्राप्त	कलह से प्राप्त या न मिले	शीघ्र प्राप्त	कलह से प्राप्त या न मिले	देर से प्राप्त	नहीं मिले कलह हो

कार्य न हो—जिस राशि में लग्नेश है उसका स्वामी अशुभराशि में हो तो राज्यसम्बन्धी कार्य न हो।

जो शत्रुदृष्टि से दृष्ट हो तो कार्य में बाधा हो।

राज्यनाश—धनेश पापाक्रान्त हो तो राज्य का कार्य नष्ट हो।

लग्नेश पापराशि में या पापस्थान में हो, निर्बल हो।

चंद्र केन्द्र में नीच आदि का निंदित हो।

अन्य अधिकार छीने—गुरु लग्नेश चन्द्र शत्रुग्रही या पापग्रहों से पीड़ित हो।

प्राप्ति नहीं— लग्नेश और शुभग्रह अस्त आदि के हों।

राज्यप्राप्ति बाद बंधन – निर्बल लग्नेश ६-१२ घर में हो या दशमेश अष्ट-
मेश दोनों के साथ इत्थशाल करता हो या केन्द्र व अष्टम पापग्रहों से
युक्त हो तो राज्य प्राप्ति के बाद बंधन हो।

राज्यस्थिर आदि–लग्नेश दशमेश साथ ही केन्द्र में हो उनमें से एक मन्दगति
अल्पअंश में हो तो राज्यस्थिर रहेगा नहीं तो अस्थिर रहेगा। जब केन्द्र
से भिन्न स्थान में हो।

थोड़ा राज्य मिले पर नष्ट – व्ययेश दशमेश में शनि से चतुर्थ या सप्तम में
हो तो थोड़ा राज्य मिले परन्तु उससे नष्ट हो जायगा।

राज्य की वृद्धि—नवम तृतीयभाव में लग्नेश हो, तृतीयेश नवमेश के साथ
इत्थशाल करता हो।

गया राज्य मिले—यदि लग्नेश तृतीयेश और नवमेश के साथ इशराफ योग
करता हो।

राज्यस्थिर—दशमेश अपने घर में शुभग्रहों से दृष्ट हो या पूर्णचंद्र के साथ
इत्थशाल करता हो। या गुरु अपने राशि या उच्च का होकर केन्द्र में हो
या दशमेश के साथ इत्थशाल करता हो। इन योगों से अन्यथा हो तो
राज्य स्थिर नहीं रहेगा।

बुरे आचरण से राज्य हानि—चतुर्थघर में स्थित दशमेश लग्नेश का चन्द्र
के साथ इत्थशाल हो तो बुरे आचरण से राज्य निकल जायेगा।
लग्नेश के नीचराशि का स्वामी के साथ चन्द्र का इत्थशाल हो तो
उपरोक्त फल हो।

राज्यहानि-लाभ—मंदगतिग्रह वक्री हो या चतुर्थ में हो तो पहिले राज्य का
त्याग हो पीछे चंद्र के कम्बूलयोग होने से शीघ्र राज्य मिले। यदि
मुशरिफ योग हो तो राज्य न मिले।

शगुन से विचार–आट्टे का मांडना मांड़े या किसी वस्तु से मांडना माड़े।
किसी को छतरी लगाये देखे या बालों को बांधता हुआ या फूल माला
गले में पहिने प्रश्न करे तो जिसके विषय में प्रश्न किया है वह ग्राम या
देश का अधिपति या राजा होगा।

राजा से गौरव, धन आदि लाभ होगा या नहीं

शीघ्रलाभ—लाभेश लग्नेश की स्नेहदृष्टि से इत्थशाल हो।
लग्नेश लाभेश का इत्थशाल केन्द्र या लाभ में चंद्र के कम्बूलसहित हो
तो इच्छा पूर्ण हो।
लाभेश पापरहित शुभयुक्त हो तो अधिकारयुक्त इच्छा पूर्ण हो।
गुरु बलवान होकर केन्द्र में उच्च का हो तो आशा पूर्ण हो यदि स्वराशि

का हो चौथाई, अपनी हद्दा में आधा, केन्द्र को छोड़कर और स्थान में हो तो बहुत थोड़ी आशा पूर्ण होती है।

लाभ स्थिर या अल्प–लाभेश का जो उपरोक्त फल बताया गया है जैसी राशि में हो वैसा फल होगा। चरराशि का (क्षणिक) चरफल, स्थिरराशि का स्थिरफल होगा।

आशा नष्ट—लाभेश अस्त या पापपीड़ित हो तो आशा पूर्ण होकर फिर नष्ट हो जावे।

गुरु निर्बल हो ता आशा की पूर्ति न हो।

राजा से बहुत काल में लाभ—केन्द्रस्थित लाभेश का चंद्र के साथ स्थिर-राशि पर कम्बूल-योग हो।

राजा से मुहर सहित लिखित वस्तु का लाभ प्राप्त—यदि सूर्य बुध के साथ दशमेश का इत्थशाल योग हो तो प्राप्त होगी।

राजा के दर्शन होंगे या नहीं

एक बार दर्शन–चंद्र चरराशि का हो तो एक बार दर्शन हो, यदि द्विस्वभाव राशि का हो तो समीप की राशि के वश से राजदर्शन हो।

बहुत काल में दर्शन—यदि लग्नेश लाभेश की परस्पर वैरदृष्टि हो तो बहुत समय में दर्शन हो।

मानपूर्वक दर्शन हों—सूर्य के साथ दशमेश का इत्थशाल हो।

राजा और मंत्री में प्रेम

परस्पर स्नेह=लग्नेश सप्तमेश का कम्बूल सहित मुथशिल हो तो परस्पर स्नेह रहे। शुभदृष्टि भी हो तो राज्य में भी शुभ रहे।

लग्न=राजा। सप्तम=मंत्री। लग्न और सप्तम में कम्बूल होता हो और दोनों स्थानों को शुभग्रह से इत्थशाल होता हो तो राज्य में राजा और मंत्री में परस्पर प्रेम रहे।

नौकर और स्वामी का प्रश्न

सेवा से लाभ=शीर्षोदय राशि शुभग्रहों से युक्त या दृष्ट हो या २, ८, ७ में शुभग्रह ३, ६, ११ में पापग्रह हो तो राजसेवी को सुख और धन लाभ हो।

राजकृपा=बली चंद्र एवं बलवान शुभग्रह की दृष्टि लग्न और सप्तम भाव पर हो और उनमें पाप युक्त दृष्ट न हो तो प्रश्नकर्ता के लिये राजा के हृदय में स्नेह तथा कृपा रहे। यदि शुभ के स्थान में पापग्रह हो तो विपरीत फल हो।

स्वामी-सेवक नाश–२-८-७ घर में पापग्रह हो तो दोनों का नाश पापग्रह दूसरे=राजा से भृतक का धनक्षय। सप्तम=चित्तभ्रम। अष्टम=भ्रम

हो। इनमें शुभग्रह हो तो धन आरोग्य और सुख हो। यदि इनमें पापग्रह हो तो नौकरी छोड़ देना ही ठीक होगा।

१-२, ७, ८ घर में पापग्रह हो तो क्रमानुसार व्यय, विभ्रम, दुःख और नाश हो, इन घरों में शुभग्रह हो तो सुख और अर्थलाभ हो।

स्वामी की प्रसन्नता=लग्नेश और सप्तमेश को शुभग्रह और चंद्र देखे।

अन्य स्वामी प्रश्न

अन्य स्वामी धन देवे—केन्द्रगत लग्नेश षष्ठेश द्वादशेश से इत्थशाल करे तो दूसरे मालिक से बहुत धन मिले।

सप्तमेश उच्च या स्वगृही हो और केन्द्र में होकर चंद्र से इत्थशाल करता हो और बली शुभग्रहों से युक्त दृष्ट हो तो दूसरे मालिक से बहुत धन मिले।

नवमेश या तृतीयेश के साथ लग्नेश इत्थशाल करे या लग्न में स्थित हो।

दूसरा स्वामी अच्छा नहीं—लग्नेश पापग्रहों के मध्य में अस्तंगत हो या केन्द्रस्थ होकर पापग्रहों से इत्थशाल करे।

और स्वामी होगा—लग्नेश वक्री हो और किसी तृतीय नवम स्थानस्थग्रह से इत्थशाली हो तो दूसरा स्वामी होगा।

दूसरा स्वामी नहीं होगा—केन्द्र में लग्नेश षष्ठेश और व्ययेश से मुथशिल न हो तो दूसरा मालिक नहीं होगा।

जीवन पर्यंत दूसरा स्वामी न होगा—लग्नेश केन्द्र में हो तथा चतुर्थेश पर पापग्रह की दृष्टि हो एवं लग्नेश अस्तंगत हो।

लग्नेश केन्द्र में हो पापग्रह शत्रुदृष्टि से देखे और पुण्यसहम अस्तंगत हो।

वर्तमान स्वामी शुभ=लग्नेश शुभग्रह से कम्बूलीयोग हो तो शुभ, धन देने वाला है।

लग्नेश बली हो शुभग्रहों से युक्त या दृष्ट हो अपने उच्च का होकर केन्द्र में हो चंद्र से इत्थशाल करे।

अन्य स्वामी फलदायक—यदि सप्तमेश उच्च का होकर केन्द्र में हो शुभग्रहों से दृष्ट हो चंद्र के साथ इत्थशाल करे।

यदि लग्नेश चंद्र के साथ इशराफ योग करता हो।

सप्तमेश का कम्बूल शुभग्रहों से हो।

लग्न में चंद्र पापग्रह के साथ इशराफ योग करे।

स्वस्वामी फलदायक=सप्तमेश चंद्र के साथ इशराफ योग करे।

लग्न में चंद्र शुभग्रह युत हो।

लग्नेश लग्न में हो ।

अन्यपति फलदायक—चंद्र शुभग्रह युक्त सप्तम में ।

सप्तमेश सप्तम में ।

अन्यपति फलदायक नहीं—लग्न में चंद्र शुभग्रह हों से इशराफ योग करता हो ।

विचार—इसी घर घर वाहन खेत-वारी जीविका आदि विषय के प्रश्न पर विचार करे कि वह स्थिर रहेगी या चलायमान हो ।

अमुक स्थान में मेरी स्थिति होगी या नहीं

स्थानलाभ—दशम सप्तम घर में शुभग्रह हो तो स्थानलाभ ।

मान-आदर धन—२, ५, १ स्थान में शुभग्रह हों तो राजद्वार में या भद्रपुरुष से मान-आदर-धन प्राप्त हो । इसके विपरीत हो तो कार्यनाश स्थान प्राप्त न हो अनादर हो ।

शुभफल—लग्न में चंद्र हो तो सब शुभ फल हो ।

कार्यसिद्ध—दशम चंद्र हो तो सर्व कार्यसिद्ध हो ।

स्थान शुभ—चंद्र शुभग्रह के साथ इशराफ योग करता हो ।

या पापग्रह के साथ इत्थशाल करता हो ।

पहिले शुभ था—चंद्रमा अशुभग्रह के साथ इशराफ योग करता हो ।

आगे शुभ होगा—और चंद्र शुभग्रह के साथ इत्थशाल करे तो आगे किसी समय वह स्थान शुभ होगा । परन्तु इस समय शुभ नहीं है ।

नौकरी—नौकरी, व्यवसाय और मुकदमे में जीत के विचार के लिये लग्न लग्नेश, दशम दशमेश, लाभ लाभेश और चंद्र की स्थिति पर से विचारना चाहिये ।

मेरी नियुक्ति हुई है यहां से शीघ्र स्थानान्तर होगा या स्थाई रहूँगा ?

इसका विचार दशम की राशि और दशमेश से करना ह्रस्व, सम या दीर्घ राशि या ग्रह हो उसके अनुसार विचारना । ह्रस्व=शीघ्र । सम=कुछ समय बाद । दीर्घ=अधिक समय तक रहना होगा । शुभग्रह या दशमेश की दृष्टि का भी विचार करना चाहिये ।

नौकर पशुवाहन की प्राप्ति

लेने-देने वाले—लग्न और लग्नेश=लेने वाले हैं ।

सप्तम और सप्तमेश=देनेवाले हैं ।

प्राप्त अप्राप्त—उपरोक्त के बलाबल से प्राप्त अप्राप्त फल कहना, जैसे लग्नेश का सप्तमेश से, सप्तमेश का लग्न या लग्नेश से सप्तमेश का परस्पर मुथसिली हो या सम्बन्ध हो तो भृत्य वाहन आदि की प्राप्ति होगी ।

भृत्य या पशु के प्रश्न में लग्न या लग्नेश को याचक अर्थात चाहने वाला समझना और सप्तम और सप्तमेश को दाता समझकर इनके बल और सम्बन्ध से लाभ का विचार करे।

वाहन व भृत्य का निश्चित लाभ— सप्तम में बली सप्तमेश हो।

वाहन व भृत्यप्राप्त—लग्न व लग्नेश बलवान हो।

षष्ठेश लग्नेश और चंद्र के साथ इत्थशाल करे या षष्ठेश लग्न में हो।

या शुभग्रहों से दृष्ट षष्ठेश और लग्नेश लग्न में हो।

भृत्य या पशुलाभ—लग्नेश तथा चंद्र छटे हों और षष्ठेश से इत्थशाल करते हो। या षष्ठेश लग्न में हो।

गया नौकर आयेगा या नहीं

नौकर आप ही आ जावे=सप्तमेश लग्न में हो।

नष्ट नौकर मिल ज वे=लग्नेश सप्तम में होकर लग्न को देखे।

लग्नेश सप्तमेश का इत्थशाल हो शुभग्रहों से दृष्ट हो।

राजा के भय से स्वयं आ जावे=लग्न में लग्नेश का इत्थशाल हो या लग्नेश और चंद्र का इत्थशाल हो।

नौकर नहीं आवे=सप्तमेश सूर्य के साथ अस्त हो।

लग्नेश और सप्तमेश का इत्थशाल हो क्रूरग्रहों से दृष्ट हो।

नौकर नहीं मिलता=सूर्य व वक्री व पापग्रह के साथ चंद्र का इत्थशाल हो और शुभग्रह स्थिरराशि में हों।

व्यय सम्बंधी प्रश्न

विवाह आदि शुभकार्य में खर्च=व्ययभाव में शुभग्रह हो।

राजा अग्नि चोर आदि में खर्च=व्यय में पापग्रह हो।

व्यय में ग्रहफल=मंगल=व्यभिचार आदि में। बुध=वाणिज्य गो अश्व आदि के निमित्त। गुरु=धर्मकार्य में। शुक्र=पति के लिये। सूर्य=राजा। चंद्र=आनंद सुख खेल। शनि राहु=बुरे काम में खर्च।

अन्यमत=द्वितीयेश मंगल लग्नेश से मुथसिली=अनुचित कार्य या परस्त्री सम्बंध में व्यय।

धनेश गुरु=धर्मकार्य में व्यय। धनेश सूर्य=गुरु ब्राह्मण की पूजा में। धनेश शुक्र=विलास आदि सुख के निमित्त। धनेश बुध=वाणिज्य में। धनेश चंद्र=प्रेमकार्य में। ये लग्नेश से मुथशिली न हो तो अन्य के लिये वाणिज्य आदि में व्यय करे।

अन्य=द्वितीयेश मंगल नीच का=परस्त्री के विषय में खर्च। गुरु ९-६-११ घर में=गुरुसेवा में। शुक्र ९-६-११ घर में भोग-विलास में। बुध=९-६-११

घर=व्यापार में खर्च । इन योगों में चंद्र के साथ इत्थशाल हो तो बुरा भाव बदल कर कुछ अच्छा भाव हो जाता है जिसमें खर्च होता है ।

मेरा भविष्य क्या होगा या क्या हुआ

इसमें लग्नेश व चंद्र का बल देखना चाहिये जो ये बली न हों तो इनका नवांशबल देखना । यदि ये दोनों निर्बल हो तो कार्यनाश । बलाधिक्य और शुभग्रह की दृष्टि या योग से प्रश्नकर्ता के सब कार्य शुभ होंगे । इसके विपरीत अशुभ होंगे । पापग्रह की दृष्टि या योग से भी विपरीत फल होगा ।

समय—जिस ग्रह से लग्नेश मुशरिफ करता हो उससे भूतकाल का फल कहना अर्थात् वह फल हो चुका । जिस ग्रह से लग्नेश युक्त हो उससे वर्तमान काल का फल कहना । जिस ग्रह से लग्नेश इत्थशाल करने वाला हो, उसका फल भविष्य में होगा । मुशरिफ से इशराफ हो गया हो तो कार्य हो गया समझना और इत्थशाल से कार्य होने वाला है ऐसा कहना या दृष्टि के विचार से कहना इत्थशाल के भेद दिये हैं उनपर भी विचार करना ।

चिंता मिटे=लग्न में लग्नेश शुभग्रह युक्त हो तो सब दोष दूर होकर चिंता मिट जाती है ।

कलह आदि=यदि लग्नेश पापग्रह हो तो कलह हो और धननाश हो । शुभ ग्रह हो तो बुद्धि स्थिर हो विशेष सुख मिले छत्रलाभ हो ।

व्याकुलता या दोषनाश=लग्नेश लग्न में शुभग्रहों से युक्त हो तो प्रश्नकर्ता के मन की व्याकुलता और शरीर के सब दोष नाश हों ।

शुभाशुभ वश सुख-दुःख

शुभग्रहों के साथ सुख । पापग्रहों से कष्ट हो ।

सुख=चंद्र और गुरु का इत्थशाल योग सप्तमेश से हो तो वर्तमान में सुख होगा आगे भी होगा ।

यदि अन्य प्रकार हो तो उस समय व आगे भी कष्ट होगा ।

आय से विचार=(अक्षरपिंड + ३८ क्षेपक) ÷ २=शेष १=सुख । ०=दुःख ।

भविष्य=नाम के अंक × २ + किसी फल का नाम लेने को कहे उस फल के नाम के अक्षर मिलाकर + १३ ÷ ९=शेष १=धनवृद्धि । २=धनक्षय । ३=आरोग्य । ४=व्याधि । ५=स्त्रीलाभ । ६=बंधुनाश । ७=कार्य सिद्धि । ८=मरण । ९=राज्यप्राप्ति ।

धान्य से विचार=२७ दाने गिनकर इकट्ठा कर रखे । उसमें से चुटकी कुछ दाने उठाकर एक स्थान में रखे इस चुटकी २ भर कर दाने उठा-उठा कर ३ ढेरी बनाकर रखे । फिर प्रत्येक ढेरी के दानों को ३-३ गिनते जाय

ग्रंत में देखे कितने दाने वचे हैं। प्रत्येक ढेरी के वचे दानों से फल विचारे (१) शेष १-१-१ जय, लाभ। (२) १-३-२ सर्वसिद्धि। (३) १-२-३ कलह (४) २-१-३ कलह (५) २-२-२ विपत्ति (६) २-३-१ शोक (७) ३-२-१ प्रिय भोग धनप्राप्ति (८) ३-१-२ लाभ और पुत्रनाश (९) ३-३-३ लक्ष्मी ग्रौर मित्रलाभ।

ऐसे ३ वार विचार कर बुरा भला फल जानना चाहिये।

क्रय-विक्रय से हानि-लाभ

विचार—लग्नेश=लेने वाला। लाभेश=वेचने वाला। धनेश भी=वेचने वाला।
इनके वलावल पर विचार करना चाहिये।

लेने वाले को लाभ—लग्न लग्नेश वलवान हो तो वह माल लेना। इससे प्रश्न कर्ता को निश्चय लाभ होगा।

वेचने वाले को लाभ—लाभेश व लाभस्थान वलवान हो तो वेचने से लाभ होगा अन्यथा हानि होगी।

लाभ में वलीग्रह हो तो वेचने वाले को लाभ हो।

वेचना ग्रच्छा है—लग्न वलवान हो।

खुद खरीद वेच करना ग्रच्छा है—लग्नेश ग्रौर सप्तमेश का इत्थशाल हो।

ग्रन्य के द्वारा खरीदना-वेचना शुभ—मित्रदृष्टि से लग्नेश सप्तमेश का इत्थशाल हो तथा लग्नेश सप्तमेश मकरराशि में हों।

मित्रद्वारा खरीदना-वेचना शुभ—लग्नेश सप्तमेश यदि आपस में मित्र हों।

मित्र के साझे से वेचने में लाभ—चतुर्थेश और लग्नेश की मित्रदृष्टि हो।

मित्र के साझे में खरीदना अच्छा है—चतुर्थेश ग्रौर सप्तमेश की मित्रदृष्टि हो।

खरीदने वाला मिष्टभाषी—सप्तम में शुभग्रह।

वेचने वाला मिष्टभाषी=लग्न में शुभग्रह।

खरीदने वाला वस्तु को मांगता है—लग्नेश सप्तम हो।

वेचने वाला वस्तु की याचना करता है—सप्तमेश लग्न में हो।

व्यवसाय=लग्न लग्नेश, दशम दशमेश, लाभ लाभेश ग्रौर चंद्र से विचारकरे।

बड़े व्यवसाय के लिये=लग्न लग्नेश, द्वितीय, द्वितीयेश सप्तम सप्तमेश, दशम दशमेश, लाभ लाभेश ग्रौर चंद्र की स्थिति पर से विचारना।

लाभ के लिये—लग्न लग्नेश, लाभ लाभेश और चंद्र से विचारकरे।

दूर के भाई का सुख ग्रादि का प्रश्न

भाई निरोग—तृतीयेश तृतीयभाव को देखे तथा तृतीयभाव ग्रौर तृतीयेश को सुखग्रह देखे तो सुखी और स्वस्थ होगा। पापदृष्टि योग हो तो ग्रस्वस्थ।

भाई रोगी–तृतीयेश ६-८ घर में होकर षष्ठेश से इत्थशाली हो।
षष्ठेश तीसरा या तृतीयेश पापयुक्त हो।

भय–तृतीयेश अस्तंगत हो तो भाई को भयदायक है।

पीड़ा–षष्ठेश अष्टमेश जिस भाव से इत्थशाल करते हों। उस भाव सम्बंधी पीड़ा उसे होगी या जिस भाव का स्वामी ६-८ घर में हो उस भाव-सम्बंधी हानि होगी।

विचार–इसी प्रकार पुत्र-माता-पिता-स्त्री आदि के विषय में विचार करना। जैसे चतुर्थेश से अष्टमेश का इत्थशाल हो या ६-८ भाव के स्वामी चतुर्थ हों या चतुर्थेश ६-८ भाव में हो तो माता-पिता को पीड़ा पंचम घर से पुत्रों के सुख आदि का उपरोक्त विचार करना। शुभयोग दृष्टि से सुख अशुभ योग से भय हानि आदि का विचार करना चाहिये।

अर्थात वह भाव अपने स्वामी से युक्त या दृष्ट हो वह भावेश शुभ स्थान में शुभग्रहों से युक्त हो तो सुख। यदि वह स्वामी अस्त या पापग्रहों से पीड़ित हो ६-८ घर में हो तो दुःखी।

बहुत दूर–यदि भ्रातादि भावेश पांचवे ग्यारहवें हो तो प्रश्नकर्ता के भाई आदि बहुत दूर रहते हैं।

यह किम्बदंती (अफवाह) सत्य है या मिथ्या

सत्य–लग्न लग्नेश और चंद्र शुभयुक्त केन्द्र में हों तो वह जनश्रुति सत्य है।

मिथ्या–यदि पापयुक्त दृष्ट व ६-८-१२ घर में हो तो मिथ्या।

सत्य-झूठ–लग्न लग्नेश और चंद्र पर शुभग्रहों का योग व दृष्टि हो तो सौम्य वार्ता सत्य जानना। क्रूर वार्ता असत्य जानना।

पापग्रहों की योगदृष्टि से क्रूर वार्ता सत्य और सौम्य वर्ता असत्य जानना।

मिथ्या–यदि लग्नेश वक्र होने वाला हो तो सभी वार्ता असत्य जानना।

निश्चय सत्य–चंद्रमा केन्द्र में शुभग्रह युक्त हो शुभग्रह इत्थशाल करे तो सत्य। इसके विपरीत हो तो असत्य।

अशुभ–यदि इस योग में पापग्रह की योगदृष्टि हो।

कोई अन्य वार्ता है–यदि उपरोक्त से अन्य प्रकार का योग हो।

वार्ता गुप्त रहेगी–लग्न में बली चंद्र यदि चतुर्थस्थग्रह के साथ इत्थशाल करे।

बात प्रगट ही है–लग्न में बली चंद्र यदि दशमस्थ ग्रह के साथ इत्थशाल करे।

बात प्रगट हो जायगी–चंद्र लग्नस्थग्रह से इत्थशाल करे।
चंद्र सप्तमस्थग्रह के साथ इत्थशाल करे।

अन्य विचार—प्रश्नकाल के वार-नक्षत्र-योग इनको जोड़कर उस दिन की तिथि से गुणा करके ४ से भाग दे। यदि शेष १-३=बात सत्य। २ या ०=असत्य हो।

अन्य से—मुंह से निकले शब्दों का पिंडांक लेना। पिंडाक÷२=शेष १=सत्य। ०=असत्य या यह प्रश्न ही असत्य है।

चिट्ठी या भेजा हुआ आदमी का क्या हुआ

अभी आयेगा—१, २, ३, १०, ११ इन घरों में चंद्र-बुध-शुक्र हो तो भेजा हुआ आदमी अभी आयेगा।

खबर आयेगी—४, १० घर में शुभग्रह हों तो भेजे हुए दूत की चिट्ठी या खबर आएगी।

आयेगा—१, २, ५, ६ राशि का चंद्र हो तो वह आयेगा। चंद्र चौथा हो तो आयेगा।

३ दिन में आएगा—दूससे तीसरे पुरुपग्रह हों तो ३ दिन में चिट्ठी या भेजा हुआ आदमी आवेगा।

बीमार होके आवे—५, ६ घर में पापग्रह हों तो बीमार हो कर ही आवे।

मार्ग में लुटे मरे—७, ८ घर में पापग्रह हो तो उसका लुट कर मरण हो।

देर से आवे—जलराशि में पापग्रह हो तो वह देर से आये।

मार्ग में कैद—छटे में पापग्रह हो।

बलाबल विचार का इस प्रकार शुभाशुभ कहना चाहिये।

वह दूत वहां से चला या नहीं—(वर्तमान तिथि × ३ + ५ + वार × ७) ÷ २ शेष १=चल दिया। ०=नहीं चला वहीं स्थिर है।

मार्ग में चल रहा है—लग्नेश व चंद्र केन्द्र से निकल कर सप्तमेश के साथ इशराफ योग करता हो।

बहुत शीघ्र आता है—लग्नेश और चंद्र चरराशि के हो यदि स्थिर राशि के हों तो नहीं आयेगा।

आरहा है—शुभग्रह दूसरे तीसरे घर में हों।

लेख भेजा था पहुंचा या नहीं

जिसे भेजा था उसे मिल गया—चंद्र और लग्नेश के साथ यदि सप्तमेश इत्थशाल करता हो या लग्नेश और चंद्र सप्तम हो।

लेख पहुंच गया और उसने स्वीकार कर लिया—चंद्र और लग्नेश के साथ सप्तमेश का कम्बूल योग हो शुभग्रहों की मित्रदृष्टि से दृष्ट हो।

पत्र का उत्तर शुभ

बुध और चंद्र शुभ होकर इत्थशाल करे तथा अपनी उच्चराशि के हों।

सभा में राजा को दिया गुप्त लेख कैसा है

राजा ने अच्छा लेख दिया है—लग्नेश चंद्र उच्च के हों।

राजा ने आदर से किसी काम की आज्ञा दी है—चंद्र लग्न स्थिरराशि में हो।

राजा ही लेख का देने वाला है—चंद्र जिस ग्रह से इशराफ में हो वह केन्द्र में अपने उच्च का हो।

लेख देनेवाला अपने पद से च्युत है—यदि चंद्र केन्द्रों के समीपवर्ती स्थान में हो।

लेख कपटयुक्त और निरर्थक हो—लग्न और चन्द्र अपनें स्वामी से शुभदृष्टि से दृष्ट हो।

लेख में निंदित वृत्तान्त है—पाप चन्द्र शुभग्रह से इशराफ हो।

लेख में अच्छा वृत्तान्त है-शुभ चन्द्र शुभग्रह से इशराफ करता हो।

लेख कुशल का नाशक है—लग्न में चन्द्र और बुध का इशराफयोग हो इससे अन्यथा हो तो कुशल कारक लेख है।

लेख बुरा अशुभफलदायक है—लग्न में अनिष्टयोग हो।

किस सम्बन्ध में वार्ता अनुकूल कही गई है—धनभाव से आदि लेकर जिस घर में चन्द्र का बुध के साथ इशराफयोग होता हो, उस घर सम्बन्धी वार्ता होगी।

बुरी वार्ता है—उपरोक्त घर को शुभग्रह देखते हों।

शिकार सम्बन्धी प्रश्न

सफल—लग्नेश सप्तमेश का इत्थशाल मित्रदृष्टि से हो।

मंगल बुध बलवान हो तो मृगया में सफलता हो।

असफल—ये दोनों निर्बल हो तो सफलता नहीं होती।

लग्नेश सप्तमेश की शत्रुदृष्टि हो तो निष्फल हो या बहुत कष्ट से अल्प लाभ हो।

शिकार बहुत मिले—लग्नेश सप्तमेश लग्न में हो।

बहुत शिकार मिले—सप्तमेश लग्न में, लग्नेश सप्तम में हो।

मंगल व मंगल की राशि दशम में बुध गुरु से दृष्ट।

थोड़ा शिकार—सप्तमेश मंददृष्टि से मंदग्रह के साथ हो।

सुगमता से हो—लग्नेश सप्तमेश का इत्थशाल मित्रदृष्टि से हो।

कष्ट से हो—यदि इनका वैरदृष्टि से इत्थशाल हो।

शिकार छूट जावे—बुध और मंगल अस्त हो या सप्तमभाव के नवांश में हो तो शिकार हाथ से छूट जावे।

बुध मंगल सप्तम राश्यंतर हो।

शिकार न हो—सप्तमेश चतुर्थ में व दशम में हो।

लग्नेश शुभग्रह हो सप्तमेश बलवान हो।

मंगल तथा बुध पापग्रह के नवांश में हो।

पापग्रहों से विद्ध दिन में भी शिकार नहीं होती।

शिकारभेद—मंगल बुध दोनों की राशि जलचर=जलजीव। वनचर=वन पर्वत के जीव की। एक जलचर दूसरा वनचर=दोनों प्रकार के जीव का शिकार।

लग्न व सप्तमराशि व उसके स्वामी जल, स्थल, आकाश जैसी राशियों में हो या जैसे स्वभाव के हो, उस प्रकार के जीव का शिकार। जलचर राशि एवं ग्रह बलवान हो तो जलचर जीव। वनचर राशि और ग्रह बली हो तो वनचर जीवों का शिकार। इत्यादि प्रकार से विचारे, दिन प्रवेश लग्न जलचर राशि आदि जैसे स्वभाव वाले हों और जैसे ग्रहों से युक्त दृष्टि हो वैसा शिकार मिलेगा। मिश्र से मिश्रफल विचारकर कहे।

शिकार के प्रकार—राहु शनि=भैसा। मंगल सूर्य=मृग। बुध शुक्र, या बुध चंद्र=सुअर आदि। सूर्य मंगल=सुअर। बुध शुक्र=पक्षी। सौम्यग्रह=शृङ्ग हीन पशु। पापग्रह=शृङ्ग वाले पशु।

मछलियों का—सप्तमेश या चन्द्र के साथ इत्थशाल करने वाला मंगल शुक्र से दृष्ट होकर जलचरराशि पर हो या शुक्र तथा चंद्र जलचरराशि पर हो।

जलराशि में बलीग्रह हो तो जल का शिकार हो।

पक्षियों का—बुध शनि १०-११ राशि पर और दशम घर में बुध की राशि हो, या चंद्र का लग्नेश के साथ बुध और शनि इत्थशाल करते हों।

हिरन आदि का शिकार—शिकारी के नाम की राशि और उस दिन के चन्द्र के बीच यदि शुभग्रह हों तो हिरन आदि का शिकार हो।

शिकार—लग्न से सप्तम में यदि चतुर्थेश और दशमेश हो तो शिकार का कारण होता है। ये वनराशि में हो तो वन के पशु सुअर आदि की। यदि जलचर राशि में=जल जीवों का शिकार इत्यादि प्रकार से राशि और ग्रह की संज्ञा के अनुसार विचारना चाहिये।

कितने जीव मारे जावें—चन्द्र से लग्न तक राशियों में जितने स्थान में पापग्रह हो उतने जीव शिकार में मिले, यदि ग्रह अपने नवांश व उच्च

मित्रांश आदि में हो दुगनी तिगुनी शिकार के जीवों की संख्या होगी। यदि वर्गोत्तम में हो तो बहुत शिकार कई गुना होता है।

जीवों की संख्या—शिकारी और चन्द्र की राशि के बीच जितने नक्षत्र या घर पापयुक्त हो उन्हीं राशि व नक्षत्रों की जाति के समान उतने जीव मारे जाते हैं और वे नक्षत्र और घर शुभयुक्त हों उतने जीव भाग जाते हैं। राशि और नक्षत्र के जीव आगे बताये गये हैं।

राशि के जीव—१=वन की बकरी घुटरी मेढ़ा आदि। २=वनभैंसा गौर आदि। ३=बन्दर पक्षी आदि। ४=जलजीव जो थल में भी विचरते हैं। ५=वन के हिंसक जीव एवं साम्हर आदि। ६=समुद्री जीव या खेत के समीप रहने वाले जीव। ७=ग्राम के समीप रहने वाले जीव। ८=सर्प आदि। ९=वन के नील रोझ आदि। १०=मगर आदि एवं वन के साम्हर हिरन आदि जीव। ११=जल जीव। १२=जल में रहने वाले पक्षी आदि।

नक्षत्र के अनुसार जैसा की इनकी योनि बताई है—

१=घोड़ा। २=हाथी। ३=मेढ़ा। ४=सर्प। ५=सर्प। ६=कुत्ता। ७=विलाव। ८=मेढ़ा। ९=विलाव। १०=मूषक। ११ गौ। भैंसा। १३=व्याघ्र। १४=गौ। १५=व्याघ्र। १६=मृग। १७=मृग। १८=कुत्ता। १९=वानर। २०=नकुल। २१=नकुल। २२ वानर। २३=सिंह। २४=घोड़ा। २५=सिंह। २६=गौ। २७=हाथी।

जीवसंख्या—तिथि वार और अपने पुर के अक्षर जोड़कर उसका वर्ग करे फिर इसका आधाकर उसमें इष्ट घड़ी का भाग दे जो शेष बचे उसके समान शिकार में जीव की संख्या कहना चाहिये।

अन्यमत—वर्तमान नक्षत्र वार और गत तिथि जोड़कर एक कम करके उसका वर्ग करे उसके आधे को ९ से भाग दे शेष के समान जीवमारे गये जानना।

शेष को भाग देने पर एक हीव चे तो एक जीव भाग जाता है। यदि राशि वक्रग्रह से विद्ध हो तो दूने भाग जाते हैं।

सींग—बुध सूर्य=टूटे सींग। चंद्र=शृङ्गहीन। मंगल=पैने सींग। गुरु शुक्र=लंबे सींग। शनि राहु=टेड़े सींग। इससे सींग वाले जानवर जाने।

शिकार में दुःख-सुख—लग्नेश सप्तमेश बली होकर केन्द्र में हो तो सुख और उक्त ग्रह निर्बल हों तो दुःख अर्थात् उपरोक्त बलवान हो तो शिकार शीघ्र मिले कष्ट न हो यदि निर्बल हों तो शिकार में बहुत कष्ट हो।

शिकार में सिंह आदि से भय का विचार तारा के बल से—यदि शुभ तारा भी पापग्रह से विद्ध हो तो भी भय हो।

जन्मतारा-स्खलन। विपद=बहुत दुःख। भृत्य=अंग छेद। प्रत्यरि=पतन। अन्य तारों में शुभ है।

इष्ट दिन शिकार मिले—दिनप्रवेश लग्न से जो मंगल बुध बलवान विहित स्थानों में हो उस दिन कार्य सिद्ध हो। यदि उक्त ग्रह बलहीन हो तो शिकार नहीं मिले।

कितना शिकार मिले—सातवें घर पर जितने लग्नस्थ और दशमस्थ शुभग्रहों की दृष्टि हो उतने पशु अवश्य सामने आकर मारे जायेगे। यदि वे ग्रह अपने घर के नवांश में हो तो संख्या दुगनी हो जाती है। यदि वे वक्र और उच्च के हो तो संख्या तिगुनी समझना चाहिये।

छुरी आदि शस्त्र का विचार

शुभ—सप्तम चंद्र शुभग्रहों से युक्त दृष्ट हो।

शस्त्र नहीं टूटे—दूसरे घर से चंद्र ६-८-१२ घर में हो।

छुरी आदि शस्त्र टूटे—प्रश्नकाल में चंद्र राहु से युक्त हो या चंद्र पापग्रहों से या नीच व शत्रुग्रहों से दृष्ट हो।

नवम पंचम पापग्रह हो।

चौथे और दशम में पापग्रह हो।

सप्तम में पापग्रह हो तो खड्ग आदि में खंडित।

११-३ घर में पापग्रह हो तो शस्त्र का आगे का भाग टूटा हो।

कहां से टूटा—लग्न या सप्तम में चंद्र पापाक्रांत हो हो मूठ टूटेगी।

पंचम या नवम घर=में मूठ के नीचे-नीचे से टूटेगी।

तीसरे या ग्यारहवें=अंत में टूटेगी।

चन्द्र राहु से युक्त या पापग्रहों से दृष्ट हो तब उपरोक्त योग होंगे।

शस्त्र चोरी हो—उदय या आरूढ़ लग्न को शत्रुक्षेत्री या नीच का पापग्रह देखे तो छुरी आदि गुम जाय चोरी हो।

चोट लगे—आरूढ़ लग्न में पापग्रह हो तो मनुष्य को घाव लगे।

शस्त्र से मरे—छत्र आरूढ़ लग्न पापग्रहों से युक्त हो तो प्रश्नकर्ता शस्त्र से मारा जावे। यदि पूर्वोक्त स्थानों में शुभग्रह हो तो शुभकारक है।

छुरी आदि शस्त्र किसका—उदय या आरूढ़ लग्न को स्वक्षेत्री, मित्रक्षेत्री उच्च शत्रुक्षेत्री नीच के ग्रह देखे तो स्वक्षेत्री=खुद की मित्रक्षेत्री मित्र की। उच्च=बड़े अधिकारी की। नीच=नीच पुरुष की। शत्रु क्षेत्री=शत्रु की समझना।

जो उदय आरूढ़=मंगल शनि से दृष्ट=दूसरे की जो उदय आरूढ़=बुध शुक्र से दृष्ट =सार्वजनिक है उसके स्वामी की मृत्यु होगी।

भोजन सम्बंधी प्रश्न

विचार-भोजन दाता=लग्नेश। भोजन योग्य अन्न=चतुर्थेश। भोजन की इच्छा भूख, रुचि=सप्तमेश। भोजन करने वाला=दशमेश। भोजन चिंता=दिन प्रवेश लग्न से या प्रश्नलग्न से। इनके बलाबल से प्राप्ति या अप्राप्ति का विचार करना। व इनकी प्रकृति-गुण आदि पर भी विचारकरे।

जैसे लग्नेश बली शुभ स्थान गत—श्रद्धा से दाता भोजन देवे यदि निर्बल हो तो अश्रद्धा (तिरस्कार) आदि से देवे।

चतुर्थेश बली=भोजन अन्न अच्छा मिले। निर्बल हो तो न मिले या निंद्य अन्न मिले।

सप्तमेश बली —भोजन में रुचि अच्छी हो। निर्बल=थोड़ी भूख, अस्तंगत= मंदाग्नि।

दशमेश बली—भोक्ता प्रसन्नतापूर्वक भोजन करेगा। यदि निर्बल हो तो भोजन में विघ्न आदि हो। इनका शुभयोग से शुभफल। पापयोग दृष्टि से अशुभ फल होता है। इसका भी विचार करे।

सुभोजन—लग्न या लाभ में शुभग्रह युक्त दृष्टि हो तो सुभोजन मीठा, घृत-दही-दूध आदि से युक्त।

लग्न में गुरु और शुक्र हो तो क्लेश स्थान में भी सुभोजन।

लग्न और चतुर्थ घर शुभग्रह से युक्त हो।

अच्छा रुचि से भोजन—विषम राशि को शुभग्रह देखे।

थोड़ा भोजन—समराशि पर पापदृष्टि हो।

अच्छा भोजन—चतुर्थेश चतुर्थ में बलवान हो या स्वगृही हो।

कष्ट से भोजन—चतुर्थ में पापग्रह हो।

हर्षयुक्त भोजन—अन्न सूचक ग्रह या राशि पर शुभदृष्टि हो तो आनंद से। यदि पापदृष्टि योग=क्रोध से भोजन मिले।

कितने बार भोजन—चतुर्थ में चरराशि=कई बार। स्थिर=१ बार। द्विस्वभाव=२ बार।

ठंडा या गरम भोजन—दिन प्रवेश लग्न या प्रश्नलग्न से चंद्र दशम=गरम। मंगल दशम=ठंडा या बासी भोजन।

भोजन नहीं मिले—लग्न में राहु व शनि हो सूर्य से दृष्ट हो तो यत्न करने पर भी उस दिन भोजन नहीं मिले और शस्त्र का भय भी होना संभव है।

उपवास व रात्रि में कुभोजन—यदि लग्न सूर्य से युक्त या दृष्ट न हो तो उस दिन उपवास करना पड़ता है व रात्रि में कुभोजन मिलता है ।

भोजन का रस—जो ग्रह लग्न को देखे और सबसे बली हो उसका रस भोजन आदि में कहना ।

या चंद्र को जिस ग्रह से इत्थशाल हो उसका रस ।

या चतुर्थ में जो ग्रह हो उसके अनुसार ।

लग्न पर किसी ग्रह की दृष्टि न हो तो केन्द्र स्थित ग्रह से रस का विचार करना चाहिये ।

सुरस-निरस—लग्न में शुभराशिस्थ ग्रह से सुरस और अशुभराशिस्थ ग्रहों से निरस भोजन होगा ।

ग्रहों का रस—सूर्य=कड़ुवा । चंद्र=सलोना । मंगल=तीखा । बुध=मिश्रित । गुरु=मीठा । शुक्र=खट्टा । शनि=कषाय अर्थात् कांजी-सिरका आदि कुछ दिनों का बनाया हुआ ।

भोजन प्रकार—भोज्य रूप सूर्य=मूल (जड़) आलू, घुईयां सकरकंद आदि । चंद्र=पुष्प, फूलगोभी आदि । मंगल=पत्ता शाखा भाजी आदि । गुरु शुक्र निष्पाप । बुध=अनेक प्रकार के व्यंजन । शनि राहु केतु=मांस सहित या तेल की बनी ।

अन्य प्रकार—लग्नगत बलीग्रह से या लग्न में कोई ग्रह न हो तो दृष्टा ग्रह से विचारे । सूर्य=तिल का अन्न । चंद्र=चावल । मंगल=मसूर-चना । बुध=मूंग राज माष । गुरु=गेंहू । शुक्र=जौ-बाजरा आदि । शनि=कुल्थी-मक्का-उड़द आदि । राहु केतु=कोदों सामा आदि छोटे अन्न भूसी सहित ।

राशि के अनुसार भोजन का प्रकार

मेष—बकरे का मांस । वृष=गाय का दूध दही पत्ते आदि । ३, ५, ६ राशि= मछली । ४, ८, १०, १२=फल । ६-७-११ राशि=साग शुद्ध अन्न का भोजन । मतांतर मेष=पत्र ।

अन्यमत—पापदृष्टि से=बासी अन्न । सूर्य मंगल=मांस । शुक्र=मक्खन । चंद्र=दूध । राहु=दही मिला भोजन ।

जलराशि में पाप और शुभग्रह हो या इनकी दृष्टि हो=तो तेल मिला भोजन ।

धन राशि के दूसरे आधे में—मांस तो नहीं किन्तु मांस के समान उड़द आदि के भोजन । सिंह=कच्चा मांस ।

ग्रह के अनुसार भोजन

लग्न में सूर्य=खट्टा-कड़ुआ। बुध=ठंडा भोजन या दूसरी बार उबाला भोजन। गुरु=उत्तम भोजन। राहु=अधिक पका भोजन। शनि=वेल, पत्तों का साग। मंगल=मांस। मतांतर बुध=फल। गुरु=विविध व्यंजन। शनि=दलिया। मंगल=गरम कढ़ी या छौंकी हुई साग।

अन्यमत—लग्न में सूर्य मंगल=मांस चावल का भोजन। चंद्र शुक्र राहु एकत्र किसी राशि पर बैठ कर सूर्य से युक्त या दृष्ट=दही-दूध-चावल मिला भोजन।

मतांतर—सूर्य को चंद्र देखे=दही मिला चावल का भोजन। शुक्र देखे=दूध मिला चावल। राहु देखे=घी मिला चावल। घी से तेल भी ग्रहण करना।

लग्न को गुरु देखे—काला उड़द पत्ते दाल मछली। चंद्र देखे=शाक कंद मछली। शुक्र देखे=मधु दूध इमली। शनि देखे=ठंडा भोजन ठंडा, चावल।

मतांतर—मकर कुंभ में जो ग्रह हो उससे पूर्वोक्त फल ही कहना हीं।

उदयलग्न में विषमराशि या विषमग्रह=केवल भोजन। समराशि या समग्रह=साग युक्त भोजन। शनि या राहु=विषम राशि में या विषमग्रह युक्त=साग सहित भोजन। ये समराशि में समग्रह युक्त हों=केवल चावल का भोजन।

अन्यमत—सूर्य=चरपरा खड़ा खारा अन्न। मंगल—खिचड़ी और शहद। बुध=भुंजेपदार्थ का व्यंजन। गुरु=खीर घी। शनि=तेल और कोदों। राहु-केतु=चना।

गुरु—उड़द के बरा और दालयुक्त। चंद्र=कंदयुक्त मछली। शुक्र=शहद पुआ दूध से मिला व्यंजन।

ग्रह अनुसार अन्न—चतुर्थ में जो ग्रह हो उसके अनुसार भोज्य अन्न या रस विचारे।

चतुर्थ में शुक्र—स्निग्ध अन्न। शनि=तेल पक्का अन्न। नीचग्रह=रस हीन बिना पका कुत्सित भोजन।

अन्यविचार—केन्द्र में सूर्य=गेहूँ गुड़ भात आदि। चंद्र=श्रेष्ठ अन्न दही घी तथा स्वेत अन्न। मंगल=गुड़ और हविष्य युक्त। गुरु=हल्दी चना तथा दधि आदि।

शुक्र—कोमल तथा घी युक्त। शनि=खटाई तेल तिलादि। राहु=दुर्गंध युक्त या अपवित्र, सरसों तथा उड़द। केतु=बहुत पदार्थों वाला भोजन।

भोजन—पापग्रह बली हों=भोजन चावल और तेलयुक्त। शुभग्रह बली=घृत सहित भोजन।

मतांतर--पापग्रह अतिबली=भोजन करने वाला पुरुष या स्त्री दुर्जन और परोसने वाला उसका सम्बंधी नहीं। भोजन स्वादिष्ट भी नहीं होगा। बली शुभग्रह=इसके विरुद्ध फल हो।

अन्यमत--सबसे बलीग्रह पुरुषराशि में=घृत साग सहित भोजन। स्त्रीराशि में हो तो भोजन दिनको किया और साग सहित भोजन।

किसके घर भोजन--सूर्य आदि जो ग्रह उच्चादिबल युक्त लग्न में हों उसकी जाति के अनुसार घर में।

सूर्य--राजगृह। चंद्र=वैश्य। मंगल=क्षत्रिय। बुध=शूद्र। गुरु=ब्राह्मण। शुक्र=ब्राम्हण। शनि=शूद्र।

किसके घर भोजन--लग्न में सूर्य बली=राजा आदि के घर में। सूर्य चन्द्र बली=राजा के घर। सूर्य=राजा। चन्द्र=रानी। मंगल=सेनापति। बुध =राजपुत्र। गुरु=मंत्री। शुक्र=नेता। शनि=सेवक के घर में।

अन्यमत—लग्नगत ग्रह मूल त्रिकोण में=पिता के घर व अपने घर में। मित्र राशि का या मित्रगृही=मित्र के घर। शत्रुराशि या शत्रुगृही=शत्रु के घर में।

लग्न में कोई ग्रह न हो तो लग्न पर जिसकी पूर्णदृष्टि हो उसके अनुसार ग्रह जानें।

लग्न शुभग्रह से युक्त या दृष्ट हो बली भी हो=तो अपने घर में भोजन। इसी प्रकार ग्रह की राशि स्वभाव आदि के अनुसार बुद्धि से विचार करे। मूल त्रिकोण में प्राप्त ग्रह जिस घर में बैठा हो उस घर के स्वामी के यहां भोजन किया अथवा अधिक बलवान ग्रह के घर में भोजन किया।

लग्न आदि घर बलवान हो तो क्रम से भाव के अनुसार—

(१) निज घर में, (२) कुटुम्ब, (३) भाई, (४) माता-पिता, (५) पुत्र (६) शत्रु, (७) वधू, (८) कर्ज वाले से, (९) मांगने से, (१०) राजा (११) मित्र, (१२) खरीदने से भोजन की प्राप्ति हो।

समय पर मित्र के साथ अच्छा भोजन किया—चन्द्र की राशि का स्वामी चंद्र के साथ हो। इसके विरुद्ध हो तो अन्यथा फल हो।

भोजन व स्थान—सूर्य के साथ चन्द्र का इत्थशाल=पवित्र तीक्ष्ण भोजन। गुरु के साथ इत्थशाल=मीठा भोजन। शुक्र के०=भारी अन्न का भोजन। बुध के०=महोत्सव में स्वादिष्ट। मंगल के०=दुष्ट स्थान में गरम भोजन। शनि के०=शस्त्र स्थान में भोजन किया। शुभग्रह की मित्रदृष्टि होने

से=विवाह में भोजन। शुभग्रह की वैरदृष्टि से विवाह से आकर हुआ अन्न का भोजन।

प्रेमी से अच्छा भोजन मिले—लग्नेश गुरु या शुक्र बलवान हो, शुभग्रहों के साथ चन्द्र और बुध केन्द्र में हो तथा ३, ६, ११ घर में पापग्रह हो।

विनोदपूर्वक अच्छा भोजन—गुरु या शुक्र बलवान होकर लग्न में हो या चन्द्र और बुध लग्न में हो, शुभग्रहयुक्त हो। पापग्रह ३, ६, १०, ११ स्थान में हो।

अच्छा भोजन— चतुर्थेश-लाभेश आपस में इत्थशाल करते हों। शुभयोग की दृष्टि हो।

भोजन सुख—लाभेश, दशमेश लग्नेश और सप्तमेश से इत्थशाल करते हों।

बिना प्रयास संतोषप्रद भोजन—गुरु जिस होरा में हो उसका स्वामी ग्रह यदि लग्न या दशम में हो।

किसके घर भोजन—चन्द्र जिस ग्रह के साथ इत्थशाल करे वही ग्रह यदि लग्नेश हो तो अपने घर में भोजन। यदि द्वितीयेश से इत्थशाल करे=सेवक के घर भोजन। तृतीयेश से०=भाई के घर भोजन होगा।

अच्छा भोजन— चन्द्र शुभग्रह से इत्थशाल और पापग्रह से इशराफ योग करे।

बिना प्रयास सुख से भोजन—चन्द्रमा अपने स्थान को देखे अन्यथा कष्ट से भोजन हो।

सन्धानपूर्वक भोजन—चन्द्र का गुरु के साथ इत्थशाल हो।

बुरा भोजन—चन्द्र शुभग्रह से इशराफ पापग्रह से इत्थशाल करे।

दूसरी जगह से प्राप्त अन्न न मिले—चन्द्र पापग्रह से इशराफ करे और पापग्रह से इत्थशाल करता हो।

अन्न की प्राप्ति नहीं—क्षीण चन्द्र हो और चन्द्रराशि के नवांश में पापग्रह हो।

शत्रु का निमंत्रण आघात—शनि व राहु लग्न में शनि से दृष्ट हो।

चन्द्र और मंगल लग्न में शनि से दृष्ट।

भोजन कर लिया या करेगा—चंद्र शुभग्रह के साथ इत्थशाल हो पापग्रह से इशराफ हो तो भोजन कर लिया।

अन्य प्रकार से हो तो भोजन करेगा।

भोजन का स्वाद—जिस ग्रह का जो स्वाद या रंग कहा है, सबसे बलिष्ठ ग्रह से विचारना।

पात्र—पापग्रह सबसे बली परोसने का पात्र खंडित या मट्टी का, शुभग्रह बली नया पात्र। ग्रहों के धातु आदि बताये गये हैं उनसे धातु जानना।

स्वप्न सम्बन्धी प्रश्न

स्वप्नविचार—दशम और चतुर्थ से विचारना। कौन स्वप्न आयेगा इसका विचार चतुर्थ घर और उसमें स्थित ग्रह से कहना। जागृत अवस्था में स्वप्न आया हो उसका विचार दशम या दशमस्थग्रह से करना। बहुत दिन हुए स्वप्न आया था स्मरण नहीं। इसका उत्तर सप्तम के ग्रह से करना।

कौन स्वप्न आयेगा—दिन प्रवेश या प्रश्नलग्न से सूर्यादि ग्रह लग्न या लग्न नवांश में हो उसके अनुसार स्वप्न सर्वोत्तम बलीग्रह से भी विचारना यदि ग्रह निर्बल हो तो दुःस्वप्न देखे।

सूर्य—सूर्य बिम्ब, राजा, अग्नि, रक्तवस्त्र, शस्त्र, पित्तविकार से देखे-क्योंकि सूर्य पित्त धातु का स्वामी है।

चंद्र—स्वेत रंग के पुष्प, वस्त्र, चंदन, घोड़ा सुंदर-स्त्री हीरादिक।

मंगल—सुवर्ण, रुधिर, रक्तवस्त्र रक्तपुष्प, रक्तरंग के पशु मूंगादि मांस।

बुध—आकाश में उड़ना पर्वत शृङ्ग आदि में गमन, स्वर्ग समसुख, घोड़ा, धर्मसम्बन्धी बातें। देवता।

गुरु-देवदर्शन धर्मसम्बन्धी कथा, धन, बन्धु सम्मेलन, अपनी प्रति अनुसार वस्तु, स्त्रीसंग।

शुक्र—जलाशय तैर कर पार, सुबांधवों का संगम, देवताओं से प्रीत, खेल कूद आनन्द विलास आदि सुख, सफेद महल।

शनि—ऊँचे पहाड़ चढ़ना, वन पर्वत गमन नीच जन संगति म्लेच्छ और शत्रु से भय हो।

राहु-केतु—शनि समान फल नीचसंग आदि।

अन्य—उदय लग्न में शुक्र=सफेद मकान, बुध=देवदर्शन।

मतांतर=लग्न में बुध=राक्षस तथा राजपुरुष।

बुध शुक्र को छोड़कर अन्यग्रह लग्न में हों वह स्वक्षेत्री लग्नस्थ ग्रह का फल है।

इसी प्रकार आरुढ़ और छत्र लग्न और उनपर स्थितग्रह से स्वप्न का विचारना।

भूत व भविष्य का विचार–उदय लग्न और उसपर स्थितग्रह से जो फल कहा है वह भूतकाल एवं भावी स्वप्न का भी समझना चाहिये।

चतुर्थ से विचार–चतुर्थस्थान से व उसके दृष्टा ग्रह से भी स्वप्न का विचार करना। चतुर्थ के ग्रहों से विचार। सूर्य=मरा आदमी, सूखे गिरे वृक्ष। चंद्र=समुद्र में तैरना। देखने वाला खुद मरगया। तृषा वत व निद्रा

आ रही है। राहु-मंगल=मांसदर्शन। बुध=प्रवाह में तैरना, वृक्षों को देखना, उपवास करना गुरु=फल तथा राज पुरुष का दर्शन। शुक्र=चांदी की वस्तु, मोती आदि देखना। शनि=पशुओं को देखना, राहु=पानी दारू विष। अन्य०—सूर्य=सूखा वृक्ष खुद पर गिर पड़ा है और मृतक पुरुष जी उठा है और स्वतः मृतक के सामने जो जी उठा है वह रो रहा है ऐसा स्वप्न देखे।

स्वक्षेत्री ग्रह हों तो भी यही फल होगा।

लग्न के अनुसार स्वप्न—१ मेष=देवदर्शन, देवगृह, राजगृह का दर्शन। २ वृष=पूर्वोक्त मकानों में चलना फिरना। ३ मिथुन=देव-ब्राम्हण तथा तपस्वी का दर्शन। ४ कर्क=कीचड़ में घुसकर वृक्ष की डाल तोड़ते देखे। सूखी व हरी खेती देखे। ५ सिंह=पहाड़ के मनुष्य, पहाड़ व पत्थर देखे। ६ कन्या=मुण्डी स्त्री के साथ जलपान व क्रीड़ा। ७ तुला=नृप, व्यापारी, स्वर्ग का दर्शन। ८=वृश्चिक=बैल घोड़े गधे।९ धन=पुष्प सुगन्ध रत्न। १० मकर=मनुष्य, स्वर्ण। ११ कुंभ=नदियां। १२ मीन=दर्पण। इनका दर्शन सुनना वार्तालाप आदि भी ग्रहण करे—

मतांतर—सिंह=युद्ध में भैंसा का दर्शन। तुला=कन्या का दर्शन। धन=विधवा स्त्री तथा मनुष्यों का। मीन=मछली का दर्शन।

स्वप्न मे स्त्री में रमण—चंद्र ३, ५, ७, ११, ६ इन स्थानों में हो और गुरु सूर्य शुक्र से दृष्ट हो और ६, १, ४, ७, १० इन स्थानों में से किसी में भी शुभग्रह हो तो स्वप्न में सुन्दरस्त्री से रमण करे।

क्या देखा—आरूढ़ व छत्र लग्न मेष=मंदिर महल। वृष=देखा हुआ घर देखे। मिथुन=ब्राम्हण, साधु के वचनसु ने। कर्क=खेत में जाकर। खेत देख कर हाथ में घास लेकर आये। सिंह=किरात चील। भैंसा और पहाड़ का कार्य देखे। कन्या लग्न या आरूढ़=विधवा स्त्री से पानी पीवे। तुला=राजा, सुवर्ण बनिया। वृश्चिक=विच्छू मृग आदि बैल भी देखे। धन=फूल देखे पके फल मिलें। मकर=नदी, स्त्री, पुरुष को। कुंभ=कांच। मीन=सुवर्ण और पानी का स्थान देखा। वृश्चिक लग्न में सूर्य-मंगल=मरे आदमी का दर्शन करे।

अमुक मनुष्य या मित्र क्या कर रहा है

[(तिथि + वार + नक्षत्र + योग) × २ + ३] ÷ १२=शेष १=वह हास्य युक्त अपने स्थान पर अपने सम्बंधियों सहित भूमि पर बैठ कर पान आदि पा रहा है। २=कुछ मनुष्यों से युक्त परिश्रम करता है या कुछ

उत्तेजना देने वाली भय सम्बन्धी वार्ता सुन रहा है। ३=बैठे हुए क्रोध कर रहा है बुद्धि में उत्तेजना होने से पश्चात किसी कार्यवश कहीं चला गया। ४=सोता हुआ अपना मुख जल से धो रहा है। ५=सोते से उठ कर भोजन कर रहा है। ६=मार्ग चलते समय मिलना हो सकता है। ७=स्त्री से प्रेम व्योहार भोग में लगा है। ८=मन में बहुत परेशानी हो रही है। ९=धर्म के काम में लगा है। १०=राजा से सम्मान प्राप्त। ११=भोजन करता है। १२=वह दुःखी है, धन युक्त है स्त्री से भोग करने का विचार कर रहा है।

वह मिलेगा या नहीं या कहां मिलेगा

घर में मिलेगा—यदि सप्तमेश बली होकर केन्द्र में हो।

घर के समीप मिलेगा—सप्तमेश यदि पणफर में हो।

घर में नहीं मिले वह दूसरे के घर गया है=सप्तमेश आपोक्लिम में हो।

अमुक से मिलना होगा या नहीं

(इष्टकाल × ३ + १ + ७) ÷ ४=शेष १=मिलना होगा। २=दूसरी बार जाने से मिले। ३=मुलाकात नहीं होगी। ४=क्लेश से मिलेगा।

जहाज के काम में लाभ होगा या नहीं

नाव से लाभ—केन्द्र में बलवान शुभग्रह हो अन्य ३-६-११ स्थानों में निर्बल पापग्रह हो।

लग्नेश और अष्टमेश अपनी-अपनी राशियों में हो और उनकी दृष्टि अपने भावों पर हो।

अष्टम में बलवान शुभग्रह हो तो लाभ और सुख हो।

लग्नेश और अष्टमेश अपनी राशि में जाने वाले हों।

कोई अरिष्टदायक फल हो तो लाभ होगा।

जहाज गया है अभी तक नहीं लौटा क्या हो गया

जहाज शीघ्र आये—उदय लग्न या आरूढ़ लग्न से तीसरे घर में शुक्र हो तो नाव ने रास्ता छोड़ दिया है परन्तु शीघ्र आयेगी।

चरराशि और छत्र हो।

चौथा पांचवा भाव में चंद्र हो।

दूसरे तीसरे भाव में शुक्र हो।

केन्द्र गत चंद्र चरराशि में हो।

कुशल से नाव लौटे—निर्बल पापग्रह १, ३, ६, १२ घरों में हो और शुभग्रह बलवान हों। तो कुशलपूर्वक आवे।

लग्नेश वक्रगति हो उसके स्थान का स्वामी व चतुर्थेश शुभ-युक्त व दृष्ट हो तो उपरोक्त फल हो ।

प्रश्नकाल में मृत्युफल देने वाले योग हों तो शीघ्र आवे ।

उदय लग्न या आरूढ़ लग्न में जलराशि हो। या तीसरे पांचवे घर में जलराशि हो तथा नौवें घर में जलराशि हो चंद्र गुरु या शुक्र से युक्त हो ।

जलराशि वाले लग्न में चंद्र गुरु शुक्र हो ।

लग्नेश व उसका नवांशेष वक्री हो शुभदृष्ट हो तो कुशलपूर्वक नाव आवे ।

जहाज विना माल के लौटे--लग्नेश वक्रगति और उसके स्थान का स्वामी व चतुर्थेश पापयुक्त या दृष्ट हो ।

वक्री लग्नेश व उसका नवांशेष पापयुक्त या दृष्ट हो ।

जहाज माल सहित वापिस आवे-अष्टम घर पापग्रह युक्त हो ।

जहाज सीधा चला आय—उदय लग्न जलराशि स्थिर या द्विस्वभाव में हो तो नाव सीधी चली आयेगी ।

नाव अन्य मार्ग से आवे—उदय या आरूढ़ लग्न पापयुक्त हो वे पापग्रह शत्रु-क्षेत्री हो तो नावमार्ग में ठहर कर या अपना मार्ग छोड़कर अन्य मार्ग से आयेगी ।

नाव दूसरी जगह चली जावे-उदय लग्न या आरूढ़ लग्न पापग्रहों से युक्त हो तो नाव अपने मार्ग से हटकर अन्य किसी दूसरे तट पर चली आवेगी ।

नाव न लौटे—उदय या आरूढ़ लग्न शत्रुक्षेत्री पापयुक्त हों तो नाव कभी नहीं लौटेगी ।

आरूढ़ लग्न, छत्रलग्न दोनों चरराशि में हो और वे सूर्य मंगल बुध शनि या राहु में से किसी से युक्त हो तो जो नाव गई है वापिस नहीं आयेगी ।

जलराशि वाली लग्न में पापग्रह हो तो नाव नहीं आये ।

नाव डूबे—उदय और आरूढ़ लग्न नीचक्षेत्री पापयुक्त हो तो नाव डूबकर बेकाम हो जावे ।

पापग्रह केन्द्र में हो बली हो शुभग्रह निर्बल हो तथा बलयुक्त चंद्र इशराफ करे और गुरु अस्त हो नौका डूबे ।

मालसहित नाव डूबे—लग्नेश चन्द्र राशीश व चन्द्रमा को अष्टमेश देखे या युक्त हो विशेषतः इत्थशाली हो, तो नाव मालिक एवं मालसहित डूब जावे ।

चन्द्र शनि के इत्थशाल में हो मंगल लग्न अष्टम या केन्द्र में सूर्य से दृष्ट हो और केन्द्र स्वामी पापयुक्त हों तो उपरोक्त फल हो ।

कुछ मनुष्य समुद्र में नाव डूबने से मरें—यदि केन्द्रों के स्वामी मंगल और शनि से युक्त हों।

माल नष्ट नाव बचे—लग्नेश व चंद्र सप्तम स्थान में हों तो नाव बच जावे नाव का माल डूब जावे।

जहाज टूटे—आरूढ़ छत्र लग्न इनको पाप या नीचग्रह देखें तो जहाज टूटेगा।

नाव डूबे प्राणी बचे—लग्नेश और अष्टमेश सप्तम में हो।

टूटी नौका कष्ट से आती है—चंद्र व गुरु पापयुक्त हो।

नौका में या नौका-स्वामियों में कलह—लग्नेश और चंद्र आपस में शत्रुदृष्टि से देखें।

नौका और नौकास्वामी की मृत्यु या बंधन-भय—चंद्र लग्नेश अष्टमेश एक राशि पर हों विशेष कर उन स्थान के स्वामी पापयुक्त हों।

नौका रवाना हो गई—लग्न में शीर्षोदय राशि हो तो सब देश से रवाना हो गई।

नाव कब आयेगी—जिस समय लग्न स्व-स्वामी से दृष्ट हो उस समय नाव आयेगी। या जो ग्रह देखे उसकी जो अवधि है उस अवधि में आवे।

नाव कुशल पूर्वक है या नहीं

	१	२	३	४	५	६	७	८
आय	ध्वज	धूम	सिंह	स्वान	वृष	खर	गज	ध्वांक्ष
फल	कुशल युक्त	जल में डूबे	कुशल	डूबे	कुशल	डूबे	कुशल	डूबे

नदी का पूर (बाढ़) आयगा क्या

शीघ्र पूर (बाढ़) आएगा—उदय लग्न से सप्तम घर में जलराशि हो।

बहुत पूर (बाढ़)—सप्तम में कर्क मीन राशि हो।

सप्तम में जलग्रह युक्त जलराशि हो तो नदी किनारे के बाहर हो जायगी।

पूर कितना—सप्तम में मकर कुंभ राशि हो तो पौन पूर, तुला राशि हो तो आधा पूर, वृषभ या वृश्चिक राशि हो तो चौथाई पूर आएगा। सप्तम में जलराशि एवं जलग्रह के अतिरिक्त अन्य ग्रह हो तो थोड़ा पूर आयेगा।

पूर नहीं आयेगा—सप्तम में पापग्रह हों।

सप्तम में जल राशि नहीं हों।

वर्षाऋतु में वृष्टि सम्बंधी प्रश्न

शीघ्र बरसे—चंद्र से शनि सप्तम और सूर्य से शुक्र सप्तम हो शनि चतुर्थ शुक्र अष्टम हो।

या शनि दूसरे में शुक्र तीसरे में हो या दोनों दूसरे या तीसरे घर हो तो वर्षाऋतु में शीघ्र वर्षा हो ।

२-३ घर और केन्द्रों में शुभग्रह हो और इन भावों में पूर्ण जलराशि हो शुक्लपक्ष के प्रश्न में बहुत जल बरसे यदि कृष्णपक्ष हो तो बहुत ज्यादा नहीं बरसे ।

जब पूर्ण चंद्र लग्न में हो और पूर्ण जलराशि हो ।

वृष्टि—गुरु से सप्तम में पूर्वोदयी शुक्र हो तो वर्षाकाल में अतिवृष्टि हो ।

जब शुक्र या बुध सूर्य के आगे चले तब वर्षाकाल में बराबर वर्षा होती है ।

उदय लग्न में जलराशि हो और जलग्रहों से युक्त या दृष्ट हो तो वृष्टि होगी ।

छत्र लग्न पृष्ठोदय हो या आरूढ़ लग्न पृष्ठोदय ग्रह से दृष्ट हो या आरूढ़ लग्न में परिवेष सूक्ष्म इंद्रधनुष कोई हो ।

बहुत वर्षा—उदय लग्न चंद्र या शुक्र से युक्त या दृष्ट हो ।

उदय लग्न में ४-१०-११, १२ राशि हो ।

मिथुन सूर्य संक्रांति में ३, ६, ९, १२ राशि पर शुभग्रह हो ।

मिथुन संक्रांति में शुक्र और बुध २, ४ राशि के, चंद्र १२ राशि, गुरु ६ राशि में हों ।

इसके विरुद्ध अर्थात ६ राशि के शुक्र बुध, मीन का चंद्र और गुरु कर्क या वृष का हो ।

पूर्वोदय शुक्र मघा आदि ५ नक्षत्रों में एक नक्षत्र से दूसरे नक्षत्र पर जाय और पश्चिमोदयी स्वाती से ३ पर गमन करे ।

सूर्य के आगे और पीछे मार्गीग्रह समीप हो ।

चौथे घर में शुभग्रह हो ।

शुक्र और गुरु का उदय अस्त हो सब शुभग्रह जलराशि में हों ।

बहुत वर्षा हो—सूर्य और चंद्र ७, ४ या ८ घर में हों और शुक्र शनि लग्न से दूसरे तीसरे घर में हों ।

वर्षा हो—शुक्र के उदय में एवं आर्द्रा प्रवेश में वर्षा हो ।

अति वर्षा—लग्न या दशम में शुभग्रह हो या शुभग्रह चंद्र वहाँ हो ।

जलराशि में शुक्र और चंद्र हो ।

लग्न से चतुर्थ में शुक्र हो उस दिन अच्छा पानी बरसे ।

जलराशि में चंद्र गुरु शुक्र हो और आरूढ़ लग्न को देखते हों ।

धनभाव में शुभग्रह हो ।

छत्र लग्न पृष्ठोदय हो तथा पृष्ठोदय ग्रह से दृष्ट हो उस समय उसे परिवेष आदि देखें ।

जब शुक्र के समीप बुध हो ।

गुरु दूसरी राशि में जाने से पहिले वर्षा बहुत करते हैं ।

मंगल सूर्य के पीछे हो या एक राशि छोड़ दूसरी में जाय ।

जब चंद्र मंगल गुरु एक राशि में हों ।

जब ग्रह उदय हो या अस्त हो या वक्री हो जब संक्रांति हो या जब जल नाड़ी पुष्य पूर्वाफाल्गुनी शतभिष में हो ।

मंगल के आगे सूर्य हो ।

चंद्र लग्न में जलराशि में शुक्लपक्ष का चंद्र जलराशि का हो केन्द्र में शुभग्रह हो ।

शुक्लपक्ष का चन्द्र जलराशि में होकर लग्न या सप्तम में हो ।

तत्काल वर्षा—चन्द्र बुध गुरु या शुक्र स्वक्षेत्री मित्रक्षेत्री या उच्च में हो या ये ग्रह केन्द्र त्रिकोण के स्वामी हो ।

चन्द्र शुक्र के सप्तम में शुभ दृष्ट हो या शनि से त्रिकोण या सप्तम में हों तो वर्षा में शीघ्र वर्षा हो ।

चन्द्र से या लग्न से त्रिकोण में शुक्र ।

चन्द्र और शुक्र चौथे घर में हो ।

वर्षा हो—दूसरे घर में जलराशि में शुभग्रह हों और लग्न में शुक्लपक्ष का चन्द्र जलराशि का हो ।

वर्षा न हो—उदय लग्न में जलराशि न हो, जलग्रहों के अतिरिक्त अन्य ग्रहों से दृष्ट या युक्त हों तो वृष्टि नहीं होगी ।

उदय लग्न सूर्य मंगल, शनि राहु, इनमें से किसी से युक्त दृष्ट हो ।

बुध और शुक्र के मध्य में सूर्य हो ।

पूर्वोदय शुक्र मघादि ५ नक्षत्रों में एक से दूसरे में जावे तथा पश्चिमोदयी स्वाती से ३ पर गमन करे तो वर्षा होती है, जो ऐसा ही वक्र गति से करे तो वर्षा न हो ।

सूर्य के आगे मंगल हो ।

लग्न या दशम में पापग्रह हो तो वर्षा न हो, मिश्रितग्रह से मिश्रित फल हो ।

धन राशि में शनि राहु हो ।

केन्द्र में शनि राहु मंगल बुध हो पानी नहीं बरसे, बहुत हवा चले ।

अल्प वर्षा—उदय लग्न में बुध या गुरु हो या उसे देखे।

उदय लग्न में २, ७, ८ राशि हो।

सूर्य मंगल शनि राहु इनमें से किसी के साथ जलग्रह हो।

सूर्य के पीछे मंगल पहुँचे।

चंद्र जललग्न या जलराशि में हो वह पापग्रह से दृष्ट हो।

केन्द्र में पापग्रह और शुभग्रह मिले हों।

चंद्र और शुक्र पापग्रह से युक्त या दृष्ट हो।

दरयाई हवा चले—उदय लग्न जलराशि का हो पापग्रहों से आक्रांत हो।

बहुत दिनों में वर्षे—चन्द्र जलराशि में हो लग्न में पापग्रह की दृष्टि हो, ऐसे ही फल शुक्र से भी जानना।

बुध गुरु चंद्र शुक्र नीच के व शत्रुक्षेत्री हो या ८-१२ के स्वामी हों।

२-३ दिन में बरसे—चन्द्र और शुक्र दूसरे घर में हो तो २ दिन में। तीसरे घर में जल हो तो ३ दिन में बरसे।

बरसा विचार में सप्तनाड़ी चक्र

नाड़ी	स्वामी	नक्षत्र	नक्षत्र	नक्षत्र	नक्षत्र	
१ चंद्र	शनि	कृत्तिका	विशाखा	अनुराधा	भरिणी	याम्य
२ वायु	सूर्य	रोहिणी	स्वाती	ज्येष्ठा	अश्विनी	
३ दहना	मंगल	मृगशिर	चित्रा	मूल	रेवती	
४ सौम्य	गुरु	आर्द्रा	हस्त	पूर्वाषा०	उत्तर भा०	सौम्य
५ नीरा	शुक्र	पुनर्वसु	उत्तर फा.	उत्तरा षा.	पूर्व भा०	
६ जल	बुध	पुष्य	पूर्वा फा.	अभिजित	शत०	
७ अमृता शीतला	चंद्र	श्लेषा	मघा	श्रवण	घनिष्ठा	= मध्य

स्त्रीनक्षत्र —१० नक्षत्र—आर्द्रा, पुनर्वसु, पुष्य, श्लेषा, मघा, पू० फा०, उ० फा० हस्त, चित्रा, स्वाती।

नपुंसक नक्षत्र—३ नक्षत्र—विशाखा, अनुराधा ज्येष्ठा।

पुरुष नक्षत्र—१४ नक्षत्र-मूल, पू०षा०, उषा० श्रवण घनिष्ठा, शत० पूभा० उभा० रेवती, अश्विनी भरणी कृतिका रोहिणी मृगशिर।

वृष्टि विचार—स्त्री पुरुष का विचार सूर्य नक्षत्र और चंद्र नक्षत्र से करे। स्त्री-पुरुषयोग=महावृष्टि। स्त्री + स्त्री या पुरुष + पुरुष या स्त्री + नपुंसक नक्षत्रों में वर्षा नहीं होती है। इनमें एक सूर्य नक्षत्र और दूसरा चंद्र नक्षत्र लेकर विचार करे। स्त्री नपुंसक के योग में कहीं-कहीं वर्षा संभव है। स्त्री + स्त्री=बादलों की छाया रहती है। नपुंसक + नपुंसक =वर्षा नहीं होती है।

नाड़ी फल—पापग्रह याम्य नक्षत्र में और सौम्यग्रह सौम्य नक्षत्रों में और मध्यम ग्रह मध्यम नक्षत्र में हो तो अपने समान फल देते हैं। यदि २ या ३ आदि शुभ या पापग्रह एक नाड़ी में हो तो फल देते हैं।

यदि चंद्रनाड़ी हो—महाप्रचंड पवन। वायुनाड़ी=पवन। अग्निनाड़ी=अग्नि। सौम्यनाड़ी में=मध्यम फल। चंद्रनाड़ी में=महावृष्टि। अकेला भी ग्रह अपनी नाड़ी में हो तो फलदायक होता है।

जल बरसे—जिस ग्रह की नाड़ी में चन्द्र हो, उस नाड़ी के स्वामी से युक्त या दृष्ट हो।

जलनाड़ी में चन्द्र हो शुभ या पापग्रहों से युक्त हो जो आवे दिन १ दिन या ५ दिन जल बरसाते हैं।

चन्द्रनाड़ी में चन्द्र शुभ या पापग्रहों से युक्त हों तो जल बरसे।

यदि २-४-५ ग्रहों से युक्त चन्द्र हो तो २, ४ या ५ दिन वर्षा हो।

चन्द्र नीरनाड़ी में शुभ और पापग्रहों से युक्त हो तो प्रहर, दो प्रहर, १ दिन या ३ दिन तक वर्षा हो।

चन्द्र आदि ३ नाड़ियों में सब ग्रह हो तो १८, १२ तथा ६ दिन क्रम से वर्षा होती है।

सब ग्रह सौम्य नाड़ी में स्थित हो तो ३ दिन वर्षा हो।

अधिक शुभग्रहों का योग हो तो निर्जलनाड़ी भी जलदायक होगी और अधिक पापग्रह का योग होने से जलदायक भी निर्जल हो जाती है।

चन्द्र मंगल गुरु एक नाड़ी में हो तो बहुत वर्षा हो।

बुध शुक्र गुरु तथा चन्द्र एक नाड़ी में हो तो बहुत वृष्टि हो।

जब ग्रह उदय-अस्त व वक्री हो या संक्रांति में जलनाड़ी पर हो तो महा वृष्टि हो।

वर्षा नहीं—पापग्रह याम्य नाड़ियों में हो तो वर्षा नहीं हो।

जल लग्न, वर्षा—२-४-७-८-१०-११-१२ ये ७ जललग्न है। इनमें सूर्य नक्षत्र मिले तो वर्षा हो।

अधिक वृष्टि—अश्विनी, मृग, पुष्य, रेवती श्रवण, मघा, स्वाती इन नक्षत्रों में सूर्य प्रवेश करे तो अतिवृष्टि हो।

खेत से लाभ-हानि

विचार—लग्न=कृषिकर्ता। चतुर्थ=भूमि। सप्तम=कृषि। दशम=अन्न वृक्ष आदि। इन भावों से ग्रहों का बलाबल देखकर फल का निर्णय करना चाहिये।

खेती से लाभ—लग्न में शुभग्रह हो।

लग्न या छठें शुभग्रह, केन्द्र में उच्च के ग्रह हों, पापग्रह रहित हों और शुभग्रह से युक्त या दृष्ट हो।

अच्छी खेती—सप्तम स्थान में शुभग्रह हो।

अन्न आदि अच्छे हों—दशमेश दशम हो शुभग्रहों से युक्त या दृष्ट हो तो वृक्ष अन्न आदि अच्छे हों।

दशमेश १० या ७ घर में शुभग्रह युक्त या दृष्ट हो तो बगीचा खेत आदि में सफलता हो।

पुराने वृक्ष अच्छे रहें—दशमेश वक्री न हो कर अस्त हो।

बाल वृक्ष फलदायक हो—लग्न में दशमेश मार्गी हो।

कृषि खराब—सप्तम में पापग्रह हो तो अन्नादि अच्छे नहीं होंगे।

खेती छोड़े—चतुर्थ में पापग्रह हो तो समय पर राजा चोर आदि के डर से खेती छोड़ भाग जावे।

कृषि में चोर आदि उपद्रव—लग्न में पापग्रह हो तो कृषक को चोर आदि का उपद्रव होगा, हानि हो।

अन्न सूखे—वर्षा न होने से हानि तो कुछ होवे भी उसे राजा चोर आदि ले—यदि सप्तम में पापग्रह हो।

वृक्षों का नाश—चर लग्न दशमेश से दृष्ट हो।

वृक्ष खेत आदि नाश—वक्री दशमेश शुभग्रह हो और वक्रीग्रह से युक्त हो।

चोर से लाभ—लग्न में जो पापग्रह हो वह वक्री व अतिचारी न हो तो चोर से फिर भी लाभ हो। चोरी गई वस्तु मिले।

भूमि सम्बंधी किस्त (लगान) का विचार

विचार—लग्न=प्रश्नकर्ता। सप्तम=किराया किस्त या लगान आदि। दशम= उसकी उत्पत्ति। चतुर्थ=उसका परिणाम क्षय आदि भूमि सम्बन्धी महसूल किराया किस्त आदि के विचार में उपरोक्त भाव से विचार करे।

भूमिलाभ प्रश्न

भूमिलाभ—लग्नेश चंद्र और चतुर्थेश परस्पर इत्थशाली हो। व एक ही स्थान में हो तो भूमिलाभ हो।

ये पापग्रहों से युक्त या दृष्ट हों तो लाभ नहीं हो।

७ और १० वे भाव में शुभग्रह हो तो गई भूमि वापिस मिले।

यात्रा करने में भूमिलाभ—लग्नेश और चंद्र इन दोनों में जो चतुर्थ में हो दोनों में मुत्थशिल योग हो और वहा कोई अच्छा ग्रह हो।

धन-मान आदि युक्त प्राप्त—७, ५ और १ भाव में शुभग्रह हो तो कोई राजा या श्रीमान से धन-मान आदि सहित लाभ हो।

सफलता नहीं—११ और १२ घर में पापग्रह से लाभ नहीं।

हानि—लग्न में क्षीण चंद्र।

सफलता—दशम में पूर्ण चंद्र।

भाड़ा या किराया विचार

बहुत भाड़ा मिले—केन्द्र में शुभग्रह हो तो धनप्राप्ति हो। पापग्रह हो तो धनप्राप्त न हो।

विचार—लग्न=प्रश्न कर्ता। सप्तम=भाड़े का विचार। दशम=भाड़े का नफा (उपज)। चतुर्थ=अंतिम चुकाया। इनमें शुभग्रह हो तो लाभ पापग्रह से हानि हो।

शुभ—लग्न व लग्नेश शुभग्रह युक्त व दृष्ट हो तो भाड़ा सम्बंधी सब शुभ हो। यदि पापग्रह की योग दृष्टि हो तो सब अशुभ फल होगा।

अनर्थ—जो सप्तम में भी पापग्रह हो तो भाड़ा नहीं मिले अनर्थ हो।

कारखाना डूबे—चतुर्थ में पापग्रह हो तो भाड़ा के परिणाम में अर्थात अंत में कारखाना डूब जाय शुभ नहीं होता।

भाड़ा नहीं मिले—दशम में पापग्रह हो।

फसल विचार

विचार=वृश्चिक के सूर्य से ग्रीष्म की फसल और वृष के सूर्य से शरद की फसल का विचार करे।

शरदकाल के धान्य की वृद्धि—वृष के सूर्य के प्रवेश समय २, ११, ५, ८ राशियों पर शुभग्रह और ६-१०-७-४ राशि पर पापग्रह हो तो धान्य की वृद्धि हो।

वृषार्क प्रवेश समय चंद्र तथा गुरु बली होकर ५, ११, ८ राशि पर हो शुक्र १-३ राशि पर हो तो परम वृद्धि होती है।

अन्न नष्ट—वृषार्क प्रवेश में शुभग्रह निर्बल और पापग्रह उच्च के ९-८-२ राशि पर हों।

सूखा पड़े—वृषार्क प्रवेश समय ८-६-२ राशि पर पापग्रह हो या ३, ८, १ राशि पर पापग्रह शुभग्रह की योग दृष्टि रहित हो।

शरद का अन्न वृद्धि—मेषार्क प्रवेश में बुध और शुक्र मीन पर और चंद्र गुरु बलवान होकर केन्द्र में हों शुभग्रह से युक्त या दृष्टि हो।

ग्रीष्म के अन्न की वृद्धि—वृश्चिकार्क प्रवेश में ८-५-११-२ राशि पर शुभग्रह, केन्द्र तथा १०-१ राशि पर पापग्रह हो।

या चंद्र और गुरु ११-२ राशि में और बुध तथा शुक्र प्रथक, ७, ८ राशि पर हो।

या बुध तथा शुक्र ६ राशि में और केन्द्र में बली चंद्र तथा गुरु शुभग्रहों से युक्त या दृष्ट हो।

अन्न नाश—वृश्चिकार्क प्रवेश में शनि और मंगल ३ या २ राशि या ६, ७; ८ तथा ११ राशि पर हो।

सूखा पड़े—वृश्चिकार्क प्रवेश में ५ या ११ राशि पर मंगल या शनि और ११, २, ८ राशि पर राहु हो तो अन्न सूख जावे। यदि शुभग्रह की दृष्टि हो तो फसल नहीं सूखे।

अकाल-सुकाल विचार

बहुत अन्न—प्रश्नकाल या जगत लग्न अर्थात मेषार्क के समय के लग्न से जिस केन्द्र में शुभग्रह हो व जिस दिशा का स्वामी बली हो उसकी दिशा में बहुत अन्न होगा और रोगादि का उपद्रव भी नहीं होगा।

दिशाएँ-लग्न=पूर्व। चतुर्थ=उत्तर। सप्तम=पश्चिम। दशम=दक्षिण।

सस्ता और सुखदायक—मेषार्क के समय शुभ लग्नेश शुभग्रहों से युक्त दृष्ट हो। इसके विपरीत अर्थात् पाप लग्नेश पापग्रहों से युक्त या दृष्ट हो तो मंहगा हो अर्थात् दुर्भिक्ष हो।

सुकाल—सूर्य मेष-प्रवेश लग्न या प्रश्नलग्न का स्वामी शुभग्रह हो तथा उच्च स्वराशि का केन्द्र में शुभग्रहों से युक्त या दृष्ट बलवान हो तो इस वर्ष में संसार के सभी सुख हो शुभ अन्न हो, उत्तम वर्षा हो।

फसल अच्छी—सूर्य से शुक्र व बुध व दोनों २ या १२ घर में हों या दोनों स्थानों में हो गुरु की दृष्टि हो तो फसल अच्छी होगी।

ग्रीष्म का अन्न बहुत—मेषार्क प्रवेश में या प्रश्नलग्न में केन्द्रों में बलवान शुभ ग्रह युक्त या दृष्ट हो तो ग्रीष्मऋतु का अन्न बहुत हो।

५, ७, ८ राशियों में सूर्य शुभग्रह युक्त रहे तो ग्रीष्म की फसल बहुत हो और भाव सस्ता हो।

उक्त लग्न में सूर्य अष्टम हो तथा गुरु कुंभ का, चंद्र सिंह का वा गुरु सिंह का चंद्र कुंभ का हो तो उपरोक्त फल हो।

बहुत फसल—मेषार्क या प्रश्नलग्न सूर्य शुभग्रहों के बीच हो तथा सूर्य से सप्तम गुरु चंद्र हो तो बहुत अन्न होगा।

सस्ता अन्न—१, २, ३ राशि के लग्न में सूर्य शुभग्रह युक्त या दृष्ट हो तो ग्रीष्म का (जेठ-आषाढ़) का होने वाला अन्न सस्ता हो और यदि ९-१०-११ राशि के लग्न में सूर्य शुभग्रह युक्त या दृष्ट हो तो उन्हारी का

अन्न सस्ता हो। यदि सूर्योदय के समीप का प्रश्न हो। इनमें सूर्य यदि पापग्रह युक्त या दृष्ट हो तो मँहगा हो।

सुकाल—प्रश्नलग्न बलवान हो अपने स्वामीग्रह से और शुभग्रहों से युक्त दृष्ट हो तो अन्न सस्ता हो।

लग्न लग्नेश और चंद्र शुभग्रह युक्त या दृष्ट हो।

उदय लग्न और दशम उच्च के ग्रहों से दृष्ट हो।

वर्ष में पूर्ण सुख—पूर्णमासी में अमावस्या में, चंद्र और सूर्य के मेषराशि के प्रवेश समय में यदि लग्न का स्वामी शुभग्रहों से युक्त या दृष्ट हो तो उस वर्ष में पूर्ण सुख हो।

यदि लग्नेश पापग्रहों से युक्त या दृष्ट हो तो रोगमय, राजमय होता है।

यहां लग्न जिस पापग्रह से युक्त दृष्ट हो उसके रोग धातु से रोग हो।

अन्न अच्छा—प्रश्नलग्न से व सूर्य से ११-४-२ स्थानों में बुध चंद्र शुक्र हो तो अन्न अच्छा होता है।

दशम में घन का गुरु हो तो उपरोक्त फल हो।

अन्न हो भाव घटे—वृश्चिक के सूर्य से ६-७ स्थानों में यदि पापग्रह हो तो अन्न तो होगा परन्तु भाव घटेगा।

भाव सस्ता—उदय लग्न और दशम में शुभग्रह हो।

अन्न और रोग—कुंभ का गुरु, वृष का चंद्र, वृश्चिक का सूर्य और शनि मंगल मकर के हों तो अन्न अच्छा होगा परन्तु बाद को रोग का भय हो।

रोग अकाल—जिस दिशा में शनि पाप युक्त या दृष्ट हो वहां दुर्भिक्ष और रोगादि उपद्रव होंगे।

अन्न नाश—जिस दिशा में सूर्य पापयुक्त दृष्ट हो वहां राजा द्वारा अन्न का नाश हो। यदि वहां मंगल हो तो अग्नि भय और अन्न का नाश हो।

अनिष्ट—जिस दिशा में निर्बल शुभग्रह हों अनिष्ट हो, बली पापग्रह भी हों तो मिश्रित फल।

अकाल—मेषार्क प्रवेश या प्रश्नलग्न का स्वामी पापग्रह हो, पापाक्रांत बल रहित हो तो राजभय हो अन्न थोड़ा हो भाव मंहगा हो।

थोड़ी फसल—सूर्य शुभ और पाप दोनों ग्रहों के बीच हो, यदि गुरु दूसरे में हो तो आधी फसल हो।

अन्न नाश—वृश्चिक का सूर्य पापग्रहों के बीच हो तथा सप्तम में पापग्रह हो।

फसल नष्ट—सप्तम केन्द्र में वृश्चिक के सूर्य से २ पापग्रह हों तो फसल नष्ट हो यदि शुभग्रह की दृष्टि हो तो कहीं-कहीं फसल अच्छी भी होगी।

थोड़ा अन्न भाव तेज—जो ५, ६, ७ राशियों में सूर्य निरंतर पापयुक्त दृष्ट

रहे तो ग्रीष्म की फसल का और ९-१०-११ राशियों में निरन्तर सूर्य पापयुक्त रहे तो शरद की फसल का अन्न थोड़ा हो और भाव तेज रहे।

मंहगा—लग्न लग्नेश और चन्द्र पापग्रहों से युक्त हो।

अन्न का काल—लग्न निर्बल और केन्द्रों में पापग्रह हो।

दुर्भिक्ष—गुरु की राशि में शनि और शनि की राशि में गुरु हो।

मंहगा—उदय लग्न और दशम नीच का या शत्रुक्षेत्री ग्रह से दृष्ट हो तो मंहगा हो। यदि स्वगृही या मित्रगृही ग्रहों से दृष्ट हो तो भाव मध्यम रहे।

पहिली फसल नष्ट—दूसरे स्थान में पापग्रह शुभदृष्टि रहित हो तो पहिले वोई खेती नाश हो, दूसरी बार जुताई कर बोने से अन्न हो।

वस्तुओं की हानि-वृद्धि-महगाई आदि

अधिष्ठाता ग्रह व इनके पदार्थ

(१) सूर्य—मोती, चुन्नी, सुवर्ण तांबा, रेशम, वस्त्र, परस्त्री आदि।

(२) चंद्र—मोती, ऊख, शंख, रस की वस्तु नारियल आम चांदी आदि। लवण आदि।

(३) मंगल—मसूर तांबा शिगरफ हरताल आदि धातु वस्त्र मूंगा।

(४) बुध—सुगंधित द्रव्य वस्त्र द्विदल अन्न पन्ना पक्षी।

(५) गुरु—राई सरसों आदि गेहूँ जौ, ईख का विकार सिंघाड़े कसेरू आदि जल उत्पन्न वस्तु और कपूर।

(६) शुक्र—इतर-फुलेल आदि सुगंधित द्रव्य, अन्न, विचित्र वस्त्र, चांदी जलज वस्तु, स्फटिक।

(७) शनि—ऊन-पश्मीना, नील, चर्म, कृष्णवस्त्र। लोहा, भैंसा आदि।

जिस कार्य या वस्तु का जो स्वामी है उसके निमित्त स्वामी का बल जान कर बल के अनुसार का हानिवृद्धि विचार करे।

लग्न और अधिष्ठातृ ग्रह बली हो या बलहीन हो तो लग्नेश का बल देखना चाहिये।

राशि के अनुसार भी विचार होता है—

(१) मेष—वस्त्र दुशाला आदि मसूर, सोना, राल, जल स्थल संभव औषधि।

(२) वृष—पुष्प, शालि, जव बैल महिष।

(३) मिथुन—धान्य शरद चावल आदि कपास।

(४) कर्क—दूर्वा फल कैथ।

(५) सिंह—सिंह तुष, धान्य धान आदि रस त्वचा चर्म नून।

(६) कन्या—अलसी, कनक, मूंग।

(७) तुला—माष सरसो जव ।
(८) वृश्चिक—गन्ना लोहा ।
(९) धन— अश्व, लवरण शस्त्र तेल ।
(१०) मकर - वृक्ष गुल्म सुवर्ण लोहा ।
(११) कुंभ—जलोत्पन्न वस्तु सिंघाड़ा आदि पुष्प फल रत्न ।
(१२) मीन —वज्र स्नेह जलोत्पन वस्तु ।

विचार—जिस राशि से १, ५, ६, ४, ७, १०, ११ घर में गुरु हो उस राशि के पदार्थ सस्ते होंगे । शुक्र ६-७ स्थान में नाशक है । इतर स्थानों में वृद्धि करता है ।

सस्ता —उच्च ग्रहों से युक्त या दृष्टि हो तो वह वस्तु सस्ती होगी । नीच ग्रहों से युक्त या दृष्टि से मंहगी होगी ।

यहां लग्न से आरूढ छत्र लग्न का उक्त प्रकार के ग्रहों में युक्त या दृष्टि का भी विचार करे ।

यदि मित्रग्रह व स्वामी से युक्त दृष्टि हो तो मध्यम फल । यदि शत्रु आदि से युक्त या दृष्ट से अधम फल जानना ।

सस्ता या मँहगा—शुभग्रहों से युक्त दृष्टि से सस्ता । पापग्रह की योग दृष्टि से मँहगा ।

दुर्भिक्ष-सुभिक्ष—वर्ग से प्राप्त पिंडांक ÷ ३=१ शेष=दुर्भिक्ष । २=समता (न दुर्भिक्ष और न सुभिक्ष) शेष०=दुर्भिक्ष ।

कितने महीने सस्ता या मँहगा=लग्न में उच्च के व स्वगृही या मित्रक्षेत्री शुभग्रह रहें उतने महीने सस्ता और पापग्रह लग्न में रहने से उतने महीने मँहगाई हो ।

सब वस्तु सस्ती—बलवान लग्न अपने स्वामी से युक्त या दृष्ट हो और चारों केन्द्रों में शुभग्रह हो तो सस्ता लग्न निर्बल केन्द्रों में पापग्रह हो तो मँहगाई हो ।

कितने दिन मँहगाई— लग्न या छठे भाव में पापग्रह पापदृष्ट जितने दिन रहें उतने दिन मंहगाई रहे ।

मंहगाई आदि—अषाढ़कृष्ण १० या ११ या १२ तिथि रोहणी हो तो क्रमानुसार १० में सुभिक्ष ,११ में मध्यम, १२ में दुर्भिक्ष हो ।

और रात्रि मेघरहित हो प्रातःकाल मेघ गजें मध्याह्न में बूंदें पड़े जिस सन्बन्ध में हो उसमें महर्घता जानिये ।

राजभंगादि अकाल—यदि शनि रवि मंगल इनमें से किसी वार को अमावस्या हो और अश्वनी या स्वाती नक्षत्र हो और आयुष्मानयोग भी हो यदि ये

सब इकट्ठे हों जो ऐसे योग में पशु-पक्षी स्थावर जंगम व राजा व प्रजा सबका नाश हो राज्यभंग हो।

अमुक धान्य की मंहगाई विचार—धान्य के नामाक्षर + संक्राति की घड़ी + गततिथि + वार + नक्षत्र ÷ ३=अन्यमत=संक्रांति की घड़ी + १×७ ÷ ३शेष १=धान्य को सस्ती हो। २=साधारण। ३=मंहगा हो।

स्वरोदय से विचार

चैत्रशुक्ल १ को—चैत्र शु० प्रतिपदा की प्रातः अपने स्वरों व तत्वों से वर्ष भर के शुभाशुभ फल का विचार करे।

सुभिक्ष - चंद्र स्वर के उदय समय यदि पृथ्वी जल या वायुतत्व वहे तो सब अन्नादि का सुभिक्ष होगा।

दुर्भिक्ष--चंद्र स्वर में अग्नि या आकाशतत्व बहे तो दुर्भिक्ष हो।

विचार—इसी प्रकार समय के तत्वानुसार वर्ष मास और दिन में भी सम्पूर्ण तत्वों का फल विचारे।

रोग-क्लेश आदि—सुषुम्ना नाड़ी क्रूर और सब कर्मों में दुष्ट है। देश का भंग महारोग क्लेश आदि अत्यंत दुःखदायक है।

मेष संक्रान्ति—मेष संक्राति के समय स्वर को विचारे फिर तत्वों के विचार से संवत्सर का फल जाने। पृथ्वीतत्व आदि से दिन, मास और वर्ष का शुभफल विचारे।

तत्व विचार—मेष संक्राति के दिन तत्व चले उसका फल पृथ्वी=सुभिक्ष, देश की वृद्धि, बहुत अन्न, अतिवृष्टि, अतिसुख।

जल—अतिवृष्टि सुभिक्ष आरोग्य सुख, बहुत खेतो हो।

अग्नि—दुर्भिक्ष, देशभंग अल्पवृष्टि, पैदावार का नाश।

वायु—उत्पात, उपद्रव, ईति, भीति, अल्पवृष्टि।

आकाश—सुख एवं शस्य आदि की अल्पता (कमी)।

धान्य संग्रह लाभ—तत्वों के उदय समय सूर्य व चंद्र स्वर विपरीत हो जाय चंद्र के योग में सूर्य के योग में चंद्र हो जाय तो अन्न के संग्रह से लाभ हो।

यदि दक्षिण स्वर में अग्नि तत्व हो या केवल आकाश तत्व हो उस समय वस्तुओं के संग्रह से २ मास में मंहगा अन्न हो लाभ हो।

यदि रात्रि समय सूर्य नाड़ी वहे और प्रातःकाल के समय चंद्र नाड़ी वहे उस समय पवन अग्नि तत्व हो तो बड़ा अनर्थ हो।

कूप के लिये भूमि झिर (सोती) आदि विचार

झिर निकले--उदय लग्न आरूढ़ लग्न से चतुर्थ स्थान में २, ४, ७, ८, १०, ११, १२ राशि में से कोई हो तो झिर (सोती) निकलेगी।

बहुत जल—केन्द्र में शुक्र या चंद्र हो तो बहुत जल निकले।

चतुर्थघर और आरूढ़ में उपरोक्त में से कोई राशि चंद्र या शुक्र से युक्त या दृष्ट हो तो बहुत जल निकले।

केन्द्र शनि या राहु से युक्त या दृष्ट हो तो एक झिर में बहुत जल निकलेगा। योग कारक ग्रह जिस राशि में है उसके स्वभाव अनुकूल और उसकी दिशा के अनुसार जल का विचार करे।

केन्द्र में चंद्र गुरु से युक्त या दृष्ट हो तो अपार जल निकले।
आरूढ़ और चतुर्थ राहु से युक्त या दृष्टि हो तो उक्त फल।
यदि केन्द्र में चंद्र शुक्र से युक्त या दृष्ट हो तो परिमित जल मिलेगा। यह फिर उस कोठे में निकलेगी जिस नक्षत्र के चक्र में गुरु पर शुक्र हों।
जलज्ञान के लिये कूपखात चक्र आगे दिया है।
चंद्र केन्द्र में परिवेग से युक्त या दृष्ट हो तो अपार जल।

बहुत ऊपर जल—उदय आरूढ़ और चौथे स्थान में जल राशियाँ और जल ग्रह हो तो थोड़ा खोदने से ही बहुत जल निकले।
उदय लग्न में राहु आरूढ़ में जल लग्न और छत्र में शेष ग्रह हो तो उपरोक्त फल।

जल ग्रह छत्र में हो तो उपरोक्त फल।

गहराई में झिर—आरूढ़ लग्न में जलग्रह हो तो फिर गहरे खोदने से मिलेगी।

जल मध्यम आरूढ़ और चतुर्थ घर गुरु बुध युक्त दृष्ट हो तो जल खोदने में साधारण निकलेगा।

जल नहीं—यदि उदय आरूढ़ और चतुर्थ में पापग्रह शनि मंगल सूर्य हो तो जल नहीं मिले।

झिर बहुत दूर—छत्र लग्न में जलग्रह हों आरूढ़ में शेष ग्रह हो तो बहुत खोदने पर नीचे झिर निकले।

जो जलराशि में जल ग्रहों से भिन्न ग्रह हों तो बहुत खोदने पर झिर नीचे मिले।

जल कितने गहरे पर हैं

जिस ग्रह से प्रकट हुआ कि नीचे जल है, उस ग्रह की जितने किरणें हों और जिस राशि पर वह ग्रह हो उस ग्रह की किरण दोनों का योग करना, उतने बित्ते गहरे पर जल होगा। उच्च का ग्रह=बीता। स्वक्षेत्री=उतना हाथ। मित्रक्षेत्री=उतना पुरुष। नीच या शत्रुक्षेत्री=अगाध जल नीचे हैं।

कुआं खोदने से नीचे मिट्टी आदि क्या निकलेगी

पत्थर निकले—केन्द्र गुरु से युक्त या दृष्ट हो तो पत्थर आदि ।
हड्डी–जो अन्य ग्रह युक्त दृष्टि केन्द्र हो तो हड्डी ।
खारी भूमि—केन्द्र सूर्य युक्त या दृष्ट हो ।
कड़ी जमीन – ये ग्रह परिवेष से युक्त या दृष्ट हो ।
चट्टान—कन्या राशि पर राहु हो तो चट्टान, शनि हो तो टीरिया निकले ।
काम का पुराना कुंआं – चन्द्र बुध या गुरु से युक्त या दृष्ट हो ।
बेपथरीलीमिट्टी–केन्द्र बुध से युक्त या दृष्ट हो ।
सफेद मिट्टी–केन्द्र मंगल से युक्त या दृष्ट हो ।
खसरीली मिट्टी–बुध से युक्त या दृष्ट केन्द्र हो ।
कीचड़ युक्त जल—चन्द्र या शुक्र के अतिरिक्त अन्य ग्रहों से केन्द्र युक्त या दृष्ट हो ।
शुद्ध जल–केन्द्र चन्द्र या शुक्र से युक्त या दृष्ट हो ।
बगल में झिरने—३, ५, ६ राशियां केन्द्र में हों ।

जल कैसा निकलेगा

अच्छा जल–केन्द्र में गुरु चन्द्र हो या इनसे दृष्ट हो ।
थोड़ा खारा—केन्द्र में चन्द्र बुध हो या इनसे दृष्ट हो ।
कसेला जल—केन्द्र में शुक्र से बुधयुक्त हो ।
खारा जल–केन्द्र में सूर्य परिवेष और धनुष हो ।

जल ज्ञान हितार्थ कूपखात चक्र

(१) प्रातः से मध्यान्ह तक

पूर्व

अश्व → भर. → कृति → रोहि० → मृग ↓ विशा → अनु.
रेवती श्ले ← पुष्य ← पुन ← आर्द्रा स्वा. ↑ ज्ये. ↓
उत्तर उभा ↑ मघा → पूफा → उफा → हस्त → चित्रा ↑ मूल ↓ दक्षिण
पूभा शत ← धनि. ← श्र० ← अभि. ← उषा ← पूषा

पश्चिम

(२) मध्यान्ह से सायंकाल तक

दक्षिण

	पुष्य	श्लेषा	मघा	पूफा	उफा	श्रवण	धनि	
	पुन	विशा	स्वाती	चित्रा	हस्त	अभि	शत	
पूर्व	आर्द्रा	अनु	ज्येष्ठा	मूल	पूषा	उषा	पूभा	पश्चिम
	मृग	रोह	कृति	भरणी	अश्वि	रेवती	उभा	

उत्तर

(३) सायं से अर्द्धरात्रि तक

पश्चिम

स्वा वि |अनु| ज्ये मूल भर कृत

चित्रा श्र. अभि उषा पूषा अश्वि रोह

दक्षिण हस्त धनि शत पूभा उभा रेव. मृग उत्तर

उफा पूफा मघा श्ले. पुष्य पुन. आर्द्रा

पूर्व

४) अर्द्धरात्रि से प्रातः तक

उत्तर

अभि श्र. |धनि| शत पूभा श्ले. मघा

उषा भर अश्व रेव. उभा पुष्य पूफा

पश्चिम पूषा कृति रोहि. मृग आर्द्रा पुन. उफा पूर्व

मूल ज्ये. अनु वि. स्वा चित्रा हस्त

दक्षिण

चक्र १ में एक चौखटे के भीतर कृतिका दिया है उसके आगे क्रमानुसार नक्षत्र किस प्रकार लिखे गये हैं वह तीर के चिन्ह द्वारा बता दिया गया है, उसी क्रम से शेष चक्रों को ऊपर बताये अनुसार भर लेना चाहिये।

दिनमान को आधा कर ऊपर के चक्र १-२ भर लेना रात्रिमान को आधार कर रात्रि के २ चक्र भर लेना। ये चक्र ७ नक्षत्रों के अंतर से बने हैं। आरंभ में ३ (कृतिका) + ७=१० मघा + ७=१७ अनुराधा + ७=धनिष्ठा।

इष्ट समय का चक्र बनाने को दिनमान को आधा कर ७ का भाग देना जो लब्धि आवे चक्र में बताये नक्षत्र के उतना और गिनो जो नक्षत्र आवे उसको आरंभ स्थान में रखकर बताई रीति के अनुसार चक्र भर लो और जिस नक्षत्र पर जो ग्रह हो स्थापित कर दो। रात के चक्र में रात्रिमान को आधार कर ७ का भाग देने से लब्धि प्राप्त हो उतना और आगे गिन कर वह नक्षत्र आरंभ में रखकर चक्र बना ले।

उदाहरण—जैसे दिनमान २९-२५ है। ७ का भाग दिया तो लब्धि ४ आई शेष और बच रहा था। इससे लब्धि ५ माना मध्यान्ह के बाद का है तो मघा आरंभ का नक्षत्र १०+५=१५वां नक्षत्र स्वाती आया। इससे स्वाती से आरंभ कर पूरा चक्र बना लेना। जिस स्थान पर कुआ

खोदना है। उस स्थान के नाप के अनुसार एक नकशा बना कर ये चक्र के अनुसार नक्षत्र और ग्रह लिख लेना चाहिये।

चक्र में जहां चंद्र हो वहां जल ज्यादा होगा। शुक्र नक्षत्र के कोठे में भी जल होगा। गुरु नक्षत्र के कोठे में कहा जाता है स्वर्ण आदि होगा। ७, २, ४, ११, ८, १२ ये राशियां जल रूप वहुत है। इनके उदय में जल है। उस स्थान में चंद्र शुक्र हो तो जल वहुत है। बुध गुरु लग्न में हो तो थोड़ा जल है। इनमें यदि शनि सूर्य मंगल देखे तो जल नहीं है। यदि इनको राहु देखे तो जल बहुत है। प्रश्न कुंडली की जो लग्न हो और लग्न का जो नक्षत्र हो उस नक्षत्र का लग्न लिख देना चाहिये। नीचे उदय आरूढ़ और छत्र पर स्थित हो और जल ग्रह से युक्त या दृष्ट हों तो नीचे जल है। राशि पर जो ग्रह हैं उर्द्ध दृष्टि वाले हों तो ऊपर जल है। ऊपर और नीचे पापग्रह हों तो जल नहीं है। चक्र में दिये ऊपर नीचे का विचार ऊपर नीचे की पक्ति से करना चाहिये।

शल्य (दफीना-निधि) विचार

शल्यचक्र

पूर्व

	अश्व.	भर.	कृति.	रो.	मृग	विशा	अनु.	
	रेवती	श्ले.	पुष्य	पुन.	आर्द्रा	स्वा.	ज्ये.	
उत्तर	उभा.	मघा	पूफा.	उफा.	हस्त	चित्रा	मूल	दक्षिण
	पूभा.	शत	धनि.	श्र.	अभि	उषा	पूषा	

पश्चिम

जहां कृतिका लिखा है उसका ऊपर चौखट बना दिया है वहीं से चक्र में नक्षत्र लिखना आरंभ कर ऊपर बताये दिशा की ओर क्रमानुसार नक्षत्र अभिजित सहित लिख लेना। यह चक्र प्रातः २ १/७ घड़ी के भीतर का है। इस प्रकार ६० घड़ी में २८ चक्र बनेंगे ६० घड़ी ÷ २८ नक्षत्र = २ १/७ घड़ी = १५/७ अर्थात इष्टघड़ी में ७ का गुणा कर १५ का भाग देना जो लब्धि आवे कृतिक ३ में जोड़ देना जो योग आवे उस क्रम के नक्षत्र को कृतिका ३ के स्थान में रखकर आगे उपरोक्त नियम से क्रमानुसार सब नक्षत्र लिख देना और उन पर जो ग्रह हो लिख देना विशेष कर चंद्र जिस नक्षत्र पर हो उसे लिख देना चाहिये।

खंड	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०
इष्ट	२ १/७	४ २/७	६ ३/७	८ ४/७	१० ५/७	१२ ६/७	१५	१७ १/७	१९ २/७	२१ ३/७
नक्षत्र	कृ.	रो.	मृ.	आ.	पुन	पु.	श्ले.	म	पूफा	उफा

खंड	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९
इष्ट	२३$\frac{४}{७}$	२५$\frac{५}{७}$	२७$\frac{६}{७}$	३०	३२$\frac{१}{७}$	३४$\frac{२}{७}$	३६$\frac{३}{७}$	३८$\frac{४}{७}$	४०$\frac{५}{७}$
नक्षत्र	हस्त	चि.	स्वा.	वि	अनु.	ज्ये.	पू	पूषा	उषा

खंड	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८
इष्ट	४ $\frac{६}{७}$	४५	४७$\frac{१}{७}$	४९$\frac{२}{७}$	५१$\frac{३}{७}$	५३$\frac{४}{७}$	५५$\frac{५}{७}$	५७$\frac{६}{७}$	६०
नक्षत्र	अभि	श्र.	ध.	शत	पूभा	उभा.	रेवती	अश्व	रेवती

घटी	पल	घ.	प.	घ.	प	घ.	प	घ.	प	घ.	प.
$\frac{१}{७}$=	८$\frac{४}{७}$	$\frac{२}{७}$=	१७$\frac{१}{७}$	$\frac{३}{७}$=	२५$\frac{३}{७}$	$\frac{४}{७}$=	३४$\frac{२}{७}$	$\frac{५}{७}$=	४२$\frac{६}{७}$	$\frac{६}{७}$=	५१$\frac{३}{७}$

इस प्रकार इष्ट के अनुसार कौन नक्षत्र आया ऊपर चक्र में बताया है उसके अनुसार उपरोक्त वही नक्षत्र कृतिका के स्थान पर लिख कर आगे के क्रमानुसार उपरोक्त रति से भर लेना चाहिये।

प्रश्न समय जिस नक्षत्र पर चंद्र हो पंचांग देखकर लिखा देना चाहिये। जहां चंद्र है उसी स्थान के नीचे शल्य होगा।

जिस स्थान पर शल्य जानना है उसका नक्शा बना कर छोटे पैमाने का उपरोक्त शल्य चक्र बना लेना चाहिये।

शल्य के कुछ योग

शल्य है या नहीं—केन्द्रों में शुभग्रह हो तो शल्य है। पापग्रह हों तो नहीं है। शुभ और पाप दोनों हो तो शल्य है।

केन्द्र में शुभग्रह हों और बली पापग्रह की दृष्टि हो तो उस क्षेत्र में शल्य मिलेगा। परन्तु पापग्रह हो तो देव-यक्ष-पिशाच आदि वहां है यह जानना।

हड्डी आदि—केन्द्र में गुरु से युक्त या दृष्ट चन्द्र हो तों गुरु के नक्षत्र के कोंठे में गाय या मनुष्य की हड्डी या ईंट या सुवर्ण मिले। जिस कोठे में गुरु है उसके नीचे वस्तु है।

देवमूर्ति— केन्द्र में चन्द्र सूर्य से युक्त या दृष्ट हो तो सूर्य के कोठे के नीचे देव-मूर्ति है।

भैंसा की हड्डी—केन्द्र में चन्द्र शनि युक्त या दृष्ट हो तो शनि जिस कोठे में है उस नक्षत्र के नीचे भैंसा की हड्डी है।

कुत्ते की हड्डी-केन्द्र में चन्द्र बुध से युक्त या दृष्ट हो तो बुध के कोठे के नीचे कुत्ते की हड्डी मिले।

चांदी—केन्द्र में चन्द्र शुक्र से युक्त या दृष्ट हो तो शुक्र के कोठे के नीचे चांदी या सफेद पत्थर मिले।

भेड़ की हड्डी—केन्द्र में चन्द्र मंगल से युक्त या दृष्ट हो तो जिस नक्षत्र पर मंगल है, उस कोठे के नीचे भेड़ की हड्डी मिले या चीटियां मिले।

बामी आदि-लग्न या आरूढ़ से केन्द्र में राहु हो तो जिस नक्षत्र पर राहु हो उस कोठे में बामी या दीप मिले।

विपत्ति या सुख—प्रश्नकाल में केन्द्र पापग्रहों से युक्त या दृष्ट हो तो विपत्ति होगी। शुभग्रहों के युक्त या दृष्ट से ऐश्वर्य प्राप्त हो। यदि मिश्रित ग्रह हों तो दोनों प्रकार के मिश्रित फल हो।

सौख्य-इष्टकाल में दशमस्थान शुभग्रहों से युक्त या दृष्ट हो तो उस स्थान में सौख्य हो। यदि पापग्रहों से दशम युक्त या दृष्ट हो तो उस स्थान में भूत-पिशाच-देव आदि बाधा जाननी चाहिये।

वहां धन है—लग्नेश सप्तमेश का परिवर्तन योग हो ग्रौर दोनों में इत्थशाल होता है तो वहां शीघ्र धन प्राप्त सम्भव है।

उस जगह धन है-लग्नेश केन्द्रस्थग्रह के साथ इत्थशाल करे।

खोदने में मिलेगा– केन्द्र में पापग्रह न हो चन्द्र और लग्नेश का इत्थशाल हो।

धन है—पूर्ण चन्द्र केन्द्र में या २–११ घर में हो ग्रौर शुभग्रह से इत्थशाल करता हो।

थोड़ा धन मिले— लग्नेश व चन्द्र में होकर दशम के ग्रह से इत्थशाल करे।

कोई खोदकर ले गया-लग्नेश पाप एवं शुभग्रह से युक्त केन्द्र में हो।

वहां धन है खोदने में भय होगा-चन्द्र पापग्रह के साथ केन्द्र में हो और पाप-ग्रह से इत्थशाल करे, पापग्रह केन्द्र या ग्रष्टम में हो।

कितने हाथ खोदने से मिले-चन्द्रमा से चतुर्थेश जितने ग्रंशों से दूर चला गया हो उतने हाथ नीचे है।

चंद्रमा ग्रौर लग्नेश से चतुर्थेश का जितने ग्रंशों का ग्रन्तर हो उतने हाथ भूमि खोदने से मिलेगा।

जमीन खोदने पर भीतर क्या मिलेगा

प्रश्न समय मनुष्य की छाया पांव से नापकर उसमें उदय लग्न की संख्या और २८ मिलाकर योग में १३ से गुणाकर १६ का भाग दे। शेष १= कपाल निकले। २=हड्डी। ३=ईंट। ४=ठीकरी। ५=लकड़ी। ६=मूर्ति। ७=राख। ८=कोयला। ९=मृतकशरीर। १०=नाज। ११=धन। १२=पत्थर। १३=मेंढ़क। १४=सींग। १५=मरा कुत्ता। १६=मनुष्य का बाल। इसमें धन-धान्य अशुभ है। शेष शुभ है।

अन्यप्रकार

पैर की छाया + २८ ÷ १६ = शेष उपरोक्त फल,

केवल अंतर ८=मुर्दा।९=कोयला। १४=गाय की हड्डी। १६=मूत आदि।

शल्य जनाने का अन्य प्रकार

प्रश्नकाल का लग्न जो है उसमें कौन नक्षत्र आता है देखो वह नक्षत्र उपरोक्त शल्यचक्र में जहां कृतिका लिखा है वही नक्षत्र लिखकर आगे क्रमानुसार नक्षत्र उपरोक्त विधि से भरकर उसमें ग्रह भी लिख दें। जिस नक्षत्र पर चंद्र हों उस स्थान में शल्य होगा। चक्र में भरने का क्रम यहां अंकों में देकर बताया है उस क्रम से नक्षत्र क्रमानुसार लिख लेना चाहिये। जहां १ दिया है वहां से लिखना आरम्भ करना चाहिये।

२७	२८	१	२	३	१४	१५
२६	७	६	५	४	१३	१६
२५	८	९	१०	११	१२	१७
२४	२३	२२	२१	२०	१९	१८

शल्य की गहराई

शंकास्थान की लम्बाई चौड़ाई गज (२ हाथ) से नापकर लम्बाई चौड़ाई का गुणा करने से वर्ग गज में २८ का भाग दे लब्धि गज आयगा शेष के भी बित्ता आदि निकाल ले २ बित्ता का एक हाथ। ४ गिरह=१ बित्ता। इस प्रकार लब्धि गज हाथ बित्ता आदि जो प्राप्त हो उतने गहराई पर शल्य मिलेगा।

अन्य प्रकार—शल्यसूचक ग्रहों की किरणें और उस राशि की किरणें जिस पर यह ग्रह हो जोड़ने से जो प्राप्त हो उतने नीचे शल्य है। उच्च क्षेत्री ग्रह=उतने बित्ता। स्वगृही हो=हाथ। मित्रगृही=पुरुष। शत्रु या नीचक्षेत्री= बहुत गहराई पर मिले।

कुंडली जीवित या मृतक की है

जन्मलग्न + अष्टमलग्न + प्रश्नलग्न=योग × अष्टमेश ÷ लग्नेश की राशि =शेष-विषम=जीवित।

कुंडली जीवित या मृत की है (अन्यमत)—

जन्मलग्न + अष्टम की राशि + प्रश्न लग्न × जन्म के अष्टमेश की राशि=शेष विषम=जीवित, सम=मृतक की।

अन्यप्रकार=जन्म लग्न + प्रश्नलग्न + जन्म अष्टमेश की राशि × अष्टमेश की राशि ÷ प्रश्न समय जिस नक्षत्र में हो वह संख्या=शेष विषम= जीवित, सम=मृत जाने।

स्त्री या पुरुष की कुण्डली है

सूर्य की राशि + राहु की राशि + लग्न की राशि अंक के योग में ÷ ४= शेष सम०—२=स्त्री। विषम १-३=पुरुष।

लग्न + सूर्य + राहु के राशि अंक ÷ ३० शेष विषम=स्त्री। सम=पुरुष। प्रश्न के वर्ण और मात्रा का योग + वर्तमान तिथि + वार + नक्षत्र ÷ ७= शेष सम=स्त्री। विषम=पुरुष।

मेरा जन्मनक्षत्र क्या होगा मुझे मालूम नहीं

(१) आरूढ़ से उदय लग्न तक संख्या × २ इन तीनों को जोड़कर
(२) उदय लग्न के दूसरे घर से मेष तक संख्या २७ का भाग देने से
(३) और वृष के आरूढ़ के १२ वें घर तक संख्या जन्म नक्षत्र होगा।

इत्थशाल आदि योग

ताजिकोक्त १६ योग फारसी भाषा के हैं जिसका वर्णन उदाहरण सहित वर्षफल खंड में दे दिये गये। जिनका उपयोग फलित में कई स्थान पर उपयोग हुआ है। प्रश्नखंड में भी उनका उपयोग हुआ है आशा है कि पाठक वर्षफलखंड में उसका अध्ययन कर चुके होंगे। प्रश्नखंड में मुथशिल (इत्थशाल) और इशराफ योग का उपयोग हुआ है उनको यहां भी दे देते हैं जिनको अच्छी प्रकार समझ लेना चाहिये।

मुथशिल—मुंथशिल=इत्थशाल=इत्तिसाल=प्राप्त करना ये शुभ योग हैं यह संयोजक है। इसके ४ भेद हैं।

मुंथिशल (इत्थशाल)=मिलाप

इस योग में पहिले यह देखना चाहिये कि ग्रह शीघ्र या मंदगामी है और ग्रह के वर्तमान में कितने अंग हैं।

शीघ्र गति ग्रह— दो ग्रहों में से जिसकी गति अधिक हो वह शीघ्रगति वाला ग्रह है।

मंद गति ग्रह—दो ग्रहों में से जिसकी गति अल्प हो (मंद हो) वह मंदगति वाला ग्रह है।

यहां वर्तमान में गोचर के अनुसार पंचांग में जो ग्रह की गति दी हो वही गति लेना चाहिये।

मंदगति वाला ग्रह बहुत अंश का होकर आगे हो और शीघ्रगति वाला ग्रह अल्प अंश होके पीछे हो और दोनों ग्रहों की दृष्टि दीप्तांश के भीतर हो तो मुथशिल योग होता है। इसमें शीघ्रगति ग्रह अपना तेज (सामर्थ्य) मंदगति ग्रह को दे देता है। धनभाग=बहुत अंश। मंद भाग =अल्प अंश।

ग्रहों की गति=एक राशि में चलने का समयः—

चंद्र	सूर्य	बुध	शुक्र	मंगल	गुरु	शनि
२१	३०	३०	३०	४५	३६०	९००
दिन	दिन	दिन	दिन	दिन	दिन	दिन

यहां शीघ्रगति ग्रह चंद्र सूर्य बुध शुक्र मंगल हैं मंदगति ग्रह गुरु शनि हैं। इनमें भी शनि से गुरु शीघ्री है। गुरु से मंगल शीघ्री है मंगल से सूर्य बुध शुक्र शीघ्रगामी है। इन सबसे चंद्र शीघ्रगामी है। एक राशि को पार करने के लिये जिसे अधिक समय लगता है वह मंदगति वाला ग्रह मंदग्रह या मंदी ग्रह है। जिसे थोड़ा समय लगता है वह शीघ्रगति वाला ग्रह शीघ्र ग्रह या शीघ्री ग्रह है।

इस प्रकार परस्पर दृष्टि करने वाले दो ग्रह हो। इनमें एक की गति मंद और दूसरे की गति शीघ्र हो। यह पंचांग से देख लेना चाहिये। इन दोनों ग्रहों में से उनके अंशों पर विचार करना। यदि शीघ्रगामी ग्रह के अल्प अंश हैं और मंदी ग्रह के अधिक अंश हैं और शीघ्रीग्रह से मंदी ग्रह आगे हो और दोनों की दृष्टि दीप्तांश के भीतर हो तो मुथसिल योग हो जाता है। इसमें शीघ्री ग्रह मंद ग्रह को अपेना तेज दे देता है।

ग्रहों के दीप्तांश

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
दीप्तांश	१५	१२	८	७	९	७	९

यहां शीघ्रीग्रह के आगे या पीछे विचारकर शीघ्र गति ग्रह के अंश के भीतर दीप्तांश लेना अर्थात् जो ऊपर बताये दीप्तांश के अंश दिये गये हैं उनसे दोनों ग्रहों के अंशों का अंतर विचारना। दोनों ग्रहों के अंशों का अंतर इनसे अधिक नहीं होना चाहिये।

दृष्टि का विचार

यहाँ नीचे बताई दृष्टि लेना चाहिये।

गणित द्वारा साधन की हुई दृष्टि की यहां आवश्यकता नहीं है।

दृष्टि	स्थान	कलादृष्टि	तत्काल	
१ प्रत्यक्ष स्नेहा	५–९	४५′	अधिमित्र	
२ गुप्त स्नेहा	३, 11	४०′ १०′	मित्र	२-६-८-१२ स्थान दृष्टि
३ गुप्तवैरा	४–१०"	१५′	शत्रु	शून्य हैं।
४ प्रत्यक्षवैरा	७	६०′	अधिशत्रु	
५ अत्यंतवैरा	१	०		

लग्न से ६ भाव तक दक्षिणभाग ७ से १२ तक वाम भाग है। दक्षिण की अपेक्षा वामदृष्टि बलवान होती है। दशम से चतुर्थ तक दृष्टि बली है। चतुर्थ से दशम पर दृष्टि निर्बल है।

यहां मंदगति ग्रह के अधिक अंशों में से शीघ्र ग्रह के कम अंश को घटावे। यदि अन्तर दीप्तांश के भीतर हो तो इत्थशाल योग होता है। यहां वर्तमान ग्रह स्पष्ट से ग्रह के अंश और उनकी गति को लेना चाहिये।

इत्थशाल योग का उदाहरण

किसी भाव के फल का विचार करने के लिए उस भाव का स्वामी और लग्नेश के साथ इत्थशाल योग है या कहीं इसका विचार करना होता है। कार्येश और लग्नेश इन दोनों में एक लग्नेश अवश्य ही होना चाहिये तब इत्थशाल योग का प्रभाव होता है।

लग्नेश का द्वितीयेश तृतीयेश आदि सभी भाव के स्वामियों के साथ इत्थशाल योग हो सकता है। जैसे राजसम्बन्धी कार्य का विचार करना है। राज्य का विचार दशम भाव से होता है।
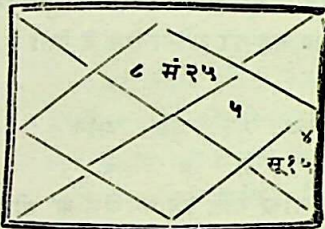
मान लो दशमभाव में सिंह राशि है जिसका स्वामी सूर्य कार्येश हुआ। मान लो यह सूर्य नवमभाव में है जिसके अंश १५ है। इसके आगे लग्न में लग्नेश मंगल २५ अंश पर है। यहां शीघ्री ग्रह सूर्य के अल्प अंश हैं। इसके आगे मंदी ग्रह मंगल अधिक अंश में है। दोनों की नवम-पंचम दृष्टि है। सूर्य का दीप्तांश १५ है। यहां दोनों की दृष्टि दीप्तांश के भीतर है (२५–१५)=१० क्योंकि केवल यहां १०° का अंतर है जो दीप्तांश के भीतर है। यहां लग्नेश की दृष्टि कार्येश पर होने से इस मुत्थसिल योग के प्रभाव के फलस्वरूप राज प्राप्त होगा अर्थात् उस कार्य में सफलता प्राप्त होगी।

अन्य उदाहरण
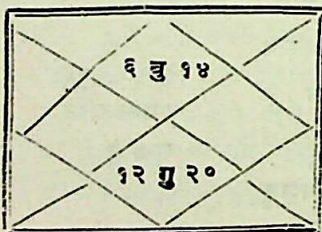
यहां सप्तमभाव सम्बंधी विचार करना है। यहां सप्तमेश गुरु कार्येश हुआ बुध लग्नेश हुआ। बुध की गति शीघ्र है अल्प अंश १४ पर है। बुध के आगे मंद ग्रह गुरु २०° पर है बुध के दीप्तांश ७ के भीतर (२०–१४)=६

दोनों की दृष्टि है एक दूसरे पर सप्तम दृष्टि है यहां इत्थशाल योग हो गया।
अन्य उदाहरण
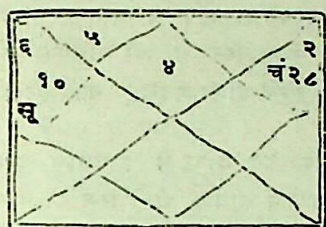
यहां धन सम्बंधी विचार का कार्येश सूर्य १० अंश पर है लग्नेश चंद्र शीघ्री ग्रह २८ अंश पर है। मंद ग्रह सूर्य आगे है। दोनों की नवम-पंचम दृष्टि चंद्र के दीप्तांश १२ अंश के भीतर है। (१०-२८)=१०+३०=४०-२८=१२° अंतर है। इससे शीघ्री ग्रह के दीप्तांश के भीतर सूर्य है यह इत्थशाल योग हो गया। या इस प्रकार समझो चंद्र २८° पर है २ अंश आगे बढ़ने पर राशि पूरी होगी सूर्य के १०°+२°=१२ अंश अंतर हुआ।

दृष्टिभेद के विचार से इत्थशालयोग का प्रथक-प्रथक फल होता है। इस इत्थशाल योग में यदि दोनों की परस्पर शुभदृष्टि हो तो विशेष फल होगा। अशुभ दृष्टि या अशुभ योग से अशुभ फल होता है। लग्नेश कार्येश का जैसा इत्थशाल योग हो वैसा शुभ या अशुभ फल होता है।

जैसे लग्नेश षष्ठेश से रोग की वृद्धि। लग्नेश अष्टमेश से रोगवृद्धि, मृत्यु आदि। लग्नेश व्ययेश से व्यय वृद्धि। इस प्रकार अशुभ स्थानों से यह-योग होने से अशुभ फल होता है।

लग्नेश कार्येश, लग्नेश का मित्र तथा कार्येश का मित्र ये चारों जिस राशि में हो वह अपने स्वामी या शुभग्रह से दृष्ट हो तो इत्थशाल योग बलवान होता है। यदि स्नेह आदि शुभदृष्टि हो तो और भी विशेष शुभफल होता है। परन्तु ये शत्रुघर में, पापग्रह से युक्त या दृष्ट हो शुभ फल घट जाता है।

जिस भाव का सम्बन्धी कार्य हो उस भाव के स्वामी को कार्येश कहते हैं। जैसे—भाइयों के निमित्त=तृतीयेश। संतान=पंचमेश। राजकार्य=दशमेश। स्त्रीसंबन्ध से सप्तमेश इत्यादि। इस प्रकार कार्येश और लग्नेश से इत्थशाल योग है या नहीं यह विचार करना पड़ता है। दोनों का इत्थशाल योग होने से कार्यसिद्ध होता है।

इस इत्थशाल योग में ५-९ और ३-११ सम्बन्धी इत्थशाल में दोनों की स्नेहादृष्टि होने से उस भाव सम्बन्धी अच्छा फल होगा। शत्रुदृष्टि होने से उस भाव सम्बन्धी फल नष्ट कर देते हैं। इस प्रकार दृष्टि स्थान आदि के विचार से योग का शुभ या अशुभ फल होता है।

लग्नेश और कार्येश के मित्र ग्रह भी उन्हीं के सदृश फल देते हैं। यदि लग्नेश आदि के साथ कोई ग्रह हो वह जिस भाव में हो वह अपने भावेश और शुभग्रहों से दृष्ट हो तो इत्थशाल योग बलवान हो जाता है और उस फल को बढ़ा देता है। स्नेहदृष्टि में तो योगफल को अधिक बढ़ा देता है। यदि इत्थशाल करने वाला मंदग्रह वक्री हो तो वह फल अधिक बढ़ जाता है।

इसी प्रकार शत्रुराशि, अनिष्टस्थान, पापग्रह दृष्टि से इत्थशाल योग का फल अशुभ भी हो जाता है। जैसे लग्नेश कार्येश दोनों शत्रु या नीच राशि में या शत्रु के हद्दा, नवांश आदि में या दुष्टस्थान में हो और पापग्रह से युक्त या दृष्ट हो तो इत्थशाल योग से उत्पन्न हुआ अनिष्ट फल तत्काल ही होगा। उसके आगे-पीछे शुभ होगा। यदि ऐसा योग होने वाला हो तो उक्त फल भी आगे होगा ऐसा समझना। अर्थात् जब स्वोच्च आदि राशि में पापयुक्त या दृष्ट होने वाला हो तब उसका फल होगा। इन योगों में अनिष्ट फल होने से शुभ और अशुभ दोनों अपने २ समय के अनुसार होता है जैसा ऊपर बताया गया है। यदि लग्नेश कार्येश दोनों मित्र के घर में वर्तमान हैं और कुछ दिन बाद शत्रु के घर में जायेंगे तो उसका अनिष्ट फल आगे होगा। यदि ये दोनों मित्र घर से शत्रु घर में चले जावें तो शुभ फल हो चुका। अशुभ फल वर्तमान हैं ऐसा समझना। यदि शुभफल निकलता हो तो शुभ ही फल होगा।

इत्थशाल योग का फल कब होगा

(१) लग्नेश और कार्येश दोनों उच्चग्रह, मित्रराशि स्व त्रिराशीश स्व नवांश आदि अच्छे स्थान में हो और शुभ ग्रहों से युक्त या दृष्ट हो तो इत्थशाल का शुभ फल तत्काल होगा और वह शुभफल इसी समय हो रहा है।

(२) जो ऐसे शुभ स्थान में आने वाला हो और शुभग्रह युक्त या दृष्ट होने वाला हो तो उसका फल आगे उस समय आने पर होगा।

(३) यदि ऐसे शुभ स्थान से अन्य स्थान में गये थोड़ ही समय हो गया हो तो पूर्वोक्त फल हो चुका ऐसा समझना। अर्थात् ऐसा योग वर्तमान में हो तो फल शीघ्र होगा। ऐसा योग होने वाल हो तो भविष्य में फल होगा। ऐसा योग हो चुका है तो वह फल बीत चुका है जानना।

फल का समय जानना

इत्थशाल योग करने वाले लग्नेश और कार्येश के अंशों का अंतर करके जो शेष रहे उसे १२ से गुणा करना जो गुणनफल प्राप्त हो उतने दिन में इत्थशाल योग का फल होगा।

इत्थशाल पूर्ण हुआ या नहीं

शीघ्रीग्रह के अंशादि में उमी शीघ्रीग्रह के दीप्तांश जोड़ना जो योग आवे उस योग के भीतर मंदग्रह के अंश हैं तो समझना इत्थशाल योग होता है। यदि उस योग से मंदीग्रह के अधिक अंश हैं तो यह योग नहीं होगा। इसमें भविष्य इत्थशाल योग का अपवाद है जिसे आगे समझाया गया है।

इत्थशाल योग के भेद

इत्थशाल योग के ४ निम्नलिखित भेद हैं।

(१) वर्तमान इत्थशाल या मुंथसिल।
(२) पूर्ण मुंथसिल।
(३) राश्यन्त राश्यादिस्थ वर्तमान मुंथसिल।
(४) भविष्य मुंथसिल।

(१) वर्तमान मुंथसिल
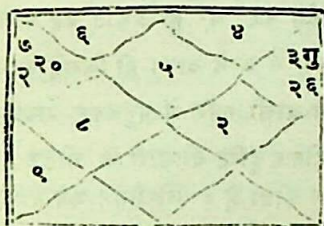
शीघ्रीग्रह न्यून अंश पर पीछे हो मंदीग्रह अधिक अंश पर शीघ्री से आगे हो। दोनों की नवम-पंचम आदि दृष्टि हो और शीघ्री के दीप्तांश के भीतर यह दृष्टि हो तो पृष्ठगत शीघ्रीग्रह अपना तेज (शक्ति) मंदगति वाले ग्रह को दे देता है। तब यह वर्तमान मुंथसिल हुआ। इसका फल पूर्ण मुंथसिल से कुछ कम होता है।

यहां लग्नेश सूर्य शीघ्रगति के अल्प अंश २० पर है। इसके आगे मंदीग्रह गुरु के अधिक अंश २६ हैं। दोनों की नवम-पंचम दृष्टि है और सूर्य के दीप्तांश के भीतर मंदीग्रह है।

(२६–२०)=६ केवल ६° अंतर है। इससे यह योग हो गया। यहां संतानभाव का कार्येश गुरु से लग्नेश का मुंथसिल है।

(२) पूर्ण मुंथसिल योग।

यह योग वर्तमान इत्थशाल सरीखा ही है। केवल अंतर इतना ही है कि शीघ्रीग्रह के अंश मंदग्रह के अंश से केवल कला-विकला मात्र से कम हो। इसका फल पूर्ण होता है। शीघ्री और मंदीग्रह का अन्तर आधा अंश (३० कला) तक भी हो तो भी पूर्ण मुंथसिल योग हो जाता है।

यहां स्त्रीलाभ प्रश्न में लग्नेश चंद्र शीघ्रगामी ५°–२'–१०" पर है। इसके आगे सप्तमेश शनि पंचम भाव में ५°–३'–५" पर है। दोनों की सप्तम दृष्टि है। यहां दोनों में केवल ५५ विकला का अन्तर (५°–३'–५"–५-२-१०)=(०-०-५५) इससे यह पूर्ण मुंथसिल योग हुआ। यहां शीघ्रीग्रह केवल ५५ से न्यून है।

जब विकला मात्र न्यून हो या आधी विकला से न्यून हो तब यह बीस विश्वा वाला मुंथसिल होता है। जब विकला तक समानता हो तो पूर्ण मुंथसिल श्रेष्ठ होता है।

(३) राश्यंत राश्यादिस्थ वर्तमान मुंथसिल

शीघ्रीग्रह जब राशि के अन्त में होता है जैसे २९° पर हो अर्थात् वह आगे वाली राशि में जाने वाला हो जिससे आगे आगे जाने वाली राशि में पहुँचकर मंदग्रह से दृष्ट होकर दृष्टि दीप्तांश के भीतर हो जावे। मंदग्रह के थोड़े अंश हों तब यह योग होता है। शीघ्रीग्रह जब राशि के अन्त में होता है तब आगे जाने वाली राशि में वह मंदीग्रह से अल्प अंश में हो जाता है।

जैसे धनभाव में मंगल २९° पर है और लाभभाव में शनि ६° पर है। शीघ्रीग्रह मंगल है शनि मंदी ग्रह है। शीघ्री के आगे मंदीग्रह शनि है। यहां दोनों की दृष्टि दीप्तांश के भीतर नहीं है परन्तु जब मंगल आगे राशि में जायगा तब वह तीसरे भाव में पहुँच जायेगा तब उस आगे की राशि १°-२° आदि अंश में मंगल शीघ्रग्रह अल्प अंश में हो जाता है और मंदी ग्रह अधिक अंश में हो जाता है। दोनों की दृष्टि तब दीप्तांश के भीतर हो जाती है।

यह वर्तमान इत्थशाल योग का ही भेद है। परन्तु दृष्टिरहित इत्थशाल होता है दीप्तांश के भीतर दृष्टि नहीं है।

इसमें शीघ्रग्रह राशि के अन्त में ३०° के समीप हो और मंदग्रह आगे हो तो शीघ्रग्रह आगे की राशि में जाने पर मंदग्रह जब शीघ्रग्रह

के दीप्तांश के भीतर हो जावे तब शीघ्रग्रह अपना सामर्थ मंदग्रह को दे देता है, यह अदृष्ट मुंथसिल है।
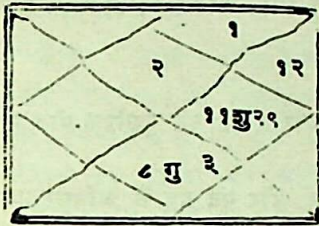
यहां धन लाभ प्रश्न में लाभेश गुरु मंदी ग्रह ३° पर है। लग्नेश शुक्र शीघ्री ग्रह २९° पर दशम में है। शुक्र लाभ भाव में जाने पर दोनों की दृष्टि दीप्तांश के भीतर हो जायगी उस समय कार्य सफल होगा।

(४) भविष्य मुंथसिल
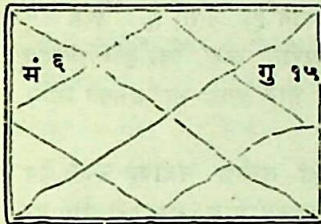
शीघ्र ग्रह न्यून अंश पर और मंद ग्रह उसके आगे अधिक अंश पर हो। दोनों की दृष्टि नवम-पंचम आदि हो परन्तु दृष्टि दीप्तांश के भीतर न हो। मंदीग्रह के अंश दीप्तांश से कुछ अधिक हों। जब शीघ्री ग्रह अपनी तेज चाल से आगे बढ़ेगा तब शीघ्री के अंश अधिक हो जाने से मंदी ग्रह शीघ्री के दीप्तांश के भीतर हो जायगा। यहां भविष्य में मुंथसिल योग होगा। तब इसका फल होगा। इस कारण इसे भविष्य मुंथसिल कहते हैं।

जैसे यहां शीघ्रग्रह ६° पर है। इसके आगे मंदीग्रह १५° पर है। दोनों की परस्पर दृष्टि है परन्तु दृष्टि दीप्तांश के भीतर नहीं है (१५−६)=९°। यहां ९ अंश का अन्तर है। शीघ्रग्रह मंगल का दीप्तांश ८ है। उसमें १ अंश अधिक मंदीग्रह बढ़ गया है। शीघ्रग्रह जब आगे बढ़ेगा तब मंदीग्रह उसके दीप्तांश के भीतर हो जायेगा तब फल होगा, मान लो शीघ्रग्रह मंगल आगे बढ़कर ७° पर हो गया या उसके आगे बढ़ गया तब मंदीग्रह का अन्तर दीप्तांश ८ के भीतर हो जायेगा। यह मुंथसिल आगे होने को है। इस कारण यहां भविष्य मुंथसिल हो गया। इसमें तब शीघ्रग्रह अपना सामर्थ मंदीग्रह को दे देगा।

इस प्रकार लग्नेश कार्येश का—

(१) वर्तमान मुंथसिल हो तो उस भाव का सम्बन्धी फल उसी समय वर्तमान है ऐसा समझना।

(२) पूर्ण मुंथसिल हो तो पूर्ण-सुख या पूर्ण-फल कहना।

(३) भविष्य मुंथसिल हो तो आगे सुख होगा या आगे फल होगा जब कि दोनों की दृष्टि दीप्तांश के भीतर हो जायगी। जिस भाव से संबन्धी कार्य है उस भाव का स्वामी (कार्येश) और लग्नेश का इत्थशाल होने पर उस कार्य की सिद्धि होती है।

(४) इशराफ=मुशरिफ=फिजूल खर्चा।

इशराफ योग यह इत्थशाल योग के विपरीत है, इसे मुशरिफ योग भी कहते हैं।

शीघ्री ग्रह अल्प अंश पर मंद ग्रह के पीछे हो और मंद ग्रह के अधिका अंश हो और आगे हो। दोनों की दृष्टि दीप्तांश के भीतर हो तो यह इथशाल योग होता है। परन्तु इसमें यदि शीघ्री ग्रह मंद ग्रह के अंश से एक अंश भी आगे बढ़ जाय तो यह इशराफ योग हो जाता है। इत्थशाल योग में जो कार्य होने को था वह विपरीत कर देता हैं। अर्थात् उस कार्य का नाश कर देता है। जो कार्य होने वाला था उसकी सिद्धि नहीं होती है। कष्ट देता है।
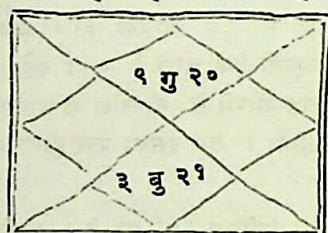
यहां लग्नेश मंदीग्रह २०° पर लग्न में है, स्त्रीभाव सम्बन्धी कार्य या कार्येश बुध शीघ्रीग्रह २१° पर है। यहां मंदग्रह गुरु के अंश से शीघ्रीग्रह बुध १° बढ़ गया है। क्योंकि मंदग्रह के अंश से शीघ्रीग्रह के अल्प अंश होना था। इसके विपरीत होने से अर्थात् शीघ्रीग्रह के अंश मंदग्रह के अंशों से बढ़ जाने से यह इशराफ योग हो गया।

हिल्लाल आचार्य के मत से इसमें इतना विचार करना है कि यह योग पापग्रहों का हो तो कार्य विपरीत करता है अर्थात् शुभ के वदले अशुभ करता है। शीघ्री और मंद दोनों पापग्रह हों तो कार्य का अवश्य नाश होता है। शुभ ग्रहों का योग हो तो कार्य विपरीत तो नहीं करेगा किंतु शुभ फल को जो इत्थशाल से होने वाला था न होने देगा। इसमें भी मत है कि शीघ्र और मंदी दोनों शुभग्रह हों तो कार्य सिद्ध होगा परन्तु कठिनाई से ही सिद्ध होगा।

स्वरोदय

यहां स्वरोदय से भी विचार दिया है। इससे कुछ जानकारी इस सम्बन्ध में देने की आवश्यकता है। मनुष्य की नासिका से जो स्वर (स्वास) निकलते रहती है। इसी शास्त्र का ज्ञान शिवस्वरोदय आदि ग्रंथों में

वर्णित है इस विद्या को भगवान शिव ने कहा है। इसका वचन कभी मिथ्या नहीं होता।

बांये नासापुट से चलने वाले स्वर को इड़ा=चंद्र स्वर कहते हैं और दाहिने नासापुट के स्वर को पिंगला=सूर्य स्वर कहते हैं। ये दोनों स्वर एक के बाद दूसरा क्रम से एक-एक घंटा चलते रहते हैं। इन दोनों स्वर की संधियों को सुषुम्ना स्वर कहते हैं। इसे अग्नि स्वर भी कहते हैं। यह संधि १० स्वास तक रहती है।

सूर्य स्वर में चर कार्य जो शीघ्र समाप्त होने वाला हो करे। यह क्रूर स्वर है। चंद्र स्वर में स्थिर कार्य करे जो कार्य स्थाई रहे यह शुभ नाड़ी है। सुषुम्ना स्वर में केवल ईश्वर का ध्यान योग आदि क्रिया ही करे इतर कार्य इसमें निष्फल होते हैं।

शुक्लपक्ष में प्रातः से लेकर १-२-३ तिथियों में चंद्रस्वर आरंभ में होता है बाद ४, ५, ६ सूर्य, ७, ८, ९ चंद्र, १०-११, १२ सूर्य, १३-१४-१५ (पूर्णिमा) चंद्र। फिर कृष्णपक्ष में आरंभ में १, २, ३ सूर्य, ४-५-६ चंद्र. ७, ८, ९ सूर्य, १०-११-१२ चंद्र, १३, १४-३० (अमावास्या) को सूर्य स्वर आरंभ में होगा। जो इसका अभ्यास करते हैं उनका स्वर इसी क्रम से चलता है।

सूर्य की दिशा-दक्षिण-पश्चिम है। चद्र की—उत्तर-पूर्व है। सूर्य का स्थान-नीचे-पीछे-दाहिने, चंद्र का—ऊपर-आगे-बांये हैं। प्रश्नकर्ता इस ओर होकर प्रश्न पूछता है तो सफलता मिलती है।

इड़ा और पिंगला नाड़ियों में ५ तत्वों का उदय होता है। ये क्रम से वायु, अग्नि (तेज), पृथ्वी, जल, आकाश हैं।

वायु तत्व ८ मिनट, अग्नि १२ मिनट, पृथ्वी २० मिनट, जल १६ मिनट, आकाश तत्व केवल ४ मिनट ही रहते हैं। इन तत्वों का ज्ञान इस प्रकार होता है।

(१) आकाश तत्व-स्वर का नाप शून्य, रंग-विचित्र मिश्रित काला-आकार, वर्तुल श्रवणसदृश, स्वाद-कटु, बहाव-चौतर्फ, स्थान-मस्तक, बहाव-स्थिर।

(२) वायु तत्व—बहाव गति ८ अंगुल, रंग-स्याम नीला हरापन लिये, आकार गोल टेढ़ा—मेढ़ा या षटकोण, चाल-तिरछी भ्रमर सदृश, स्थान-नाभि की जड़ में, स्वाद-खट्टा।

(३) तेज (अग्नि) तत्व—गति ४ अंगुल, रंग-रक्त, आकार-त्रिकोण, स्वाद चरपरा, गति-बहाव ऊपर भौंह तक, स्थान-कंधों में ।

(४) पृथ्वी—बहाव १६ अंगुल, शुभ्र स्वेत रंग, आकार अर्द्धचंद्र, स्वाद-सीटा कसैला । गति-सम्मुख मध्य में धीरे २, स्थान-पैरों के अंत में ।

(५) जल—बहाव १२ अंगुल, पीत रंग, आकार चतुष्कोण, स्वाद मीठा, बहाव नीचे शीघ्र, स्थान जानु (गोड़ों) में ।

तत्वों का ज्ञान अभ्यास से होता है । प्राणायाम करने के पश्चात मुख, नाक, कान आदि अपनी अंगुलियों से बंदकर इन तत्वों का ध्यान करने से अनुभव होता है और सम्मुख आईना (शीशा) रखकर उसमें अपना स्वर छोड़ने से इसका अनुमान होता है ।

———